БОРИС ПОЛЕВОЙ

Повесть о настоящем человеке

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

बोरिस पोलेवोई

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक राजीव सक्सेना

चित्रकार न० न० जूकोव

विषय-सूची

लेखक की ओर से

धरती पर मैंने पहली सास मास्को मे ली। साल था १६०८ और दिन—मार्च १७। मगर मेरा पालन-पोषण हुआ त्वेर नगर मे। इस नगर को नया नाम दिया गया कालीनिन। इसलिए मै अपने को कालीनिन वासी मानता हू।

मेरे पिता बार-एट-ला थे। वे तपेदिक के शिकार हुए और १६१६ में परलोक सिधार गये। मुझे उनकी बहुत धुधली-सी याद है। मगर उनके रूसी और विदेशी क्लासिकल साहित्य के पुस्तकालय को ध्यान में रखते हुए मैं यह कह सकता हू कि वे अपने जमाने के अच्छे पढे-लिखे और प्रगतिशील व्यक्ति थे। पिता जब चल बसे तो मा एक कारखाने के अस्पताल मे काम करने लगी। वह डाक्टर थी। अब हम विराट मोरोजोव कपडे की मिल के एक मकान मे रहने लगे।

वही मेरा बचपन और जवानी बीती।

हम "कर्मचारियो के लिए बनाये गये" मकानो मे से एक मे रहते थे। मगर मेरे साथी और दोस्त थे कामगारो के बच्चे। मै उन्ही के साथ स्कूल जाता। मेरी मा तो अपने अस्पताल के काम-काजो मे ही बुरी तरह उलझी-उलझायी रहती। मेरी सार-सुध लेने की उसे फुरसत ही न थी। इसलिए मैं अपना अधिकतर समय कामगारो के 'सोने के कमरों' और

बस्ती के बाहरी हिस्सों में गुजारता। उन दिनों होस्टलों को कामगारों के 'सोने के कमरे' ही कहते थे। कुल मिलाकर मैं पढ़ाई-लिखाई में कुछ बुरा न था। मगर मैं बहुत जोश-खरोश से पढ़ता-लिखता था, सो बात भी न थी। मेरा फालतू वक्त बीतता कारखाने के पास से बहनेवाली छोटी और गदी-सी स्माका नदी पर या अपने पिता के पुस्तकालय की किताबें पढ़ने में। मेरी व्यस्त मा ने पुस्तकों के चुनाव में मेरा निर्देशन करने की कोशिश की। उसने मुझे अपने मनपसन्द लेखक बताये। मुझे याद है कि मैंने शुरू शुरू में जो पुस्तकें पढ़ी उनमें गोगोल, चेखोव, नेक्रासोव और पोम्यालोव्स्की की रचनायें शामिल थी। गोर्की मुझे सबसे अधिक पसन्द थे। मेरे माता-पिता अपने छात्रकाल मे गोर्की के अनन्य भक्त थे। इसलिए हमारे पारिवारिक पुस्तकालय मे गोर्की की क्रान्ति पूर्व प्रकाशित सभी रचनाये थी।

प्रकृति का अध्ययन भी मेरे बचपन के शौकों में से एक था। लगभग चौथी श्रेणी से ही मैं युवा प्रकृति-प्रेमियों के हल्के में अच्छा-खासा 'चौधरी' बन गया था और युवा प्रकृति-प्रेमियों के नगर और जनतन्त्रात्मक सम्मेलनों में काफी सरगर्मी दिखाता था। घर पर कोई न कोई पक्षी या पालतू जानवर मेरे पास रहता। एक बाज कही से कारखाने के अहाते मे आ गया। कही सलाखो से टक्कर लगी और उसका पख टूट गया। इसे मैंने हथिया लिया। किसी कौए का बच्चा घोसले से गिर गया। बिल्ली से बचाने के लिए मैंने उसे उठा लिया। या फिर मैं कोई साही पाल लेता अथवा घास में रहनेवाला विषहीन साप एक खास डिब्बे मे बन्द करके खिड़की के दोहरे चौखटो के बीच रख देता।

हमारे शहर से गुबरनिया का अखबार 'त्वेर्स्काया प्राव्दा' निकलता था। १९२० के बाद इस कारखाने में कामगार-सम्वाददाताओ की एक बड़ी संस्था स्थापित की गयी। पम्प-हाउस में इसके सम्पादकीय कार्यालय की एक शाखा खोली गयी। ईंटो की उस छोटी-सी इमारत में काले-

म्रानेवाले लोगो का हम छोकरो पर रोब तारी रहता। ये लोग होते थे–कामगार-सम्वाददाता। वे समाचारपत्र के लिए लेख लिखते थे। एक फिटर इस सस्था का सचालक था। कारखाने के सब से अधिक लोकप्रिय लोगो मे उसकी गिनती होती थी।

अतीत के उन्ही भूले-बिसरे दिनो मे पत्रकारिता ने मेरा मन मोह लिया था। उन दिनो ही मै इस धन्धे को बेहद दिलचस्प, बहुत महत्त्वपूर्ण और कुछ रहस्यपूर्ण समझने लगा।

मै तब छठी जमात मे पढता था जब 'त्वेस्कीया प्राव्दा' में मेरी पहली रचना छपी। जैसा कि आज मुझे याद है यह सात पक्तियों की छोटी-सी रचना थी। सुविख्यात किसान-कवि स० द० द्रोज्जिन हमारे स्कूल में आये थे और उन्ही के बारे मे मैने ये कुछ पक्तिया लिखी थी। इसे अखबार के आखिरी पन्ने पर एक कोने मे बेनाम छापा गया। मगर मै तो यह जानता था कि इन पक्तियो का लेखक कौन है। मै तब तक इस पुर्जे को अपनी जेब मे लिये फिरता रहा जब तक कि यह मुड-मुडाकर फट-फटा नही गया। 'त्वेस्कीया प्राव्दा' मे बाद में लगातार छपनेवाले मेरे लेखो की लम्बी श्रृखला की यह पहली कडी थी। शुरू में मैंने शहर की कमियो-त्रुटियो के बारे में लेख लिखे और फिर कुछ अधिक गम्भीर विषयो पर मैंने अपनी कलम चलायी। जब कलम सध गयी और अखबार मे अपना रग जम गया तो मुझे नगर और छोटे-बडे कारखानो के सम्बन्ध मे रूपक और शब्द-चित्र लिखने का काम दिया जाने लगा।

स्कूल की पढाई चलती रही। स्कूल की पढाई खत्म होने पर मैंने औद्योगिक कालेज मे अपना नाम लिखवा लिया। कालेज मे मै रसायन-विज्ञान पढता और परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण करता। मगर मेरा मन हुलसता-मचलता रहता था छापेखाने की स्याही की गध वाले सम्पादकीय कार्यालय के लिए। जब वाणिज्य के विषय की पढाई

की घटी होती तो मैं चोरी-चोरी किसी ऐसे विषय पर नाटक, कहानी या शब्द-चित्र लिख डालता जिसका अध्यापक के भाषण से बिल्कुल कोई सम्बन्ध न होता। इस तरह धीरे-धीरे पत्रकार के शानदार पेशे से मेरा नाता जुड़ गया। साहित्यिक क्षेत्र के विभिन्न अंगों में से इसे आज भी सब से अधिक मनोरंजक और मन-मोहक कार्य मानता हूँ।

उन दिनो का 'त्वेर्स्काया प्राव्दा' खासा दिलचस्प और प्रात मे एक कदम आगे चलनेवाला अखबार था। समाजवादी जीवन के कारण कारखाने और देहात हर दिन जो नयी करवटें ले रहे थे, उनमें जो नयी जिन्दगी की किरण फूट रही थी, यह अखबार फौरन उनकी तरफ ध्यान देता था। ऐसे नये और दिलचस्प विषयों की टोह लगी जाती, उन्हे फौरन दबोच लिया जाता और बना-सवार कर छाप दिया जाता। अखबार में काम करने का मुझे बहुत फायदा हुआ। मै जिन्दगी को पैनी नजर से देखने लगा। मै अपने इर्द-गिर्द की हर चीज को बहुत अच्छी तरह जानने-समझने लगा। हर चीज को अच्छी तरह पचाकर ही मै उसके बारे में लिखता। अपनी छुट्टिया भी मैं अखबार ही की नजर कर देता। छुट्टिया का अधिकतर समय मै चीजों को निरखने-परखने में बिताता।

गोर्की के साहित्य को तो मैं बचपन से ही प्यार करने लगा था। यह साहित्य मेरे लिए प्रकाश-स्तम्भ की भाति था। यही मेरा पथ-प्रदर्शन करता था। जिन्दगी को पैनी नजर से देखना मैने गोर्की से ही सीखा। एक गर्मी में मैंने अपने अखबार से तय किया कि त्वेर के लकड़हारो और इमारती लकडी के बेडे खेनेवालो के बारे में एक लेख-माला लिखूगा। मै त्वेर गुबरनिया के सेलीजारोवा उयेज्द मे गया। वहा इमारती लकडी के एक केन्द्र मे मैंने नौकरी हासिल की और इमारती लकडी के बडे पर काम किया। बाद में एक बेडे पर मैं तीसरा पतवारिया हो गया। इसी बेडे मे मैं वोल्गा के निकास-स्रोत से अपने नगर और वहा से

रौविन्स्क पहुचा। यहा पहुचकर वेडे ने इमारती लकडी के घाट पर लंगर डाल दिया और इस तरह मेरा सफर सही-सलामत खत्म हुआ।

इसी बीच 'लट्ठो के वेडे का धन्धा' इस शीर्षक से मेरी लेख-माला अखवार मे छपती रही। हमारे वेडे के वीचो वीच एक झोपडी थी और झोपडी के करीव आग जलती रहती थी। वही वैठकर मैंने रात के वक्त ये लेख लिखे।

अगली गर्मी में एक ग्रामीण समाचारपत्र 'त्वेर्स्काया देरेवृन्या' ने मुझे एक और लेख-माला लिखने का काम दिया। इन लेखो में मुझे यह वताना था कि सामूहिक फार्म के पूर्व के देहातो मे समाजवाद किस प्रकार प्रवेश कर रहा है। अव मैंने मीक्षिनो गाव मे पुस्तकाध्यक्ष की नौकरी कर ली। यह गाव त्वेर 'कारेलिया' के सुदूर भाग मे था। देहाती जीवन और सामूहिक जीवन के नये अकुरो के वारे में मैंने यही वैठकर लेख लिखे।

रूपको की मेरी पहली पुस्तक १९२७ मे छपी। उन दिनो मै कोम्सोमोल के समाचारपत्र 'स्मेना' मे काम करता था। इसी अखवार में काम करनेवाले मेरे कुछ दोस्तो ने मुझसे चोरी-चोरी यह पुस्तक सोरेन्टो में माक्सीम गोर्की के पास भेज दी।

जव मुझे इसका पता लगा तो मेरे पाव तले की धरती खिसक गयी। मैंने सोचा कि एक महान् लेखक को अपनी कच्ची रचना पढने के लिए मजवूर करना एक गुनाह या जुर्म से कम नही है। मै इस वारे में पूरी तरह सजग था कि मेरी वह 'कृति' दरमियाने दर्जे की है। कुछ अर्से वाद मुझे एक मोटा-सा पैकेट मिला। पैकेट पर विदेशी टिकटें लगी थी और साफ तथा मोटे-मोटे अक्षरो मे मेरा नाम और पता लिखा था। पैकेट भेजनेवाले थे माक्सीम गोर्की। पैकेट मिलने पर मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा इसकी कल्पना तो आप कर ही सकते है!

छ फुलस्केप पन्नो पर गोर्की ने मेरी इस 'कच्ची कृति' के वारे में अपने विचार लिखे थे। उन्होने वहुत ध्यान से और वडे स्नेह से मेरी

इस पुस्तक की समालोचना की थी। उन्होंने मुझे सलाह दी थी कि और बेहतर लिखने के लिए मै कड़ी मेहनत करू और महान् लेखको की रचनाओ से अपनी शैली को माजना या उसपर पालिश करके उसे चमकाना सीखू। ठीक उसी तरह जैसे कि 'खरादी धातु को खराद पर चढाकर चमकाता है'। गोर्की जैसे महान् लेखक का यह पत्र मेरे लिए अमूल्य निधि के समान था। मैंने गोर्की के हर शब्द पर चिन्तन किया और उससे सही तथा उपयोगी निष्कर्ष निकालने का पयत्न किया। गोर्की ने मुझे यह अनुभव करने में मदद दी कि पत्रकारिता और साहित्य-सृजन का कार्य बच्चो का खेल नही है। ये काफी उलझे-उलझाये और मुश्किल क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त करने के लिए दूसरे किसी भी पेशे की तुलना में अधिक मेहनत और पढना-पढाना जरूरी है। मैंने महसूस किया कि पत्रकारिता के लिए 'ढीली-ढाली' नीति अपनाने से काम न चलेगा। बोल्शेविक प्रेस का सही मानी मे अच्छा प्रतिनिधि बनने के लिए मुझे जी-जान से और मन लगाकर काम करना ही होगा।

इस वक्त तक मै कालेज का स्नातक हो चुका था। अब मैं त्वेर के 'प्रोलेतारका'·कारखाने की 'रगाई और अन्तिम सफाई' या जैसे कि आम तौर पर प्रचलित था 'कपड़े की छपाई' की मिल में काम करने लगा। जल्द ही मै सक्रिय कामगार-सम्वाददाता हो गया। मै अब कारखाने और वर्कशाप के सार्वजनिक कर्तव्यो में बुरी तरह उलझा रहने लगा। मुझे दम मारने की भी फुरसत न मिलती। मेरा मन अखबारी काम में रम चुका था, मगर अब उसके लिए समय ही न था। व्यस्तता और समय की कमी के बावजूद मैं इसी काम में और अधिक डूबता चला गया। आखिर बहुत सोच-विचार के बाद मैंने कारखाने की नौकरी छोड दी और 'स्मेना' के कार्यालय मे काम करने लगा।

'स्मेना' में अच्छे सधे हुए लोग काम करते थे। बाद में उनमें मे कुछ तो चोटी के पत्रकार बने। हम सभी अखबार के काम में बहुत

व्यस्त और हर समय जुटे रहते। छ या आठ पृष्ठो का यह अखबार सप्ताह में दो बार छपता था। इसकी पृष्ठ-सख्या को ध्यान में रखते हुए इसके साधन बहुत सीमित थे। इसी लिए इसका बहुत-सा काम उत्साही युवा कामगार-सम्वाददाता विना पारिश्रमिक के करते थे। 'प्राव्दा' ने हमारे अखबार के उपक्रम की कई बार प्रशसा की थी। मै 'स्मेना' में काम करता रहा और जब यह बन्द हो गया तो मैंने कालीनिन प्रादेशिक समाचारपत्र मे 'प्रोलेतार्स्काया प्राव्दा' में नौकरी कर ली। महान् देशभक्ति के युद्ध के आरम्भ होते तक मै यही रहा। यहा काम करते हुए मैंने हल्के-फुल्के साहित्य और आलोचना के बारे में रूपक और लेख लिखे और औद्योगिक तथा सास्कृतिक विभागो का अध्यक्ष रहा।

१६३० से मै युवा कम्यूनिस्ट लीग का सदस्य था। १६४० मे मै कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया। इसके बाद लेखक के रूप में मैंने जो सफलता प्राप्त की उसका सारा श्रेय कम्यूनिस्ट पार्टी की महान् शिक्षा-सस्था को ही है।

अखबारी काम के साथ साथ मैंने कहानिया भी लिखी। मगर गोर्की की नसीहत पर अमल करते हुए मैंने उनमे से कुछ ही अखबार और हमारी प्रादेशिक वार्षिक पत्रिका 'हमारा जमाना' मे छपवायी। मेरा पहला लघु उपन्यास 'तपती वर्कशाप' १६३६ में, 'अक्तूबर' पत्रिका में छपा।

इस पुस्तक में मैंने कालीनिन के औद्योगिक उद्यानो मे आरम्भ होनेवाले समाजवादी श्रम-प्रतियोगिता-आन्दोलन के बारे मे अपने अनुभवो की चर्चा की। जिस तरह से यह नयी लहर आ रही थी, यह नया परिवर्तन हो रहा था, मैंने उसपर रोशनी डाली थी। इस पुस्तक मे मैंने आखो देखी बाते ही लिखी थी। अपने अखबार मे मै उनकी रिपोर्टें भी लिख चुका था। उस पुस्तक को जो भी सफलता मिली उसका श्रेय उन

महत्त्वपूर्ण घटनाओं और उन लोगों का ही [illegible] जिक्र [illegible] किया गया है। मैं यह मानने को तैयार हूं कि इस उपन्यास की घटनाएं और इसके पात्र वास्तविक जीवन से लिये गये हैं। इस उपन्यास की घटनाएं और पात्र इस हद तक जीते-जागते और वास्तविक हैं कि [illegible] के गाडीनिर्माण कारखाने के कामगार उपन्यास पढ़ने के बाद [illegible] को पहचान गये। इस सारे किस्से का अन्त इस प्रकार हुआ कि मेरे उपन्यास के मूल नायक ने मुझे अपनी शादी में शामिल होने के लिए बुलाया। दुलहन मेरे उपन्यास की मूल नायिका थी। शादी में बाराती मेहमानों ने [illegible] तरह के मजाक किये। उन्होंने कहा कि मूल नायक और नायिका ने ही लेखक का काम पूरा करना पड़ा। आखिर उन्होंने ही उपन्यास का सुखद, पर घिसा-पिटा अन्त किया—शादी करके।

पत्रकार के रूप में मैंने काफी लम्बा अनुभव प्राप्त किया था। उसी अनुभव ने मुझे यह पहला उपन्यास लिखने में मदद दी। मगर साहित्यकार के रूप में मैंने सबसे बहुमूल्य अनुभव महान् देशभक्ति के युद्ध के दिनों में ही हासिल किया। उन दिनों मैं 'प्राव्दा' का युद्ध-सम्वाददाता रहा।

कभी-कभार लोग मुझसे यह पूछते हैं कि क्या मेरा अखबारी काम साहित्यिक काम में बाधक नहीं होता। उनके मन में यह प्रश्न इसलिए आता है कि वे अखबारी आदमी को हमेशा दौड़-धूप करते देखते हैं। अखबार उसे जो काम सौंपता है उसे वह करना ही होता है, कि रिपोर्टें लिखने का काम तुरन्त ही होना चाहिये, कि उसमें मूड-वूड का झंझट बेवक्त का राग अलापने के बराबर होता है, कि उसे गिनी-गिनायी पंक्तियों में ही सारी घटना का सुन्दर वर्णन करना चाहिये, आदि आदि।

ऐसे प्रश्न सुनकर मैं खीझ उठू सो कभी नहीं होता। मैं तो मुस्करा भर देता हूं। कम्यूनिस्ट अखबारों के तजरबे ने ही तो मुझे साहित्य की राह दिखायी है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसी अखबारी

काम ने ही तो मुझे अपने इर्द-गिर्द के जीते-जागते इन्सानो मे नयी और सच्ची साम्यवादी विशेषताये खोजने की शिक्षा दी है। 'प्राव्दा' के युद्ध-सम्वाददाता के रूप मे मै महान् मोर्चे के प्रमुख हिस्सो मे रहा। यही मेरी समाजवादी धरती की किस्मत का फैसला हो रहा था। मेरे लिए यहा अमूल्य सामग्री के खजाने खुले पडे थे।

आज यह बात बहुत लोग जानते है कि 'असली इन्सान' और 'हम–सोवियत लोग' नामक पुस्तको के पात्र वास्तविक और जीते-जागते लोग है। वे अपने असली या कुछ बदले हुए नामो के साथ इन पुस्तको मे पाठको के सामने आये है। 'प्राव्दा' के कार्यालय मे ही ये पुस्तके लिखने का विचार मेरे मन मे आया था। बात कुछ इस तरह हुई थी।

फरवरी १९४२ मे 'प्राव्दा' मे मेरी एक रिपोर्ट छपी। शीर्षक था–'मात्वेई कुज्मीन की दिलेरी'। यह रिपोर्ट मैने कुज्मीन के दफनाये जाने के फौरन बाद कब्रिस्तान से घर लौटकर जल्दी-जल्दी लिखी थी। कुज्मीन पटुआ उगानेवाले 'रास्स्वेत' सामूहिक फार्म का अस्सी वर्षीय सामूहिक किसान था। उसने अपनी बहादुरी और दिलेरी से इवान सुसानिन की याद ताजी कर दी थी। यह महत्त्वपूर्ण घटना मैने जैसे कि पचाये बिना और भद्दे ढग से उगल दी थी। जैसे ही मै मोर्चे से मास्को लौटा कि प्रधान-सम्पादक ने मुझे बुलवा भेजा। प्रधान-सम्पादक ने मुझे बताया कि इतनी महत्त्वपूर्ण घटना को, वीरता की उस अमर कहानी को मैने बहुत जल्दी-जल्दी और एक नौसिखिये की तरह घसीट डाला है।

"इसे एक सुन्दर कहानी की शक्ल दी जा सकती थी!" सम्पादक ने मुझे फटकारा। हर चीज को व्यापक बनाने की अपनी आदत के अनुसार सम्पादक ने मुझसे कहा "मै युद्ध के अन्य सम्वाददाताओ से कह चुका हू और अब तुमसे भी यह कह रहा हू–हमारे लोग खास बहादुरी के जो भी कारनामे करे, उनकी कहानी विस्तार मे लिखी

जानी चाहिये। एक नागरिक के नाते तुम्हारा यह कर्तव्य है। पार्टी का सदस्य होने के कारण तुम्हारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। जरा सोचो तो सही—इस लडाई मे सोवियत जनता कितनी हिम्मत, कैसी दिलेरी दिखा रही है! पुराने, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास में भी तुम्हे ऐसी बहादुरी और ऐसे हौसले की मिसाले नही मिलेगी। इसलिए कि इन वीर लोगो की अपूर्व वीरता की कहानी समय की शिला पर अमिट रूप से अंकित रह सके, इसलिए कि यह कभी भूली-बिसरी दास्तान न बन जाये, इसलिए कि हमारी जनता आज और भविष्य मे भी यह जान सके कि कैसे हमने फासिस्टवाद के विरुद्ध लोहा लिया और कैसे उसपर विजय पायी, तुम्हे हर चीज, तुम्हे ये सारी घटनाये लिख लेनी चाहिये।"

अब मैंने गत्ते की जिल्द वाली एक मोटी कापी खरीद ली। इस प्रकार की अपूर्व वीरता की जो भी घटना मै देखता-सुनता लिख लेता। जहा ये बहादुरी के कारनामे होते मै उन जगहो का सही-सही नाम या इन वीर-पुरुषो अथवा नारियो या फिर घटना-स्थल पर उपस्थित गवाहो का शहरी पता ठिकाना लिखना कभी न भूलता।

इसी बीच युद्ध-सम्वाददाता के रूप मे मै लडाई के एक भाग से दूसरे भाग के चक्कर लगाता रहा। कभी मै मोर्चे पर रहता तो कभी 'पार्टीजन क्षेत्र' मे पहुच जाता। पार्टीजन दस्ते, देशभक्तिपूर्ण अस्थायी छापामार सैनिक दस्ते थे। इन्होने अपने अड्डे घने जगलो मे बना रखे थे और इन्हे तरह तरह के जान-जोखिम के काम सौपे जाते थे। ये दस्ते अपनी जान हथेली पर रखकर दुश्मन को तरह तरह से परेशान करते रहते थे। 'पार्टीजन क्षेत्रो' से मै फिर स्तालिनग्राद, कूर्स्क सालियेन्द, कोरसून-शेवचेनकोवस्की, विस्तूला, नेसे और स्प्री के मोर्चों पर लौट आता था। हर जगह ही मैंने अद्भुत वीरता की घटनायें देखी। साहित्य और इतिहास ने हमारे लिये इवान सुसानिन, मार्फा कोजिना, सेवास्तोपोल के मल्लाह कोश्का और अनेको ऐसे वीर-नायको की वीर-

गाथाये महेज-सहेजकर, सजो-सजोकर सजीव रखी है। मगर वीरता की जो घटनाये मैने देखी, इनके सामने अतीत की सारी वीर-गाथाओ का रग फीका पडकर रह गया।

कुल मिलाकर मैने ऐसी पैसठ घटनाये अपनी कापी मे लिखी। इनमे से एक मे मैने गार्ड्स सीनियर लेफ्टीनेन्ट अलेक्सेई मरेस्येव से अपनी असाधारण भेट की चर्चा की थी। यह भेट ओर्योल के नजदीक के एक हवाई अड्डे पर उस वक्त हुई थी जब दुश्मन उस नगर पर बाज की तरह झपट रहा था। यही भेट बाद मे 'असली इनसान' की शक्ल मे पाठको के सामने आयी। बाकी में से मैने चौबीस अन्य घटनाये चुनी। मेरी दृष्टि मे यही सबमे अधिक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट घटनाये थी और सोवियत जनता के दिल की सही तसवीर पेश करती थी। 'हम — सोवियत लोग', इस शीर्षक के कहानी-सग्रह के लिए मैने इन्ही घटनाओ को आधार बनाया।

लडाई के बाद, आज भी मै अपनी पुरानी परम्परा निभा रहा हू आखो देखी घटनाओं को ही साहित्यिक रूप देता हू। 'वापसी', इस छोटी कहानी में मैने मास्को के एक सुप्रसिद्ध इस्पात-निर्माता के जीवन की एक सच्ची घटना को कलात्मक ढग से पेश करने की कोशिश की है। इसी प्रकार 'सोना' उपन्यास भी एक सच्ची घटना पर आधारित है। यह घटना अपनी चरम सीमा को तब पहुची जब १९४२ के आरम्भ में कालीनिन मोर्चे की फौजो ने दुश्मन पर जवाबी हमला किया। सच्ची घटनाओ को ही साहित्यिक रूप देना, मै समझता हू कि यह कोई गैर-मामूली या बहुत बडा तीर मारनेवाली बात नही है। हमारी समाजवादी जिन्दगी आगे बढती हुई, हर दिन, हर घडी बदल रही है। लेखक को हर दिन बेहद दिलचस्प, साधारण होते हुए भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सामग्री मिल रही है। साम्यवाद की प्रबल और अमिट प्रेरणा से प्रेरित होकर सोवियत जनता श्रम और सैन्य-शौर्य के क्षितिज को छू रही है। देश के नाम पर सोवियत लोग ऐसे-ऐसे अद्भुत कार्य कर रहे है कि स्वप्न

पें भी उनकी कल्पना तक करना असम्भव है, इन्सान दातों तले उगली दबाकर रह जाता है। हमारे सोवियत जीवन की वास्तविकता मे लेखको के लिए कितना विविधतापूर्ण असीम भडार, अपार विस्तार है!

अखबारी काम मुझे हमारे जमाने के अत्यधिक मनोरजक लोगो के सम्पर्क मे आने का मौका देता है। मुझे उनके जीवन और कार्य का अध्ययन करने का अवसर मिलता है। पत्रकारिता से दृष्टि पैनी हो जाती है और कान मध जाते है। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मै कह सकता हू कि मेरी रचनाओ में यदि कलात्मक कल्पना की कोई कमी रह जाती है तो जीवन से ली गयी यथार्थता वह कमी पूरी कर देती है।

मेरी पुस्तको के पात्र, पुस्तको के बाहर चलते-फिरते और जीवन बिताते रहते है। वे जैसे कि मेरी कहानियो-उपन्यासो के कथानक को भी अपने साथ आगे चलाते जाते है। अलेक्सेई मरेस्येव मे वारसा मे मेरी भेंट हुई। वहा वह न तो मेरे उपन्यास का नायक था और न ही मै लेखक था। हम दोनो दूसरे विश्व शान्ति सम्मेलन में सोवियत प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने गये थे। 'महाकाव्य का जन्म' नामक मेरी कहानी का नायक मलिक गावदूलिन अब कजाख विज्ञान अकादमी के साहित्य-सस्थान का अध्यक्ष है। पोल्तावा क्षेत्र की किसान-नारी उल्याना वेलोग्रूद ने एक टैंक-रेजीमेन्ट के झण्डे की रक्षा की थी (कहानी 'रेजीमेन्ट का झण्डा')। लड़ाई के बाद उसने चुकन्दर की बढिया फसल उगाने में अपना कमाल दिखाया। इसके लिये उसे बहुत बडा इनाम मिला।

सृजन और सक्रियता की भावना से ओत-प्रोत अपने इन पात्रो को हसी-खुशी का जीवन बिताते देखकर लेखक को बेहद खुशी हासिल होती है।

समाजवाद की धरती का लेखक होना बेहद खुशी की बात है।

नवम्बर १९५०,
मास्को

ब० पोलेवोई
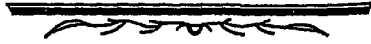
असली इनसान

प्रथम खण्ड

१
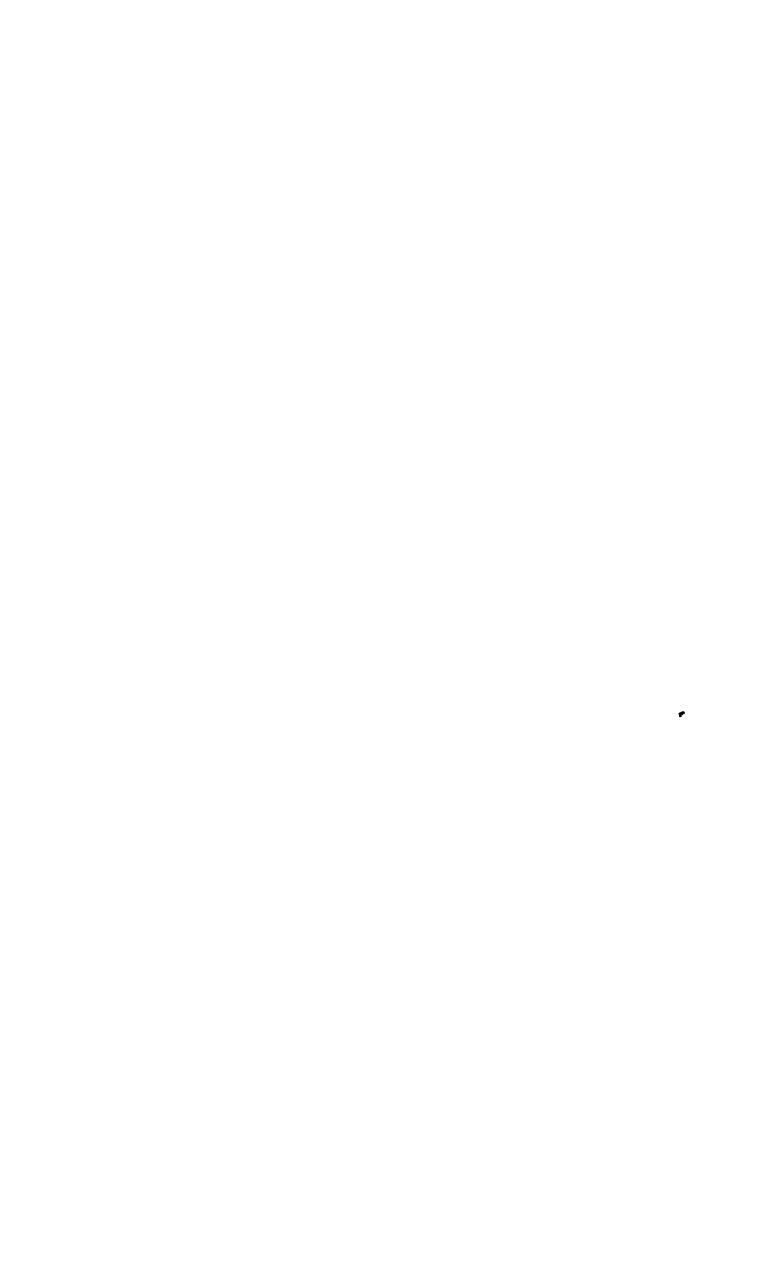
तारे अभी भी उज्ज्वल और शीतल आभा के साथ झिलमिला रहे थे, लेकिन पूरब में आसमान उषा की हल्की-सी लालिमा से आलोकित होने लगा था। धीरे-धीरे वृक्ष भी मनहूसियत से उबरने लगे। यकायक ताज़ी हवा का तेज़ झोंका वृक्षों का शीश छूता हुआ उड़ गया। क्षण भर में सारा वन-प्रदेश अनुप्राणित हो उठा और तीव्र प्रतिध्वनियों से गूंज उठा। सदियों बूढ़े चीड़ वृक्षों ने एक दूसरे को कानाफूसी के स्वर में बुलाया और उनकी उद्वेलित भुजाओं से क्षार-क्षार शुष्क बर्फ हल्की-सी सरसराहट के साथ झरने लगी।

जैसी तेजी से हवा उठी थी, वैसे ही वह शान्त हो गयी। वृक्ष पुन जड़ मौन में डूब गये। और तभी, भोर की अगवानी करनेवाले सारे वन्य स्वर फूट पड़े निकट ही वन-प्रान्तर में भेड़ियों की भूखी गुर्राहट, लोमड़ियों की चौकन्नी चीत्कार और अभी-अभी जागे कठफोड़वे की अनिश्चित ठक-ठक, जो जंगल की खामोशी में ऐसी संगीतपूर्ण प्रतीत होती थी मानो वह किसी पेड़ के तने को नहीं, वायोलिन के खोल को ठोक-बजा रहा हो।

चीड़ की बोझिल चोटियों पर से हवा का एक झोंका फिर शोर मचाता हुआ गुजर गया। उज्ज्वलतर आकाश में अंतिम तारे भी धीरे-

धीरे बुझने लगे, आसमान स्वयं संकुचित हो गया और अधिक घना मालूम होने लगा। रात की मनहूसियत के रहे-सहे निशान झाड़कर जगल अपनी ताजी शानशौकत से खिल उठा। चीड के घुघराले शीश और देवदार की नुकीली चोटियो पर गुलाबी आभा देखकर यह बताया जा सकता था कि सूर्य उदय हो गया है और आज का दिन निर्मल रहेगा, कड़ाके की सर्दी होगी और पाला गिरेगा।

अब तक काफी प्रकाश फैल चुका था। रात के शिकार को हजम करने के लिए भेड़िये घने जगलो में घुस गये थे और वह लोमड़ी भी बर्फ पर सतर्क चाल के टेढे-मेढे चिह्न छोड़कर जा चुकी थी। पुरातन वन अनवरत ध्वनियो से गूज उठा। इस वन मे हल्की-सी लहरियो के समान बराबर उठते-गिरते स्वरो के शोकाकुल और उद्विग्न वातावरण मे, केवल चिड़ियो की चहचहाहट और कठफोड़वे की ठक-ठक, डाल-डाल फुदकती फिरती हुई पीली फुदकियो की आनन्दपूर्ण किलक और नीलकण्ठो की रूक्ष और भूखी टर्र-टर्र से कुछ नये स्वर उभर उठते थे।

एक नीलकण्ठ ने, जो एक वृक्ष की डाल पर बैठा अपनी काली, नुकीली चोच तेज कर रहा था, यकायक सिर तान लिया, उसने कुछ सुना और पख मारने के लिए तैयार हो गया। डाले चर्राने लगी, मानो किसी खतरे की आगाही कर रही हो। नीचे झाड़ी में से कोई भारी-भरकम ताकतवर जीव जोर लगाकर निकल पड़ा। झुरमुट चरमराने लगे, नये चीड वृक्षो के शीश भय से कापने लगे, बर्फ के चूर-चूर होकर झर पड़ने की ध्वनि सुन पड़ने लगी। नीलकण्ठ चीख उठा और तीर जैसी पूछ सीधी कर झपट्टा मारता उड़ गया।

बर्फ से ढके देवदार चीरकर एक लबा, भूरा हिरन निकला जिस पर शाखादार भारी सीग थे। भयभीत आखो से उसने विस्तृत वन-प्रान्तर पर पैनी दृष्टि डाली। उसके गुलाबी, मखमली नथुने, गरम-गरम, भाप-भरी सास का गुबार छोड़कर सिकुड गये।

चीड के वृक्षो के बीच वह बूढा हिरन मूर्त्ति की तरह किंकर्त्तव्यविमूढ खडा रहा। सिर्फ चितकबरी पीठ की चमडी काप रही थी। सतर्कता के साथ कान खडे करके वह एक-एक स्वर सुन रहा था और उसकी श्रवणशक्ति इतनी सूक्ष्म थी कि किसी चीड की लकडी मे छेद करते हुए गुबरैले की आहट भी उसे मिल रही थी। लेकिन इन सतर्क कानो को भी जगल मे चिडियो की चू-चू चे-चें, कठफोडवे की ठक-टक और चीड की चोटी के पत्तो की खड-खड के अतिरिक्त और कुछ नही सुनायी दे रहा था। 638 10653

कानो ने हिरन को तसल्ली दी, मगर उसकी नाक खतरे की चेतावनी दे रही थी। पिघलती हुई बर्फ की ताजी गध के साथ कुछ ऐसी तीखी, दमघोटू और जहरीली दुर्गन्धे मिली हुई थी, जो इस घने जगल के लिए बिल्कुल विदेशी थी। उस पशु की उदास काली आखे दमकती हुई बर्फ की पपडी पर पडी हुई काली आकृतियो पर जा टिकी। एक पग भी आगे बढाये बिना, उसने अपनी हर मास-पेशी को ताना और छलाग मारकर झाडियो मे गायब हो जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन बर्फ पर पडी आकृतिया बिल्कुल निर्जीव थी—एक-दूसरे से चिपकी हुई, एक-दूसरे पर टिकी हुई। आकृतिया कई तरह की थी, मगर उनमें से एक भी न हिली-डुली और न उस पवित्र शान्ति को भग किया। पास मे ही, बर्फ के ढेर मे से अजीब दानवी शक्ले दिखायी दे रही थी, इन्ही शक्लो से वे तीखी और दमघोटू दुर्गन्धे आ रही थी।

हैरान हिरन मैदान के किनारे भयभीत आखे फाडे खडा रह गया, वह यह नही समझ पा रहा था कि इस निर्जीव और हानिरहित मानवीय ढेर को हो क्या गया है।

ऊपर से कोई आवाज सुनकर वह चौक पडा। उसकी पीठ की चमडी फिर कापने लगी और पिछले पैरो की मास-पेशिया फिर तन गयी।

मगर यह स्वर भी हानिरहित सिद्ध हुआ। यह स्वर तेज था, मानो नवपल्लवित वन के किसलयों में भौंरे मद-मस्त गुंजार कर रहे हों। इस गुंजार के साथ जब-तब एक तेज ऊंचा, तीखा और सिसकारी-सरीखा स्वर गूज उठता था, जैसे दलदल में सारस गगन भेदक स्वर छेड़ते हैं।

भौंरे भी दिखाई पड़ने लगे—वे तीन-तीन, पांत बनाये आसमान में सुनहरे पंख चमकाते हुए नाच रहे थे। बार-बार ऊंचाई पर से पक्षी की टर्राहट सुनायी पड़ जाती। एक भौंरा पंख फैलाये हुए, जमीन से आकर टकरा गया, बाकी भौंरे सुनहले आसमान में नाचते रहे। हिरन ने अपनी मास-पेशिया ढीली कर ली, उसने मैदान में कदम बढ़ाया और भुरभुरी बर्फ चाटने लगा, मगर फिर भी वह सतर्क दृष्टि से आसमान पर नजर डाल लेता था। यकायक एक और भौंरा अपने झुण्ड से विलग हुआ और घनी पूछ जैसी लकीर पीछे छोड़कर उसने मैदान में सीधा गोता लगाया। उसने इतनी तेजी से विराट रूप धारण किया कि उसके पहले कि हिरन को छलांग मारकर जंगल में भाग जाने का समय मिलता, एक भारी-भरकम, शीतकालीन बवंडर से भी भयानक चीज वृक्षों के शीश में आ टकरायी और ऐसे धमाके के साथ जमीन पर आ रही कि उससे सारा जगल गूज उठा। यह गूज किसी कराह की तरह लगी और उसकी प्रतिध्वनि पेड़ो को पार करती हुई उस हिरन तक भी पहुच गयी जो घने वन की गहराइयो को चीरता भागा चला जा रहा था।

यह गूज देवदार की गहराइयो में डूब गयी। हवाई जहाज के आघात से वृक्षो की चोटियो से बर्फ का चूरा दमकता-दमकता हवा पर तैरता उतराने लगा। एक बार फिर जबर्दस्त और गहरी खामोशी का साम्राज्य छा गया। इस खामोशी के बीच किसी आदमी का कराहना और किन्ही अजनबी आवाजो से घबराकर जगल से मैदान की तरफ भागकर आये हुए एक भालू द्वारा अपने पजो से बर्फ दबाने की ध्वनिया साफ सुनायी दे रही थी।

भालू विशालाकार, वृद्ध और सूखा था। उसके अस्त-व्यस्त बाल छाती की अगल-बगल भूरे लौदो और कूल्हे पर गुच्छो के रूप मे सिमट आये थे। शरदारम्भ से ही इस क्षेत्र मे घमासान युद्ध छिडा हुआ था और वह इस घने पश्चिमी वन मे घुस आया था, जहा पहले सिर्फ वन-दारोगे और शिकारी ही आये करते थे और उनका यहा आना भी कम होता था। शरद में युद्ध निकट आ जाने के कारण इस भालू को अपनी माद छोडने के लिए एक ऐसे समय मे विवश होना पडा जब कि वह जाडे भर सोने की तैयारी कर रहा था और अब भूख और क्रोध का मारा जगल मे भटकता फिर रहा था — उसे तनिक भी चैन न मिलता था।

भालू उसी स्थान पर, मैदान के किनारे आकर रुक गया जहा कुछ देर पहले हिरन खडा था। उसने हिरन द्वारा बनाये गये ताजे रास्ते को सूघा, मास-पेशियो को मरोड़ा और सुनने लगा। हिरन चला गया था, लेकिन जहा वह खडा था, वहा भालू ने कुछ ऐसे स्वर सुने जो स्पष्ट ही किसी जीवित और शायद निर्बल जीव के थे। भालू के रूखे-से रोए खडे हो गये। उसने थूथनी फैला दी। और तभी उसे मैदान के किनारे पर करुण कराह महसूस हुई जो मुश्किल से ही सुनायी देती थी।

धीरे-धीरे सावधानी से अपने नर्म पजो के बल चलते हुए, जिनके भार से सख्त, सूखी वर्फ चटक उठी थी, वह भालू उस निस्पद मानव-आकृति की ओर बढा जो वर्फ मे आधी दबी पडी थी।

२

हवाबाज अलेक्सेई मेरेस्येव दोहरी 'कैंची' मे फस गया था। आकाश-युद्ध मे किसी व्यक्ति के लिए इससे बुरी कोई बात नही होती। उसका सारा गोला-बारूद खत्म हो गया था और जब चार जर्मन हवाई जहाजो

ने उसे घेरा, तब वह लगभग निहत्था था, उन्होंने उसे भाग निकलने या रास्ता बदलने का कोई मौका दिये बगैर, अपने अड्डे की तरफ चलने के लिए मजबूर करना चाहा।

घटना यों थी। लेफ्टीनेंट मेरेस्येव की कमान में लड़ाकू हवाई जहाजों का एक दस्ता 'इल०' नाम के हवाई जहाजों के रक्षक के रूप मे गया जिन्हे शत्रु के हवाई अड्डे पर आक्रमण करना था। यह साहसी कार्रवाई सफल हुई। स्टोर्मोविक हवाई जहाज जिन्हे थल-सैनिक 'उड़न-टैंक' कहते है, चीड की चोटियो का लगभग सफाया करते हुए सीधे हवाई अड्डे पर जा धमके, जहा बहुत सख्या मे 'जकर' नाम के यातायातीय वायुयानो की पाते लगी थी। यकायक भूरे-नीले चीड वन की चोटियो मे से निकलकर गोता मारते हुए उन्होंने भारी-भरकम यातायात-वायुयानो के ऊपर सरपट दौड लगायी और अपनी मशीनगनो और तोपो से गोली-गोलो की झडी लगा दी और दुमवाली गोलियो से पाट दिया। मेरेस्येव, जो अपने चार हवाई जहाजो के साथ आक्रमण-स्थल की चौकसी कर रहा था, उस ऊचाई से साफ देख रहा था कि हवाई अड्डे पर लोगो की छायाए इधर-उधर भाग रही थी, समतल बनायी गयी बर्फ पर बोझिल गति से यातायात के वायुयान रेग रहे थे, स्टोर्मोविक वायुयान हमला करने के लिए बारबार लौट पडते थे और गोली-गोलो की बौछार के बीच 'जकर' के हवाबाज अपने वायुयान को खिसकाने और हवा में उडा ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे।

इसी समय अलेक्सेई ने घातक भूल कर डाली। आक्रमण-स्थल की चौकसी सख्ती से करने के बजाय वह, हवाबाजो के शब्दो में "आसान शिकार के लोभ में" फस गया। उसने अपने हवाई जहाज को गोता खिलाया और इस यातायात-जहाज पर, जो अभी जमीन से थोडा ही उट पाया था, उसने अपने हवाई जहाज को पत्थर की तरह पटक दिया और उस वायुयान के बहुरगी, चौकोर और घने अलुमीनम के ढाचे में

मशीनगन की गोलियो से लम्बे-चौड़े छेद कर डाले। उसे इतना आत्मविश्वास था कि उसने शत्रु के जहाज को जमीन पर लुढकते देखने का कष्ट न किया। हवाई अड्डे के दूसरे छोर पर एक और 'जकर' हवा में उठा। अलेक्सेई उसके पीछे झपटा। उसने हमला किया, मगर सफल न हुआ। धीरे-धीरे ऊपर उठते हुए शत्रु के जहाज पर उसने जितनी बार गोलियो की धारे छोडी, उतनी ही बार वह उसके ऊपर से निकल गयी। मेरेस्येव ने यकायक जहाज घुमाया और फिर हमला किया, वह फिर असफल हुआ तो अपने शिकार पर वह पुन झपटा और इस बार वगल के सारे हथियार से उसने शत्रु के वायुयान के चौडे, सिगार जैसे ढाचे पर उन्मत्त होकर इतने गोले बरसाये कि वह जहाज जगल मे जाकर गिर पडा। उस जहाज को गिराने के बाद, और जिस जगह वन-प्रदेश के हरे-भरे समुद्र मे धुएं का काला स्तम्भ उठ खड़ा हुआ था, उसके दो चक्कर लगाकर, उसने पुन अपना हवाई जहाज शत्रु के हवाई अड्डे की ओर मोड दिया।

किन्तु, वह वहा न पहुच सका। उसने अपने दस्ते के तीन लडाकू जहाज शत्रु के नौ 'मेसर' हवाई जहाजो से जूझते देखे—स्पष्ट था कि इन हवाई जहाजो को जर्मन हवाई अड्डे के कमाडर ने स्टोर्मोविक्स के हमले का जवाब देने के लिए बुला लिया था। जर्मन ठीक एक के मुकाबले तीन थे, मगर फिर भी हवावाज साहसपूर्वक उनपर टूट पडे और उनको स्टोर्मोविक्स की ओर से हटाने का प्रयत्न करने लगे। इस सग्राम मे वे शत्रु को उस स्थान से दूर और दूर ले गये—जैसे काली पहाडी मुर्गी घायल होने का नाटक करके शिकारियो को अपना पीछा करने के लिए लुभाती है ताकि उसके बच्चे बच जाये।

अलेक्सेई सहज शिकार के प्रलोभन में स्वय फस गया, इस बात मे वह इतना शर्मिन्दा हो उठा था कि उसे शिरस्त्राण के नीचे अपने कपोल जलते हुए अनुभव हो रहे थे। उसने एक निशाना चुना और दान

खींचकर भिड गया। निशाना जो उसने लगा था, एक 'मेसर' वायुयान था, जो अपने अन्य साथियों से बिछुड़ गया था और, स्पष्ट ही, वह स्वय भी कोई शिकार खोज रहा था। उसका वायुयान जितना भी तेज उड सकता था, उतने पूरे वेग से अलेक्सेई शत्रु के पास झपट पडा। उसने इस कला के हर नियम के अनुसार जर्मन हवाई जहाज पर हमला किया था। जब मशीनगन का घोडा दबाया, तब उसे आंखों के सामने धुएं के बीच शत्रु के वायुयान का धूसर ढांचा साफ दिखायी दे रहा था, मगर शत्रु फिर भी अक्षत बच निकला। अलेक्सेई का निशाना चूकना न चाहिए था। निशाना नजदीक ही था और साफ दिखायी भी दे रहा था। 'गोला-बारूद।'—अलेक्सेई समझ गया और उसकी रीढ़ की हड्डी मे ऊपर से नीचे तक एक कपकपी दौड गयी। मशीनगन की परीक्षा करने के लिए उसने फिर घोडा दबाया, लेकिन उसे वह सिहरन न महसूस हुई, जो हर हवाबाज को मशीनगन दागने के साथ सारे शरीर मे ऊपर से नीचे तक अनुभव होती है। कारतूस का जखीरा खाली हो चुका था, उन 'यातायात' वायुयानो का पीछा करते हुए उसके सारे कारतूस चूक गये थे।

लेकिन शत्रु को इसका पता न था। अलेक्सेई ने जूझ पडने का निश्चय किया ताकि दोनो पक्षो के सख्यात्मक अनुपात में सुधार किया जा सके। लेकिन उसकी धारणा गलत थी। जिस लडाकू विमान पर उसने असफल हमला किया था, उसका चालक एक अनुभवी और सूक्ष्म-बुद्धि का हवाबाज था। जर्मन समझ गया कि उसके विरोधी की गोला-बारूद खत्म हो गयी है, और उसने अपने साथियो को नया हुक्म दे दिया। चार 'मेसर' वायुयान शेष से अलग निकल आये और उन्होने अलेक्सेई को घेर लिया—इनमे से एक-एक अगल-बगल और एक-एक ऊपर-नीचे हो लिये। उन्होने अन्वेषक गोलिया छोडकर अलेक्सेई को मार्ग निर्देश देना शुरू किया—साफ, नीले आसमान में ये गोलिया स्पष्ट दिखायी देती

थी—और इस तरह उन्होंने अलेक्सेई के विमान को दोहरी 'कैंची' मे फसा लिया।

इस घटना के कई दिन पहले अलेक्सेई ने सुना था कि पश्चिम से प्रसिद्ध जर्मन 'रिक्तगोफेन' विमान डिवीजन इस स्ताराया रूसा क्षेत्र में आ पहुची है। फासिस्ट साम्राज्य के सर्वोत्तम चालक इस डिवीजन मे थे और स्वय गोयरिंग इसका सरक्षक था। अलेक्सेई अब समझ गया कि वह इन्ही आकाशी भेडियो के चगुल मे फस गया है और साफ था कि वे उसे अपने हवाई अड्डे तक उडा ले जाना, उतारना और बदी बनाना चाहते थे। इस तरह की घटनाए हो चुकी थी। अलेक्सेई ने स्वय देखा था कि उसके अतरग, सोवियत सघ के वीर अन्द्रेई देगत्यरेन्को की कमान के एक लडाकू विमानो का दस्ता किस प्रकार एक जर्मन आकाशी खुफिया विमान को अपने हवाई अड्डे पर ले आया था और कैसे उसने उसे उतरने के लिए मजबूर किया था।

उस जर्मन कैदी का लम्बा, राख जैसा धूसर चेहरा और उसके लडखडाते कदम अलेक्सेई की आखो के सामने झूल गये। "क्या मै कैदी बनूगा? हरगिज नही! यह चाल न चल पायेगी!" उसने सकल्प किया।

उसने बहुत हाथ-पैर फडफडाये, फिर भी वह भाग न सका। जर्मन जिस दिशा में चलने के लिए हुक्म दे रहे थे, उससे जहा वह जरा भी विचलित होने की कोशिश करता, वे उसका रास्ता मशीनगन से गोलिया बरसाकर बन्द कर देते। और एक बार फिर उस जर्मन का विकृत चेहरा, कापते जबडे अलेक्सेई की आखो के सामने साकार हो गये। उसके चेहरे पर हीनता और पाशविक भय के चिह्न स्पष्ट दीख रहे थे।

मेरेस्येव ने सख्ती से दात भीचे, अपने इजिन की गति पूरी तरह छोड दी और खडी स्थिति बनाकर उस जर्मन हवाई जहाज के नीचे गोता लगाने का प्रयत्न किया जो उसे जमीन की तरफ दबोच रहा था।

शत्रु के विमान के नीचे से निकलने में वह सफल हो गया, मगर उस जर्मन ने ऐन मौके पर मशीनगन का घोडा दबा दिया। अलेक्सेई के इंजिन की गति भग हो गयी और जब-तब उसकी धड़कन बद होने लगी। पूरा विमान इस तरह काप रहा था, मानो उसे काल-ज्वर चढ आया हो।

"मैं निशाना बन चुका हूं!" अलेक्सेई एक सफेद घने बादल मे विलीन होने मे सफल हो गया था और इस तरह अपना पीछा करनेवालो को गुमराह कर चुका था। मगर अब आगे क्या किया जाय? क्षत-विक्षत विमान की कपकपी वह अपने सारे शरीर मे महसूस कर रहा था, मानो वह उसके विमान की मौत की आखिरी तडप नही, खुद अपने शरीर का बुखार था जो उसे यो कपा रहा था।

इजिन किस जगह क्षति-ग्रस्त हुआ है? विमान कितनी देर और आसमान मे ठहर सकेगा? क्या पेट्रोल की टकी फट न जायगी? अलेक्सेई इन प्रश्नो पर उतना सोच नही रहा था, जितना उनको महसूस कर रहा था। यह अहसास कर कि वह ऐसे डायनामाइट पर बैठा हुआ है जिसका फ्यूज जलाया जा चुका है, उसने अपना वायुयान मोडा और अपनी फौजो की पातो की तरफ भाग चला, ताकि अगर काम तमाम हो ही जाय तो कम से कम उसका अतिम सस्कार उसके अपने लोगो के हाथो हो।

चरमोत्कर्ष भी अकस्मात ही आ गया। इजिन बद हो गया। विमान इस तरह जमीन की तरफ गिरने लगा मानो किसी पहाड से लुढक रहा हो। नीचे अनन्त समुद्र की घूसर-हरित लहरो की तरह जगल लहरा था। "जो हो, अब मुझे बदी न बनाया जा सकेगा," यही विचार था जो उस हवाबाज के दिमाग में उस समय कौंध गया जब विमान के पखो के नीचे, निकट के वृक्ष, एक समतल सडक की तरह एकाकार होकर सरकते नजर आ रहे थे। और जब वह सघन वन किसी

जगली जानवर की तरह उसकी तरफ झपट पड़ा तो उसने अन्तर्प्रेरित होकर मेगनेट बंद कर दिया। चकनाचूर करनेवाला धमाका सुनायी दिया और एक क्षण में ही सारी चीजे इस तरह गायब हो गयी मानो वह और उसका विमान किसी घने गहरे पानी के तल मे डूब गया हो।

गिरते समय वायुयान चीड़ के शिखरो से टकराया। इससे गिरने का जोर खत्म हो गया था। कई वृक्ष तोडता हुआ वह विमान गिरकर, चकनाचूर हो गया, लेकिन इसके एक क्षण पहले ही अलेक्सेई अपनी गद्दी से बाहर फिक चुका था और एक सदियो पुराने मोटी-मोटी डालोवाले देवदार पर गिरकर, उसकी शाखाओ पर फिसलता-टपकता वह उस बर्फ के ढेर पर गिर पडा था, जो हवा के बहाव में उस पेड की जड़ो के पास जमा हो गया था। इससे उसके प्राण बच गये।

वह कब से वहा अचेत और निस्पद पड़ा था, अलेक्सेई यह याद न कर सका। धुधली मानव-छायाए, इमारतो के रेखाचित्र और अद्भुत मशीनें उसके सामने नाचने लगी और जिस तेजी से वे उसकी आखो के सामने आ-जा रही थी, उससे उसके सारे शरीर मे एक मनहूस-सा, टुकडे-टुकड़े कर देनेवाला दर्द हो रहा था। तभी उस बवडर मे से कोई भारी-भरकम, गरम-गरम आकृति उभर आयी और उसके चेहरे पर उष्ण और दुर्गंधपूर्ण सास छोडने लगी। लुढककर वह इस वस्तु से दूर होने का प्रयत्न करने लगा, मगर उसका शरीर बर्फ मे फस-सा गया था। किसी अज्ञात भय से प्रेरित होकर उसने पुन आकस्मिक प्रयत्न किया और फौरन ही अपने फेफडो मे बर्फीली हवा का प्रवेश और कपोलो पर शीतल बर्फ का स्पर्श अनुभव किया और एक दर्द महसूस किया जो अब सारे शरीर मे नही, सिर्फ पैरो मे हो रहा था।

"मै जीवित हू!" यह विचार उसके दिमाग मे कौंध गया। उसने उठने का प्रयत्न किया, मगर उसे किसी के पैरो के नीचे बर्फ चकनाचूर

होने और पास ही किसी की खरहिट भरे कर्कश श्वास-निश्वास के स्वर सुनायी दिये। "जर्मन!" उसने सोचा और आखे खोलने, उछलकर खडे हो जाने और आत्म-रक्षा करने की इच्छा दवा ली। "वदी! आखिरकार वदी हो ही गया! मैं अब क्या करूगा?"

उसे याद पडा कि एक दिन पहले हरफन मौला मिस्त्री यूरा ने पिस्तौल रखने की जेब का फीता सी देना चाहा था क्योंकि वह फट गया था, मगर उसने नही सिया। इसी लिए इस आखिरी उडान पर आते समय, उसे अपनी पिस्तौल पतलून की जाघवाली जेब में रखनी पडी थी। उसे निकालने के लिए उसे करवट बदलनी होगी, लेकिन ऐसा किया तो दुश्मन देख ही लेगा, वह औधा पडा हुआ था। उसे पिस्तौल की नोक जाघ मे लगती महसूस हुई, मगर वह निस्पद पडा रहा। शायद दुश्मन उसे मरा समझ ले और चला जाय।

जर्मन उसके निकट चहल-कदमी करने लगा, एक अजव तरीके से उसने सास भरी और वर्फ कुचलता हुआ फिर उसके नजदीक आकर झुका। अलेक्सेई ने फिर उसके मुह से वदवूदार सास आती महसूस की। अब वह समझ गया कि पास मे एक ही जर्मन है और इससे उसे निकल भागने का मौका मिल गया है यदि वह देख-भाल ले, यकायक उठ खडा हो और इसके पहले कि वह अपनी वदूक निकाल् पाये, उसकी गर्दन पर सवार हो जाये और हाथापाई करने लगे तो . लेकिन यह सब सावधानी से और वडी वारीकी से करना होगा।

शरीर की स्थिति तनिक भी वदले विना, अलेक्सेई ने धीरे, वहुत धीरे से, आखें खोली और अधमुदी पलको से उसे कोई जर्मन नही, कोई भूरा-खुरदुरा गुच्छा दिखाई दिया। उसने आखें तनिक और खोली और फिर एकदम वद कर ली. उसके सामने एक वडा भारी, रुखा-सूखा-सा भालू कूल्हो के वल वैठा था।

३

वह भालू इस तरह खामोशी के साथ, जैसे कि सिर्फ जगली जानवर ही खामोश रह सकता है, इस निस्पद मानव शरीर के पास वैठ गया जो सूर्य की किरणो से चमकती वर्फ की नीलिमा मे मुश्किल से दिखाई दे रहा था।

उसके गदे नथुने धीरे-धीरे उठे। उसके आधे खुले जवडो के अदर से पुराने, पीले, मगर अभी भी तीखे दात दिखाई दे रहे थे और उनसे लार की पतली-सी डोर हवा में झूल रही थी।

युद्ध ने उसकी शीतकालीन निद्रा छीन ली थी और अब वह भूखा और क्रुद्ध था। लेकिन भालू मुर्दा मास नही खाते। निस्पद शरीर को सूघकर, जिसमे से पेट्रोल की तीखी गध आ रही थी, भालू अलस गति से उस मैदान मे टहलने लगा जहा इस तरह के अनेक मानव शव भुरभुरी वर्फ में जमे पडे हुए थे, लेकिन एक कराह और किंचित खडखडाहट उसे फिर अलेक्सेई के पास खीच लायी।

इसलिए अब वह अलेक्सेई के करीब फिर आ वैठा था। शव के मास से घृणा के खिलाफ भूख की तडप सघर्ष कर चली थी। भूख हावी होने लगी। उस जानवर ने सास भरी, उठ वैठा, अपने पजो से शरीर को पलट दिया और हवावाज की वर्दी को अपने नखो से फाड दिया। मगर कपडा वरकरार रहा। भालू धीमे से गुर्रा उठा। उस क्षण आखे खोलने, एक तरफ लुढक पड़ने, चिल्ला उठने और अपनी छाती पर चढे हुए भारी पशु-शरीर को धकेल देने की इच्छा को दवा लेने में अलेक्सेई को वड़ा प्रयत्न करना पड़ा। उसका रोम-रोम उसे उन्मत्त और क्रुद्ध रूप में आत्म-रक्षा करने के लिए प्रेरित कर रहा था, मगर उसने अपने को मजवूर किया कि धीरे-धीरे, अगोचर रूप में, अपना हाथ जेव में डाले, पिस्तौल की वक्र मुठिया टटोले और इस सावधानी से घोडा

चढाये कि जरा भी आवाज न हो और अपरोक्ष गति से उस हथियार को बाहर निकाल ले।

वह पशु और भी क्रुद्ध होकर उसके वस्त्र फाडने लगा। मजबूत कपडा चरमरा उठा, मगर फिर भी जमा रहा। भालू पागल होकर गरज उठा, उसे अपने दातो से चीथने लगा और रोएंदार चमडे तथा रुई को चीरकर उसने शरीर मे दात गडा दिये। इच्छाशक्ति का अंतिम बल सजोकर अलेक्सेई किसी भाति अपनी कराह दबा सका, और जिस क्षण भालू ने उसे बर्फ के ढेर मे से बाहर निकाला, उसने अपनी पिस्तौल उठायी और घोडा दबा दिया।

तीखी और गूजती हुई कडक के साथ गोली दग गयी।

नीलकण्ठ ने पख फडफडाये और तेजी से उड गया। प्रकम्पित डालो से सूखी बर्फ झर पडी। भालू ने धीरे-धीरे अपने शिकार को छोड दिया। भालू पर नजर गडाये हुए अलेक्सेई फिर बर्फ में लुढक गया। भालू कुछ देर तक कूल्हो के बल बैठा रहा, उसकी काली, कीचड भरी आखो मे किंकर्त्तव्यविमूढता का भाव उमड आया। बर्फ पर उसकी भुजाओ के बीच से मटमैले लाल खून की मोटी धार बह निकली। उसने कर्कश और भयावनी गुर्राहट की, जोर लगाकर अपने पिछले पैरो पर खडा हो गया और अलेक्सेई के दोबारा गोली चलाने से पहले ही बर्फ पर ढेर हो गया। नीली बर्फ पर धीरे-धीरे गलाबी रग चढ गया और ज्यो ज्यो वह पिघलने लगी, भालू के सिर के पास एक हल्की-सी भाप उठने लगी। जानवर मर गया था।

अलेक्सेई जिस तनाव मे फस गया था, वह यकायक ढीला पड गया। उसे फिर अपने पैरो में तीखा और जलन-भरा दर्द महसूस होने लगा। बर्फ पर पुन गिरने के बाद वह अचेत हो गया।

उसे जब होश आया तब सूरज आसमान मे काफी चढ आया था। देवदार की घनी चोटियो को चीरकर उसकी किरणे बर्फ की सुनहरी

आभा से दमक रही थी। छाया मे भी वर्फ अब नीली नही रह गयी थी—गहरी नीली हो गयी थी।

"मै भालू के वारे मे क्या सपना देख रहा था?" अलेक्सेई के दिमाग मे सवसे पहला विचार यही उठा।

नीली वर्फ पर, नजदीक ही, भालू की भूरी, ऊबड-खाबड गदी लोथ पडी थी। सारा वन स्वरो से गूज रहा था। कठफोडवा पेड़ की छाल वरावर वजा रहा था, पीली छातीवाली चचल फुदकिया इस शाख से उस शाख उछलते हुए आनन्दपूर्वक चहचहा रही थी।

"मै जिन्दा हू, जिन्दा हू, जिन्दा हू!" अलेक्सेई ने अपने मन मे वार-वार दोहराया। और उसका सारा शरीर, रोम-रोम, जीवित होने की ऐसी शक्तिशाली, अद्भुत मदभरी सवेदना से स्फर्त्त हो गया, जो कभी भी घातक खतरे से वच निकलने के वाद हर व्यक्ति पर हावी हो जाती है।

इस स्फूर्तिप्रद सवेदना से प्रेरित होकर वह उठ खडा हुआ, मगर तत्क्षण कराहकर उस भालू के शव पर लुढक गया। पैरो मे तीखा दर्द महसूस हुआ। उसका मस्तिष्क ऐसी मनहूस, गडगडाहट के स्वरो से भर गया, मानो चक्की के पुराने, खुरदरे पाट चल रहे हो और उसके माथे मे कपकपी पैदा कर रहे हो। उसकी आखे यो दर्द कर रही थी जैसे कोई व्यक्ति अपनी अगलियो से पलके दबा रहा हो। कभी तो उसे चारो ओर की वस्तुए स्पष्ट रूप में सूरज की शीतल और पीत किरणो से नहायी हुई दिखाई देती, तो दूसरे ही क्षण हर चीज धूमिल, चकाचौंध परदे के पीछे गायव होती नजर आती।

"बुरा हुआ। गिरने पर जरूर मुझे आघात पहुचा होगा। और मेरे पैरो मे भी कुछ गडवड है," अलेक्सेई ने सोचा।

कुहनी के वल उठते हुए, उसने आश्चर्यपूर्वक विस्तृत मैदान की ओर देखा जो जगल की सीमा से आगे खुला नजर आ रहा था और

उसके क्षितिज पर दूर के जंगल की सीमा [illegible] दिखाई दे रही थी।

स्पष्ट था कि शरद में या शायद शीतकाल के आरम्भ में इस जंगल की सीमा पर रक्षा-पांत थी, जहां लाल सेना [illegible] डटकर, शायद अधिक दिनों तक नहीं, मगर डटकर [illegible], मृत्यु-पर्यन्त लड़ा रहा था। बर्फीले तूफानों ने बर्फ की [illegible] की तह बिछाकर जमीन के घावों को भर दिया था, लेकिन इन सबों के बावजूद भी आंखों को लोमड़ियों की मांदें, तोपचियों के [illegible] स्थानों के ढेर और जंगल के किनारे पर तोपों से उड़े या कटे-फटे पेड़ों की जड़ें [illegible], छोटे-बड़े गोलों के गढ़े अपार संख्या में बिखरे नजर आ रहे थे। इस अर्द्ध मैदान में जहां-तहां कई टैंक पड़े थे, जो मछलियों की तरह के अनेक रंगों से रंगे थे। वे बर्फ में जमे खड़े थे और लगभग वे सभी—विचित्र दानवों के शवों की भांति लगते थे—खासकर आखिरी छोर पर पड़ा हुआ वह टैंक, जो किसी हथगोले या सुरंग के विस्फोट से इस तरह उलट गया था कि उसकी तोप मुंह से जीभ की भांति, जमीन पर लटकी पड़ी थी। और सारे मैदान में, छिछली खाइयों के कगारों पर, टैंकों के पास और जंगल की सीमा पर जर्मन सिपाहियों की लाशों के बीच लाल सेना के सिपाहियों के शव भी बिखरे पड़े थे। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि कई स्थानों पर वे एक-दूसरे पर ढेर बने पड़े थे, और वे उन्हीं मुद्राओं और स्थितियों में जमे पड़े थे जिनमें शीतकाल के आरम्भ में, कुछ महीने पहले मौत ने उन्हें युद्ध में गले लगाया था।

ये सभी चीजें अलेक्सेई से कह रही थी कि यहां जमकर भयानक युद्ध हुआ था, यहीं उसके साथी सब कुछ भूलकर लड़ते रहे थे—उन्हें सिर्फ यह याद रहा था कि उन्हें शत्रु को रोकना न, उसे यहां के आगे नहीं बढ़ने देना है। जंगल के किनारे, थोड़ी ही दूर पर, एक चीड़ वृक्ष

के नीचे—जिसका सिर किसी गोले से उड गया था और जिसके क्षत-विक्षत ऊचे तने से अब पीली-पीली पारदर्शी गोद वह रही थी—कुछ हिटलरी सिपाहियो के शव पडे थे जिनकी खोपडिया चकनाचूर थी और चेहरे विकृत थे। उनके बीच में, किसी शत्रु के शव पर एक भीमाकार, गोल चेहरे और बडे मस्तकवाला एक नौजवान आडे पडा था—उसके शरीर पर ओवरकोट न था, सिर्फ वर्दी थी, पेटी न थी और कालर फटा हुआ था; और उसके बगल मे एक बदूक पडी हुई थी जिसकी सगीन टूट गयी थी और खून से रगा कुदा टुकडे-टुकडे हो गया था।

जगल मे जानेवाली सडक पर, थोडा और आगे, बालू मे ढके एक नये देवदार वृक्ष के तले मे स्थित गोले से बने गढे मे एक सावले उजबेक सिपाही का शव पडा था, जिसका लबा-सा चेहरा ऐसा मालूम होता था मानो पुराने हाथी-दात से बनाया गया हो। उसके पीछे, देवदार वृक्ष की शाखाओ के नीचे, अनफटे हथगोलो का ढेर था; और वह उजबेक स्वय भी अपने उठाये हुए निर्जीव हाथ मे एक हथगोला सभाले था, मानो फेकने से पहले वह आसमान पर नजर डाल रहा हो और उसी मुद्रा मे जड बनकर रह गया हो।

और उससे भी आगे, जगल की राह पर, बहुरगी टैको के पास, बडे गोलो के गढो के किनारे, कुछ पुराने वृक्षो के ठूठ के पास, हर जगह, शव पड़े हुए थे, जो रूई भरे कोट और पतलूनें और मटमैली हरी वर्दिया पहने थे तथा उनके कानो पर सर्दी से बचने के लिए कनटोपे लगे थे, बर्फ के ढेर में से, मुडे हुए घुटने, उठी हुई ठुड्डिया और मोम जैसे चेहरे झाक रहे थे, जिन्हे लोमडिया कुतर चुकी थी और नीलकण्ठ तथा कौए चोच मार चुके थे।

अनेक कौए मैदान के ऊपर धीरे-धीरे चक्कर काट रहे थे और इससे यकायक अलेक्सेई को 'ईगोर का युद्ध' शीर्षक शोकजनक किन्तु

गौरवशाली चित्र का स्मरण हो आया। महान रूसी चित्रकार के चित्र* की अनुकृति इसकी स्कूली इतिहास-पुस्तक में दी गयी थी।

"इन्ही की तरह शायद मैं भी यहा पडा हुआ होता," उसने सोचा और एक वार फिर जीवित होने की सवेदना उसके रोम-रोम में पुलक उठी। उसने अपने को हिलाया-डुलाया। अभी भी उसके दिमाग में चक्की के खुरदरे पाट धीरे-धीरे चल रहे थे, पैर जल रहे थे और उनमें पहले से भी बुरी तरह दर्द हो रहा था, फिर भी वह उस भालू के शव पर बैठ गया जो सूखी बर्फ के चूरे से ढककर ठडा और रुपहला हो गया था, वह सोचने लगा कि अब क्या किया जाय, कहा जाया जाय और अपनी सेनाओ की अगली पातो तक कैसे पहुचा जाय।

हवाई जहाज से गिरते समय उसका नक्शेवाला डिब्बा खो गया था, फिर भी नक्शे के बिना ही उसके सामने उस दिशा का चित्र साकार हो उठा था, जिधर से वह उडकर आया था। जिस जर्मन हवाई अड्डे पर स्टोर्मोविको ने हमला किया था, वह अगली पात के पश्चिम की ओर ६० किलोमीटर दूरी पर स्थित था। जर्मन लडाकू हवाई जहाजो को आकाश-युद्ध मे उलझाकर, अलेक्सेई के हवाबाज उन्हे उनके हवाई अड्डे से २० किलोमीटर पूर्व की ओर ले आये थे, और, दोहरी 'कैंची' से निकल भाग आने पर वह स्वय थोडा और पूर्व की ओर आ गया होगा। इस तरह वह अपनी अगली पात से कोई ३५ किलोमीटर दूर, अगली जर्मन डिवीजनो के बहुत पीछे, उन घने जगलो के क्षेत्र में आ गिरा होगा जिसे काला जगल कहते है और जिसके ऊपर से अनेक बार आस-पास के जर्मन अड्डे पर हमला करने के लिए बममारो और स्टोर्मोविको के साथ उसने उडानें की थी। आसमान से उसे यह जगल सदैव ही हरा-भरा अनन्त

---

*व० म० वस्नेत्सोव द्वारा बनाये गये चित्र से अभिप्राय है (१८४८-१९२६)। इस चित्र का नाम है 'ईगोर स्व्यतोस्लाविच का पोलोव्त्सी के साथ युद्ध"।

नारंगी-सा दिखाई दिया था। अच्छे मौसम में यह वन चीड के वृक्षों की लहरानी चोटियों के कारण उमडता लगता था, लेकिन बुरे मौसम में झीने, धूसर कुहरे से आच्छादित वन सपाट और मनहूस गदले पानी जैसा लगता था जिसकी सतह पर छोटी-छोटी लहरिया भर लुढक रही हो।

इस बात के, कि वह इतने विशाल वन के बीच गिरा था, अच्छे और बुरे दोनों पहलू थे। अच्छा पहलू यह था कि इस अछूते वन की तलहटी में किसी जर्मन से सामना होने की सम्भावना कम थी, क्योंकि वे अक्सर सडकों और बसी हुई जगहों के इर्द-गिर्द ही रहा करते थे। बुरा पहलू यह था कि उसकी राह, यद्यपि लम्बी न थी, मगर बहुत कठिन थी; उसे घनी झाडिया पार करनी होगी और आश्रय पाने, रोटी का एक टुकडा भर पाने या गर्म पेय का एक प्याला भी पाने के लिए किसी मनुष्य की सहायता मिलने की कोई सम्भावना न थी। उसके पैर क्या वे मजिल तक ले जायगे? क्या वह चल सकेगा?.

भालू की लोथ पर से वह हौले-हौले उठा। एक वार फिर उसे वही सख्त दर्द महसूस हुआ जो पैरो से शुरू हुआ और फिर नीचे से ऊपर उठता सारे शरीर में व्याप गया। उसके होठो से पीडा की चीख निकल पडी और वह फिर बैठ गया। उसने रोएदार चमडे के बूट उतारने की कोशिश की, मगर वे तनिक भी न हिले; हर खींच-तान पर वह कराह उठता। दात भीचकर और कसकर आखें वद कर उसने दोनो हाथों से एक बूट उतार लिया—पर फौरन अचेत हो गया। जब होश आया तो उसने सावधानी से पैर पर चढी पट्टी खोल डाली। पैर सूज गया था और वह पूरे का पूरा एक नीली-नीली चोट जैसा जान पडता था। पैर का एक-एक जोड जल रहा था और दर्द कर रहा था। उसने वर्फ पर अपना पैर टिकाया तो दर्द किसी हद तक कम हो गया। उसी प्रकार उन्मत्त होकर खीच-तान करके, मानो वह अपना ही दात उखाड रहा हो, उसने दूसरे पैर से भी बूट उतार लिया।

उसके दोनों पैर बेकाम हो गये थे। स्पष्ट था कि वायुयान के पेड़ों की चोटियो से टकराने के बाद, जब वह अपने आसन से बाहर फिंक गया था, तब किसी चीज में उसका पैर उलझ गया होगा और उसके पैर का ऊपरी भाग तथा उगलिया कुचल गयी होंगी। साधारण परिस्थितिया होतीं तो निश्चय ही, अपनी ऐसी भयानक अवस्था में वह सपने में भी खड़े होने की कोशिश न करता। मगर वह इस अकेले जगल के गर्भ में, शत्रु के पृष्ठ-प्रदेश में, बिल्कुल अकेला था, जहा किसी इन्सान का सामना होने का अर्थ राहत नहीं, मौत होता। इसलिए उसने पूर्व की ओर, जगल को चीरकर, बराबर बढ़े चलने और कोई भी सहज सडक या आबाद स्थान खोजने की कोशिश न करने का सकल्प किया हर कीमत पर बढे चलने का निश्चय किया।

भालू के शव पर से वह दृढ़तापूर्वक उठ बैठा, हाफा उठा, दात किटकिटाये और पहला कदम बढाया। एक क्षण वह खडा रहा, फिर बर्फ में से दूसरा पैर निकाला और दूसरा कदम बढाया। उसके मस्तिष्क मे विभिन्न स्वर गूज उठे और मैदान घूमने लगा और उठता-लहराता गायब हो गया।

अलेक्सेई को महसूस हुआ कि वह थकन और दर्द से कमजोर होता जा रहा है। ओठ काटते हुए वह बढता गया और जगल की एक सडक तक पहुचा जो एक ध्वस्त टैंक और हथगोला थामे हुए उजबेक के पास से गुजरती, पूर्व की ओर, जगल के गर्भ मे समा गयी थी। नरम बर्फ पर लगडी चाल चलना इतना बुरा न था, मगर ज्यो ही उसके पैरो ने बर्फ से ढकी, हवाओ से सख्त बनी सडक की ऊबड-खाबड सतह को छुआ, उसका दर्द इतना दुखदायक बन गया कि उसे फिर कदम बढाने का साहस न हुआ और वह रुक गया। और इस तरह वह खडा रहा, उसके पैर इस भौंडे ढग से एक दूसरे से दूर जमे थे और उसका शरीर यो झूल रहा था, मानो आधी उसे उडाये ले जा रही हो। यकायक

उसकी आखो के सामने धूसर घुध छा गयी। सडक, देवदार के वृक्ष, चीड़ की मटमैली चोटिया और उनके बीच आसमान के नीले, आयताकार चकत्ते–ये सभी विलीन हो गये. . वह अपने हवाई अड्डे पर था, अपने ही विमान के पास खडा था और उसका मेकेनिक, दुबला-पतला यूरा, जिसके दात और आखे हमेशा की तरह उसके दाढी बढे, मलिन चेहरे पर चमक रही थी, विमान की गद्दी की तरफ इशारा कर रहा था, मानो कह रहा था "यह तैयार है, चढकर हवा हो जाओ.. ". अलेक्सेई ने विमान की तरफ पैर बढाया, मगर जमीन घूम गयी और उसके पैर इस तरह जल उठे मानो तपकर लाल-लाल धातु पर उसने पैर रख दिया हो। इस ज्वालामय स्थल से बचकर उसने वायुयान के पख की तरफ बढने का प्रयत्न किया, मगर वह उसके ठडे-ठडे ढाचे से टकरा गया। वह आश्चर्यचकित था कि हवाई जहाज का ढाचा चिकना और पालिश किया हुआ नही, खुरदरा था मानो उसपर चीड की छाल चढ़ा दी गयी हो .मगर वहा कोई वायुयान न था, वह सडक पर खड़ा था और एक पेड के तने पर हाथ फेर रहा था।

"इन्द्रजाल? चोट से शायद मेरा दिमाग फिरता जा रहा है," अलेक्सेई ने सोचा। "इस सडक पर चलना तो यातनापूर्ण होगा। क्या कही मुड चलू? मगर उससे तो चाल धीमी हो जायगी. " वह बर्फ पर बैठ गया और उसी सक्षिप्त, किन्तु तीव्रतम झटके से उसने फर-बूट निकाल डाले और उनको जर्जर पैरो के लिए आरामदेह बनाने के लिए उसने दातो और नाखूनो का जोर लगाकर बूटो के ऊपरी हिस्से को फाडकर उनका मुह खोल दिया, फिर अगोरा ऊन के रोएदार, बड़े रूमाल को दो हिस्सो मे फाडकर उनको पैरो पर लपेटकर पुन बूट चढा लिये।

अब चलना आसान हो गया। मगर इसे चलना कहना सही न होगा. चलना नही, किसी तरह आगे घसिटना, सावधानी से आगे बढना, एडी पर जोर लगाकर और पैर ऊचे उठाकर इस तरह कदम

बढाना मानो कोई आदमी दलदल में चल रहा हो। चद कदमों के बाद उसका सिर दर्द और मेहनत के जोर के कारण चक्कर खाने लगता था। वह रुकने के लिए मजबूर हो जाता, आखें बद कर लेता, किसी पेड के तने का सहारा ले लेता या बर्फ के किसी टर पर आराम करने बैठ जाता और महसूस करता कि उसकी धमनियो में खून तेजी से उछल रहा है।

इस तरह वह घटो आगे बढता रहा। मगर उसने जब घूमकर पीछे देखा तो उसे अभी भी सूर्य की किरणो से आलोकित सडक के मोड पर जगल की सीमा दिखाई दे रही थी, जहां बर्फ पर उस उजवेक का शव एक काले धब्बे-सा पडा हुआ था। अलेक्सेई को घोर निराशा अनुभव हुई। निराशा तो अवश्य, मगर भय नही। उसमें और तेज चलने की भावना जाग उठी। वह बर्फ के ढेर पर से उठ बैठा, दात कसकर भीच लिये और नजदीक ही कोई लक्ष्य चुनकर, उसपर ध्यान केन्द्रित करते हुए, चीड के एक पेड से दूसरे पेड तक, एक ठूठ से दूसरे ठूठ तक, बर्फ के एक ढेर से दूसरे ढेर तक, वह बराबर बढता चला गया। और ज्यो-ज्यो वह बढता जा रहा था, त्यो-त्यो अपने पीछे जगल की उस वीरान सड़क पर अछूती बर्फ के ऊपर टेढ़े-मेढे, टूटे-फूटे चरण-चिह्न इस तरह छोडता जा रहा था, जैसे कि कोई घायल जानवर छोड़ता है।

४

और इस तरह वह शाम तक चलता रहा। पीठ पीछे डूबते हुए सूरज ने, जब अपनी शीतल अरुणिमा वृक्ष-शिखरो पर बिखेर दी और जगल मे साये घने होने लगे, तब तक वह जूनिपर की झाडियो के दोन तक पहुंच चुका था, और यहा उसकी आखो के सामने ऐसा दृश्य साकार हो गया कि जिससे उसे महसूस हुआ मानो किसी ने उसकी रीढ पर गीला तौलिया फेर दिया हो, और टोप के तले उसके बाल खडे हो गये हो।

स्पष्ट था कि जब मैदान मे युद्ध चल रहा था, तब इस दोन मे मेडिकल दस्ता नियुक्त किया गया था। यहा घायल लाये जाते थे और देवदार की नुकीली पत्तियो की शैया पर उन्हे लेटाया जाता था। और यहा अभी भी झाड़ियो के साये मे वे घायल, वर्फ के नीचे आधे गडे हुए और कुछ तो पूरी तरह गडे हुए पडे रह गये थे। पहली ही नजर से यह स्पष्ट था कि वे अपने घावो के कारण नही मरे थे। किसी ने छुरे के कुशल वारो से उनके गले काट दिये थे और वे सब अभी भी उसी स्थिति और मुद्रा मे, गर्दने पीछे की तरफ लटकाये हुए पड़े थे, मानो यह देखने की कोशिश कर रहे हो कि उनकी पीठ पीछे क्या हो रहा है। और इस भयानक काण्ड का कारण भी यहा मिल रहा था। एक देवदार के नीचे, लाल सेना के किसी सिपाही के वर्फ से ढके शव के पास, एक नर्स कमर तक वर्फ मे धसी अपनी गोद मे इस सिपाही का सिर रखे बैठी थी—वह छोटी-सी दुबली-पतली युवती थी जो सिर पर रोएदार खाल की टोपी पहने थी और इस टोपी के कनफुदने ठोड़ी के नीचे फीते से बधे थे। उसके कधो के बीच किसी छुरे की बढ़िया पालिशदार मूठ झलक रही थी। पास में एस० एस० टुकडी की काली वर्दी पहने फासिस्ट सिपाही और माथे पर खून रगी पट्टी बाधे रूसी सिपाही के शव पडे थे। दोनो अपने आखिरी सघर्ष मे एक दूसरे का गला पकड़े थे। अलेक्सेई ने फौरन अनुमान कर लिया कि इसी काली वर्दीधारी ने घायलो की हत्या की थी और ज्यो ही उसने नर्स को छुरा मारा था, त्यो ही वह सिपाही, जो अभी मरा नही था, हत्यारे पर टूट पड़ा था और शत्रु का गला दबाने के लिए उसने अपनी आखिरी शक्ति को उगलियो में भर लिया था।

और फिर वर्फीले तूफान ने सभी को दफन कर दिया था—वह रोएदार खाल की टोपी पहने छरहरी युवती, जो अपने शरीर की आड़ करके घायल सिपाही की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही थी, और ये

दो – हत्यारे और [illegible] – जो [illegible] मुर्दों के पैरों के पास [illegible] – उन [illegible] पैरों में पुराने और खूब चौड़े फौजी बूट थे।

अलेक्सेई कुछ क्षण तक [illegible] और फिर [illegible] लड़खड़ाता हुआ [illegible] गया और [illegible] लिया। यह एस० एस० कटार थी जो पुरानी [illegible] बनायी गयी थी और उसकी महोगनी [illegible] पर एस० एस० का [illegible] चिह्न बना था। उसके [illegible] फल पर अभी भी यह [illegible] था "इंग्लैंड जिंदाबाद।" अलेक्सेई ने [illegible] निकाल लिया [illegible] आवश्यकता पड़ेगी। फिर उसने बर्फ के नीचे से [illegible] जमा हुआ लबादा [illegible] के साथ नर्स के शव को इस लबादे से ढक दिया और उस पर [illegible] की कुछ डालियां रख दी

यह करते-करते सांझ उतर आयी। वृक्षों के बीच से झांकती रोशनी की लकीरें भी मिट गयीं। इधर दोन पर घना और बर्फीला अंधेरा छा गया। सब ओर शांति थी, किन्तु सांझ की हवा के झकोरे वृक्ष-शिखरों को झकझोर रहे थे और वन गा रहा था कभी सुहावनी लोरियां, तो कभी भयपूर्ण राग। बर्फ गिरने लगी, और सूक्ष्मतम शुष्क कण, जो अब आंखों से दिखाई तो न देते थे किन्तु हल्की-सी सरसराहट के साथ झर रहे थे और चेहरे पर चुभ रहे थे, इस दोन के अन्दर भी उड़ते चले आ रहे थे।

वोल्गा स्तेपी में कमीशिन नगर में जन्मा, एक नगरनिवासी, वन-जीवन से अनुभवहीन अलेक्सेई ने रात का सामना करने की या आग जलाने की तैयारी न की थी। घने अंधकार से घिर जाने और अपने क्षत-विक्षत तथा थकित पैरों मे असहनीय पीड़ा अनुभव करने के कारण, उसमें लकड़ी जुटाने की शक्ति ही न थी, वह रेंगते हुए एक नवविकसित देवदार के घने झुरमुट में घुस गया और वृक्ष के नीचे बैठ

गया; उसने कधे सिकोड लिये, अपना सिर भुजाओ से घिरे हुए घुटनो पर टेक लिया और अपनी ही श्वास-निश्वास से अपने को गरम बनाता हुआ बिल्कुल मूर्त्तिवत बैठकर उस नीरवता और शान्ति का उपभोग करने लगा।

वह अपना पिस्तौल तैयार रखे था, मगर जगल मे गुजारी गयी उस पहली रात मे, वह उसका उपयोग करने में समर्थ होता, यह सदिग्ध है। वह निर्जीव लट्ठे-सा पडा सोता रहा। उसे न चीड की अनवरत खडखड़ाहट सुनाई दी, न सडक के पास ही कही बैठे हुए उल्लू की कर्कश बोली और न कही दूर पर से भेडियो का चीत्कार--गरज यह कि इस जगल के कोई भी स्वर उसे न सुनाई दिये, जिन से वह घना अधकार परिपूर्ण था जिसकी चादर मे वह लिपटा पडा था।

लेकिन जब उषा की पहली किरण फूट पडी और जब उस मनहूस पाले मे निकट की वृक्ष-राशि धुधली छायाकार प्रतीत होती थी, तब वह चौककर जाग पडा, मानो उसे किसी ने हिला दिया हो। जागने पर ही उसे याद आ सका कि उसपर क्या बीती है और वह कहा पर है, और अब, जब सब कुछ बीत चुका था तब जिस असावधानी से उसने जगल में रात गुजारी थी उसका स्मरण करने से रोमाच हो आया। भीषण ठड उसके रोएदार खाल के अस्तरवाली वर्दी के भीतर घुसकर हड्डियो तक पैठ चुकी थी। वह कापने लगा, मानो ज्वर चढ रहा हो। उसके पैरो का तो और भी बुरा हाल था; दर्द पहले से भी ज्यादा तेज हो गया था, हालाकि इस समय वह आराम कर रहा था। खडे होने की कल्पना मात्र से ही वह भयभीत हो उठा। फिर भी एक झटके के साथ उसी प्रकार वह दृढतापूर्वक उठ खडा हुआ, जिस तरह पिछले दिन उसने पैरो से बूट खीचे थे। एक-एक क्षण अमूल्य था।

अलेक्सेई जितनी यातनाए भोग रहा था, उनमें भूख की यातना और जुड गयी। पिछले दिन जब उसने नर्स के शव पर लबादा डाला था, तब नर्स की बगल में उसने रेड क्रास का कनवास थैला पडा देखा

था। कोई छोटा जानवर इसकी सामग्री पहले ही चट कर चुका था और जमीन में जानवरो द्वारा बनाये गये छदो के पास बर्फ पर कुछ टुकडे पडे हुए थे। इनकी तरफ पिछले दिन अलेक्सेई ने कोई खास ध्यान न दिया था, मगर अब उसने वह थैला उठाया और उसमे कई तरह की मरहम पट्टिया, गोश्त का एक बडा टिन, चिट्ठियो का एक गट्ठा और एक शीशा मिला जिसके पीछे की तरफ किसी दुबले चेहरेवाली, बूढी महिला का चित्र था। स्पष्ट था कि थैले में कुछ रोटी के टुकडे भी रहे होगे, लेकिन चिडियो या जानवरो ने उनको निपटा दिया था। अलेक्सेई ने गोश्त के डिब्बे और पट्टियो को अपनी वर्दी के हवाले कर दिया और अपने आप से कहा "धन्यवाद प्रियवर"। उसने वह लबादा फिर सभाल दिया जिसे हवा ने नर्स के पैरो पर से हटा दिया था, और पूर्व दिशा की ओर बढ चला, जो अब वृक्षो की डालियो के जाल के पीछे नारगी रग की लौ से आलोकित हो गयी थी।

अब उसके पास एक किलोग्राम गोश्त का टिन हो गया था और उसने सकल्प किया कि वह दिन में एक बार, दोपहर को, खाया करेगा।

५

एक-एक पग पर अलेक्सेई जो यातना भोग रहा था, उसकी तरफ से ध्यान हटाने के लिए उसने अपने रास्ते के बारे में सोच-विचार करना और हिसाब-किताब लगाना शुरू कर दिया। अगर वह हर दिन दस या बारह किलोमीटर चले तो तीन दिन में या अधिक से अधिक चार दिन में अपने लक्ष्य तक पहुच जायगा।

"यह ठीक रहा! मगर दस या बारह किलोमीटर चलने का मतलब क्या होगा? दो हजार कदम का एक किलोमीटर होता है, इस तरह दस किलोमीटर के बीस हजार कदम हुए, लेकिन, अगर यह ध्यान रखा

जाय कि मुझे हर पाच या छ सौ कदम के बाद आराम करना होगा तो यह बहुत बैठेगा. "

पिछले दिन यात्रा आसान बनाने के लिए अलेक्सेई ने कुछ प्रत्यक्षदर्शी लक्ष्य बनाये थे कोई चीड वृक्ष, कोई ठूठ या सडक का कोई गड्ढा और इस तरह हर लक्ष्य को विश्राम-स्थल बनाता हुआ वह उसकी तरफ बढ रहा था। अब उसने यह सब आकडो मे परिवर्तित कर दिया—यानी किसी खास सख्या तक कदमो के रूप मे। उसने प्रत्येक मजिल के लिए एक हजार कदम की सीमा यानी आधा किलोमीटर, और घडी देखकर एक निश्चित समय तक यानी पाच मिनट तक ही विश्राम की अवधि निश्चित की। उसने हिसाब लगाया कि इस तरह, यद्यपि कठिनाई का सामना करना पडेगा, फिर भी वह सूर्योदय से सूर्यास्त तक दस किलोमीटर पार कर सकेगा।

किन्तु प्रारम्भिक एक हजार पग कितने कठिन थे! दर्द भुलाने के लिए उसने कदम गिनना शुरू किया, मगर पाच सौ के बाद वह गिनती भूल गया और उसके बाद दाहक और बेधक पीडा के अतिरिक्त, अन्य कोई बात न सोच सका। इस सबके बावजूद, फिर भी, उसने एक हजार कदम पूरे कर ही लिये। बैठने की शक्ति के अभाव मे वह बर्फ पर औंधा लेट गया और उसे भूखे की तरह चाटने लगा, उसने अपना मस्तक और कनपटिया बर्फ से चिपका दी और हिम-स्पर्श से अवर्णनीय आनन्द अनुभव करने लगा।

वह सिहर उठा और घडी की ओर देखने लगा। सेकड की सुई निश्चित पाच मिनटो के आखिरी सेकडो पर से गुजर रही थी। भागती हुई सुई की तरफ उसने भयपूर्वक दृष्टि डाली और इस तरह काप उठा, मानो जब उसका चक्कर पूरा हो जायगा तो कोई भयकर काण्ड होने की सम्भावना है, किन्तु, ज्यों ही वह सुई साठ के अक पर पहुची वह एक कराह भरकर फौरन खडा हो गया और आगे चल दिया।

दोपहर तक, जब चीड की घनी शाखाओ को चीरकर आनेवाली रवि-रश्मिया जगल के अर्ध-अधकार मे रेशमी डोरो-सी चमक रही थी और पेडो की गोद और पिघली बर्फ की तीखी गध जगल मे भर उठी थी, तब तक वह सिर्फ चार मजिले पार कर पाया था। अतिम मजिल के बाद वह बर्फ पर लुढक गया, क्योकि उसमे इतनी भी शक्ति न बची थी कि वह भोजपत्र के वृक्ष के तने का सहारा ही ले सके जो लगभग एक हाथ की दूरी पर ही था। यहा वह बडी देर तक छाती पर सिर लटकाये बैठा रहा, वह कुछ नही सोच पा रहा था, कुछ नही देख या सुन रहा था, भूख की तडप तक उसे महसूस न हो रही थी।

उसने गहरी सास ली, बर्फ के कुछ टुकडे मुह मे डाले और जिस जडता से उसका शरीर बधा था, उसे दूर कर उसने जेब मे गोश्त का जग खाया टिन निकाला और छुरा निकालकर उस डिब्बे को खोल डाला। उसने जमी हुई, निस्वाद चर्बी का एक टुकडा मुह मे डाला और उसे निगलना ही चाहता था कि वह चर्बी पिघल गयी। पिघली हुई चर्बी का स्वाद मिलते ही उसे भूख की ऐसी ज्वाला सताने लगी कि वह बडी ही कठिनाई से अपने को डिब्बे से अलग कर सका, और कोई भी चीज निगलने की गरज से बर्फ के टुकडे खाने लगा।

और आगे बढने से पहले उसने जूनिपर झाडी की टहनिया काटकर एक जोडा छडी बना ली। वह इन छडियो के सहारे चलने लगा, मगर ज्यो-ज्यो समय बीतता गया, उसके लिए चल पाना अधिकाधिक दूभर होता गया।

६

उस घने वन मे यातनापूर्ण यात्रा के तीसरे दिन, जिसमे उसे कही भी मनुष्य का चिह्न नही मिला, एक अप्रत्याशित घटना हो गयी।

सूर्य की पहली किरण के साथ वह शीत और अदरूनी ज्वर से

कांपता हुआ जाग गया। अपनी वर्दी की एक जेब में उसे सिगरेट लाइटर मिल गया जिसे उसके मेकेनिक ने खाली कारतूस के खोल से बनाया था और उपहार-स्वरूप भेट किया था। इसके बारे मे वह बिल्कुल भूल ही गया था, वरना वह आग जला सकता था और जला भी लेना चाहिए था। जिस चीड के वृक्ष के नीचे वह सोया था उसकी सूखी और काई जमी डालिया तोडकर उसने उन्हे चीड की पत्तियो से ढक दिया और आग लगा दी। नीलगू धुए के बीच से लपलपाती हुई पीली ज्वालाए उठने लगी। सूखी, गोदयुक्त लकडी शीघ्र ही विह्वल भाव से जल उठी। लपटे चीड की पत्तियो पर झपटी और हवा का सहारा पाकर हिसहिसाती और कराहती हुई उमड पडी।

अलाव से शुष्क सुखकर गर्मी आ रही थी। अलेक्सेई का मन एक सुखद भावना से भरपूर हो उठा। उसने अपनी वर्दी के जिपर तोड डाले और अदर की कमीज की जेव से गुजले हुए कुछ पत्र निकाले जो एक ही हस्तलिपि में लिखे हुए थे। एक पत्र के अदर सेलाफोन के टुकडे मे लिपटी हुई एक तस्वीर निकली, जिसमे फूलोवाली छीट की फ्राक पहने एक छरहरी लडकी घास पर पैर समेटे हुए बैठी थी। वह काफी देर तक उस फोटो की ओर दृष्टि गडाये रहा और फिर उसी सेलाफोन के टुकडे मे उसे लपेटकर लिफाफे मे वद करके वह क्षण भर किन्ही विचारो मे लीन-सा उसे हाथ में थामे रहा और अत में उसे जेव के हवाले कर दिया।

"सब ठीक है, सब कुछ ठीक हो जायगा," उसने कहा, उस लडकी से या अपने आप से, यह बताना कठिन है। और पुन विचारलीन होकर उसने दोहराया "सब ठीक है "

फिर अभ्यस्त भाव से उसने रोएदार खाल के बूट झाडे और ऊनी पट्टिया खोलकर पैरो की परीक्षा करने लगा। वे और भी सूज आये थे, उगलिया सभी दिशाओ मे फैल गयी थी, पैर ऐसे लगते थे मानो

हवा भरकर फुलाये गये गुब्बारे हो और पिछले दिन की अपेक्षा और भी गहरे स्याह रग के हो गये थे।

अलेक्सेई ने ठडी सास ली, बुझती हुई आग की ओर विदाई की नजर डाली और पुन अपनी यात्रा पर चल पडा—उसकी छडिया सख्त बर्फ पर किटकिटाने लगी। वह ओठ काटता हुआ बढ रहा था और कभी कभी तो लगभग चेतना खो बैठता था। यकायक जगल के उन सामान्य स्वरो के बीच, जिनके प्रति उसके कान इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि उन स्वरो की ओर वह कान भी न दे पाता था, उसे मोटर इजिनो की दूरागत धडकन सुनायी पडी। पहले तो उसने सोचा कि वह थकान के कारण मायावी भ्रम का शिकार हो रहा है, किन्तु वह आवाजें और भी तीव्र हो उठी—कभी पूरे वेग से धडधडाती, तो कभी मद हो जाती। स्पष्ट था कि वे जर्मन है और वे उसी दिशा में आ रहे है जिसमे वह स्वय जा रहा था। फौरन अलेक्सेई का दिल दहल उठा।

भय ने उसमें शक्ति भी पैदा कर दी। अपनी थकान और पैरो का दर्द भूलकर वह सडक से मुड गया और एक झाडी की ओर चल दिया वहा पहुचकर वह उसके अदर रेग गया और बर्फ पर लेट गया। सडक से उसे देख पाना तो कठिन था, मगर देवदार की चोटियो की कटीली चहारदीवारी से ऊपर चढ आये सूरज की किरणो से रोशन सडक को वह खुद बखूबी देख सकता था।

आवाजें और करीब आ गयी। अलेक्सेई को याद आया कि जहा से उसने रास्ता छोडा है, वहा से उसके चरण-चिह्नो की रेखा साफ दिखाई देती है, किन्तु यहा से भागने की कोशिश करने के लिए अब अवसर भी नही था, क्योकि सबसे आगे की गाडी के इजन की धड-धड अब बहुत करीब आ गयी थी। अलेक्सेई बर्फ से और भी अधिक चिपक गया। पहले एक लम्बी, पचकोण, सफेद रग की बख्तरबद गाडी पत्तियो के बीच से प्रगट हुई। डगमगाते हुए और जजीरें खनखनाते हुए वह

गाड़ी उस स्थान के निकट आ पहुची जहा से अलेक्सेई के पद-चिह्न सड़क छोड़कर मुड़ गये थे। अलेक्सेई ने सास रोक ली। वख्तरबद गाडी बढ़ती ही गयी। उनके बाद एक छोटी खुली हुई मोटर-गाडी निकली। ऊची टोपी पहने और रोएदार खाल के कोट के भूरे कालर में अपनी नाक घुसेड़े हुए कोई व्यक्ति ड्राइवर की बगल में बैठा था और उसके पीछे ऊची बेंचो पर बैठे, मोटर-गाडी के हर धचके से झूलते हुए कई टामी-गन वाले बैठे थे, जो घूसर-हरित ग्रेटकोट और लोहे के कनटोप पहने थे। उससे कुछ पीछे एक और, मगर पहली से बडी खुली गाडी पेटियो से चरमराती और खनखनाती हुई प्रकट हुई और उसमे पद्रह जर्मन कतारो मे बैठे थे।

अलेक्सेई बर्फ से और भी जोर से चिपक गया। गाडिया इतने पास आ गयी थी कि उनके इजिन से निकलनेवाली बेकार गैस के थपेडे अलेक्सेई के मुह पर पड रहे थे। उसे महसूस हुआ कि गर्दन पर रोए खडे हो गये है और उसकी मास-पेशिया तनकर गेंद बन गयी है। मगर गाडिया गुजर गयी, उनकी गैस की गध विलीन हो गयी और उनके इजिनो की आवाज कही इतनी दूर पहुच गयी थी कि सुनना कठिन था।

जब सब शात हो गया तो अलेक्सेई फिर सडक पर निकल आया जहा गाडियो की पेटियो के चिह्न साफ दिखाई दे रहे थे, और इन्ही चिह्नो के पीछे-पीछे वह पूर्व की ओर बढ चला। वह उसी तरह नपी-तुली मजिले बाधकर चलने लगा, वह उसी तरह विश्राम करता और उसी तरह आधे दिन का रास्ता तय करने के बाद उसने नाश्ता किया। किन्तु अब वह जगली पशु की तरह, अत्यन्त सावधानी से चल रहा था। उसके चौकन्ने कान तनिक-सी आहट भी पकड लेते, उसकी आखे चारो तरफ इस तरह घूमती, मानो आस-पास कोई बडा भारी और खतरनाक जानवर घात मे बैठा है।

एक हवाबाज के लिए, जो आकाश-युद्ध का ही अभ्यस्त हो, यह पहला अवसर था जब उसने सामने भूमि पर जीवित और अक्षत शत्रु

को देखा था। अब उनके कदमों के चिह्नों पर वह चहलकदमी कर रहा था और प्रतिशोध के भाव से वह हँस पड़ा। यहाँ शत्रु को मजे मारने का मौका भी नहीं मिल रहा है, जिस भूमि पर उसने अधिकार जमा लिया है, वहीं उसे न कोई आनन्द मिला और न कोई आतिथ्य! इस अक्षत वन में, जहाँ पिछले तीन दिन में अलेक्सेई को इन्सान का कोई निशान तक न मिला, शत्रु का अफसर इतने अधिक अंगरक्षकों की छाया में यात्रा करने के लिए विवश हो रहा था।

"सब ठीक है, सब कुछ ठीक हो जायगा।" अलेक्सेई ने अपना हौसला बढ़ाने के लिए कहा और यह भुलाने की कोशिश करते हुए कि उसके पैरों की पीड़ा अधिकाधिक तीव्र होती जा रही है और प्रत्यक्षत वह स्वयं सारी शक्ति खोता जा रहा है, वह कदम-ब-कदम बढ़ता ही चला गया। नन्हे देवदार की नरम छाल चबाकर और निगलकर, अथवा भोज वृक्ष की कड़वी कलियां खाकर या लाइम वृक्ष की नाजुक और लपकती छाल चूसकर, जो मुंह में चुसनी-गोंद जैसी लगती है, अब अपने पेट को धोखा देना सम्भव न रहा।

सांझ होते-होते वह मुश्किल से पांच पड़ाव पार कर पाया था। मगर रात में उसने भोज वृक्ष के आधे सड़े, बड़े भारी तने के चारों ओर, जो उसे जमीन पर पड़ा मिल गया था, बड़ी तादाद में देवदार की डालियां और सूखी झाड़ियां जमाकर भारी आग जलायी। तना मद्धिम चमक और सुलगकर उष्णता प्रदान करता हुआ सुलगता रहा और वह उस जीवन-दायिनी उष्णता का आनंद लेते हुए स्वभावत पहले एक करवट और फिर दूसरी करवट बदलता हुआ पांव फैलाये सोता रहा, और कभी जाग उठता ताकि उस लट्ठे के अगल-बगल हौले-हौले लपलपाती हुई ज्वालाओं को पुनर्जीवित करने के लिए झाड़-झंखाड़ और रख दिये जायें।

अर्धरात्रि को बर्फीला तूफान आया। भयभीत चीड़ वृक्ष झूमने, खड़खड़ाने, चटखने और कराहने लगे। नुकीले हिम-कणों के बादल धरती

पर उमड पडे। छनछनाती, भभकती आग के चारो ओर खड़खड करती हुई मनहूसियत घुमडने लगी। लेकिन इस अधड से अलेक्सेई विचलित न हुआ, वह आग की उष्णता से सरक्षित, गहरी और मधुर निद्रा में लीन था।

आग ने वन्य पशुओ से भी उसकी रक्षा की। और जहा तक फासिस्टो का प्रश्न है, ऐसी रात मे उनसे डरने की कोई आवश्यकता न थी। बर्फीले अधड मे वे घने जगल के अदर प्रवेश करने की हिम्मत ही नही कर सकेगे। इतना होते हुए भी, यद्यपि उसका थकित शरीर धूम-धुआरी आग की गर्मी मे विश्राम कर रहा था, फिर भी उसके कान, जो वन के निवासियो के लिए आवश्यक सावधानी के अभ्यस्त हो चुके थे, हर आवाज के बारे मे चौकन्ने थे। भोर होने से पहले, जब तूफान शान्त हो गया और मौन धरती पर घना सफेद कुहरा घिर आया, तब अलेक्सेई को लगा कि झूमते हुए चीड वृक्षो की खडखडाहट और हिम-पात की कोमल थपकियो के स्वर के ऊपर कही दूर से युद्ध की ध्वनिया, विस्फोटो, टामी-गनो के दगने और बदूके चलने की आवाजे आ रही है।

"मोर्चे की पात क्या इतने करीब हो सकती है? इतनी जल्दी?"

७

लेकिन जब सुबह हवा ने कुहरे को छिन्न-भिन्न कर दिया और जगल, जो रात में रुपहला हो गया था, ठडे और दमकते सूरज की रोशनी में चमक उठा और पखधारी जीव, मानो इस आकस्मिक रूपान्तर से आनन्दित होकर फुदकने, चहचहाने और बसतागम की आशा मे गाने लगे, तब अलेक्सेई को बहुत कान लगाने पर भी, न तो किसी युद्ध की आहट जान पडी और न किसी बदूक के दगने या तोप तक के गरजने की आवाज़ सुनाई दी।

सूर्य की रोशनी में चमचमाते हुए [illegible] हिम-कण मानो [illegible] झरने की तरह वृक्षों से झर रहे थे। जहाँ-तहाँ भारी [illegible] भूमि पर पड़ी बर्फ के ऊपर हल्की-सी [illegible] से गिर पड़ते थे। [illegible] पहली बार उसने [illegible] और [illegible] से अपना आगमन घोषित किया था।

अलेक्सेई ने डिब्बे में से बची-खुची सोयी चर्बी में लिपटे हुए गोश्त के चन्द टुकड़ों का भी खात्मा करने का निश्चय किया, क्योंकि उसे लग रहा था कि अगर उसने ऐसा न किया तो वह उठने भर की शक्ति भी न जुटा पायेगा। उसने उंगलियों से उस तरह डिब्बा बिल्कुल साफ कर दिया कि [illegible] किनारों की रगड़ से जहाँ-तहाँ उसकी उंगलियाँ कट गयी, किन्तु फिर भी उसे यही लगता रहा कि अभी भी चरबी की खुरचन कहीं लगी रह गयी है। उसने डिब्बे में बर्फ भर ली, बुझती हुई आग की राख हटा दी और दमकते कोयलों पर डिब्बा रख दिया। बाद में गोश्त की हल्की गन्ध से सुवासित गर्म पानी को उसने अत्यन्त स्वाद से पी डाला। पानी गरम कर उसने डिब्बा फिर जेब में खिसका दिया—इस इरादे से कि बाद में उसे चाय बनाने के लिए इस्तेमाल करेगा। गरम चाय! यह आनन्ददायक खोज थी, और इस बार जब उसने पुन यात्रा आरम्भ की, तो इस खोज के कारण उसका हौसला कुछ बढ़ गया।

किन्तु अभी तो उसपर एक और बड़ी निराशा टूट पड़नेवाली थी। रात के बर्फीले तूफान में सड़क पूर्णतया विलीन हो गयी थी, बर्फ के कोणाकार और ढलवा ढेरों के कारण वह मार्ग अवरुद्ध हो गया था। उस एकरस, आसमानी चकाचौंध से अलेक्सेई की आंखें दुखने लगीं। फुसफुसी और अभी तक अनजमी बर्फ में उसके पैर धस-धस जाते थे और वह बड़ी ही कठिनाई से उन्हें निकाल पाता था। इस स्थिति में उसकी छड़िया भी किसी काम की नहीं रह गयी थी, क्योंकि वे भी बर्फ में गहरी धस जाती थीं।

दोपहर तक, जब पेडो के नीचे साये गहरे हो चुके थे और वृक्षों की चोटियो के ऊपर से सूरज सघनता की दरारो के बीच से झाकने लगा था, तब तक अलेक्सेई सिर्फ करीब पद्रह सौ कदम पार कर पाया था और वह इतना थक चुका था कि इच्छाशक्ति का जबर्दस्त जोर लगाकर ही वह एक एक कदम चल पाता था। उसे चक्कर आ गया। पैरो तले जमीन खिसक गयी। बार-बार वह गिर पडता, बर्फ के किसी ढेर के ऊपर कुरकुरी बर्फ से मस्तक चिपकाये हुए वह एक क्षण निर्जीव-सा पडा रहता और फिर उठकर चद कदम और चल पडता। सोने की, लेट जाने और सब कुछ भूल जाने की, कोई भी अग न हिलाने-डुलाने की अदम्य आकाक्षा उसे सताने लगी। जो होना है वह हो। वह रुक जाता, सुन्न-सा खडा रहता, इधर-उधर डगमगाता-फिरता और फिर ओठ इतने जोर से काटकर कि उनमे दर्द हो उठता, वह अपने को सभालता और बडी मुश्किल से पैर घसीटते हुए कुछ कदम बढ जाता।

अत मे उसने अनुभव किया कि अब वह आगे नही चल पायगा, कोई ताकत नही जो उसे इस जगह से हिला सके, और अगर वह बैठ गया तो कभी न उठ सकेगा। उसने चारो ओर लालसापूर्ण दृष्टि डाली। सडक के किनारे एक नन्हा-सा, घुघराला चीड वृक्ष खडा था। बचा-खुचा जोर लगाकर अलेक्सेई उस ओर बढा और उसके ऊपर गिर पडा। उसकी ठोडी आडी डालियो पर जा टिकी। उससे उसके टूटे हुए पैरो पर से कुछ भार कम हो गया और उसे कुछ राहत महसूस हुई। वह स्प्रिग जैसी शाखाओ पर झुक गया और विश्राम का उपभोग करने लगा। जरा और आराम पाने की गरज से उसने पेड की आडी डाल पर ठोडी टिकाये हुए अपना एक पैर फैला दिया और फिर दूसरा भी सीधा कर दिया, और इस तरह अपने पैरो को पूर्णतया भार-मुक्त करते हुए उन्हे आसानी से बर्फ में से निकाल लिया। इस बार उसे एक और शानदार सूझ आयी।

८

और इस तरह वह दो दिन तक बर्फ से ढकी सडक पर, बैसाखी आगे बढाकर, उस पर पूरा भार डालता और पैर घसीटता लगडी चाल से चलता रहा। इस समय तक उसके पैर सुन्न पड गये थे और कुछ महसूस न करते थे, मगर उसका सारा शरीर हर कदम पर दर्द से ऐंठा जाता था। अब भूख की आग भी महसूस न होती थी। पेट की मरोड और शूल-सा दर्द अब मद-मद, अनवरत पीडा बनकर रह गया था, मानो खाली पेट अब सख्त हो गया है और उलटा होकर अतडियो को दबा रहा है।

विश्राम के क्षणो मे अलेक्सेई अपनी कटार से किसी नवविकसित चीड की छाल छील लेता, भोज वृक्ष और लाइम वृक्ष की कलिया चुनता और बर्फ के नीचे से नर्म, हरी काई भी उखाडकर रात के पडाव मे पानी मे उबाल लेता—यही उसका भोजन बन गया था। आनन्द की चीज थी 'चाय' जिसे वह गली हुई बर्फ के चकत्तो मे से झाकती हुई बिलबेरी पौधे की रोगनदार पत्तिया चुनकर तैयार करता था। इस गर्म पेय से सारे शरीर मे उष्णता फैल जाती और उसे तुष्टि का भ्रम भी हो जाता। धुए और पत्तो की गध से भरे उस गर्म पेय का घूट लेते हुए उसे राहत मिलती और यात्रा इतनी अनन्त और भयानक न महसूस होती।

छठवे पडाव पर वह फिर एक घने चीड के हरे खेमे के अदर लेटा और एक पुराने, गोदभरे ठूठ के इर्द-गिर्द आग जला ली, जो उसके हिसाब से सारी रात सुलगती और आग देती रहेगी। अभी भी उजाला था। ऊपर, चीड की चोटी की शाखाओ मे कही एक अदृश्य गिलहरी चीड के चिलगोजो का मजा ले रही थी और जब-तब खाली और क्षत-विक्षत फलो को धरती पर फेक रही थी। अलेक्सेई, जिसका दिमाग अब

बराबर भूख की तरफ केन्द्रित था, हैरान था कि गिलहरी को इन चिलगोजों में क्या मजा मिल रहा है। उसने एक चिलगोजा उठाया, एक तरफ से उसकी पर्त उठा दी और उसके नीचे बाजरे के दाने के बराबर छोटा-सा बीज पाया। देखने में वह देवदार वृक्ष का नन्हा-सा बीज मालूम होता था। उसने बीज को मुह में डाल लिया, दांतों से पीस डाला और देवदार के तेल का मधुर स्वाद महसूस किया।

फौरन उसने कुछ ताजे चीड के चिलगोजे जमा किये, जो जमीन पर बिखरे थे, उन्हे आग पर रखकर थोडे से झाड-झंखाड रख दिये, और जब आग से इन चिलगोजों के मुह खुल गये तो उनके बीजों को हाथ में हिलाया, हथेलियो से पीसकर उसका छिलका उडा दिया और फंकी मारकर मुह में रख लिया।

जगल हल्की-सी गुजार से गूज रहा था। गोद भरा ठूठ सुलग रहा था और हलका-सा सुगधित धुआ इस तरह छोड रहा था कि अलेक्सेई को अगरबत्ती की याद आ गयी। छोटी-छोटी लौए काप उठती थी, किसी क्षण तेजी से जल उठती तो दूसरे क्षण बुझ जाती और इस प्रकार वे सुनहले चीडो और रुपहले भोज वृक्षो के तनो को कभी प्रकाश के गोल घेरे से बाध देती तो कभी उन्हे गहरी मनहूसियत के पर्दे मे ढक देती।

अलेक्सेई ने आग पर कुछ झाड-झखाड और रख दिये और पहले की भाति कुछ और चिलगोजो को भूज लिया। देवदार के तेल की सुगध से उसके मस्तिष्क में सुदूर बचपन के भूले हुए दृश्य उभर आये. सुपरिचित वस्तुओ से भरा हुआ वह छोटा-सा कमरा। छत से लटके हुए लैम्प के नीचे वह मेज। छुट्टी के दिन की पोशाक पहने हुए उसकी मा, जो अभी गिरजाघर से लौटी थी, गम्भीरतापूर्वक सदूक से कागज का थैला निकालती है और एक कटोरे में देवदार के फल उडेल देती है। सारा परिवार—मा, दादी, उसके दो भाई और सबसे

छोटा वह स्वयं—मेज के चारो ओर बैठे है और देवदार के फल छीलने का पुनीत कार्य—छुट्टी के दिन का विलास—प्रारम्भ हुआ। कोई एक शब्द नही बोलता। दादी वालो मे लगनेवाले पिन से बीज निकाल रही थी और मा एक पिन की मदद से। वह बडी होशियारी से दात के बीच कोण रखकर उसका छिलका तोडती, उसके अदर से बीज निकालती और मेज पर ढेर बनाती जाती, और जब काफी ढेर जमा हो जाता तो वह हथेली पर रखकर उन्हे किसी बच्चे के मुह मे उडेल देती, और सौभाग्यशाली बच्चा अपने होठो पर उनके खुरदरे, सख्त काम-काज से फटे हाथो का स्पर्श अनुभव करता, जिनसे आज छुट्टी का दिन होने के कारण झरबेरी की सुगध के साबुन की महक आती।

कमीशिन .. बचपन! नगर की सीमा पर स्थित उस नन्हे-से घर मे रहना कितना आनन्ददायक था! . लेकिन यहा, जगल के शोरगुल के बीच, एक तरफ चेहरा आग-सा तप रहा है और दूसरी तरफ पीठ मे ठड तीर-सी बेध रही है। अधेरे मे कही उल्लू बोल रहा है, लोमडिया रो रही है। आग के किनारे गठरी बना हुआ और बुझती हुई आग की कापती हुई लौ को चिन्तित भाव से ताकता हुआ एक भूखा, बीमार और थकान से चूर इसान बैठा है—इस विस्तृत और घने जगल में केवल अकेला और उसके सामने अधेरे मे डूबी हुई अनजानी सडक है जो न जाने कितनी अप्रत्याशित परीक्षाओ और खतरो से पूर्ण है।

"यह भी ठीक है, सब ठीक हो जायगा!" वह व्यक्ति यकायक कह बैठा और आग की लौ की आखिरी चमक मे साफ देखा जा सकता था कि किसी रहस्यपूर्ण विचार से प्रेरित होकर उसके फटे होठ मुसकराहट बनकर फल गये थे।

६

अपनी यात्रा के सातवे दिन अलेक्सेई को ज्ञात हुआ कि उस अधड़ की रात में किसी दूरस्थ युद्ध की आहट कहा से मिली थी।

थकान से बिल्कुल चूर, हर क्षण विश्राम के लिए रुकता हुआ, वह गलती हुई बर्फ से भरी जगल की सड़क पर अपने को घसीटे लिये जा रहा था। बसत अब दूर न था, वह अपनी उष्ण और झकझोरती हुई हवाए लेकर इस अक्षत वन मे आ पहुचा था, उसकी निर्मल सूर्य-रश्मिया डालियो से छनकर आ रही थी और टीलो और पहाड़ियो से वर्फ बुहार रही थी, वह अपने साथ लाया था, साझ के समय क्षोभार्त्त काव-काव गुजानेवाले काले कौए, सड़क की कुबड़ो पर मद-मद गम्भीर चाल से फुदकनेवाले काक, नम वर्फ जो अब मधुमक्खी के छत्ते की तरह छिद्रपूर्ण हो गयी थी, गड्ढो मे पिघली वर्फ की चमचमाती हुई पोखरिया और वह अत्यत मादक सुगध जो हर जीव को आनन्द से अर्द्धमूर्च्छित कर देती है।

अलेक्सेई को वर्ष का यह काल बचपन से ही प्रिय था और अब भी, जब वह भूख से पीड़ित, दर्द और थकान से मर्च्छित स्थिति में गड्ढो-पोखरियो के बीच भारी और भीगे हुए बूटो मे बधे दुखदायी पैरो को घसीटता और पोखरियो, दलदली बरफ और असामयिक कीचड़ को कोसता चला जा रहा था, तब लालायित भाव से उसने नम और मादक सुगध से फेफड़े भर लिये। अब वह ठौर-कुठौर नही देखता था, गड्ढो-पोखरियो से बच निकलने का प्रयत्न न करता था, वह ठोकर खाता, गिर पड़ता, फिर उठ बैठता, डगमगाता हुआ बैसाखी पर पूरा बोझ डालकर खड़ा हो जाता और ताकत सजोता, और फिर जितना दूर हो सके उतने आगे डडे को बढा देता और हौले-हौले पूर्व दिशा की ओर बढना जारी रखता।

यकायक, एक ऐसे स्थान पर जहा वन मार्ग अकस्मात बायी तरफ मुड गया था, वह रुक गया और टकटकी बाधे खडा रह गया। जिस जगह सड़क असाधारण रूप से सकरी थी, वहा दोनो तरफ नवजात घने देवदारो की आड मे खडी हुई वही जर्मन गाडिया दिखाई दे रही थी, जो कुछ दिन पहले उसके करीब से गुजरी थी। उनका रास्ता चीड के दो बड़े भारी वृक्षो से रुका था। इन पेडो के ठीक बगल मे, वही पचखूटी बख्तरबद गाडी पड़ी थी और उसका रेडियेटर उन वृक्षो के बीच मे फसा था, मगर अब यह गाडी सफेद चकत्तो के रग की नही, जग खाये हुए लाल रग की हो गयी थी और अपने पहियो के रिम के बल झुकी खड़ी थी, क्योकि उसके टायर जल गये थे। उसका छप्पर एक पेड के नीचे बर्फ पर दानवाकार कुकुरमुत्ते की तरह पडा हुआ था। बख्तरबद गाडी के पास तीन लाशे—उसके चालको की—काली और तेल से सनी जाकेटे और कपडे के कनटोप पहने पडी हुई थी।

दो अन्य मोटर-गाडिया जग खाये हुए लाल रग की पड गयी थी। उनके अदर का भाग जला हुआ था। वे मोटर-गाड़िया उस बख्तरबद गाडी के बगल मे पिघलती बर्फ पर खडी थी और वहा की बर्फ धुए, राख और जली लकडी के कारण काली पड गयी थी। चारो ओर, सडक पर, सडक के किनारे की झाडियो के नीचे, खाइयो में हिटलरी सिपाहियो के शव पडे थे, और उनके चेहरो से स्पष्ट था कि वे भयभीत होकर भाग खडे हुए थे और, अघड द्वारा खडे किये गये सफेद पर्दो के पीछे से, उनके ऊपर हर वृक्ष और हर झाडी की ओट से, मौत टूट पडी थी और इसके पहले कि वे जान पाते कि क्या हो रहा है, वे काल के गाल मे समा गये। अफसर का शरीर, सिर्फ उसकी पतलून गायब थी, एक पेड से बधा था। उसकी हरी वर्दी के स्याह कालर पर एक कागज़ का टुकडा पिन से लगा था, जिस पर लिखा था "जैसा करने जा रहे थे,

वैसा भरो," और उसके नीचे किसी अन्य हस्तलिपि में, पक्की पेंसिल से, "लेडी कुत्ता" लिखा हुआ था।

खाने की चीज की खोज में अलेक्सेई ने उस युद्ध-स्थल की तलाशी ली। सिर्फ एक जगह उसे सामान और सख्त रोटी का टुकड़ा मिला जो बर्फ में कुचला गया था और चिड़िया की चोंचें मारा हुआ था। उसने उसे फौरन मुह से लगा लिया और व्याकुलतापूर्वक राई की रोटी की खमीरी गंध सांस में समेट ली। उसके मन में रोटी के समूचे टुकड़े को मुह में रखने और सुगन्धित, गूदे जैसी रोटी को चूसने, चूसते जाने, बराबर चूसते रहने की तीव्र लालसा जाग उठी, लेकिन इस इच्छा को उसने दबा दिया और रोटी के तीन टुकड़े किये, उनमें से दो टुकड़े उसने आधवाली जेब के हवाले किये और फिर तीसरे टुकड़े के निवाले तोड़े और हर निवाले को चूसनी-गोली की तरह चूसने लगा और जितनी देर सम्भव हो सके, आनन्द लूटने का प्रयत्न करने लगा।

एक बार फिर उसने युद्ध-स्थल का चक्कर काटा और उसमें एक नयी सूझ टकरा गयी "छापेमार आस-पास ही होंगे। झाड़ियों में और पेड़ों के पास की दलदली बर्फ उन्ही के पैरो से रौंदी पड़ी है।" और शायद इन लाशो के बीच उसे टहलते हुए किसी ने देख भी लिया हो और क्या जाने, शायद किसी देवदार की चोटी पर बैठा या झाड़ी के पीछे छिपा हुआ कोई छापेमार उसकी निगरानी कर रहा हो? हाथों का लाउडस्पीकर बनाकर अलेक्सेई पूरी ताकत से चिल्लाया

"ओ हो! छापेमारो! छापेमारो!"

उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी आवाज इतनी मद और कमजोर हो गयी है। उसकी बनिस्बत तो घने जगल के गर्भ से लौटी हुई प्रतिध्वनि, पेड़ के तनो से दुबारा गूजकर, ज्यादा जोरदार मालूम होती थी।

"छापेमारो! छापेमारो! ओ हो!" शत्रु की खामोश लाशो

के बीच काले, गीज मनी वर्फ पर बैठकर उसने वार-बार यही पुकार लगायी।

वह आवाज लगाता और जवाब के लिए कानो पर जोर देता। अब उसकी आवाज भी बैठ उठी और फट गयी, समझ गया कि अपना काम खत्म कर और विजयोपहार लेकर छापेमार कभी के जा चुके होंगे— और वास्तव में इस निर्जन वीरान वन मे उनके ठहरने से लाभ ही क्या था? फिर भी वह पुकार लगाता रहा, किसी चमत्कार की आशा लगाये रहा, आशा करता रहा कि जिस दाढीवाले व्यक्ति के विषय मे उसने इतना अधिक सुन रखा है, वह यकायक झाडियो के बीच से प्रगट हो जायगा, उसे सभाल लेगा और ऐसी जगह ले जायगा जहा पर एक दिन या एक घटे ही सही, वह आराम कर सकेगा, उसे किसी वात की चिन्ता न रहेगी और न कही पहुचने के लिए प्रयत्न करना होगा।

गूजती और कापती प्रतिध्वनि के स्वर मे सिर्फ जगल ही जवाव दे रहा था। लेकिन यकायक, चीड की गहरी और मधुर गुजार के ऊपर उसने हल्की और वेगवती धम-धम की आवाज सुनी या कहिए कि जिस जोर से कान लगाकर वह सुन रहा था, उसमे उसे जान पडा कि वह सुन रहा है, यह आवाज कभी विल्कुल साफ सुनाई देती और कभी विल्कुल हल्की और अस्पष्ट। वह इस तरह चौंक उठा मानो इस वीराने मे किसी मित्रतापूर्ण आवाज ने पुकारा हो। वह अपने कानो पर विश्वास न कर सका और गर्दन लम्बी किये हुए ध्यान लगाकर देर तक बैठता रहा।

नही! वह भूल नही कर रहा था! पूर्व दिशा से नम पवन वह रही थी और साथ मे कही दूर पर छूटती तोपो के दगने की आवाज ला रही थी। यह गोलावार उन धीमी और छितरी आवाजो जैसा नही था, जो वह पिछले महीने सुना करता था, जब दोनो पक्ष सुदढ रक्षा पातो में जमकर और किलेवन्दी करके एक दूसरे को परेशान करने के

के खोल मे बना सिगरेट-लाइटर निकाला और उसके छोटे-से इस्पाती पहिये को रगडा, एक बार फिर रगडा—और उसके शरीर मे कपकपी छूट गयी: लाइटर खुश्क हो चुका था। उसने उसे हिलाया-डुलाया, गैस के आखिरी कतरो को सुलगाने की गरज से उसमें फूक मारी, मगर कुछ न हाथ लगा। रात घिर आयी। जब तब लाइटर से जो चिनगारिया झर पडती थी, उनसे एक क्षण उसके चेहरे के आसपास का अधेरा दूर हो जाता था। वह लाइटर का पहिया तब तक रगडता रहा जब तक कि चिनगारिया झरना बन्द न हो गयी, फिर भी आग न तैयार कर सका।

वह अधेरे में रास्ता टटोलते-टटोलते नन्हे से चीड वृक्ष के निकट पहुचा, उसके नीचे गठरी बनकर बैठ गया, घुटनो पर अपनी ठुड्डी टेक ली, उनको अपने हाथो मे कस लिया और जगल की खड-खड ध्वनिया सुनता हुआ खामोश बैठा रहा। उस रात शायद वह मायूसी का शिकार हो जाता, मगर उनीदे जगल में उसे तोपो की गडगडाहट और भी साफ सुनाई दे रही थी और उसे महसूस हुआ कि अब वह गोलो के दगने तथा उनके दूर जाकर गिरने के विस्फोटो की आवाजो में भेद कर पा रहा है।

प्रातःकाल जब वह जागा तो, अवर्णनीय घबराहट और क्लेश से पीडित था। उसने अपने आप से प्रश्न किया "यह क्या था? क्या दुःस्वप्न था?" उसे याद पडा सिगरेट-लाइटर। किन्तु इस समय जब आसपास की प्रत्येक वस्तु—फुसफुसी बर्फ, पेडो के तने, और चीड़ की नुकीली पत्तिया तक—चमक और दमक रही थीं, तब सूर्य की जीवनदायिनी रश्मियो की उष्णता से उद्दीप्त होकर उसे अपने दुर्भाग्य की उतनी चिन्ता न रह गयी थी। मगर उससे बुरी बात यह थी कि जब उसने अपने सूजे हाथो को घुटनो पर से हटाया, तो उसने देखा कि अब उसके लिए उठना भी असम्भव हो गया था। उठने की कई

कोशिशें करने के कारण उसका [illegible] टूट गया और वह बोरे की तरह धम् से जमीन पर गिर पड़ा। अपने दुखते हुए अंग-प्रत्यंग को राहत देने के लिए वह पीठ के बल लुढ़क गया और चीड़ की शाखाओं के पार अनन्त नीले आकाश को निहारने लगा जहा चमकीली स्वर्ण-कोरों से सुसज्जित, सफेद, रुई जैसे बादल भागे चले जा रहे थे। शरीर किसी भाति सीधा हो गया मगर पैरों को न जाने क्या हो गया था। एक क्षण भी वे उसका बोझ वहन न कर सकते थे। चीड़ का वृक्ष पकड़कर उसने एक बार फिर उठने का प्रयत्न किया और अन्त सफल भी हुआ, किन्तु ज्यो ही उसने अपने पाव पेड़ की तरफ बढ़ाने का प्रयत्न किया, त्यो ही कमजोरी के कारण और पैरों मे एक नये प्रकार की भयानक पीड़ा के वशीभूत होकर वह लुढ़क गया।

क्या अंत निकट है? क्या उस चीड़ के वृक्ष के नीचे ही उसकी मृत्यु हो जायगी, जहा जगल के जीव-जन्तुओं द्वारा साफ की गयी उसकी हड्डिया भी किसी को न मिलेगी, कोई उन्हे न गाड़ेगा? कमजोरी के वशीभूत होकर वह धरती से चिपक गया। किन्तु दूर पर तोपें गरज उठी। वहा युद्ध हो रहा था और उसके अपने साथी वहा मौजूद थे। क्या इस आठ या दस किलोमीटर दूरी पार करने की शक्ति वह न सजो सकेगा?

तोपों की गड़गड़ाहट से उसमें नयी शक्ति भर गयी, वह उसको बार-बार आवाहन करने लगी और इस आवाहन पर वह खुद भी कमर कस उठा। वह चारो हाथ-पैरो के बल उठ बैठा और प्रारम्भ मे अतर्प्रेरणा से प्रेरित होकर चौपाये की भाति चलने लगा, मगर बाद में यह देखकर कि डडे की सहायता की अपेक्षा इस ढग से जगल पार कर लेना आसान होगा, वह इस रीति से जान बूझकर, सचेतन भाव से चलने लगा। अब कोई बोझा न ढोना था, इसलिए उसके पैरो में पीड़ा भी कम हुई और अपने हाथो तथा घुटनो के बल वह चल भी तेजी से पा रहा था। और

एक बार फिर उसे अनुभव हुआ कि आनन्दवश उसका गला भर आया है। और मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति की हिम्मत बढा रहा हो, जो हिम्मत हार चुका है और इस विचित्र तरीके से आगे बढने की सम्भावना पर सदेह कर रहा है, वह जोर से बोल उठा

"अब सब ठीक है, मेरे भाई, अब सब ठीक हो जायगा!"

अपनी एक मजिल पार कर चुकने के बाद, अलेक्सेई ने अपने सुन्न हाथो को बगल में दबाकर गर्म किया और फिर एक नये देवदार वृक्ष के पास सरक गया, उसकी छाल के दो चौकोर टुकडे काटे और भोज वृक्ष के तने से उसके रेशे की लम्बी-लम्बी पट्टिया उखाड ली, हालाकि इस क्रिया मे उसके हाथो के नाखून तक उखड गये। फिर उसने अपने रोयेंदार बूटो पर से ऊनी गुलूबद की पट्टिया उतार ली और अपने हाथो में लपेट ली, उगलियो की पोरो पर उसने छाल के टुकडे रखे तथा रेशे की पट्टियो से उन्हे लपेटा और फिर उस सब को मरहमपट्टी के तस्मे से बाध दिया। इस प्रकार दाहिने हाथ में खूब मोटा और आरामदेह दस्ताना चढा लिया। मगर बायें हाथ के विषय में वह उतना कामयाब न हुआ—यहा ये पट्टिया बाधने मे उसे दातो का सहारा लेना पडा। फिर भी उसके हाथो मे एक तरह के 'जूते' थे और अलेक्सेई फिर अपनी राह चल दिया—इस बार उसे यात्रा कुछ सहज प्रतीत हुई। अगले विश्राम-स्थल पर उसने घुटनो मे भी इसी तरह के टुकडे बाध लिये।

दोपहर तक, जब गर्मी काफी हो चली थी, उसने हाथो के बल काफी 'कदम' पार कर लिये थे। या तो इस कारण कि वह उस जगह के करीब पहुच गया था जहा से तोपो की गडगडाहट आ रही थी, या किसी कर्णेन्द्रिय-जनित भ्रम के कारण, उसे वह आवाजे और भी जोरदार मालूम होने लगी थी। अब इतनी गर्मी हो गयी थी कि अलेक्सेई अपनी विमान-चालक वर्दी के जिपर खोलने के लिए मजबूर हो गया।

काई से ढके स्थान पर, जिसमें कोनों में इक्के-दुक्के धूसर पिघलती हुई बर्फ में से झांकने लगे थे, जब वह रास्ता पार कर रहा था, तभी उसके भाग्य ने एक और उपहार भेजा दिया। मगर, गर्म और नम काई के ऊपर उसे किसी फलदार पौधे की टहनियां दिखायी दीं, जिनमें अनूठे ढग की, नुकीली, आबदार पत्तियों के बीच टीलों के ऊपर ही लाल, थोडे-से पिचके हुए, मगर अभी भी रसीले, क्रैनबेरी, के फल लगे हुए थे। अलेक्सेई ने टीलो के ऊपर सिर झुकाया और होंठों से उस गर्म, मखमली काई मे से, जिससे दलदल की सोंधी गंध उठ रही थी, बेर के बाद बेर चुगने लगा।

क्रैनबेरी के जायकेदार खट-मिट्ठे फलों के कारण—जो कई दिनों के बाद उसे पहली बार भोजन नाम की चीज के रूप में मिला था—उसके पेट मे मरोड होने लगी। लेकिन उसके दिमाग मे इतनी शक्ति ही कहा थी कि वह मरोड शान्त हो जाने के लिए इतजार कर पाता। वह भालू की तरह एक टीले से दूसरे टीले पर मुह मारता और अपने होंठो और जीभ से मीठी और खट्टी बेरिया चुन लेता। इस प्रकार उसने कई टीले साफ कर दिये और उसे न तो अपने जूतो में वसन्त ऋतु के पानी पैठ जाने की नमी अनुभव हुई, न पैरो का जलन भरा दर्द महसूस हुआ और न थकान मालूम पडी—मुह मे खट-मिट्ठे स्वाद और पेट मे दिलकश भारीपन के अलावा उसे और कुछ नही अनुभव हो रहा था।

उसे कै हो गयी, मगर फिर भी वह अपने को न रोक सका और बेरियो पर फिर जुट गया। उसने अपने हाथो से खुद बनाये हुए 'जूते' उतार दिये और अपने पुराने टिन को बेरियों से भर लिया, उसने अपने चमडे के कनटोप को भी भर लिया, उसे एक फीते से अपनी पेटी में बाध लिया और सारे शरीर में फैलती जानेवाली ऊंघ को बडी मुश्किल से दबाकर वह आगे रेंग चला।

उस रात एक पुराने देवदार वृक्ष के तले बसेरा बनाकर उसने वही

बेरिया खायी, और पेड की छाल तथा देवदार के चिलगोजे के बीज चबाये। फिर वह लुढक गया, मगर उसकी नीद चौकन्ने पहरेदार जैसी थी। अनेक बार उसे महसूस हुआ कि अंधेरे मे कोई व्यक्ति खामोशी के साथ उसकी तरफ रेंगता आ रहा है। वह आखें फाडकर देखता, कानो पर इतना जोर डालता कि उनमे सन-सन होने लगती, पिस्तौल निकाल लेता और देवदार के हर चिलगोजे के गिरने की आहट, रात की सख्त बर्फ के चटखने की आवाज और बर्फ के नीचे बहनेवाले नन्हे-से झरने की हल्की लहर-ध्वनि से चौक-चौक पडता।

भोर होने से तनिक पहले ही उसे गहरी नीद आ सकी। उसकी नीद जब टूटी तो रोशनी खूब फैल चुकी थी और उस पेड के नीचे, जहा वह सो रहा था, उसे किसी लोमडी के पैरो के टेढे-मेढे चिह्न और उनके बीच मे उसकी घसिटती हुई पूछ की लम्बी रेखा नजर आयी।

"तो यही थी जिसने मेरी नीद बार-बार भग की!" चिह्नो से यह स्पष्ट था कि लोमडी ने चारो तरफ चक्कर लगाया था, वहा बैठी भी रही थी और फिर चक्कर लगाने लगी थी। अलेक्सेई के दिमाग मे एक बदख्याल कौंध गया। शिकारी कहा करते है कि यह चालाक जानवर आदमी की मौत का आना भाप जाती है और मृत्योन्मुख व्यक्ति का चक्कर लगाने लगती है। क्या इसी पूर्वबोध के कारण यह डरपोक जानवर यहा आया था?

"फिजूल बात! कितनी बेबुनियाद बात है! सब ठीक हो जायगा," उसने अपना हौसला बढाने के लिए कहा और हाथो तथा घुटनो के बल वह फिर रेंगने लगा और रेंगता रहा और इस मनहूस जगह से शीघ्र से शीघ्र दूर होने का प्रयत्न करने लगा।

उस दिन उसका भाग्य एक बार फिर खिल उठा। सौरभपूर्ण जूनिपर झाडी में, जहा वह होठो से मटमैली बेरिया चुग रहा था, उसे झरी हुई पत्तियो का विचित्र ढेर दिखाई दिया। उसने हाथ से यह ढेर छुआ,

मगर टेर जमा ही रहा। तब उसने पत्तियो को एक-एक कर अलहृदा किया और अंत मे किन्ही खस्ताहाल काटो पर उसका हाथ पडा। वह तुरन्त भाप गया कि वह साही है। वह भारी-भरकम साही थी जो शीतकालीन नीद पूरी करने के लिए झाडी मे घुस आयी और अपने को गर्म रखने के लिए पतझर की पत्तियो मे दुबक गयी। अलेक्सेई पर उन्मत्त आह्लाद सवार हो गया। इस यातनापूर्ण यात्रा भर वह किसी पशु-पक्षी को मारने का सपना देखता आ रहा था। कितनी ही बार उसने पिस्तौल तानी और किसी नीलकण्ठ, सोयका या खरगोश को निशाना बनाने का इरादा किया, लेकिन हर बार बडी कश-मकश के बाद वह गोली दागने की आकाक्षा को दबा पाया, क्योकि उसके पास सिर्फ तीन गोलिया शेप थी—दो शत्रु के लिए और तीसरी, आवश्यकता पडने पर, अपने लिए। हर बार उसने पिस्तौल वापिस रख लेने के लिए अपने को मजबूर किया, उसे खतरा मोल लेने का कोई अधिकार नही।

और अब सचमुच ही उसके हाथ गोश्त का टुकडा लग गया था। वह यह बिना सोचे-विचारे कि आम विश्वास के अनुसार साही अपवित्र जीव समझी जाती है, उसने फौरन शेप पत्तिया भी हटा दी। साही सोती रही, लुढक भी गयी और काटेदार, भारी-भरकम, अजीबोगरीब सेम जैसी मालूम दे रही थी। अलेक्सेई न अपनी कटार के एक वार से उसे मार डाला, उसे खोला, उसके ऊपरी कवच को और अदर की पीली चमडी को उतार दिया और लोथ के टुकडे-टुकडे कर, लोलुपता के साथ, अपने दातो से गर्म, धूमर, नसदार मास को नोचने लगा, जो हड्डियो मे बुरी तरह चिपका हुआ था। इस जानवर का कुछ भी न बचा। अलेक्सेई ने छोटी-छोटी हड्डिया भी चबा डाली, उन्हे निगल लिया और तब जाकर उसे कुत्ते जैसे बदबूवाले उस गोश्त के बदजायके का अहसास हुआ। लेकिन भरे पेट के मुकाबले, जिसमे सारे शरीर मे तृप्ति स्फूर्ति और मदालसा पैदा हो गया था, उस दुर्गंध की क्या बिसात थी?

उसने फिर चारो तरफ देखा जो भी हड्डी मिली, उसे उठाकर फिर चूसा और उष्णता तथा शान्ति का उपभोग करते हुए वर्फ पर लेटा रहा। उसे अगर झाडियो से निकली लोमडी की सतर्क गुर्राहट न सुनाई दी होती तो शायद वह सो ही जाता। अलेक्सेई ने फिर कान लगाये और यकायक दूर पर गरजनेवाली तोपो की आवाज के ऊपर, जिसे वह बरावर पूर्व की दिशा से आती सुन रहा था, उसने मशीनगनो के दगने की आवाज पहचानी।

सारी थकान फेककर, लोमडी की वात भुलाकर और आराम की आवश्यकता भूलकर, वह फिर घने जगलो की गहराइयो के अदर रेग गया।

११

जिस दलदल को उसने पार किया था, उसके वाद एक मैदान था जिसके वीच मे दोहरी टट्टी वाली चहारदीवारी खिची हुई थी, जिसमे मौसम खाये वास, सरपत और घासपात की रस्सियो से, जमीन मे गडे खूटो से वधे थे।

इन वासो के वीच, जहा-तहा, वर्फ के नीचे से कोई परित्यक्त, निर्जन सडक झाक रही थी। इससे पता चलता था कि आसपास ही कही आदमी वसते है! अलेक्सेई का दिल उछल पडा। इसकी तो सम्भावना ही कठिन थी कि इस सुदूर स्थान मे हिटलर सिपाही कभी पहुच पाये हो, और आ भी गये हो, तो अपने आदमी भी कही आसपास ही होगे, और वे निश्चय ही एक घायल आदमी को पनाह देगे और अवश्य ही यथासाध्य सहायता देगे।

अपने भटकने का अत निकट आया समझकर, अलेक्सेई पूरी शक्ति से, एक क्षण भी विराम किये विना, आगे वढता चला। वह रेगता ही गया, यद्यपि सास फूल रही थी, वर्फ पर औधे मुह गिर पडता था,

चूर होकर चेतना खो बैठता था, फिर भी वह उस टीले की चोटी पर पहुचने के लिए तेजी से रेंगता ही गया, क्योंकि वहा से उसे कोई ऐसा गाव दिखाई पड जाने की आशा थी जहा वह अपना आश्रय-स्थान बना सकेगा। किसी बस्ती तक पहुच जाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देने की आकुलता में वह यह देख पाने में असमर्थ रहा कि उस धारा के अलावा, और उस सडक के अतिरिक्त, जो अब बर्फ के बाहर अधिकाधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगी थी, उस क्षेत्र में और कोई चिह्न नही था जिससे कि आसपास किसी इंसान के होने का बोध हो सके।

अन्तत वह टीले की चोटी पर पहुच ही गया। हांफते हुए, सांस के लिए तडपते हुए अलेक्सेई ने आखें उठायी और फौरन मीचे झपका ली—ऐसा भयानक था वह दृश्य जिसने उसका साक्षात्कार हुआ।

इसमें कोई सन्देह नही कि हाल तक यहा इस वन में एक छोटा-सा ग्राम था। वर्फ से ढके जले-जलाये मकानो के खंडहरो के ऊपर ऊची नीची पातो में सिर उठाये हुए चिमनियो को देखकर उस ग्राम की रूपरेखा सहज ही पहचानी जा सकती थी। यहा वहा बच रहे थे कुछ बगीचो के अवशेष, बेंतो की चहारदीवारें या नंगे गंदे वृक्ष, जो किसी की खिडकी के बाहर उग आये थे। अब निर्जीव-से और आग में जलकर स्याह बने ये सब वृक्ष बर्फ के ऊपर गडे खडे थे। यह बर्फ से ढका मैदान मात्र था, जिसमें कटे हुए जगल के ठूठो की भाति चिमनिया खडी थी और बीच में, इस दृश्य से बिल्कुल बेमेल-सी, एक कुए की क्रेन उझक रही थी, जिसपर पुराना, लोहे की पत्ती मढा लकडी का डोल लटक रहा था और हवा के झोंको के बल जग खायी हुई जजीर से हौले-हौले झूल रहा था। और उधर, गाव के प्रवेश-स्थल पर, हरे-भरे बाडे से घिरे एक बगीचे के पास एक सुन्दर मेहराब खडी थी, जिसके नीचे दरवाजे का किवाड, जग खायी चूलो पर हल्के-हल्के डोलता हुआ चरमरा रहा था।

कही कोई जीव नही, कोई आवाज नही, कही पर धुए की रेख नही। रेगिस्तान मात्र। कही भी किसी जीवित इसान का कोई चिह्न नही। एक खरगोश, जिसे अलेक्सेई ने झाडी मे भयभीत कर दिया था, भाग खडा हुआ और बडे ही मजेदार ढंग से अपनी पिछली टागे फटकारता हुआ सीधा गाव की तरफ नौ-दो-ग्यारह हो गया। वह मेहराब के दरवाजे पर रुका, अपने पिछले पैरो पर बैठ गया, उसने सामने के पजे उठाये और एक कान तिरछा किया, किन्तु इस भारी-भरकम, अजीबोगरीब जानवर को अपनी राह पर फिर रेग पडते देखकर वह खरगोश फिर जले-जलाये वीरान बगीचो के किनारे-किनारे गायब हो गया।

यान्त्रिक गति से अलेक्सेई आगे बढता गया। उसके दाढी भरे कपोलो पर से बडे-बडे आसू ढुलक गये और बर्फ मे विलीन हो गये। वह मेहराब के उस द्वार पर रुका जहा एक क्षण पहले खरगोश रुका था। उस दरवाजे पर एक तख्ती के बचे-खुचे हिस्से पर 'किड ' अक्षर लिखे रह गये थे। यह समझ पाना कठिन न था कि इस हरे-भरे बाडे के अन्दर किसी किडरगार्टन का साफ-सुथरा भवन था। गाव के बढई की बनायी हुई कुछ छोटी बेचे भी मौजूद थी। उसने बच्चो के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उन्हे रदा फेरकर और काच से रगडकर समतल और चिकना किया था। अलेक्सेई ने धक्का मारकर दरवाजा खोला, रेगकर वह एक बेंच पर बैठना चाहता था मगर उसका शरीर पेट के बल सरकने का इतना आदी हो चुका था कि वह उठकर बैठ न सका। किसी भाति वह बैठ ही गया तो सारी रीढ दर्द करने लगी। विश्राम के लिए वह बर्फ पर लेट गया और इस तरह अर्ध चक्राकार हो गया जैसे थके जानवर लेटते है।

उसका मन भारी और दुखी हो उठा।

बेंच के चारो ओर बर्फ पिघल रही थी, उसमे से काली धरती प्रकट हो रही थी जिससे गर्म-गर्म भाप रोशनी मे कापती, बल खाती

हुई उठती साफ-साफ दिखाई दे रही थी। अलेक्सेई ने मुट्ठी भर गर्म और नर्म मिट्टी ली यह उसकी उगलियो मे से सरसराकर गिर गई वह मिट्टी और उसमे से गोबर जैसी सोधी-सोधी गध, गोशाला और निस-गुने घर की खुशबू आ रही थी।

यहा इसान रहते थे, किसी समय, शायद बहुत जमाना बीत गया, तब उन्होंने जमीन के इस टुकड़े को घने वन-क्षेत्र से छीना था, अपने लकडी के हलो से उसकी जुताई की थी, ढेरो पत्थर उससे ढोकर फेंके थे, उसमें खाद दी थी और उसकी चिन्ता की थी। जगल और जगली जानवरो के खिलाफ बराबर सघर्ष करना, अपनी फसल तक गुजर-बसर चलाने की चिन्ता से बराबर परेशान रहना — वह कितना कठिन जीवन था। सोवियत शासन आने पर सामूहिक खेत बनाया गया और वे बेहतर जिन्दगी का सपना देखने लगे, खेती की मशीनें आ गयी और उनके साथ आत्मनिर्भरता भी। गाव के बढइयो ने एक किंडरगार्टन बनाया और शाम को इसी बगीचे मे गुलाबी कपोलो-वाले बच्चो को उछलने-कूदते देखकर ग्रामवासी सोचते होगे कि अब एक क्लब और वाचनालय बनाने का समय आ गया है जिसमें जाडे की वह सांझ गरमाई और चैन के साथ बितायी जा सके जब बाहर बर्फीला अधड चिंघाडता फिरता है, वे इस जगल की गहराइयो के बीच बिजली लाने का सपना देख रहे होगे मगर यहा क्या रह गया — निर्जनता मात्र, जगल मात्र, अनन्त निर्द्वन्द्व मौन के अतिरिक्त और कुछ नही

इस विषय पर अलेक्सेई जितना सोचता गया, उसका मस्तिष्क उतना ही सक्रिय होता गया। उस कमीशिन का दृश्य, वह वोल्गा पर सपाट और शुष्क स्तेपी मैदान में बसे हुए छोटा-सा धूसर कस्बा, उसकी आखो के सामने साकार हो उठा। ग्रीष्म और पतझड में स्तेपी की तेज हवाए धूल और बालू के बादल लेकर उस कस्बे पर उमडा करती थी, चेहरो पर थपेडे मारती थी, घरो मे घुस आती थी, बद खिडकियो में

से झपट पडती थी, आखे अधी वन जाती थी और दात किसकिसे कर जाती थी। स्तेपी से उठनेवाले यह रेतीले वादल 'कमीशिन वर्षा' के नाम से पुकारे जाते थे और कई पीढियो से कमीशिन की जनता इस वालू की आधी को रोकने और शुद्ध, ताजी हवा मे भर सास लेने का सपना देखती आ रही थी। किन्तु यह स्वप्न तो समाजवादी देश मे ही पूरा हो सकता है। लोगो ने आपस मे विचार-विमर्श किया और आधी और धूल के खिलाफ जिहाद छेड दिया। हर शनिवार को सारी आबादी छड़-फावडे और कुल्हाडिया लेकर निकल पडती और शीघ्र ही नगर के बीच खाली पडे मैदान मे एक पार्क वन गया और छोटी-छोटी गलियो के दोनो ओर नये-नये क्षीणकाय पोपलर वृक्षो की पाते सज गयी। लोगो ने इतनी सावधानी से इन पेडो को पानी दिया और छाट-छूट की, मानो वे उनकी अपनी खिडकियो पर उगनेवाली किसी बेल के फूल हो। अलेक्सेई को स्मरण हो आया कि जब वसत काल मे पतली-पतली नगी शाखाओ म कोपले निकली और उन्होने हरियाली की पोशाक ओढ ली तो कस्बे के सभी निवासियो ने, बच्चो से लगाकर बूढो तक ने, कितना आनन्द उत्सव मनाया था .यकायक उसने अपने जन्मस्थान कमीशिन की गलियो में फासिस्टो के प्रवेश के दृश्य की कल्पना की। वे ईंधन जुटाने के लिए उन पेडो को काट रहे थे, जिन्हे लोगो ने इतने प्यार से पाला-पोसा था। उसका कस्बा धुए के गर्भ में समा गया और जिस स्थान पर उसका मकान था, जहा वह इतना वडा हुआ और जहा उसकी मा रहती थी, वहा इसी तरह की नगी, कालिख पुती, दानवी चिमनी रह गयी, जैसी कि यह सामने दिखाई दे रही है।

पीडा और मानसिक वेदना से उसका दिल फटने लगा।

इन्हे अब और आगे न वढने देना चाहिए! हमे लडना चाहिए, लडना ही चाहिए, अपनी आखिरी सास तक उनके खिलाफ जूझना चाहिए – उस रूसी सिपाही की भाति, जो वन-प्रान्तर मे शत्रुओ के शवो के ऊपर पडा हुआ था।

१२

एक दिन, दो दिन, शायद तीन दिन तक अलेक्सेई इसी प्रकार रेंगता बढ़ता रहा। वह वक्त गिनना भूल गया था, हर बात अब स्वयस्फूर्त प्रयत्न की एक अनन्त शृंखला बनकर रह गयी थी। कभी-कभी नीद या शायद वेहोशी उस पर हावी हो जाती। घिसटता-घिसटता वह सो जाता, किन्तु उसे पूर्व दिशा की ओर जो शक्ति खीचे लिये जा रही थी, वह इतनी शक्तिशाली थी कि वेहोशी की हालत मे भी वह हौले-हौले रेंगता हुआ बढ़ता ही चला जाता कि या तो वह किसी पेड़ या झाड़ी से टकरा जाता, या कभी उसके हाथ फिसल पड़ते और पिघलती हुई वर्फ पर वह औंधे मुह गिर पड़ता। उसकी सारी आकांक्षा, उसके सारे अस्पष्ट विचार केन्द्रीभूत प्रकाश पुज की भाति एक ही स्थान पर केन्द्रित थे रेंगते चलो, खिसकते चलो, हर कीमत पर आगे बढ़ते चलो।

राह मे, चेतना की घड़ियो मे, वह फिर कोई साही पकड़ पाने की आशा में हर झाड़ी की छानवीन कर लेता। उसका भोजन था बर्फ के नीचे दवी मिल जानेवाली वेरिया और काई। एक वार उसे चीटियो की विशालकाय वल्मीक मिली, जो वर्षा से धुली, स्वच्छ, घास-पात के ढेर की भाति, खड़ी थी। चीटिया अभी भी सो रही थी और उनका निवास-स्थान निर्जीव मालूम होता था। अलेक्सेई ने इस जमे ढेर में हाथ घुसेड़ दिया और जव हाथ बाहर निकाला तो सख्ती के साथ चमड़ी से चिपकी हुई चीटियो से वह ढक गया था। उसने बड़े स्वाद से इन्हे खाना शुरू कर दिया और अपने सूखे, चटख रहे मुह मे उसने चीटियो के चटपटे, खट्टे अम्ल का स्वाद अनुभव किया। उसने अपना हाथ बार-बार वल्मीक मे घुसेड़ा तो इस अप्रत्याशित आक्रमण से इसके सारे निवासी जाग गये।

नन्हे कीड़ो ने भयकर रूप से आत्म-रक्षा की, वे अलेक्सेई के हाथ, होठ और जीभ में काट गयी, वे उसकी वर्दी में घुस गयी और

सारे शरीर मे काटने लगी। किन्तु उसकी जलन उसे गुणकर सी मालूम हुई और उसको खाने के कारण जिस अग्नि ने उसके शरीर में प्रवेश किया, उसने शक्तिवर्धक तत्व जैसा काम किया। उसे प्यास लग आयी। टीलो के बीच उसे भूरे-भूरे जगली पानी से भरी छोटी-सी पोखरी दिखाई दी, और जब पानी के लिए वह उस पर झुका तो डर भय से एकदम पीछे हट गया, उस मटमैले पानी में से नीले आसमान के प्रतिबिम्ब की पृष्ठभूमि मे उसकी ओर एक अजीब भयानक चेहरे ने घूर दिया था। वह चेहरा एक कंकाल मात्र था जो स्याह चमडी और गंदे, रोयेंदार बालो से ढका हुआ था। आखो के गहरे गड्ढो मे बडी-बडी, गोल-गोल पुतलिया भयानक रूप से चमक रही थी और माथे पर बिखरे हुए बालो की गदी लटे लटक रही थी।

"क्या यही मै हू?" अलेक्सेई ने अपने आप से प्रश्न किया और दुबारा वह शक्ल देख लेने के डर से उसने पानी नहीं पिया, बल्कि उसके बजाय कुछ बर्फ मुह में रख ली और उसी शक्तिशाली चुम्बक के आकर्षण के वशीभूत होकर, रेंगता हुआ, वह पूर्व दिशा की ओर बढने लगा।

उस रात उसने एक बडे भारी बम के गड्ढे को अपना आश्रयस्थान बनाया, जो विस्फोट से उडी हुई पीली रेत की चहारदीवारी से घिरा हुआ था। इस गड्ढे के तल में उसे बडी शान्ति और आराम मिला। इसमें हवा न घुस पाती थी, सिर्फ रेत के कण, जो चहारदीवारी में उडकर आ रहे थे, उसमें खडखडा रहे थे। उसमें से तारे असाधारण रूप से बडे नजर आ रहे थे और निचाई पर, ठीक उसके सिर पर, लटके मालूम होते थे। चीड के वृक्ष की एक झबरी शाखा, जो तारो के नीचे इधर-उधर झूल रही थी, ऐसी लगती थी मानो किसी के हाथ मे कोई चीथडा है जो इन उज्ज्वल रोशनियो को साफ करता है। सुबह से पहले ठड बढ गयी। जगल पर कच्चा कुहरा घिर आया। हवा के झोके घुमड रहे थे और उत्तर से आ रहे थे, और इस कुहरे को बर्फ

के रूप में बदल रहे थे। अन्तत जब शाखाओं के बीच से दीर्घ-प्रतीक्षित, मद-मंद प्रकाश फूट पडा तो गहरा कुहरा उतर आया और धीरे-धीरे छिन्न-भिन्न होने लगा, और चारो ओर धरती फिसलनी, बर्फीली पर्त से ढंक गयी। गड्ढे के ऊपर जो डाल झूल रही थी, वह अब चीथडा पकडे हाथ जैसी नही लग रही थी, बल्कि नन्हे-नन्हे घनाकार काच के बने, उज्ज्वल तथा अद्‌भुत झाडफानूस जैसी लगती थी, जो हवा के झोंको से डोलकर हल्की-हल्की टन-टन ध्वनि कर उठती थी।

नीद टूटी तो अलेक्सेई ने असाधारण निर्बलता अनुभव की। चीड की छाल चूसने तक को उसका मन न हुआ, जिसका काफी बडा भण्डार वह छाती पर अपनी वर्दी के अदर छिपाये हुए था। बडी ही कठिनाई से वह अपने को ज़मीन से उठा सका, मानो रात मे उसका शरीर वहा चिपका दिया गया हो। अपने कपडो, दाढी और मूछ से बर्फ फेंके बिना, उसने बम के गड्ढे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया, मगर उसके हाथ उस धूल पर से फिसल गये जो रात को वहा जमकर रह गयी थी। उसके बाहर निकलने के लिए उसने बार-बार प्रयत्न किया, मगर हर बार वह फिसलकर तली मे लुढक जाता। उसके प्रयत्न अधिकाधिक क्षीण होते गये। और अतत वह यह देखकर घबरा उठा कि वह किसी की सहायता बिना इससे बाहर निकल न पायगा। इस कल्पना मात्र से प्रेरित होकर उसने उस फिसलनी दीवार पर चढ जाने के लिए एक बार और जोर लगाया, मगर वह थोडा ही चढ पाया था कि वह चूर-चूर होकर, असहाय-सा, फिर फिसलकर नीचे आ गिरा।

"अत निकट आ गया! अब क्या है!"

वह खोल के तल में वर्तुलाकार ढेर हो गया और अनुभव करने लगा कि विश्रान्ति की एक भयावनी सवेदना सारे शरीर मे रेंगती चढ रही है जिससे इच्छा-शक्ति विशृंखलित और विजडित हो गयी है। सुस्त गति से उसने अपने कोट से जर्जर पत्र निकाले, लेकिन उन्हे पढ पाने

की शक्ति न रह गयी थी। उसने गेलोफिन के कवर में से एक चित्र निकाला जिसमें चितकबरा फ्राक पहने एक लड़की खुले मैदान में घास पर बैठी थी। करुण मुस्कान के साथ वह उससे पूछने लगा

“क्या, सचमुच, अलविदा का वक्त आ गया?”—और यकायक वह चौंक उठा और हाथ में तस्वीर लिये मूर्तिवत् बैठा रह गया। उसे ऐसा महसूस हुआ कि जंगल के ऊपर कहीं बहुत ऊंचाई से ठंडी, पालेदार हवा में उसे कोई सुपरिचित स्वर सुनायी दे गया है।

वह तुरन्त आलस छोड़कर उठ बैठा। उस स्वर के विषय में कोई विशेष बात नहीं थी। वह इतना हल्का था कि जंगली जानवर के अत्यन्त सूक्ष्मग्राही कान भी बर्फ से लदे वृक्षों की एकरस सरसराहट के बीच उस स्वर को न पहचान पाते। किन्तु उसकी विचित्र सीटी जैसी गूंज सुनकर अलेक्सेई निर्भ्रांत रूप से समझ गया कि वह उसी ‘इशाचोक’ वायुयान की आवाज है जिसे वह स्वयं चलाया करता था।

इंजिन की गुनगुनाहट और नजदीक आती गयी, उसकी गूंज भी बढ़ती गयी और ज्यों-ज्यों विमान आकाश चीरता बढ़ता जाता, त्यों-त्यों कभी उसका स्वर सीटी के रूप में बदल जाता तो कभी गर्जन के रूप में, और अंतत धूसर आकाश में बहुत ऊंचाई पर अलेक्सेई को मंद गति से चलती हुई, छोटी-सी, क्रास जैसी चीज दिखाई दी जो कभी धूसर, कुहरे जैसे बादलों में गायब हो जाती, तो कभी उनसे बाहर निकल आती। उसके पंखों पर चिह्नित लाल सितारे अब उसे दिखाई देने लगे और ठीक उसके सिर पर आकर उस विमान ने चक्कर लगाया और धूप में चमक उठा और फिर मोड़ लेकर वह दूर उड़ गया। शीघ्र ही उसके इंजिन की गुनगुनाहट बंद हो गयी और हवा में झूमते हुए, बर्फ से ढके वृक्षों की मर्मर ध्वनि में डूब गयी, किन्तु बड़ी देर तक अलेक्सेई अनुभव करता रहा कि उसकी हल्की-सी, सीटी जैसी आवाज अभी भी उसे सुनाई दे रही है।

उसने विमान की गद्दी पर बैठे हुए अपनी कल्पना की। एक क्षण मे ही, जितने मे कि सिगरेट मे एक कश लगता है, वह वन-प्रान्तर में स्थित अपने हवाई अड्डे पर वापस लौट सकता है। उस वायुयान मे कौन था? शायद अन्द्रेई देगत्यरेन्को था, जो प्रातःकालीन निरीक्षण-उडान पर निकला होगा। ऐसी यात्राओ के दौरान मे, शत्रु से मुठभेड की गोपन आशा के वशीभूत होकर, ऊची उडान भरने का शौक उसी को है। देगत्यरेन्को वायुयान दूसरे साथी.

ताजी शक्ति से प्रेरित होकर अलेक्सेई ने उस गड्ढे की सर्द दीवार पर नजर डाली। "इस प्रकार तो मै कभी इससे नही निकल सकता," उसने अपने आपसे कहा। "लेकिन मै यहा पडा हुआ मौत का इतजार भी नही कर सकता!" उसने मियान से कटार निकाल ली और बडी ही शिथिल और निर्बलता के साथ खोद खोदकर उस बर्फीली दीवार पर पैर जमाने के लिए गड्ढे बनाने लगा—जमी हुई रेत को वह हाथ के नाखूनो से खुरचता जाता। उसने इतना खुरचा कि नाखून टूट गये और उगलियो से खून बह निकला, लेकिन अविश्रात गति से वह अपनी कटार और नाखुनो के द्वारा गड्ढे बराबर बनाता गया। फिर गड्ढो पर हाथ और घुटने जमाकर वह धीरे-धीरे ऊपर सरकने लगा और आखिरकार ऊपर के किनारे तक पहुच गया। एक बार और जोर लगाकर अगर वह इस किनारे पर लेट जाता और दूसरी तरफ लुढक जाता, तो वह मुसीबत से छुटकारा पा लेता, मगर तभी उसके पाव फिसल गये और वह दर्दनाक तरीके से मुह के बल पर बर्फ पर आ गिरा और नीचे लुढकने लगा। उसे सख्त चोट आयी, मगर वायुयान के इजिन का गुजन अभी भी उसके कानो मे गूज रहा था। वह फिर ऊपर चढा और फिर फिसलकर पेदी में आ गिरा। तब, उन गड्ढो की बारीकी के साथ परीक्षा कर, उसने उन्हे और गहरा बनाना शुरू किया और चोटी के गड्ढो के किनारे और नुकीले बना डाले, जब यह काम खतम हो गया

लुढकते चलना आसान था और इसमें ज्यादा जोर लगाने की भी जरूरत नही थी। लेकिन इससे उसको चक्कर आने लगे और जब तब वह बेहोश होने लगा। बार-बार वह रुकने के लिए मजबूर हो जाता, वह बैठ जाता और जब तक धरती, जगल और आसमान चक्कर खाना बद न कर देते, तब तक वह इतजार करता।

वृक्षावलि क्षीण होने लगी और जहा पेड गिरा दिये गये थे, वहा खुला मैदान बन गया था। शीतकालीन सडक के चिह्न प्रकट होने लगे। अलेक्सेई को अब यह चिन्ता न रही थी कि वह अपने लोगो तक पहुच पाने मे सफल होगा या नही, बल्कि वह सकल्प कर चुका था कि जब तक हिलने-डुलने की शक्ति शेष रहेगी तब तक वह बराबर लुढकता बढता जायगा। उसके कमजोर पुट्ठो पर जिस कदर भयानक जोर पड रहा था, उसके कारण जब वह चेतना खो बैठा, तब भी उसका सारा शरीर अपने आप उसी जटिल रीति से हिलता-डुलता रहा, और वह बर्फ पर बराबर लुढकता रहा—उसी पूर्व दिशा की ओर, जहा से तोपो की आवाज आ रही थी।

अलेक्सेई को याद न रहा कि उसने रात किस तरह बितायी थी या अगली सुबह उसने कोई प्रगति की थी या नही। उसके लिए हर वस्तु अर्द्धमूर्च्छा के अधकार मे डूबी हुई थी। उसे राह मे मिली रुकावटो की ही धुधली-सी याद थी वह कटे-गिरे देवदार वृक्ष का सुनहला तना जिससे भूरे रग की गोद रिस रही थी, वह लट्ठो और बुरादे का ढेर और छीलन जो चारो तरफ बिखरी हुई थी, वह किसी वृक्ष के ठूठ जिसके कटे हुए सिरे पर उसकी उम्र के एक-एक साल का एक-एक छल्ला पडा हुआ था।

किसी विलक्षण आवाज ने उसे अर्धमूर्च्छा के लोक से पुकार लिया, उसे होश ला दिया और वह बैठ गया तथा चारो ओर देखने लगा। उसने अपने को किसी बडे जगल की कटाई के क्षेत्र मे बैठा हुआ पाया, जहा

धूप चिलक रही थी और चारो ओर कटे हुए नगे वृक्ष और लट्ठे बिखरे पड़े थे। एक ओर ईंधन की लकड़ी का खूबसूरत ढेर लगा हुआ था। दोपहर का सूर्य आसमान में शीर्ष पर चढ आया था, गोद की तेज गंध, तपते हुए कानीफर और बर्फ की नमी से हवा बोझिल थी; और अनपिघली धरती के ऊपर बैठी लवा अपनी सहज तान में प्राणों का सारा रस उडेलती हुई गा रही थी।

किसी अवर्णनीय खतरे की सवेदना से प्रेरित होकर अलेक्सेई ने कटाई के क्षेत्र पर नजर डाली। कटाई ताजी ही थी, और ऐसा नही लगता था कि कोई इसे छोडकर चला गया है। वृक्ष हाल ही मे गिराये गये थे, क्योकि नगे पेडो की डालिया अभी भी ताजी और हरी थी, कटे हुए स्थलो से शहद की तरह गोद अभी भी रिस रही थी और चारो तरफ बिखरी हुई कच्ची छाल और खपच्चियो से ताजी सुगध आ रही थी। अत सारी कटाई अभी सजीव थी। शायद हिटलर सिपाही अपने लिए शरण-स्थल और किलेबदी बनाने के लिए लट्ठे तैयार कर रहे थे? तब तो बेहतर हो कि वह इस स्थल से यथाशीघ्र खिसक जाय, क्योकि लकडी चीरनेवाले लोग किसी भी क्षण यहा आ धमकेगे। मगर उसका शरीर जडता महसूस करने लगा, भारी दर्द और टीस मे जकड गया और उसमें हिलने-डुलने की भी शक्ति न रही।

तब क्या वह रेग चले? वन-जीवन के इन दिनो में उसकी जो सहज प्रवृत्ति बन गयी थी, उसने उसे सतर्क कर दिया। उसे कुछ नजर तो न आ रहा था, मगर वह यह अनुभव कर रहा था कि कोई व्यक्ति उसे गौर से निरन्तर ताक रहा है। कौन है वह? जगल में शान्ति का साम्राज्य था, कटाई के क्षेत्र में ऊपर आसमान में लवा गा रही थी, किसी कठफोडवे की ठक-ठक सुनाई दे रही थी, और कटे वृक्षो की मुरझायी हुई शाखाओ पर फुदकिया एक दूसरे का पीछा करती हुई क्रोधपूर्वक चीख रही थी। किन्तु, इस सबके बावजूद, अलेक्सेई

अपने रोम-रोम से यह महसूस कर रहा था कि कोई उसे ताक रहा है।

एक शाख चटखी। उसने चारो ओर देखा और नवजन्मे सनोबर वृक्षो के कुज मे, जिनके घुघराले शीश हवा के झोके से झूम रहे थे, उसने देखा कि कई शाखाए स्वतन्त्र रूप से हिल-डुल रही है—वे बाकी शाखाओ की ताल के साथ नही झूम रही है। और उसे ऐसा लगा कि उस कुज से आती हुई हल्की-हल्की, मगर उत्तेजनापूर्ण कानाफूसी के स्वर—इसानो की कानाफूसी के स्वर—उसे सुनाई दे रहे है। और एक बार फिर उसका रोम-रोम उसी तरह खडा हो गया, जैसा कि कुत्ते से मुठभेड के समय हुआ था।

उसने तेजी से अपनी चालक-वर्दी के सीने में से जग खायी, धूल सनी पिस्तौल निकाली और उसे साध लिया, हालाकि इसके लिए उसे दोनो हाथ काम में लाने पडे। पिस्तौल की खटक से सनोवर में छिपा हुआ कोई व्यक्ति चौकता जान पड़ा। कई वृक्षो के शिखर बोझ से थरथरा गये, मानो कोई व्यक्ति उनसे छू रहा है, मगर शीघ्र ही फिर सब शान्त हो गया।

"वह क्या है, आदमी या जानवर?" अलेक्सेई ने अपने आपसे पूछा और उसे ऐसा लगा कि उस वृक्ष कुज में उसने किसी को पूछते हुए सुना "आदमी?" क्या यह महज उसकी कल्पना मात्र है या सचमुच उस कुज में उसने किसी को रूसी भाषा बोलते सुना है? हा, हा, वह रूसी भाषा ही है। और चूकि वह रूसी भाषा के शब्द थे, इसलिए वह ऐसे उन्मत्त आनन्द से विह्वल हो उठा कि यह विचार किये बिना कि वह मित्र है या शत्रु, वह बडे विजयी भाव से चिल्ला उठा, पैरो पर उठ खडा हुआ, उस जगह की तरफ दौड पडा जहा से वह स्वर आया था और तत्काल वही लुढक गया मानो किसी ने पेड को काटकर गिरा दिया हो, और उसकी पिस्तौल बर्फ पर जा गिरी

१४

एक बार फिर उठ बैठने का असफल प्रयास करने के बाद जब अलेक्सेई लुढ़क गया तो वह चेतना खो बैठा, मगर खतरा सिर पर होने के बोध के कारण वह फौरन होश मे आ गया। अब कोई सदेह न रहा कि सनोबर के कुज मे कुछ लोग छिपे हुए थे, उसपर नजर रख रहे थे और किसी विषय पर आपस मे कानाफूसी कर रहे थे।

वह भुजाओ के बल उठ बैठा और बर्फ पर पड़ी पिस्तौल उठा ली, मगर उसे धरती से सटाकर आखो से ओझल किये रहा, और चौकसी करने लगा। खतरे ने उसे मूर्च्छितावस्था से पूरी तरह मुक्त कर दिया था। उसका मस्तिष्क बडी मुस्तैदी से काम कर रहा था। वे लोग कौन है? शायद लकडी चीरनेवाले लोग है, जिन्हे जर्मन लोग अपने लिए ईधन तैयार करने के लिए जबर्दस्ती यहा ले आये होगे? या शायद वे रूसी है, जो अलेक्सेई की ही तरह घिर गये होगे और अब चोरी-चोरी जर्मन घातो से बच निकलकर अपने पक्ष के लोगो तक पहुचने का प्रयत्न कर रहे है। या शायद आसपास रहनेवाले किसान है? जो हो, यह तो निश्चय है कि उसने किसी को साफ-साफ कहते सुना था "आदमी?"

रेगने के कारण विजडित हाथो में पिस्तौल काप रही थी, फिर भी वह लडने के लिए और शेष बची तीन गोलियो का सदुपयोग करने के लिए तैयार था

इसी समय किसी उत्तेजित, बच्चो जैसी आवाज ने वृक्ष कुजो से पुकारा·

"ए ए! कौन हो तुम? फरवतेह? जर्मन?"

इन अजनबी शब्दो से अलेक्सेई चौकन्न हो गया लेकिन जिसने पुकारा था वह निस्सन्देह रूसी था और बालक था।

एक और बचकानी आवाज ने पूछा "तुम यहा क्या कर रहे हो?"

"और तुम कौन हो?" अलेक्सेई न प्रश्न के उत्तर मे प्रश्न किया और अपनी आवाज के हल्केपन और कमजोरी पर आश्चर्यान्वित होकर रुक गया।

इस प्रश्न से वृक्षो मे सनसनी फैल गयी होगी, क्योकि वहा जो भी लोग थे, उनमे बडी देर तक कानाफूसी के स्वरो मे सलाह-मशविरा होता रहा और निश्चय ही, यह सलाह-मशविरा उत्तेजनापूर्वक हो रहा था, क्योकि वृक्षो की शाखाए तेजी से डोल रही थी।

"बाते न बनाओ, तुम हमे उल्लू नही बना सकते! मै जर्मन को पाच मील से पहचान लेता हू। क्या तुम जर्मन हो?"

"तुम कौन हो?"

"तुम यह क्यो जानना चाहते हो? निश्त फरस्तेह "

"मै रूसी हू।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। झूठ न बोल रहे हो तो मेरी आखे निकाल लेना। तुम फ़ासिस्ट हो!"

"मै रूसी हू, रूसी हूं! वायुयान-चालक। जर्मनो ने मुझे नीचे गिरा दिया।"

अलेक्सेई ने अब सारी सतर्कता ताक पर रख दी। उसे विश्वास हो गया था कि उसके अपने आदमी, रूसी, सोवियत लोग ही उन वृक्षो मे छिपे है। वे उसपर विश्वास नही करते। यह स्वाभाविक है। युद्ध हर एक को सावधान होना सिखा देता है। और अब, यात्रा शुरू करने के क्षण के बाद आज पहली बार, उसने महसूस किया कि वह बिल्कुल निष्प्राण हो गया है, उसने महसूस किया कि अब वह हाथ-पैर हिला भी न सकेगा, न यहा से खिसक सकेगा और न अपनी रक्षा कर सकेगा। उसके कपोलो से स्याह गड्ढो पर से आसू लुढक पडे।

"देखो, वह रो रहा है," पेडो के पीछे से एक आवाज आयी। "ए हो! तुम क्यो रो रहे हो?"

साफ सुन रहा था

"सुन रहे हो? वह कहता है कि वह [illegible] है। शायद वह सच बोल रहा है और [illegible]।" और फिर किसी ने चिल्लाकर कहा "ए विमान-चालक! पिस्तौल दूर फेंको! उसे फेंक दो, वरना, हम बताये देते हैं कि तुम बाहर न पायेंगे! हम भाग जायेंगे!"

अलेक्सेई ने पिस्तौल फेंक दी। झाड़ियाँ फट गयी और उनमें से दो बालक कूदकर, सतर्कतापूर्वक, फुदकियों की भांति एक क्षण में फुर्र हो जाने के लिए तैयार-से, बड़ी सावधानी के साथ, हाथ में हाथ दिये, अलेक्सेई की ओर बढ़ने लगे। उनमें से बड़ा दुबला-पतला, नीली आंखों और पटसन जैसे बालोंवाला लड़का था, जो पुराने फैशन की महिलाओं की जाकेट कमर पर किसी डोर के टुकड़े से कसकर पहने हुए था, भारी-भरकम नमदे के जूते पहने था जो शायद उसके पिता के थे और सिर पर जर्मन हवाबाज की टोपी लगाये थे, हाथ में कुल्हाड़ी लिये था। और दूसरा छोटा-सा, लाल बालों और झाइयों युक्त चेहरेवाला नन्हा लड़का, जिसकी आंखें अदम्य कौतूहल से चमक रही थी, पहले लड़के के एक कदम पीछे-पीछे आ रहा था और फुसफुस स्वर में कह रहा था

"यह रो रहा है। सचमुच रो रहा है। और कैसे हड्डी-हड्डी रह गया है! हां, हड्डी-हड्डी है न?"

अभी भी कुल्हाड़ी संभाले हुए बड़ा लड़का अलेक्सेई के पास आया और लात मारकर पिस्तौल दूर फेंककर बोला

"तुम कहते हो, तुम हवाबाज हो। कोई सबूत है? हमें दिखाओ!"

"इस जगह कौन है, हमारे लोग या जर्मन?" अलेक्सेई ने फुसफुस स्वर में पूछा और बरबस मुस्कुरा उठा।

"मैं तो इस जगल में रहता हू, मैं क्या जानू? मुझे तो कोई रिपोर्ट नही देता," बडे लडके ने कूटनीतिक भाषा में कहा।

जेब मे हाथ डालने और अपना प्रमाण-पत्र निकाल लेने के सिवाय अलेक्सेई के सामने कोई रास्ता न रहा। लाल-लाल, अफसरो की पुस्तिका देखते ही, जिसके आवरण पर सितारा अंकित था, इन बालको पर जादू जैसा प्रभाव पडा। मानो उनका बचपन, जो जर्मन-अधिकार के काल में कही खो गया था, यकायक अपने प्यारे सोवियत विमान-चालक के प्रगट होते ही फिर वापिस लौट आया है। उससे बात करने की विह्वलता के कारण वे एक दूसरे के ऊपर लुढक पडे।

"हा, हा, अपने ही लोग यहा है। यहा तीन दिन से है।"

"तुम्हारे हड्डी-हड्डी क्यो निकल आयी है?"

" अपने लोगो ने उनको ऐसा मजा चखाया! ऐसी पिटाई लगायी! यहा बडी घमासान लडाई हुई! और उनमे से भयकर तादाद में लोग मारे गये। भयकर तादाद मे!"

"और क्यो, वे भागे भी तो किस तरह! उनका भागना भी कैसा मजेदार था। उनमें से एक ने नहाने के टब में घोडा जोत लिया और उसमें छिपकर भाग गया। उनमें से दो घायल थे, वे भागते हुए घोडे की पूछ पकडे रहे और तीसरा आदमी घोडे पर राजकुमार की तरह

बढकर भागा। काश तुम भी देख पाते! तुम्हे उन्होने कहा गिरा दिया था?"

कुछ देर बडबड करने के बाद ये बालक काम मे जुट गये। उन्होने बताया कि उनके परिवार के लोग पाच किलोमीटर दूर रहते है। अलेक्सेई इतना कमजोर हो गया था कि पीठ के बल आराम से लेट जाने के लिए वह करवट भी न बदल पा रहा था। इस स्थान से, जिसे वे "जर्मन लकडी भण्डार" कहते थे, ईंधन ले जाने के लिए वे लडके जो स्लेज लाये थे, वह इतनी छोटी थी कि अलेक्सेई उसमे समा नही सकता था, इसके अलावा, अनकुचली बर्फ पर स्लेज घसीटकर उसका बोझा ढो ले जाना इन बालको के बस की बात न थी। बडे लडके ने, जिसका नाम सेर्योनका था, अपने भाई फेदका से कहा कि वह जितनी तेजी से हो सके, दौडकर गाव जाकर मदद लाये, तब तक वह जर्मनो से अलेक्सेई की हिफाजत करेगा—उसने कारण तो यही बताया, मगर असलियत यह थी कि वह मन ही मन अलेक्सेई का विश्वास न कर रहा था। वह अपने मन में सोच रहा था "क्या भरोसा। ये फासिस्ट बडे चालाक है—वे मरने का बहाना कर सकते है और लाल फौज के प्रमाण-पत्र भी हथिया सकते है " लेकिन धीरे-धीरे उसके सदेह दूर हो गये और वह खुलकर बाते करने लगा।

अलेक्सेई, सनोवर की पत्तियो की नर्म सेज पर, आखें आधी बन्द किये, ऊघ रहा था—वह कभी इस बालक की कहानी सुन पाता और कभी न सुन पाता। उनीदी मूर्च्छा को चीरकर, जो कभी सारे शरीर में व्याप्त थी, जब-तब कुछ बिखरे हुए शब्द उसके मस्तिष्क तक पहुच जाते, और यद्यपि वह नही समझ पा रहा था कि इन शब्दो का क्या अर्थ है, फिर भी महज अपनी मातृभाषा के स्वर सुनकर उसे गहनतम आनन्द प्राप्त हो रहा था। बडी देर बाद वह प्लावनी ग्राम के निवासियो की विपत्ति की कहानी को जान पाया।

इस जगल और झील प्रदेश मे जर्मन पिछले अक्तूबर मे आये थे, तब भोज वृक्षो पर पीली पत्तिया झिलमिला रही थी और एस्प वृक्ष किन्ही क्रूर लाल ज्वालाओ मे जलते प्रतीत हो रहे थे। प्लावनी के निकटवर्ती क्षेत्रो मे कोई युद्ध न हुआ था। इस गाव से तीस किलोमीटर पश्चिम मे, शक्तिशाली टैंको के अग्रदल के साथ जर्मन दस्ते सोवियत फौज की उस टुकडी का सफाया करने के बाद, जो उस जगह जल्दबाजी मे रक्षा-पात बनाकर शत्रु को रोकने की कोशिश कर रही थी, इस प्लावनी ग्राम के पास होकर, जो सडक से अलग एक झील के किनारे ओट मे बसा हुआ था, पूर्व दिशा की ओर बढ चले। वे विशाल रेल केन्द्र बोलोगोये तक शीघ्र पहुचना चाहते थे, उसपर अधिकार करना चाहते थे और इस तरह सोवियत सेनाओ के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी मोर्चो का आपसी सम्बन्ध तोड देना चाहते थे। यहा, गाव से दूरवर्ती क्षेत्र मे कालीनिन क्षेत्र के सभी निवासियो ने, शहरवासियो ने, किसानो ने, महिलाओ ने, बूढो और बच्चो ने पूरे ग्रीष्म और पतझर भर, वर्षा बरदाश्त कर, ग्रीष्म भुगतकर, मच्छडो का शिकार होकर, दलदल की नमी और गदला पानी पीने की यातना सहकर, खुदाई करने और रक्षा पात बनाने मे रात-दिन जीतोड परिश्रम किया था। यह किलेबन्दी उत्तर से दक्षिण, सैकडो किलोमीटर दूर तक, जगलो और दलदलो के पार, झीलो के इर्द-गिर्द, छोटी-मोटी नदियो और झरनो के किनारे फैली चली गयी थी।

निर्माणकर्त्ताओ ने घोर यातनाए सही, किन्तु उनका परिश्रम व्यर्थ न गया। अपने बढाव के जोर से जर्मन कुछ रक्षा-क्षेत्रो को तोडने मे सफल तो हुए, मगर अंतिम रक्षा-पात पर वे रोक लिये गये। लडाई खदक के युद्ध में बदल गयी। जर्मन बोलोगोये तक पहुचने में असफल रहे। वे अपने हमले की शक्ति और दक्षिण की तरफ लगाने के लिए मजबूर हुए और इस क्षेत्र में उन्हे रक्षात्मक स्थिति ग्रहण करनी पडी।

प्यावनी के किसान, जो अपनी खारी, मिट्टी वाली जमीन की सामान्यत कम पैदावार की पूर्ति जंगल की झीलो में कामगारों के साथ मछलियां मारकर किया करते थे, अब आनन्द मना रहे थे कि लड़ाई उनके सिर से टल गयी। जर्मनो का हुक्म पालन करके उन्होने अपने सामूहिक फार्म का अध्यक्ष मुखिया के रूप में चुन लिया, मगर इस आशा में कि सोवियत भूमि को ये फासिस्ट रौंदते न घूमते फिरेंगे और तूफान थमने तक वे उस सुदूर स्थल में शान्तिपूर्वक रह सकेंगे, वे अभी भी सामूहिक खेती के रूप में अपना जीवन बिता रहे थे। लेकिन गटमैनी हरी वर्दीवाले जर्मनो के बाद काली वर्दीवाले जर्मन आ धमके जिनकी फौजी टोपियो पर क्रॉस की शक्ल में हड्डियों और खोपड़ी का चिह्न बना हुआ था। सख्त सजा का भय दिखाकर प्यावनी के निवासियों को जर्मनी में जाकर स्थायी काम करने के लिए पन्द्रह स्वयंसेवक चौबीस घंटे के अंदर देने का हुक्म दिया गया। इन स्वयंसेवकों को गांव के अंतिम भाग में स्थित मकान में उपस्थित होना था जहां सामूहिक खेत का दफ्तर और मछली-भण्डार था, और उन्हे अपने साथ एक जोड़ा कपड़े, एक चम्मच, छुरी और कांटे और दस दिन भोजन की सामग्री भी लानी थी। लेकिन निश्चित समय पर कोई भी उपस्थित न हुआ। और यह भी कहना चाहिए कि अनुभव से सीखे हुए काली वर्दीवाले जर्मनो को भी कोई यह उम्मीद नही थी कि कोई उपस्थित होगा। गांव को सबक सिखाने के लिए, उन्होने सामूहिक फार्म के अध्यक्ष यानी गांव के मुखिया को, किंडरगार्टन की प्रधान अध्यापिका वेरोनिका ग्रिगोर्येवना को, सामूहिक खेत की टीमो के दो नेताओ को और दस अन्य किसानो को हिरासत में ले लिया और उन्हे गोली मार दी। उन्होने हुक्म दिया कि शवो को गाड़ा न जाय और कहा कि अगर अगले दिन भी निश्चित समय पर स्वयंसेवक उपस्थित न हुए तो बाकी गांव के साथ भी यही सलूक किया जायगा।

इस बार भी कोई उपस्थित न हुआ। अगले दिन सुबह जब एस० एस० सोन्डरकमान्डो गाव का चक्कर लगाने गये, तो उन्होंने हर घर वीरान पाया। एक भी इसान न था—न बच्चे, न बूढे। अपना घर, अपनी जमीन, वर्षों के कठोर श्रम से अर्जित सारी सम्पत्ति और लगभग सारे जानवर छोडकर, रात के घने कुहरे मे छिपकर सारे लोग गायब हो गये थे, अपना नामोनिशान भी न छोड़ गये थे। सारा गाव, बच्चा-बच्चा तक, अठारह किलोमीटर दूर, जगल की गहराई मे, बहुत दिन पहले साफ किये गये एक स्थल पर जा बसा था। अपने रहने के लिए खोहे बनाकर पुरुष तो छापेमार दलो मे शामिल होने चले गये और औरते-बच्चे बसत तक का समय काटने के लिए वही रह गये। सोन्डरकमान्डो ने इस हठधर्मी गाव को जलाकर धूल मे मिला दिया, जैसा कि वह इस जिले के अन्य गावो मे भी कर चुके थे और उसे मृत-क्षेत्र कहकर पुकारते थे।

सेर्योनका ने बताया "मेरे पिता सामूहिक फार्म के अध्यक्ष थे, उन्हे जर्मन गाव का मुखिया कहते थे।" और उसके शब्दो ने अलेक्सेई के मस्तिष्क मे इस प्रकार प्रवेश किया, मानो वे दीवार के दूसरी ओर से आ रहे हो। "और उन लोगो ने उन्हे मार डाला। और उन्होने मेरे बडे भाई को भी मार डाला। वह पगु था। उसके सिर्फ एक बाह थी। उसकी बाह में खलिहान में काम करते समय चोट लग गयी थी और उसे कटा डालना पडा था। उन लोगो ने कुल सोलह मारे मैने अपनी आखो से देखा था। जर्मनो ने हम सबको जमा होने और अपनी आखो से देखने के लिए मजबूर किया था। मेरे पिता चीखें-चिल्लाये और उन्हे कोसते रहे। 'शैतान की औलादो, तुम्हे इसका फल भोगना पडेगा। इसके लिए तुम्हे खून के आसू बहाने पडेगे ' उन्होने उन लोगो से कहा।"

बडी-बडी दुखभरी, थकी आखो और सुन्दर बालोवाले इस नन्हे-से इसान की बाते सुनते-सुनते अलेक्सेई ने एक विचित्र सवेदना अनुभव की।

उसे लगा कि वह घने कुहरे में उड रहा है। जिम शरीर मे उमने इतना अतिमानवीय श्रम किया था, वह समूचा शरीर अजेय क्लान्ति से जकड गया। उसमें उगली भी उठाने की शक्ति न रही और अब तो उसके लिए यह विश्वास करना भी कठिन था कि अभी दो घटे पहले वह आगे बढ रहा था।

"इसलिए तुम आजकल जगल मे रहते हो?" उसने वडी कठिनाई से अपने को नीद के बधनो से मुक्त कर, लगभग अकर्णगोचर स्वर में उस बालक से पूछा।

"हा, सचमुच! हम सब तीन प्राणी है। मैं, फेद्का और मेरी मा। मेरी एक बहिन भी थी, न्युरका नाम था। वह इस जाडे में मर गयी। उसका सारा शरीर सूज गया और मर गयी। और मेरा छोटा भाई, वह भी मर गया। इस तरह अब हम तीन ही है जर्मन अब वापिस नही आयेंगे, क्यो? तुम्हारा क्या ख्याल है? मेरे नाना, यानी मा के पिता, जो आजकल अध्यक्ष है, वे कह रहे थे कि अब वे न आयेगे। वे कहते है 'मरनेवाले कब्रिस्तान से नही लौटा करते।' लेकिन मा, वह अभी भी डरती है। वह दूर भाग जाना चाहती है। वह कहती है कि वे फिर वापस आ सकते है उधर देखो! नाना और फेद्का।"

मैदान के छोर पर खडा लाल बालोवाला फेद्का अलेक्सेई की तरफ इशारा कर रहा था और उसके साथ एक लम्बा-सा, गोल कधो-वाला बूढा आदमी फटा-पुराना, घर का बुना, हल्के भूरे रग का कोट कमर पर एक डोरी से बाधे खडा था और सिर पर किसी जर्मन अफसर की ऊची-सी टोपी पहने था।

बूढा आदमी, जिसे लडको ने मिखाईल नाना कहकर पुकारा, लम्बा, ऊचे कधोवाला और दुबला-पतला व्यक्ति था। गाव की सीधी-सादी मूर्तियो में सत निकोलस का जैसा चेहरा होता है, उसका चेहरा भी उतना करुणामय था, बच्चो जैसी निर्मल आखें थी और मुलायम,

बिरली, हल्की दाढी थी जो बिल्कुल रुपहली हो चुकी थी। उसने अलेक्सेई को भेड की खाल के पुराने कोट में लपेटा जिसमे तमाम रगो के चिथडे लगे थे, वह आसानी से अलेक्सेई को उठाते हुए और उसके हल्के सूखे शरीर को गोद में लुटकाते हुए बडे आश्चर्य मिश्रित भोलेपन मे बडबडाता जा रहा था·

"बेचारा! बेचारा! अरे, तुममे बाकी ही क्या बचा है! हे भगवान, तुम तो अस्थिपंजर भर रह गये हो! यह लडाई भी लोगो पर कैसी-कैसी आफत ढा रही है! हाय. हाय! "

इतनी सावधानी से, मानो वह नवजात शिशु को उठा रहा है, उसने अलेक्सेई को बर्फ पर फिसलनेवाली स्लेज पर रख दिया, उसे रस्सी से बाध दिया, एक क्षण सोचा और फिर कोट उतारकर उसे तह किया और अलेक्सेई के सिरहाने रख दिया। फिर स्लेज के सामने जाकर उसने अपने को डोरे से बने जुए मे जोत दिया, और फिर दोनो लडको को एक-एक रास पकडाकर उसने कहा "भगवान मदद करे!" और वे तीनो स्लेज को गलती हुई बर्फ पर से घसीटकर ले चले और बर्फ इन दौडनेवालो के पैरो मे चिपकने लगी, उनके बोझ से आलू से बने आटे की तरह चटखने लगी और पैरो के नीचे विलीन होने लगी।

१५

अगले दो-तीन दिन तक अलेक्सेई को लगा मानो वह घने और गर्म कुहरे में लिपटा है जिसके भीतर से उसे अपने चारो तरफ चलनेवाले कामकाज की धुधली तस्वीर मात्र दिखाई दे जाती थी। वास्तविकता के साथ-साथ ऊल-जलूल कल्पना-चित्र मिश्रित दिखाई देने लगे, और काफी समय बाद कही जाकर वह तमाम घटनाओ को उचित क्रमबद्ध करके समझ पाया।

ये भागे हुए लोग अछूते जगल के बीच रहते थे। उनकी खोहे जिनपर सनोबर की शाखाओ का छप्पर था, अभी भी बर्फ से ढकी थी और शायद ही दृष्टिगोचर होती हो। उनसे जो धुआ उठ रहा था, वह सीधे जमीन से निकलता लग रहा था। जिस दिन अलेक्सेई आया, उस दिन हवा बद थी और नमी थी, और धुआ काई में चिपका-सा तथा पेडो मे लहराता रह गया था, जिससे अलेक्सेई को यो महसूस हुआ मानो यह स्थान बुझती हुई दावाग्नि के धुए से भरा है।

यहा के सभी निवासियो को—उनमें मुख्यत औरते और बच्चे थे और कुछ बूढे लोग थे—ज्यो ही यह पता लगा कि कोई सोवियत हवाबाज यहा आ गिरा है—पता नही कौन और कसे—जिसे मिखाईल उठाकर ला रहा है, और जैसा फेद्का ने बताया, वह सिर्फ "हड्डियो का ढाचा भर" रह गया है, त्यो ही वे सब उनसे मिलने आ गये। जब पेडो के बीच से 'त्रोइका' (तीन घोडो वाली गाडी) आती दिखाई देने लगी, तो औरते उसकी तरफ भागी और उनके साथ जो बच्चे उमड पडे थे उन्हे खदेडकर उन्होने स्लेज को घेर लिया और रोती चीखती हुई गाडी के साथ खोह तक आयी। वे सभी चिथडे पहने थी और सभी समान रूप से बूढी लग रही थी। खोहो में जल रही आग के धुए और कालिख से उनके चेहरे स्याह पड गये थे, और जब कभी वे मुसकुरा पड़ती थी, तब भरी चमडी के बीच उनके चमकते हुए सफेद दात और झिलमिलाती हुई आखें देखकर ही यह भेद करना सम्भव होता था कि उनमें कौन जवान है और कौन बूढी।

"औरतो! अरी औरतो! तुम सब यहा क्यो जमा हो गयी हो? तुम समझती हो यहा थियेटर लगा है? या नाटक हो रहा है?"—मिखाईल नाना अपना कालर और जोर से खीचते हुए चीख पडे। "भागो यहा से, भगवान के लिए! हे भगवान, ये सब तो भेडें जैसी है। बिल्कुल जाहिल!"

और औरतों के झुण्ड में अलेक्सेई ने कुछ आवाजें यह कहते सुनी

"आह, कितना दुबला है! यहा, सचमुच, बिल्कुल हड्डियो का ढाचा भर है। वह हिलता-डुलता भी नही है। क्या अभी जिदा है?"

"वह बेहोश है! इसे हो क्या गया है? हाय कितना दुबला है बेचारा, कितना दुबला है!"

और फिर अचरज भरी बाते बद हो गयी। इस विमान-चालक ने जो अज्ञात, मगर भयकर मुसीबते उठायी होंगी, उससे महिलाएं बहुत प्रभावित हुई, और जब जगल के किनारे-किनारे स्लेज आ रही थी और भूमिगत गाव निकट आता जा रहा था, तब उनमें यह झगडा पैदा हो गया कि उनमें से कौन अलेक्सेई को अपनी खोह मे ले जायगी।

"मेरी जगह सूखी है। रेत, सब रेत है और हवा भी खूब आती है . और मेरे यहा चूल्हा भी है," एक छोटे कद की, गोल चेहरेवाली औरत बहस कर रही थी, जिसकी हसती हुई आखो की सफेदी इस तरह चमक रही थी मानो जवान नीग्रो की आखें हो।

"'चूल्हा'! लेकिन तुम कितने लोग रहते हो? खोह की गध ही ऐसी है कि नरक याद आ जाय! मिखाईल, उसे मेरे यहा पहुचा दो। लाल सेना में मेरे तीन बेटे है, और मेरे पास थोडा-सा आटा भी बचा है। मै उसके लिए कुछ चपातिया पका दूगी!"

"नही, नही! इसे मेरे यहा भेज दो। मेरे यहा जगह काफी है। हम दो ही तो प्राणी है और इतनी बडी जगह है। तुम चपातिया पकाकर मेरे यहा ले आना; उसके लिए क्या फर्क पडेगा, वह कही खा लेगा। क्स्यूहा* और मै उसकी देखभाल कर लेगे, तुम इत्मीनान रखना। मेरे पास कुछ जमी हुई ब्रीम मछलिया है और सफेद खुमें भी है मै उसके लिए कुछ मछलियो और खुभो का शोरबा पका दूगी .."

---

* रूसी स्त्री के एक नाम 'क्सेनिया' का सक्षिप्त रूप।—सं०

"उसका एक पैर तो कब्र मे है फिर भट्ठी मे भला उसे क्या फायदा होगा? नाना, उसे मेरे घर ले चलो, हमारे पास गाय है और हम उसे दूध पिला सकेंगे।"

लेकिन मिखाईल ग्लेज अपनी खोह मे ले गया, जो इस भूमिगत गाव के बीच मे थी।

अलेक्सेई को याद है कि उसे जमीन मे खोदकर बनायी गयी छोटी-सी धुधली गुफा मे एक चटाई पर लिटा दिया गया—रोशनी के नाम पर यहा एक धुआ उगलती भभकती ढिबरी थी, जो दीवार मे खोस दी गयी थी और चिनगारिया छोड रही थी। उसकी रोशनी में उसने एक मेज देखी जो जर्मनों की मुरगो का बक्स तोडकर उसके तख्तो को जमीन में गडे ठूठ पर टिकाकर बनायी गयी थी, उसके चारो ओर कई लट्ठो के टुकडे रखे थे जो स्टूलो का काम दे रहे थे, उसने काला रूमाल ओढे छरहरी मूर्ति भी देखी जो बूढी औरतो जैसे कपडे पहने मेज पर झुकी हुई थी—यह वारवारा थी, मिखाईल नाना की सबसे छोटी बहू, और उसे मिखाईल का सिर भी दिखाई दिया जो सफेद विरल घुघराले बालो से ढका था।

अलेक्सेई पुआल की धारीदार तोशक पर लेटा था और अभी भी वही थिगलीदार, भेड की खाल का कोट ओटे था, जिसमे बडी ही सुखद, खटमिट्ठी, घर जैसी गध आ रही थी और यद्यपि उसका शरीर इस तरह दुख रहा था मानो पत्थरो की मार पडी हो और उसके पैर इस तरह जल रहे थे मानो उनसे गर्म ईंटे चिपका दी गयी हो, फिर भी इस बोध के कारण कि अब वह सुरक्षित है, अब उसे न तो और कही भागना पडेगा या चिन्ता करना पडेगा या बराबर सतर्क रहना होगा, इस प्रकार निश्चल पडे रहना बडा आनन्ददायक लग रहा था।

कोने के चूल्हे की आग से धुआ उठकर छत में नीलगू चचल छल्लेदार तहे जमा रहा था और अलेक्सेई को ऐसा महसूस हुआ कि न

सिर्फ यह धुआ, बल्कि मेज भी, सदा व्यस्त रहनेवाले, कुछ न कुछ काम करते रहनेवाले, मिखाईल नाना का रुपहला सिर भी, और वारवारा का छरहरा शरीर भी, हवा मे तैर रहा है, उड रहा है और विलीन होता जा रहा है। उसने अपनी आखे बन्द कर ली। उसने आखे तब खोली जब उधर दरवाजे से जिसके किवाडो पर बोरे पडे थे, एक ठडी हवा के तेज झोके ने आकर उसे जगा दिया। मेज के पास एक औरत खडी थी। उसने मेज पर एक थैला रख दिया था और उसके ऊपर इस तरह हाथ रखे खडी थी मानो यह सोच रही हो कि इसे वापिस ले जाना चाहिए या नही। उसने सास खीची और वारवारा से कहा

"यह कुछ सूजी है, जो मेरे पास लडाई के पहले से पडी हुई थी। इसे मैने अपने कोस्त्या के लिए बचा रखा था, लेकिन अब उसे इसकी जरूरत नही रही। इसे ले लो और अपने अतिथि के लिए कुछ खीर पका लेना। यह बच्चो के लिए होती है, लेकिन इस वक्त उसके लिए ऐसी ही चीज चाहिए।"

वह मुडी और बाहर निकल गयी—और अपने दुख का असर खोह मे मौजूद सभी लोगो पर छोड गयी। कोई महिला बर्फ से जमायी गयी श्रीम मछलिया दे गयी और एक अन्य महिला तदूर पर पकायी गयी चपाती ले आयी, जिससे सारी खोह में ताजी पकी रोटियो की खमीरी गर्म गध भर गयी।

सेर्योनका और फेद्का आ गये। किसान जैसी गम्भीरता के साथ अपने सिर से फौजी टोपी उतारते हुए सेर्योनका ने कहा 'सुप्रभात' और मेज पर शक्कर के दो टुकडे रख दिये जिनपर तम्बाकू के रेशे और चोकर चिपके हुए थे।

"मा ने भेजी है। शक्कर तुम्हारे लिए फायदेमद होगी, खा लो," उसने कहा और मिखाईल की तरफ मुडकर उसने बडे व्यावहारिक स्वर मे कहा "हम लोग फिर पुरानी जगह गये थे। वहा हमे एक कच्चे

लोहे का बर्तन मिला, दो गुरसिया मिली, जो यहां जनी नहीं हैं, और कुल्हाड़ी का फल मिला। हम ये चीजें ले आये हैं, हमारे काम में आ सकती हैं।"

इस बीच फेद्का अपने भाई के पीछे खड़ा हुआ, मेज पर चमकते हुए शक्कर के टुकड़ों को लोलुप दृष्टि से देख रहा था और उसने मुंह में भर आये पानी को इस तरह सटोपा कि उसकी आवाज साफ सुनाई दे गयी।

बहुत बाद में जाकर, जब अलेक्सेई ने इस सब के बारे में सोच-विचार किया, तब वह इन उपहारों का पूरा मूल्य समझ गया, जो ऐसे गाव ने दिये थे जिसके एक-तिहाई निवासी उस शीतकाल में भूख से मर गये थे, जहा एक भी परिवार ऐसा न था जिसे अपने एक या दो सदस्यों के बिछोह का शोक न सहन करना पड़ा हो।

"वाह औरतो, औरतो, तुम अमूल्य हो। सुनते हो, अलेक्सेई, मैं क्या कह रहा हू? मै कहता हू, हमी औरतें अमूल्य हैं। तुम उनका दिल छू भर लो और वे अपना सर्वस्व निछावर कर देंगी, जरूरत हो तो अपने सिर की भी बलि चढा देंगी। ऐसी है हमारी औरतें। क्यों, ठीक नही है?" मिखाईल नाना अलेक्सेई के लिए इन भेंटों को स्वीकार करते हुए यह कहते जाते और फिर वे अपने काम मे जुट जाते, जो उनके पास हमेशा ही बना रहता था—घोड़े के साज, पट्टे या नमदे के घिसे-फटे जूतो की मरम्मत करना। "और काम मे भी, हमारी औरतें, मर्दों से पीछे नही हैं। सच कहू, तो वे हमें दो-चार बातें सिखा सकती हैं! बस बुरी है तो उनकी जबान, बस उनकी जबान बुरी है! मै बताये देता हू, ये औरतें मेरी जान लेकर छोड़ेंगी बस जान ही लेंगी! जब मेरी अमीस्या मर गयी, तो, कितना पापी हू मैं, मैंने सोचा 'शुक्र है भगवान, अब कुछ चैन तो मिलेगा!' लेकिन, तुम्ही देख लो, इसके लिए भगवान ने मुझे सजा दे ही दी। हमारे यहा के सभी मर्द, जिन्हे फौज मे नही

लिया गया, जर्मनो से लडने के लिए छापेमारो मे शामिल हो गये, और मैं हू कि अपने पापो के कारण, औरतो का सरदार बन गया—भेड़ो के झुड में बकरे की तरह .. ओह—हो—हो!"

इस वनवास में अलेक्सेई ने ऐसी बहुत-सी चीजे देखी जिनसे वह चकित रह गया। फासिस्टो ने प्लावनी के निवासियो से उनका घर, उनकी सम्पत्ति, उनके खेती के औजार, पशु, घरेलू साज-सामान और कपडे—हर चीज छीन ली थी, जिसे उन्होने पीढियो तक खून-पसीना बहाकर हासिल किया था और आजकल ये लोग जगल मे वास कर बडी तकलीफे भुगत रहे थे—उन्हे बराबर खतरा था कि फासिस्ट उनका पता न पा ले। वे भूख रहते, ठड भोगते—मगर उनकी सामूहिक खेती की व्यवस्था न टूटी, इसके विपरीत युद्ध की भयानक विपत्ति ने इन लोगो को और भी अधिक घनिष्ठ सूत्र मे बाध दिया। वे खोहे भी सामूहिक रूप से बनाते और उन्हे बेतरतीबी से नही, अपने सामूहिक खेत मे जिस तरह टीमें बनाकर काम करते थे, उन्ही टीमो के अनुसार बसा रहे थे। जब मिखाईल नाना का दामाद मारा गया तो उन्होने स्वय सामूहिक खेती के अध्यक्ष का काम सभाल लिया और इस जगल में बडी निष्ठा के साथ सामूहिक कृषि-व्यवस्था के नियमो का पालन करने लगे। और अब उनके तत्वावधान मे, घने जगल के बीच बसा हुआ यह भूमिगत गाव, ब्रिगेडे और टीमे बनाकर बसत के कामो की तैयारी कर रहा था।

किसान औरते, हालाकि खुद भूखी रह रही थी, सामूहिक खोह मे अपना सारा अनाज—एक-एक दाना तक, सब का सब—ला रही थी, जिसे गाव से भागते समय वे किसी तरह बचा लायी थी। जर्मनो से बच गयी गायो के बछडो की देखभाल सबसे ज्यादा की जा रही थी। वे खुद भूखे रहते, मगर सामूहिक सम्पत्ति की गायो को न मारते। प्राणो की बाजी लगाकर गाव के लडके, अपने पुराने, जले-जलाये गाव

मे गये और राख की ढरियो मे मे हल निकाल लाये जो तपकर नीले पड गये थे। इन्हे वे अपने भूमिगत गाव में ले आये और उनमें से काम के हलो मे लकडी के ढाचे लगा दिये गये। औरतो ने वसतकालीन जुताई के लिए गायो को जोतने के लिए वोरो को माजकर जुए वना दिये। औरतो की टीमो ने झील से मछलिया पकडने के लिए पालिया वाध दी थी और इस प्रकार जाडे भर वे सारे गाव को भोजन देती रही।

हालाकि मिखाईल नाना वडवडा उठते और 'अपनी औरतो' पर गुर्रा उठते और जव उनकी खोह में सामूहिक खेती से सम्वन्धित किसी प्रश्न पर वे औरते क्रोधपूर्वक लम्वे-लम्वे झगडो में उलझ जाती, जिनका सिर-पैर अलेक्सेई की समझ में न आ पाता, तो मिखाईल कान पर हाथ रख लेते और धीरज छूट जाने पर वे अपनी वुलद, वनावटी आवाज़ में उन औरतो पर वरस पडते, फिर भी वे उनके कायल थे और अपने श्रोता के मौन को स्वीकृति समझकर, आसमान तक 'औरतो की जात' की प्रशसा करते रहते।

"लेकिन, अलेक्सेई प्यारे, देखो तो क्या से क्या हो गया है," वे कहते, "औरत हर चीज़ को दोनो हाथो से पकडती है। ठीक कहता हू न? वह ऐसा क्यो करती है? क्या इसलिए कि वह कजूस होती है? विल्कुल नही! वह इसलिए करती है कि वह चीज उसे प्यारी होती है। वच्चो को वही पालती-पोसती है, तुम कुछ भी कहो, घर भी वही चलाती है। अव देखो, यहा क्या हुआ है। तुम देख ही रहे हो, हम यहा कैसे रहते है हम एक-एक दाना गिनते है। हा, हम भूखे मर रहे है। तो वह जनवरी की वात है। यकायक छापेमारो का एक जत्था आ टपका। नही, हमारे आदमी नही। हमारे आदमी तो, सुनते है, ओलेनिनो के पास कही लड रहे है। ये लोग हमारे लिए अजनवी थे, रेलवे के लोग थे। वे हमारे यहा आ धमके और वोले 'हम भूख से मर रहे है।' तो वोलो, क्या हुआ होगा? अगले दिन इन्ही औरतो ने उन

लोगो के थैले भोजन से भर दिये, और इधर उनके अपने बच्चो के शरीर भूख के मारे सूज रहे थे, इतने कमजोर थे कि चल-फिर भी न सकते थे। तो? मै ठीक कहता हू? मै बताऊ! अगर मै बडा सेनापति होता, तो जर्मनो को मारकर भगा देने के बाद, मै अपनी सर्वोत्तम सेनाओ को एकत्र करता और उन्हे इस रूसी औरत के सामने मार्च करने और सलामी देने का हुक्म देता। मै तो यही करता!"

सामान्यत इस बूढे की बकवास, अलेक्सेई के ऊपर लोरी जैसा असर करती और उधर वह बोलता जाता और अलेक्सेई छोटी-सी मीठी नीद मार देता। किन्तु कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि अपनी जेब से चिट्ठिया और उस लडकी का फोटो ले और उसको दिखाये, लेकिन वह अपने मे हाथ-पैर हिलाने की भी शक्ति न पाता। मगर जब मिखाईल नाना ने अपनी औरतो की प्रशसा करना प्रारम्भ कर दिया तो अलेक्सेई ने उन पत्रो की सुखद उष्णता, वर्दी के कपडे चीरती हुई अपने शरीर तक पहुचती अनुभव की।

उधर, मेज के पास, मिखाईल नाना की बहू, साझ की खामोशी में, बराबर किसी न किसी काम में व्यस्त-सी, तेजी से अपनी निपुण उगलिया चला रही थी। पहले तो अलेक्सेई ने उसे कोई बूढी, मिखाईल नाना की पत्नी, समझा—मगर बाद मे उसने देखा कि वह बीस-बाईस साल से अधिक नही—चपलगामिनी, लावण्यमयी और नयनाभिरामा, और उसने यह भी देखा कि वह उसकी तरफ भयभीत, चिन्तित दृष्टि डालकर गहरी सास भर सिहर उठती है, मानो गले मे अटकी हुई वस्तु निगल रही हो। कभी-कभी रात मे, जब मशाल बुझ जाती और खोह के धुए भरे अधेरे में वह झीगुर झनकार उठता, जिसे मिखाईल नाना ने ध्वस्त गाव मे पडा पाया था और उसे घोसले जैसा आराम देने के लिए अपनी आस्तीन मे छिपाकर किसी टूटे-फूटे बर्तन के साथ ले आये

"तुम्हारे कितने चीलर भर गये हैं, अलोशा, [illegible]! कितने चीलर! गोबरैलों से भी अधिक। और तुम इन्हें गरम भाप न [illegible] सकोगे। मैं बताता हू कि मैं क्या करूंगा, मैं तुम्हें नहलाऊंगा। तुम्हारे [illegible] गये है? भाप से नहलाऊंगा। मजा आ जायगा! मैं तुम्हें [illegible] दूंगा और तुम्हारी हड्डियों को जरा भाप दे दूंगा। जिस मुसीबत मे तुम गुजरे हो, उसके बाद उससे बहुत फायदा होगा। क्या कहते हो? मेरी बात ठीक नही है क्या?"

और वह स्नान का इन्तजाम करने चला गया। [illegible] के चूल्हे में उसने तेज आग जलायी कि चूल्हे के पत्थर बडी जोर मे चटख गये। खोह के बाहर एक और आग जलायी गयी और, जैसा कि अलेक्सेई को बताया गया, वहा एक पत्थर गर्म किया गया। वार्या ने लकडी का पुराना टब पानी से भर दिया। सुनहली पुआल फर्श पर बिछा दी गयी। इसके बाद मिखाईल नाना ने कमर तक अपने कपडे उतार डाले—सिर्फ पेंट पहने रहा—उसने जल्दी से कुछ क्षार लकडी की छोटी-सी बाल्टी में घोल दिया और नहाने के वक्त शरीर मलने के लिए चटाई का टुकडा फाडकर स्पज-सा बना लिया। जब खोह इतनी गर्म हो गयी कि छत से पानी की ठडी बूदें जोरो से चूने लगी, तो बूढा शीघ्रतापूर्वक बाहर गया और लोहे के टुकडे पर गर्म लाल पत्थर रखकर ले आया। इसे

उसने टब मे डाल दिया और सी-सी आवाज के साथ भाप का एक बादल उठकर छत से टकरा गया, उसके नीचे फैल गया और फिर धुंधले धब्बे बनकर बिखर गया। उस कुहरे में कुछ नही दिखाई दे रहा था, मगर अलेक्सेई को लगा कि बूढे के होशियार हाथ इसके कपडे उतार रहे हैं।

वार्या अपने ससुर की सहायता कर रही थी। गर्मी के कारण उसने अपना रुई भरा कोट और सिर का रूमाल उतार दिया। उसकी घनी लटें—तार-तार रूमाल के नीचे उनके अस्तित्व की कल्पना भी करना कठिन था—खुलकर पीठ पर बिखर गयी, और यकायक, वह धर्मपरायण बूढी औरत मे बदलकर, छरहरी, बडी-बडी आंखोंवाली फुरतीली युवती के रूप में प्रकट हो गयी। यह परिवर्तन इतना आकस्मिक था कि अलेक्सेई जिसने अभी तक उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया था, यकायक अपनी नगी अवस्था पर लजा गया।

"फिक्र न करो, अलेक्सेई, बेटे, कोई फिक्र न करो," मिखाईल नाना ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा। "कोई चारा भी तो नही है। तुम्हारे लिए यह काम तो हमें करना ही पडेगा। मैंने सुना है कि फिनलैंड में मर्द-औरत साथ-साथ नहाते हैं। क्या? सच नही है? शायद उन्होंने मुझे झूठ बताया है। लेकिन वार्या तो यहा, इस समय अस्पताल की नर्स के समान है, युद्ध मे घायल हुए एक व्यक्ति की सेवा कर रही है, इसलिए शर्म खाने की कोई बात नही है। वार्या, सभालना इसे, तब तक मैं इसकी कमीज उतार दू। हे भगवान, यह तो बिल्कुल सड गयी है। चिथडे-चिथडे हो रही है!"

और अब अलेक्सेई ने युवती की बडी-बडी काली-काली आखो मे भयाकुलता का भाव उतरते देखा। दुर्घटना के बाद आज पहली बार अलेक्सेई ने, भाप के झीने परदे में से, अपना शरीर देखा। सुनहली पुआल पर, चमडी मात्र से ढका हुआ, मनुष्य का ककाल पडा था,

"वही औरतो जैसी बेवकूफी! [illegible] तुम्हारा दिमाग? इस आदमी के मुह मे ग्यारह दिन से अनाज-पानी का एक दाना तक आ गया नही है और तुम हो कि [illegible]! वाह, इतने सारे उबले अंडो से तो वह मर ही जायगा!" फिर वह अनुनय के स्वर मे कहने लगा: "इसे अभी अंडो की जरूरत नही है। तुम जानती हो, वसिलीसा, इसके लिए क्या चीज जरूरी है? मुर्गी का थोडा-सा शोरबा! हा, इसकी जरूरत है इसे! इससे इसमे नयी जिदगी पड जायगी। तो, अब तुम्ही अपनी प्यारी पर्टीआलोचका . . हुह?"

लेकिन उसकी बात उग [illegible] हुई बूढी औरत की रूखी, कर्कश आवाज ने काट दी

"मै नही दूगी, नही दूगी, नही दूगी। शैतान बूढे, तुमसे तो कुछ कहना ही बेकार है। उसके बारे मे अब कभी जबान भी न खोलना! अपनी पर्टीआलोचका को दे दू? मुर्गी का शोरबा! थोडा-सा, मुर्गी का बढिया शोरबा! पहले ही हम कितना दे चुके है? इतने मे तो एक ब्याह हो जाता! अब आगे क्या मागोगे?"

"अक्ख, वसिलीसा! औरतो की तरह बात करते तुझे तो शर्म आनी चाहिए!" बूढे ने फिर कापती हुई आवाज मे कहा। "खुद तुम्हारे दो आदमी है मोर्चे पर, और फिर भी तुम ऐसी बेवकूफी की बात करती हो! इस आदमी ने, तुम समझो, अपने को हमारे लिए पगु बना लिया है, अपना खून बहाया है "

"मुझे उसका खून नही चाहिए! मेरे लिए मेरे दो बेटे खून बहा ही रहे है! अब मागने से कोई फायदा नही। मै कह चुकी, नही दूगी .. और बस, नही दूगी!"

एक बुढिया आकृति का छाया-चित्र दरवाजे की ओर लपका और जब वह खुला तो बसन्ती प्रकाश की एक किरण इस खोह मे आ चमकी,

उसमे इतनी चकाचौंध थी कि अलेक्सेई ने कसकर आखे मीच ली और कराह उठा। बूढा दौडकर उसके पास आ गया

"तुम सो नही रहे थे, अलेक्सेई? तुमने ये बाते सुनी? सुन ली? मगर उसकी निन्दा मत करना, अलेक्सेई, उसकी बातो के लिए उसकी निन्दा मत करना। शब्द तो खोखले है, मगर उनका सार सही-सलामत है। क्या तुम्हारा ख्याल है कि मुर्गी देने मे वह कुढ रही है? बिल्कुल नही, अल्योशा! जर्मनो ने उसके सारे कुनबे का सफाया कर दिया और वह बडा कुनबा था, दस प्राणी थे। उसका सबसे बडा लडका कर्नल है। जर्मनो को यह पता चल गया और कर्नल के सारे कुनबे को, वसिलीसा को छोडकर सबको, वे एक साथ गोली मारने के लिए खदक पर ले गये। और उन्होने उसका घर फूक डाला। तुम समझ ही सकते हो कि उसकी उम्र की औरत के बेसहारे हो जाने का क्या मतलब होता है! अब उसके पास कुछ बचा है तो एक मुर्गी। और मै बताऊ, अल्योशा, वह बडा होशियार पछी है। जर्मनो ने पहले ही हफ्ते मे सारी मुर्गी-बतख वगैरा हथिया ली। वे लोग, वे जर्मन, मुर्गी-बतख के बडे शौकीन है। चारो तरफ यही सुनाई देता था 'मुर्गी! मुर्गी!' लेकिन यह एक बच निकली! यह कोई साधारण मुर्गी नही है, मै बताये देता हू! वह तो सरकस के लायक है! जब कोई फासिस्ट हाते में घुस आता तो वह अटारी में दुबक जाती और बिल्कुल चुप्पी साध लेती, मानो वह उसमे है ही नही। लेकिन अगर कोई हमारा ही आदमी आता तो वह जरा भी परवाह न करती। वह यह फर्क कैसे जान जाती थी, भगवान ही जाने! और इस तरह वह बच गयी—सारे गाव मे एक, अकेली। और उसकी इस चालाकी की वजह से हमने उसका नाम रखा पर्टीजानोचका (यानी छापेमार)।"

अलेक्सेई मेरेस्येव खुली आखो ही ऊघ गया, वन-जीवन में वह इसका अभ्यस्त हो गया था। उसकी चुप्पी से मिखाईल नाना अवश्य

जायगी। मै जानता हू, औरतो को क्या है। उनके दिल गिर जायेंगे बेचारियो के।"

खोह के बाहर आंगन में चिड़ियां किसी झुण्ड की तरह चें-चें कर रही थी, खेत से लायी गयी घास की हरी पत्ती देखकर उनके अन्दर नयी आशा जाग गयी थी। शाम को मिगार्डेल नाना हथेलिया रगड़ते हुए आये और बोले

"बता सकते हो, अलेक्सेई, कि मेरे लम्बे-लम्बे बालोंवाले मन्त्रियों ने क्या फैसला किया है? कुछ बुरा नही रहेगा, मै कहता हू। एक टीम तो निचली जमीन मे जुताई करेगी जहा भारी मशक्कत पड़ती है। वे लोग गायें जोत लेंगे। यह नही कि उनसे कोई बहुत काम बन जायगा। पूरे झुण्ड मे से अब छै ही तो हमारे पास रह गयी है! दूसरी टीम ऊची जमीन में काम करेगी जो तनिक सूखी है। वे लोग खुरपी और फावड़े से खुदाई करेंगे। शाक-सब्जी की जमीन को तो हम इसी तरह खोदते है, क्यो न? तीसरी टीम पहाड़ी पर चढ़ जायगी। वहा रेतीली मिट्टी है, उसे हम आलू के लिए तैयार करेंगे। यह काम आसान है। इस काम में हम बच्चो और कमजोर औरतो को लगा देंगे। और जल्दी ही हमें सरकार से मदद मिल जायगी। लेकिन अगर हमे न भी मिले, तब भी हम काम चला लेंगे। हम यह काम अपने बल पर करेंगे, और हम एक चप्पा जमीन बेकार न जाने देंगे, इतना भरोसा मै तुम्हे दिला सकता हू। शुक्र है हमारे आदमियो का जिन्होंने यहा से फासिस्टो को भगा दिया, अब हम जिंदा रह सकेंगे। हमारी जाति बड़ी मजबूत है और चाहे जैसी मुसीबत टूट पड़े, हम उसका सामना कर सकते है।"

नाना को बड़ी देर तक नीद न आयी। वे पुआल के बिस्तरे पर अंगड़ाइया लेते और करवट बदलते, खासते, खुजलाते रहते और बड़बड़ाते जाते "हे मालिक! हे मेरे भगवान!" वे कई बार उठे, बालटी तक गये, डबुआ गड़गड़ डुबोकर पानी भरा और थके हुए घोड़े

के समान, विह्वलतापूर्वक, बडे-बडे घूट पी गये। आखिरकार उनसे लेटे न रहा गया। वे उठ बैठे, उन्होने मशाल जला ली और जाकर अलेक्सेई को स्पर्श किया जो अर्धचेतन अवस्था मे आखे खोले पडा था, और बोले

"तुम सो रहे हो, अलेक्सेई? मै लेटा था और सोच रहा था। सुनते हो, मै लेटा था और सोच रहा था। वहा, उस पुराने गाव मे चौराहे पर एक बलूत का वृक्ष खडा हुआ है। तीस वर्ष पहले, पहली बडी लडाई के दौरान मे, जब निकोलस गद्दी पर था, इस पेड पर बिजली गिरी थी, जिससे उसका शीश जल गया था। लेकिन वह मजबूत पेड था—ताकतवर जडे और खूब रस। वह रस भला ऊपर की तरफ कहा जाता, इसलिए उससे बगल मे एक टहनी फूट पडी और अब तुम देखो तो कैसा बढिया, हराभरा, घुघराला, उसका सिर है हमारे प्लावनी की भी यही तासीर है अगर आसमान साफ रहे और जमीन जरखेज हो, तो देखो कि अपनी सरकार, सोवियत सरकार, के बल पर हम हर चीज पाच साल के अन्दर फिर खडी कर देगे, अलेक्सेई भाई। यह न भूलना कि हम इरादे के पक्के है, हा! काश, यह लडाई जल्दी खत्म हो जाती! हम उन्हे ठिकाने लगा देंगे, फिर काम मे जुट जायेगे, सब एक साथ। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

उस रात अलेक्सेई की हालत और बिगड गयी।

नाना के स्नान ने अलेक्सेई पर उत्तेजक प्रभाव डाला था और उसे जडता से मुक्त कर दिया था। उसे अपनी क्षीणता, और थकान, और पैरो के दर्द का अहसास भी पहले से अधिक होने लगा था। वह अपनी चटाई पर बुरी तरह करवटे बदल रहा था, कराह उठता था, दात किटकिटा उठता था, किसी को पुकार उठता था, किसी पर बिगड उठता था, कभी कुछ माग बैठता था।

वार्या टागे सिकोडे, घुटनो पर ठोडी रखे और अपनी बडी-बडी,

वेदनापूर्ण आखो से सामने नजर गडाये हुए, सारी रात उसके पास बैठी रही। जब-तब वह ठडा-गीला चियडा अलेक्सेई के सिर या सीने पर रख देती या भेड की खाल का कोट ओढा देती जिसे वह बार-बार फेक देता था, और सारे वक्त अपने पति के विषय मे सोचती रही, जो कही दूर होगा—युद्ध की आधी मे इधर-उधर उडता न जाने कहा होगा।

उषा की पहली किरण के साथ बूढा जाग गया, उसने अलेक्सेई पर नजर डाली जो अभी शान्त था और ऊघ रहा था, और कानाफूसी के स्वर में वार्या से न जाने क्या कहकर यात्रा के लिए तैयार हो गया। उसने अपने नमदे के जूतो के ऊपर एक और बरसाती जूता चढा लिया जिसे उसने मोटर टायर से खुद अपने हाथो बनाया था, सरपत के कमरबद से अपना कोट कस लिया और जूनिपर की डाल की छडी उठा ली जिस पर उसने अपने हाथ से पालिश की थी और जिसे लम्बी यात्राओ पर वह हमेशा अपने साथ रखता था।

अलेक्सेई से एक शब्द कहे बिना वह बाहर चला गया।

१७

मेरेस्येव की हालत ऐसी थी कि उसे अपने मेजबान के चले जाने का भी बोध न हुआ। अगले दिन वह बराबर अचेत पडा रहा, और तीसरे दिन जाकर उसे तब होश आया, जब सूरज आसमान पर ऊचे चढ आया था और चूल्हे के धुए की धूसर, घनी पर्तो को चीरकर सूर्य की सुनहली मोटी किरण खोह मे झरोखे से घुसकर अलेक्सेई के पैरो तक टाग फैलाये थी, जिससे खोह का अधेरा दूर होने के बजाय और गहरा हो गया था।

खोह मे कोई न था। वार्या की धीमी रूखी आवाज दरवाजे के पार से आ रही थी। स्पष्ट था, वह किसी काम में लगी हुई थी और

किसी पुराने गीत की कड़ी गा रही थी जो इस वन-प्रदेश में लोकप्रिय था। वह गीत किसी एकाकी [illegible] वृक्ष के विरह मे था जिसकी कामना थी कि उस बलूत वृक्ष के पास पहुंच जाय जो कुछ दूर पर उसकी ही तरह एकाकी खड़ा है।

अलेक्सेई इस गीत को पहले भी कई बार सुन चुका था; यही गीत वे उल्लासित लड़कियां भी गा रही थी, जो दल बांधकर आसपास के गांवों से हवाई अड्डा समतल करने और साफ करने आयी थी। उसकी मंद-मंद, करुणापूर्ण स्वर-लहरी उसे पसंद थी। किन्तु उसके पहले उसने इस गीत के शब्दों पर ध्यान न दिया था, और फौजी जिदगी के शोर-गुल मे उसकी पंक्तिया, कोई भी स्मृति छोडे विना, उसके दिमाग से उतर जाती थीं। उस यौवनपूर्ण, बडी-बडी आंखोंवाली, इतनी मृदुल भावनाओ से पूर्ण लड़की के अधरों से वही शब्द फूट पडे और उनसे इतनी वास्तविक, और न केवल कवित्वपूर्ण, वरन्, नारी-सुलभ कामना अभिव्यक्त हो रही थी कि अलेक्सेई ने फौरन उस स्वर की सम्पूर्ण गहनता की अनुभूति ग्रहण कर ली और समझ गया कि वार्या नामक वन-लता अपने बलूत वृक्ष के लिए कितनी विरह-कातर है।

कहा लिखा है वन्य लता की किस्मत में
एकाकी बलूत तरुवर से मिल पाना,
उस अनाथ को, बेचारी को, इस गति मे,
युग-युगान्त तक एकाकी ही हहराना।

वार्या गा रही थी और उसके स्वर मे वास्तविक आसुओ की कातरता अनुभव हो रही थी। जब वह स्वर रुक गया तो अलेक्सेई की आखो के सामने साकार हो उठा कि बाहर पेड़ के नीचे वह वसंती धूप से नहायी हुई बैठी है और उसकी बडी-बडी, गोल-गोल, व्याकुल आखे आसुओ से भरी है। उसे खुद अपना गला रुधा मालूम हुआ और उसके अन्दर अदम्य कामना जागृत हुई कि वह अपनी वर्दी की जेब में पडे

हुए, पुराने पत्रो को, पढ़े नही, देखता रहे, जिनका एक-एक शब्द उसे कंठस्थ है और मैदान मे बैठी हुई छरहरी रानी के उस फोटो की तरफ भी देखता रह जाय। उसने वर्दी की तरफ हाथ ले जाने का प्रयत्न किया, मगर उसका हाथ असहाय-सा चटाई पर गिर गया। एक बार फिर हर चीज, इन्द्रधनुषी छल्लो से भरे, मटमैले अन्धकार मे तैरती नजर आने लगी। आगे चलकर, उस अन्धकार में, जहा विचित्र मर्मभेदी स्वर गूंज रहे थे उसे दो आवाजें सुनाई दी—एक तो वार्या की और दूसरी, किसी बूढ़ी महिला की, जो उसको परिचित लगी। वे फुसफुसाकर बाते कर रही थी।

"वह खाता कुछ नही?"

"नही, खा ही नही पाता। कल उसने रोटी का एक टुकडा—बहुत ही छोटा टुकडा—चूसा था और उससे उसे कै हो गयी। इसे कुछ खाना-पीना कहते है? वह थोडा-सा दूध पी पाता है, इसलिए हम थोडा-सा दे देते है।"

"देख, मै कुछ शोरवा लायी हू शायद बेचारा थोडा-सा चखना पसद करे।"

"वसिलीसा चाची!" वार्या विस्मय से बोली। "तो तुमने सचमुच "

"हा, यह मुर्गे का शोरवा है। तुम इतनी हैरान क्यो हो रही हो? इसमे गैर-मामूली बात कुछ नही। उसे हिलाओ, जगा दो जरा, शायद वह इसे चखना पसद करे।"

और इसके पहले कि अलेक्सेई—जो यह वार्ता सुन रहा था—आखे खोल पाता, वार्या ने उसे जोर से, बेहिचक, झकझोर दिया और उल्लास से चिल्ला पडी

"अलेक्सेई पेत्रोविच! अलेक्सेई पेत्रोविच! उठो तो! मा वसिलीसा तुम्हारे लिए मुर्गे का शोरवा लायी है! मै कहती हू उठ तो बैठो!"

एक दो चम्मच पीने से उसके भीतर की भूख जाग गयी, वह भूख से इतना व्याकुल हो गया था कि उसे पेट में दर्द, ऐंठन महसूस हुई, लेकिन उसने सिर्फ दस चम्मच और मुर्गे के सफेद गोश्त के चन्द नरम-नरम टुकड़े से अधिक अपने को न खाने दिया। हालांकि उसका पेट और अधिक की माग बड़े जोर से कर रहा था, फिर भी उसने जी कड़ा करके भोजन दूर कर दिया, क्योंकि वह जानता था कि इस हालत में एक भी फाजिल चम्मच उसके लिए जहर साबित हो सकता है।

दादी के शोरबे ने करिश्मा कर दिखाया। इस अल्पाहार के बाद अलेक्सेई सो गया—झपकी भर नहीं, असली, गहरी, स्वास्थ्यकर नींद।

जब नींद खुली तो उसने थोड़ा और खाया और फिर सो गया, और न तो चूल्हे के धुएं से, न औरतों की बातचीत से और न वार्या के हाथों के स्पर्श से ही उसे जगाया जा सका – वार्या आशंकावश कि कहीं वह मर तो नहीं गया है, बार-बार उसके ऊपर झुक जाती और देखती कि उसका दिल धड़क रहा है या नहीं।

वह जीवित था, नियमित और गहरी सांस ले रहा था। वह सोता ही रहा सारे दिन, सारी रात, और इस तरह सोता रहा मानो धरती की कोई ताकत उसे जगा नहीं पायगी।

अगले दिन बड़े भोर ही, वन में छाये हुए स्वरों के ऊपर, एक दूरागत, अनवरत गुंजार स्पष्ट सुनाई दी। अलेक्सेई चौंक गया, उसने तकिये से सिर उठाया, और कान लगाकर सुनने लगा।

उन्मत्त और अदम्य उल्लास का भाव उसके समूचे शरीर में व्याप गया। वह निश्चल लेटा रहा, उसकी आंखें उत्तेजना से कौंधने लगीं। उसे चूल्हे के ठंडे होनेवाले पत्थरों की चटख, रात भर गाते रहने के कारण थके हुए झींगुर की हलकी-सी झनकार, खोह के चारों ओर खड़े हुए पुराने चीड़ वृक्षों के हहराने की नियमित ताल और दरवाजे के बाहर पिघली हुई बसंती बर्फ़ की भारी बूंदों के टपकों तक के स्वर सुनाई दे रहे थे। किन्तु इन सारे स्वरों के ऊपर लगातार गुंजार का स्वर आसानी से पहचाना जा सकता था। अलेक्सेई भांप गया कि यह आवाज 'ऊ-२' वायुयान से आ रही है। यह आवाज किसी क्षण बुलन्द हो जाती तो कभी दब जाती, लेकिन पूरी तरह विलीन कभी न हुई। अलेक्सेई ने सांस रोक ली। स्पष्ट था कि हवाई जहाज कहीं आसपास ही था और वह या तो निरीक्षण करता या उतरने के लिए उचित स्थान खोजता, जंगल के ऊपर मंडरा रहा था।

"वार्या, वार्या!" अलेक्सेई ने पुकारा और अपने को कुहनी के बल उठाने का प्रयत्न किया।

किन्तु वार्या उस खोह मे न थी। बाहर से उत्तेजित औरतों की आवाजें और भाग-दौड की आहट सुनाई दी। बाहर कुछ हो रहा था।

एक क्षण खोह का द्वार खुला और फेद्का का चित्ता चेहरा प्रकट हुआ।

"वार्या चाची! वार्या चाची!" लडका चिल्लाया और फिर उत्तेजित स्वर मे बोला "उड रहा है! चक्कर लगा रहा है! हमारे ऊपर चक्कर लगा रहा है!" और इसके पहले कि अलेक्सेई पूछ पाता कि क्या उड रहा है, वह गायब हो गया।

बडा जोर लगाकर अलेक्सेई उठकर बैठ गया। हृदय की धक्-धक्, कनपटियो में खून के उमडने और आहत पैरों मे दर्द के कारण उसके सारे शरीर से कपकपी छूटने लगी। हवाई जहाज जितने चक्कर लगा रहा था, उन्हे वह गिनने लगा उसने गिना एक, दो, तीन और उत्तेजनावश फिर चटाई पर गिर गया, और पुन शीघ्रतापूर्वक, अदम्य गति से उसी गहरी, स्वास्थ्यकर निद्रा में डूब गया।

किसी युवा, गुजायमान, सुरीले मद स्वर के द्वारा वह जाग गया। इस कठ को वह किसी समूह गान मे भी पहचान लेता। लडाकू रेजीमेंट में इस तरह के कट का एक मात्र व्यक्ति था स्क्वाड्रन कमाडर अन्द्रेई देगत्यरेन्को।

अलेक्सेई ने आखे खोली, मगर उसे महसूस हुआ कि वह अभी भी सो रहा है और यह स्वप्न ही है, कि उसे अपने मित्र का चौडा-सा, उभडे कपोलवाला, अनगढ, मधुर स्वभाव अकित, नुकीला चेहरा दिखाई दे रहा है, माथे पर बैंगनी घाव का चिह्न है, हल्के रग की आखें हैं, और उतनी ही हल्की और बेरग लम्बी-लम्बी बरौनिया है जिनको अन्द्रेई के शत्रु 'सुअर की बरौनिया' कहा करते है। धुए जैसे अर्द्ध-अधकार में से हल्के नीले रंग की दो आखें प्रश्न-भाव से झाकने लगी।

"दादा, अब दिखाओ तुम अपना विजय पुरस्कार," देगत्यरेन्को की आवाज खास उक्रइनी उच्चारण के साथ गूज गयी।

यह स्वप्न विलीन न हुआ। मचमुच देगत्यरेन्को ही था, यद्यपि यह नितात कल्पनातीत था कि यहा, उस वन की गहराई में बसे भूमिगत गाव में उसका मित्र आ भी सकता है। वह सामने खडा था—लम्बा कद, चौडे कधे और हमेशा की तरह उसके कोट के कालर के बटन खुले हुए। वह अपना टोप हाथ में लिये था और उसके रेडियोफोन के तार उसमे लटक रहे थे, और वह कुछ पैकेट और पार्सले भी पकडे था। उसके पीछे मशाल जल रही थी और उसके सुनहले, बारीक कटे, खुरखुरे बाल, दिव्य प्रभा की भाति, चमक रहे थे।

देगत्यरेन्को के पीछे से मिखाईल नाना का जर्द, थका हुआ चेहरा झाक रहा था, उनकी आखे उत्तेजना से भरी थी, और उनके बगल मे एक नर्स खडी थी—वही नुकीली नाकवाली, नटखट लेनोच्का, जो जगली जानवर जैसे कौतूहल के साथ अधेरे मे से झाक रही थी। वह बगल मे जीन का रेडक्रास थैला दबाये थी और विचित्र से फूलो को अपनी छाती से चिपकाये थी।

सभी लोग खामोश खडे थे। देगत्यरेन्को ने व्यग्रतापूर्वक चारो ओर देखा; स्पष्ट था कि इस अधेरे मे उसे कुछ सूझ नही रहा था। एक-दो बार उसकी नजरे ऐसे ही अलेक्सेई के चेहरे पर से गुजर गयी, और अलेक्सेई भी अभी तक अपने को यह न समझा पाया था कि उसका मित्र यकायक ही यहा आ सकता है, और डर रहा था कि कही यह सब सान्निपातिक स्वप्न भर न निकले।

"हे भगवान, तुम्हे वह दिखाई भी नही देता? वह इधर लेटा है," वार्या ने मेरेस्येव के ऊपर से भेड की खाल का कोट उतारते हुए फुसफुसाकर कहा।

देगत्यरेन्को ने अलेक्सेई के चेहरे पर पुन किकर्तव्यविमूढ दृष्टि डाली।

"अन्द्रेई।" मेरेस्येव ने अपने को कुहनी के बल उठाने का प्रयत्न करते हुए क्षीण स्वर में पुकारा।

अन्तत आश्वस्त होकर कि यह स्याह, जीर्ण-शीर्ण, हल्का-सा शरीर, उसके सहयोगी, उसके दोस्त, अलेक्सेई मेरेस्येव का ही है, जिसे सारी रेजीमेंट मरा मान बैठी थी, अन्द्रेई ने अलेक्सेई को बिस्तर पर लेटा दिया, खुद अपना सिर पकड लिया, विजयी भाव से चीख उठा और अलेक्सेई को कधो से पकडकर उसकी काली-काली आखो मे झाकने लगा जो गहरे गड्ढो के अदर आनन्द से चमक रही थी, और फिर चिल्ला उठा.

"जिन्दा है! पवित्र माता! जिदा है, शैतान तुझे तो ले जाय! कहा था तू इतने दिन? क्या हो गया था तुझे?"

लेकिन उस चिपटी नाकवाली, नाटी गलफुल्ली नर्स ने जिसे रेजीमेंट भर, उसके लेफ्टीनेट ओहदे की उपेक्षा करके, सिर्फ लेनोच्का या 'चिकित्सा विज्ञान की सिस्टर' कहकर पुकारा जाता था, क्योकि यह दोष तो उसी का था कि उसने अपने से बडे ओहदेवालो को अपना परिचय इसी प्रकार दिया था,—उस हसती, गाती रहनेवाली लेनोच्का ने, जो एक साथ एक समय सभी लेफ्टीनेटो से प्रेम किया करती थी, उत्तेजित विमान-चालक को बिस्तर से दूर धकेल दिया और सख्ती से बोली

"कामरेड कप्तान, अब रोगी को अकेला छोड दो, इसी समय!"

जिस गुलदस्ते के लिए एक दिन पहले विमान क्षेत्रीय केन्द्र उटा था, और जो इस समय फिजूल साबित हो रहा था, उसे मेज पर फेंककर, उसने जीन का रेडक्रास थैला खोला और बाकायदा रोगी की परीक्षा करने लगी। उसने कुशलतापूर्वक अपनी ठूठ-सी उगलियो मे अलेक्सेई के पैर ठोके और पूछा.

"दर्द होता है? ऐसा? और ऐसा?"

अब पहली बार अलेक्सेई ने अपने पैरो पर भरपूर नजर डाली। पैर बुरी तरह सूज गये थे और लगभग काले पड गये थे। तनिक स्पर्श भर मे उसके सारे शरीर मे दर्द बिजली की तरह दौड जाता था। लेकिन

स्पष्ट था कि सेनोचका को जो घाव लगा था वह गहरा न था, पर यह थी कि पैरों की उंगलियां बिल्कुल पाली पड़ गयी थीं और बिल्कुल सुन्न हो गयी थीं।

मिखाईल नाना और देगत्यरेन्को मेज के पास बैठ गये। इस अवसर को मनाने के लिए त्योहार की खातिर में [illegible] दो घूंट पीकर, वे जोरों से गपशप में लग गये थे। अपनी खासी [illegible], ऊंची आवाज में मिखाईल नाना बताने लगे कि अलेक्सेई कैसे मिला — और जाहिर था कि वे इस बात को पहली बार नहीं बता रहे थे।

"हा तो, हमारे बच्चों ने उसे पड़े हुए जंगल में पाया। जर्मनों ने अपनी बाडबन्दी के लिए लट्ठे गिराये थे और इन बच्चों की मा ने, यानी मेरी बेटी ने, उन्हें ईंधन जमा करने के लिए भेजा था। इस तरह वह मिल गया। 'आहा! उधर यह अजीब-सी चीज क्या पड़ी हुई है?' पहले तो उन्होंने सोचा कि वह घायल भालू है जो लुढ़कता फिर रहा है और वे फौरन सिर पर पैर रखकर भागे। लेकिन कौतूहल की जीत हुई और वे लौट पड़े। 'यह कैसा भालू है? वह लुढ़कता क्यों फिर रहा है? आहा, इसमे भी कोई मजेदार राज है?' वे बराबर उसे देखते रहे और उन्होंने इस चीज को बराबर लुटकते जाते और कराहते देखा।"

"तुम्हारा 'लुढकने' मे क्या मतलब है?" देगत्यरेन्को ने संदेहपूर्वक पूछा और मिखाईल नाना के सामने सिगरेट केस बढा दिया। "आप पीते है?"

दादा ने सिगरेट ले ली, अपनी जेब से अखबार का एक तहशुदा कागज निकालकर उसमे से एक टुकड़ा फाड़ा, उसपर सिगरेट की तम्बाकू झाड़ ली, उसे लपेट लिया और उसे जलाकर बडे स्वाद से गहरा कश ले लिया।

"सिगरेट? जरूर पीता हू," एक और कश खींचने के बाद वे बोले। "हा, हा! बस, बात यह है कि जब से जर्मन आये है, तब से

मैंने तम्बाकू देखी नही है। मै सेवार पीता हू और हा, स्पजं की सूखी पत्तिया भी! और वह कैसे लुढकता फिरा, यह उसी से पूछो। मैंने नही देखा। लडके बताते है कि वह पीठ से पेट की तरफ और पेट से पीठ की तरफ लुढकता था। बात यह थी कि उसमे हाथो और घुटनो के बल रेगने की ताकत नही थी। ऐसा है यह आदमी!"

देगत्यरेन्को अपने मित्र को देखने के लिए जब-तब उछल पडता था और अलेक्सेई को महिलाए उस मटमैले फौजी कम्बलो मे लपेट रही थी जिन्हे नर्स अपने साथ लायी थी।

"शान्त बैठे रहो, बेटे, शान्त बैठो। यह कपडा लपेटने का काम मर्दों का नही होता!" नाना ने उसे रोकते हुए कहा। "सुनो, जो मै कह रहा हू और यह बात अपने बडे अफसरो को बताना न भूलना। इस आदमी ने बहुत बडा काम किया है। देखते हो, क्या हालत है उसकी। हम सब, सामूहिक खेत के सारे लोग, एक हफ्ते से इसको सभाल रहे है और तब भी वह हिल-डुल तक नही सकता। लेकिन इसी मे इतनी ताकत थी कि वह हमारे जगलो और दलदलो को रेगकर पार कर आया। विरले ही ऐसे मिलेगे जो यह कर दिखाये। साधु-महात्माओ ने भी अपनी उपासना मे कभी इस तरह का करतब नही दिखाया। किसी खम्भे पर खडे रहने मे क्या है? सच है न मेरी बात! मै तो यही कहूगा! लेकिन सुनो, बेटे, सुनो "

बूढा देगत्यरेन्को के कान के पास झुक आया और अपनी मुलायम, झबरी दाढी से उसे गुदगुदाते हुए, लगभग कानाफूसी के स्वर मे बोला

"फिर भी, मुझे आशका है कि वह न मर जाय। तुम्हारा क्या ख्याल है? वह जर्मनो के चगुल से बच निकला, लेकिन उस दडधारी यमदूत के हाथो से कोई बच सकता है? चमडी और हड्डियो के सिवा क्या रहा है—वह कैसे रेगता फिरा, मै कल्पना ही नही कर पाता! अपने लोगो के पास पहुचने के लिए वह बुरी तरह छटपटाता रहा होगा,

क्यों? जितने भी वक्त उसके होश-हवास गुम रहे, वह बराबर बडबडाता रहा 'हवाई अड्डा', 'हवाई अड्डा', और कुछ और भी शब्द थे और उसने ओल्गा का नाम भी लिया था। तुम्हारे यहा कोई इस नाम की लडकी है क्या? शायद यह उसकी घरवाली है। सुन रहे हो मेरी बात? सुना तुमने, मैंने क्या कहा? ऐ हवाबाज!"

मगर देगत्यरेन्को नही सुन रहा था। वह इस व्यक्ति, इस अपने साथी के विषय में, जो रेजीमेंट में बडा साधारण-सा लडका मालूम होता था, उस स्थिति की कल्पना कर रहा था जब वह सुन्न पैरो या टूटी टागों से पिघलती हुई बर्फ के ऊपर, जगलो और दलदलो को रेगकर पार करता फिर रहा था, लुढकता फिर रहा था ताकि शत्रु से बच जाय और अपने लोगो तक पहुच जाय। लडाकू-विमान के चालक की हैसियत से वह अपने स्वय के अनुभव से उसके खतरो से परिचित हो चुका था। जब वह युद्ध मे टूट पडता तो मौत के बारे मे कभी सोचता ही नही, उसे आनन्दमय स्फूर्ति ही अनुभव होती। मगर जगल में बिल्कुल अकेले रहकर कोई आदमी ऐसी बात कर दिखाये

"तुम्हे यह कब मिला था?"

"कब?" बूढे ने अपने होठ हिलाये, खुले केस मे से एक और सिगरेट ली और पहले की तरह एक और सिगरेट बनाने लगा। "अच्छा तो, वह कब की बात है? हा, ठीक है। लेंट के दिनो का वह पहला शनिवार था, यानी ठीक एक हफ्ते पहले।"

देगत्यरेन्को ने मन ही मन तारीखें गिनी और हिसाब लगाया कि अलेक्सेई मेरेस्येव अठारह दिन तक घिसटता रहा। कोई घायल आदमी इतने वक्त तक और वह भी बिना भोजन, घिसटता रहे—यह बिल्कुल कल्पनातीत प्रतीत होता था।

"अच्छा, दादा, तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद!" हवाबाज ने कसकर बूढे का आलिगन किया और अपने सीने से चिपटा लिया। "धन्यवाद, भाई।"

"ऐसा न कहो। मुझे धन्यवाद देने की कौनसी बात है। कहता है, धन्यवाद! मैं क्या हू? कोई गैर हूं, विदेशी हू, क्या हू? आहा!" और फिर वह क्रोधपूर्वक अपनी बहू पर चिल्ला उठा, जो अपनी हथेली पर कपोल रखे किसी दुश्चिन्ता मे लीन खडी थी "फर्श पर से यह सामान समेट लो! देखो तो कैसी बेशकीमत चीजे जमीन पर बिखेर दी है! कहता है, धन्यवाद!"

इस बीच लेनोच्का ने मेरेस्येव को यात्रा के लिए तैयार करने का काम खत्म कर लिया था।

"बस, अब ठीक है, अब ठीक है, कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट," वह बडबडा उठी और उसके शब्द इस तरह निकल रहे थे मानो तेजी के साथ किसी थैले से दाने बिखर रहे हो। "अब, मास्को में, वे लोग तुम्हे जल्दी ही चगा कर देंगे। और मास्को तो बडा शहर है, क्या नही? वे तुमसे भी बुरे मामलो को ठीक कर लेते है।"

उसका अतिरजित उत्साह देखकर और जिस तरह वह बराबर दोहरा रही थी कि मेरेस्येव को तुरत ही चगा कर दिया जायगा, उससे देगत्यरेन्को समझ गया कि उसके परीक्षण से स्पष्ट हो गया है कि मामला गम्भीर है और उसके मित्र की हालत बुरी है। 'चिकित्सा विज्ञान की सिस्टर' की तरफ मुह चिडाकर वह अपने से बडबडाने लगा "चिडियो की तरह चे-चें कर रही है।" यकायक उसे याद आया कि रेजीमेंट मे कोई भी आदमी इस लडकी की बात पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान नही देता, और हर आदमी मजाक मे कहता है कि अगर वह किसी रोग का इलाज कर सकती है तो प्रेम का—और यह सोचकर देगत्यरेन्को को कुछ ढाढस बधा।

कम्बलो मे लिपटे अलेक्सेई को देखकर—सिर्फ उसका सिर बाहर दिखाई दे रहा था—देगत्यरेन्को को मिस्र के पुराने राजाओ की ममियो की याद आ गयी, जिनके चित्र उसने प्राचीन इतिहास की पाठ्य-

पुस्तक मे देखे थे। उसने अपना लम्बा-चौडा हाथ अपने मित्र के चेहरे पर फेरा जिस पर सख्त, घनी, भूरी-सी दाढी उगी हुई थी।

"कोई बात नही, ल्योश्का! तुम शीघ्र ही चगे हो जाओगे! तुम्हे मास्को के किसी शानदार अस्पताल में भेजने के लिए हमको हुक्म मिला है। सभी विशेषज्ञ होगे! और जहा तक नर्सों का सवाल है"– उसने जबान तालू पर फेरी और लेनोच्का को आख मारी–"वहा ऐसी है कि मुर्दा भी उठकर चलने-फिरने लगे! हमारे-तुम्हारे भाग्य में अभी बहुत दिनो तक साथ उडना लिखा है " और देगत्यरेन्को को लगा कि वह खुद भी उसी बनावटी, निर्जीव उत्तेजना का शिकार हो गया है जो लेनोच्का पर सवार थी। अपने मित्र के कपोल थपथपाते हुए उसने यकायक महसूस किया कि उसकी हथेलिया नम हो गयी है। "स्ट्रेचर कहा है?" उसने रोषपूर्वक पुकारा। "चलो, इसे बाहर ले चले! देर-दार करने से क्या फ़ायदा?"

बूढे की सहायता से उन्होने कम्बलो में लिपटे अलेक्सेई को सावधानी से स्ट्रेचर पर रखा। वार्या ने उसकी चीजे समेटी और एक बडल में बाध दी।

वार्या बडल के अदर जब जर्मन सिपाही की कटार बाधने लगी, तो उसे रोकते हुए अलेक्सेई ने पुकारा· "नाना!" किफायत की आदत से प्रेरित होकर मिखाईल नाना अक्सर उस कटार की कौतूहलपूर्वक परीक्षा किया करते, उसे साफ करते, पैना किया करते, और अपने अगूठे पर फेरकर उसकी धार आजमाया करते। "इसे मेरी तरफ से भेंट के रूप में ले लीजिए।"

"खूब, धन्यवाद अलेक्सेई! धन्यवाद! यह बडे बढिया किस्म का इस्पात है। और देखो! इस पर कुछ लिखा है, अपनी भाषा में नही," उन्होने देगत्यरेन्को को कटार दिखाते हुए कहा। देगत्यरेन्को ने फल पर खुदे हुए अक्षर पढे और अनुवाद कर दिया "आलेस फ्यूर डोइच्लैड "– "सर्वस्व जर्मनी की सेवा में"।

"सर्वस्व जर्मनी की सेवा में," अलेक्सेई ने दोहराया और उसे याद आ गया कि यह कटार कैसे उसके हाथ लगी थी।

स्ट्रेचर के एक सिरे का हैंडिल पकड़ते हुए देगत्यरेन्को चिल्लाया, "अच्छा तो, युवक, उठा लो उसे, उठा लो उसे!"

स्ट्रेचर झूल उठा और इतनी कठिनाई से उसे खोह के तग दरवाजे से निकाला जा सका कि दीवारों से मिट्टी झड़ गयी।

खोह में जितने भी लोग उमड़ आये थे, वे सब इस असहाय व्यक्ति को विदाई देने के लिए बाहर निकल गये। अन्दर रह गयी सिर्फ वार्या। उसने हौले-हौले मशाल को ठीक रख दिया और धारीदार चटाई के पास आ गयी जिस पर अभी तक उस मानव-शरीर का नक्श बाकी था जो यहा लेटा हुआ था, और उसको थपथपाने लगी। उसकी दृष्टि गुलदस्ते पर पड़ी जो जल्दी मे यही छूट गया था। उसमे बकाइन की कई टहनिया थी–पीली और मुरझाई-सी–इस विस्थापित ग्राम की ही तरह, जिसने सारा शीतकाल ठडी और नम खोहो में गुजार दिया था। युवती ने वसती सौरभ से सुवासित फूल उठाये, और जोर से उन्हे सूघ लिया। हालाकि वह सुगध इतनी हल्की थी कि धुए और कालिख के वातावरण मे उसका अहसास मुश्किल था, फिर वह एक तख्ते पर पछाड़ खाकर गिर गयी और मर्मवेधी अश्रुधारा में फूट पड़ी

१८

अपने अप्रत्याशित अतिथि को विदा करने के लिए प्लावनी ग्राम मे उपस्थित सम्पूर्ण जनसख्या उमड़ आयी। वायुयान जगल के पीछे एक छोटी, लम्बी-सी झील पर उतरा जिसकी बर्फ, हालाकि किनारे-किनारे पिघल चली थी, फिर भी, अभी ठोस और मजबूत थी। इस झील के लिए कोई रास्ता न था। उस तक एक पगडडी थी, जिस पर जमी हुई

नर्म, फुसफुसी बर्फ रौंदते हुए मिखाईल नाना, देगत्यरेन्को और लेनोच्का अभी एक घंटे पहले आये थे। इस पगडंडी से एक हुजूम झील की तरफ बढ़ रहा था, जिसके अगुआ गांव के लड़के थे और बिल्कुल आगे, गम्भीर सेर्योन्का और फेद्का उत्साह से मचलते चल रहे थे। साधिकार एक मित्र की हैसियत से जिसने विमान-चालक को जंगल में पड़ा पाया था, सेर्योन्का स्ट्रेचर के आगे-आगे, अपने पिता द्वारा छोड़े गये भारी-भरकम नमदे बूटों में बंधे पैरों को बर्फ में से श्रमपूर्वक निकालते-घसीटते चल रहा था और दूसरे लड़कों को डांटता-फटकारता जा रहा था, जिनके दांत सफेद, चेहरे मलिन और कपड़े कल्पनातीत रूप में चिथड़े-चिथड़े थे। देगत्यरेन्को और नाना, कदम मिलाते हुए, स्ट्रेचर लिये चल रहे थे और लेनोच्का बगल में अनकुचली बर्फ पर चल रही थी, कभी अलेक्सेई का कम्बल संवार देती और कभी उसके सिर पर अपना गुलूबंद बांध देती। उसके पीछे औरतों, लड़कियों और बुढ़ियों की पांत थी जो बातें करते चल रही थी।

शुरू में बर्फ से प्रतिबिम्बित उज्ज्वल प्रकाश में अलेक्सेई ने चकाचौंध महसूस की। निर्मल वसंती प्रकाश आंखों में इतना तेज लगा कि वह उन्हें बंद कर लेने के लिए विवश हुआ और लगभग अचेत हो गया। पलकें थोड़ी-सी उठाकर उसने अपनी आंखों को अभ्यस्त किया और फिर चारों ओर देखने लगा। भूमिगत ग्राम का सारा चित्र उसके सामने साकार हो गया।

किसी भी तरफ नजर डालो, यह प्राचीन जंगल दीवार जैसा खड़ा दिखाई देता था। पेड़ों के शिखर ऊपर लगभग मिल गये थे और जमीन को अर्द्ध-अंधकार से आवृत्त कर रहे थे। वह मिश्रित प्रकार का जंगल था। चीड़ के सुनहले तनों के आस-पास निराच्छादित भोज वृक्षों के तने थे जिनकी चोटियां आकाश में ऐसी लगती थीं मानो उनपर धुआं जम गया हो, और उनके बीच जहां-तहां देवदार की ऊंची-ऊंची नुकीली, स्याह चोटियां खड़ी थीं।

इन पेडो के नीचे, जहा धरती और आकाश से शत्रु की आखे उन्हे देख न सकती, एक ऐसे स्थल पर उनकी खोहे थी, जिस जगह पर बर्फ बहुत दिनो से सैकडो पैरो द्वारा कुचली जा रही थी। सदियो पुराने देवदार वृक्षो की शाखाओ पर बच्चो के कपडे सूख रहे थे, चीड वृक्षो के ठूठो पर बर्तन और घडे हवा खा रहे थे, और एक प्राचीन देवदार वृक्ष के नीचे, जिसके तने पर मटमैली काई की दाढिया लटक रही थी, उसके विशाल तने के पैरो के पास, पुष्ट जडो के पास ही, जहा हर प्रकार के नियमो के अनुसार, किसी शिकारी जानवर को लेटे होना चाहिए था, जमीन पर एक चिकटी गुडिया पडी हुई थी जिसके चपटे मुह पर काली पेन्सिल से मासूम चेहरा-मुहरा बना हुआ था।

भीड, आगे-आगे स्ट्रेचर लिये हुए, पैरो से रौदी हुई, काई की कालीन बिछी 'सडक' पर धीरे-धीरे बढ रही थी।

अपने को खुली हवा मे पाकर अलेक्सेई ने पहले तो स्वयस्फूर्त पाशविक उल्लास का उफान अनुभव किया, किन्तु उसके बाद मधुर, मूक वेदना की भावना छा गयी।

लेनोच्का ने अपने छोटे-से जेबी रूमाल से उसके चेहरे पर से आसू पोछ दिये और अपने ही ढग से इन आसुओ का अर्थ लगाकर उसने स्ट्रेचर-वाहको से तनिक आहिस्ते चलने का अनुरोध किया।

"नही, नही! और तेज! और तेज चलो!" मेरेस्येव ने उन्हे शीघ्रता करने के लिए कहा।

उसे तो पहले से ही यह लग रहा था कि वे लोग बडे धीरे-धीरे चल रहे है। उसे आशका होने लगी कि वह यहा से निकल नही पायगा, वह हवाई जहाज जिसे मास्को से उसके लिए भेजा गया है, उसका इतजार किये बिना ही उड जायगा, और वह उस अस्पताल तक नही पहुच पायगा जहा उसे जीवनदान प्राप्त करने की आशा थी। स्ट्रेचर-वाहको की तेज चाल के कारण उसे जो दर्द हुआ, उससे वह हल्के से

कराह उठा, फिर भी वह दुहराता रहा "और तेज भाई, और तेज!" वह उन्हे और तेज चलने के लिए ही कहता रहा, हालांकि वह मिखाईल नाना की हाफनी सुन रहा था और उन्हे फिसलते, ठोकर खाते देख चुका था। स्ट्रेचर पर बूढे की जगह दो औरतो ने संभाल ली, बूढे ने स्ट्रेचर की बगल में ही लेनोच्का के दूसरी ओर चलना जारी रखा। पसीने से गीले गंजे सिर, सुर्ख चेहरे और झुर्रीदार गर्दन को अपनी अफसरी टोपी से पोछते हुए वह बडे संतोषपूर्वक बडबडाता रहा

"हमें दौड़ाता है, अच्छा? इतनी जल्दी है! ठीक है, ल्योशा, तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, उन्हे और तेज चलाओ! जब कोई आदमी जल्दी करने को कहे तो समझ लो उसमें प्राण बाकी है और वे जोर से धडक रहे हैं। मैं ठीक नही कहता, प्यारे-दुलारे बेटे?. अस्पताल से हमें चिट्ठी लिखना। पता याद रखना कालीनिन क्षेत्र, बोलोगोये जिला, प्लावनी का भावी ग्राम, समझे? भावी, मैंने कहा। ठीक कहता हू? डरो नही, चिट्ठी हम तक पहुच जायगी। भूलना नही। यह पता ठीक है!"

जब स्ट्रेचर हवाई जहाज में चढाया गया और हवाई जहाज के पेट्रोल आदि की तीखी गध उसके नथुनो में समा गयी, तो उसने एक बार फिर आनन्द का उफान महसूस किया। सेलुलाइड का ढकना उसके सिर के ऊपर चढा दिया गया। जो लोग उसको विदा करने आये थे उनके हाथ हिलते वह न देख सका था, वह उस छोटी नाकवाली बूढी को भी न देख सका, जो मटमैला रूमाल बाधे क्रुद्ध कौए जैसी दिखाई दे रही थी, वह हवाई जहाज के पखे की हवा और आशका से जूझती हुई, देगत्यरेन्को की तरफ बढी जो विमान-चालक की गद्दी पर बैठ चुका था, और उसके हवाले एक पैकेट कर गयी जिसमे उस मुर्गी का बचा-खुचा हिस्सा बधा था, वह यह भी न देख सका कि मिखाईल नाना औरतो को फटकारते हुए और बच्चो को भगाते हुए हवाई जहाज का चक्कर लगाते घूम रहे थे और जब हवा ने उनके सिर से टोपी उडा दी और उसे

दूर बर्फ पर जा फेका तो वे अपनी गजी चाद और रुपहली विरल लटे चमकाते नगे सिर खडे रहे, और इस तरह मालूम हो रहे थे मानो गाव की मूर्त्तियो में अकित सत निकोलस हो। विदा होते हवाई जहाज की ओर हाथ हिलाते हुए वे खडे रहे—औरतो के रगविरगे हुजूम के बीच वह एक अकेला मर्द था।

झील की बर्फीली सतह से ऊपर उठकर देगत्यरेन्को भीड के सिर के ऊपर से उडा और बडी सावधानी से, वह झील के ऊंचे-ऊचे किनारो के सहारे-सहारे विमान चलाता हुआ, जंगल से ढके द्वीप के पीछे गायब हो गया। रेजीमेंट का यह सबसे साहसी चालक, जो हवा में बडी ही लापरवाही से उडने के कारण अपने अफसर से कई वार झिडकिया खा चुका था, इस वार बडी सावधानी से उड रहा था, वह उडा नही, रेगता रहा, जमीन को चूमता रहा, छोटी-छोटी नदियो की सतह पर ही चलता रहा और झीलो के कगारो की ओट लेता रहा। अलेक्सेई को कुछ नही दिखाई दे रहा था, कुछ न सुन पड रहा था। पेट्रोल और तेल की सुपरिचित गध और विमान-यात्रा के आनन्द की अनुभूति के कारण वह चेतना खो वैठा और उसे होश तभी आया जब हवाई अड्डे पर पहुचने के वाद उसके स्ट्रेचर को उतारकर एक दूसरे तेज रफ्तारवाले रेडक्रास विमान में ले जाया जा रहा था जो मास्को से वहा आ पहुचा था।

१६

वह अपने हवाई अड्डे पर पहुचा तो वह दिन का सबसे व्यस्त काल था और वहा पूरी शक्ति से काम चल रहा था—जैसा कि उस बसत के दिनो मे रोज ही होता था।

इजिनो की गडगडाहट एक क्षण के लिए भी न रुकती थी। पेट्रोल-तेल पुन लेने के लिए आसमान से एक स्क्वाड्रन उतरता तो दूसरा

उसकी जगह आसमान में पहुंच जाता और फिर तीसरा उसकी जगह ले लेता। विमान-चालकों से लेकर तेल की टंकियों के ड्राइवर और स्टोर-कीपर तक तब तक काम करते, जब तक वे गिर न जाते। प्रधान स्टाफ-अफसर की आवाज बैठ गयी थी और अब वह फटे हुए, फुसफुसाहट के स्वर में ही बात कह पाता।

लेकिन इतनी जबर्दस्त कार्य-व्यस्तता और आम तनाव के बावजूद हर व्यक्ति बड़ी उत्सुकता के साथ मेरेस्येव के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

विमान उतारकर उन्हें विश्राम-स्थल तक ले जाने के पहले ही, विमान-चालक अपने इंजिनों की गड़गड़ाहट से भी ऊंचे स्वर में चिल्लाकर मेकेनिकों से पूछते "क्या अभी वह नहीं आया?"

तेलवाहक गाड़ियों को जमीन में गड़ी तेल-टंकियों तक ले जाते हुए 'तेल-मालिक' पूछ बैठते "कुछ खबर उसके बारे में?"

और हर आदमी कानों पर जोर लगाकर सुनने लगता कि जंगल पार से रेजीमेंट के रेडक्रास वायुयान की सुपरिचित आवाज आ रही है या नहीं।

जब अलेक्सेई को होश आया और उसने अपने को एक स्प्रिंगदार झूलते हुए स्ट्रेचर पर पड़े पाया तो उसने अपने चारों ओर सुपरिचित चेहरों का घेरा देखा। उसने आंखें खोल दीं। भीड़ से हर्ष-ध्वनि गूंज उठी। ठीक स्ट्रेचर की बगल में उसे रेजीमेंटल कमांडर का युवा, भावशून्य चेहरा दिखाई दिया जिस पर संयमित मुस्कान अंकित थी। उसकी बगल उसने प्रधान स्टाफ-अफसर की रक्ताभ, स्वेदपूर्ण मुखाकृति और बी० ए० एस० अर्थात् बटालियन एयरोड्रोम सर्विस के कमांडर की वही गोलाकार, मांसल और श्वेत मुखाकृति भी देखी जिसकी नियम-पाबन्दी और कंजूसी की आदतों से अलेक्सेई को घृणा थी। कितने सुपरिचित चेहरे थे! आगे का स्ट्रेचर-वाहक यूरा था, जो अलेक्सेई की ओर देखने के लिए बार-बार

सिर घुमाता था और इसलिए लडखडा जाता था। पास ही लाल बालोवाली लडकी, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की सार्जेन्ट थी। पहले अलेक्सेई कल्पना किया करता था कि वह किसी कारण उससे घृणा करती है, वह सदा ही अपने को उसकी नजरो से दूर रखती और आखो मे विचित्र भाव भरकर उसकी ओर चोरी-चोरी ताका करती। वह भी उसे मजाक मे 'मौसमी सार्जेन्ट' कहा करता। उसके पास ही मद-मद चाल से कुकूश्किन चल रहा था—नाटा-सा व्यक्ति, पीलिया-पीडित-सा, अप्रिय चेहरा, जिसे स्क्वाड्रन भर उसकी गैर-मिलनसार आदतो के कारण नापसद करता था। वह भी मुसकरा रहा था और यूरा के बडे-बडे कदमो के साथ कदम मिलाकर चलने का प्रयत्न कर रहा था। मेरेस्येव को स्मरण हो आया कि अपनी आखिरी उडान के पहले, बहुत से साथियो के बीच, उसने कुकूश्किन को ताना मारा था, क्योकि वह उसे एक कर्जा नही लौटा पाया था, और तब उसे विश्वास हो गया था कि यह प्रतिशोधी व्यक्ति इस अपमान के लिए उसे कभी क्षमा न करेगा। लेकिन अब वह स्ट्रेचर के साथ दौड लगा रहा था, सावधानी से उसे सहारा देता जाता था और धक्का-मुक्की से बचाने के लिए अगल-बगल खडे लोगो को कुहनी से हटाता जा रहा था।

अलेक्सेई ने कभी कल्पना भी न की थी कि उसके इतने अधिक मित्र है। लोग, जब अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करते है तो वे ऐसे निकलते है! उसे अब 'मौसमी सार्जेन्ट' के बारे मे अफसोस होने लगा, जो किसी कारण उससे डरी हुई जान पडती थी, वह बी० ए० एस० कमाण्डर की उपस्थिति से भी लज्जित हो उठा, जिसकी कजूसी के बारे मे उसने डिवीजन भर मे न जाने कितने मजाक और किस्से फैलाये थे, और उसे लगा कि वह कुकूश्किन से क्षमा मागे और अन्य साथियो को बता दे कि कुकूश्किन आखिर इतना मनहूस और गैर-मिलनसार नही है। अन्यथा, अलेक्सेई ने महसूस किया कि जितनी भी यातनाए उसे सहन करनी पडी,

उन सब के बाद, आखिरकार, वह अपने परिवार के बीच आ गया है, जहा हर व्यक्ति उसके वापिस आने पर हृदय से आनन्दित है।

मैदान पार करके उसे सावधानीपूर्वक रेडक्रास के रुपहले विमान तक ले जाया गया जो हिमाच्छादित भोज वृक्षो के जगल के किनारे छिपा खड़ा था। उधर मेकेनिक लोग उसके हिम जडित इजिन को रबर के आघात-रक्षक के सहारे स्टार्ट करते नजर आ रहे थे।

मेरेस्येव ने रेजीमेंट के कमाडर की ओर मुखातिब होकर, जितने भी उच्च स्वर और दृढता के साथ सम्भव हो सकता था, यकायक कहा:
"कामरेड मेजर!"

कमाडर अपनी सौम्य और गूढार्थ मुसकान के साथ अलेक्सेई के निकट झुक आया।

"कामरेड मेजर मुझे इजाजत दीजिये कि मै मास्को न जाऊ, बल्कि यही रहू, आप लोगो के साथ "

कमांडर ने अपना टोप उतार दिया, जिससे सुनने में बाधा पड रही थी।

"मै मास्को नही जाना चाहता। मै यही रहना चाहता हू, यही दवादारू केन्द्र पर।"

मेजर ने रोएदार दस्ताने उतार डाले, कम्बल के नीचे हाथ डालकर अलेक्सेई का हाथ टटोला और उसे दबाते हुए बोला

"अजीब छोकरे हो! तुम्हे उचित गम्भीर चिकित्सा की आवश्यकता है।"

अलेक्सेई ने सिर हिला दिया। अब उसे आनन्द और आराम महसूस हो रहा था। उसे अब न तो वह तजुर्बा भयकर महसूस हो रहा था, जिससे उसे गुजरना पडा था, और न अपने पैरो की पीडा ही।

"क्या कह रहा है?" प्रधान स्टाफ-अफसर ने अपनी फटी आवाज में पूछा।

"वह यही हमारे साथ रहना चाहता है," कमाडर ने मुसकुराते हुए उत्तर दिया।

और इस क्षण उसकी मुसकान, हमेशा की तरह गूढ नही, मैत्रीपूर्ण और उदास थी।

"मूर्ख! रोमाटिक! 'पिओनेर्स्काया प्रावदा'* के लिए एक मिसाल हो सकता है," प्रधान स्टाफ-अफसर ने सिसकारी भरी। "वे लोग, खुद सेनापति के आदेशानुसार, मास्को से इसके लिए वायुयान भेजकर, इसका सम्मान कर रहे है और यह है कि क्या समझते हो इसे?.."

मेरेस्येव उत्तर देना चाहता था और कहना चाहता था कि वह रोमांटिक नही है, उसे तो केवल विश्वास हो गया है कि यहा, चिकित्सा केन्द्र के खेमे में, जहा वह एक वार क्षत-विक्षत जहाज लेकर उतरने की दुर्घटना के बाद पैर के उखडे जोड के इलाज के लिए कुछ दिन गुजार चुका है–यहा, इस सुपरिचित वातावरण में–वह मास्को की अपरिचित सुविधाओ के वातावरण की वनिस्वत कही जल्दी अच्छा हो जायगा। उसने ऐसे शब्द भी सोच लिये, जिनसे प्रधान स्टाफ-अफसर को कटु उत्तर दिया जा सके, मगर इसके पहले कि वह उन्हे जवान से निकाल पाता, खतरे के भोपू ने अपनी क्रन्दनपूर्ण आवाज फैला दी।

हर चेहरे पर फौरन एक गम्भीरता और कर्त्तव्यनिष्ठा का भाव छा गया। मेजर ने कई सक्षिप्त आदेश दे डाले। और सारे कर्मचारी चीटियो की तरह व्यस्त हो गये, कुछ लोग उन वायुयानो के निकट पहुच गये जो जगल के किनारे ओट में खडे थे, कुछ लोग कमाण्डर की खोह पर पहुच गये, जो मैदान के सिरे पर एक टीले के रूप में दिखाई दे रही थी और कुछ लोग उन मशीनो के पास पहुच गये जो जगल में छिपी थी। अलेक्सेई ने आसमान में धुए की स्पष्ट रेखा देखी और कई

---

*बच्चो के एक पत्र का नाम।–स०

पूछोवाले राकेट के गिरने का रुपहला, धीरे-धीरे मिटता हुआ निशान देखा। अलेक्सेई समझ गया, वह क्या था हमले के खतरे का 'अनन्ट' था। उसका दिल उछलने लगा, नथुने फड़कने लगे और रीढ में एक ठंडी सिहरन ऊपर से नीचे तक दौड गयी—जैसा कि वह खतरे की घड़ी में हमेशा महसूस किया करता है। लेनोच्का, मैकेनिक यूरा और 'मौसमी सार्जेन्ट', जिन्हे खतरे का भोंपू बजने पर हवाई अड्डे की जबर्दस्त सरगर्मियो के बीच कोई विशेष काम न करना होता था, उस समय स्ट्रेचर झपटकर, तीनों के तीनों, जगल के निकटतम किनारे की ओर दौड पडे—वे एक दूसरे के साथ कदम मिलाकर भागने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उत्तेजना के कारण यह कर नही पा रहे थे।

अलेक्सेई कराह उठा। वे सभलकर साधारण पैदल चाल से चलने लगे। लेकिन दूर पर स्वचालित विमान-भजक तोपें भयानक तरीके से गर्जन करने लगी थी। हवाई जहाजो के दस्ते एक के बाद एक, दौड की पट्टी पर सरक जाते और फुदककर उड जाते और उनके इजिनो की सुपरिचित आवाज के ऊपर अलेक्सेई को जगल की ओर से विशृखलित गुजार सुनाई पडी, जिसको सुनते ही उसकी मास-पेशिया, कसी हुई स्प्रिगो की तरह, अपने आप तन गयी, और स्ट्रेचर से बधा हुआ यह कमजोर व्यक्ति कल्पना करने लगा कि वह किसी लडाकू विमान की गद्दी पर बैठा हुआ शत्रु से भिडने के लिए झपट रहा है।

तग खाई के अदर स्ट्रेचर नही जा रहा था। यूरा और लडकिया चाहती थी कि उसको बाहो में उठाकर अन्दर ले जायें, लेकिन अलेक्सेई ने विरोध किया और माग की कि जगल के किनारे पर ही एक बडे भोज वृक्ष के नीचे स्ट्रेचर रख दिया जाय। यहा लेटे-लेटे उसने सारी घटनाए देखी जो इतनी तेजी से घट गयी जैसे गहरे सपने मे हुआ करती है। जमीन से आकाश-युद्ध देखने का अवसर हवाबाजो को कम ही मिलता है। मेरेस्येव ने, जो युद्ध के पहले ही दिन से वायुसेना मे लड रहा था,

जमीन से आकाश-युद्ध कभी न देखा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि जहा वह लेटा था, वहा से आकाश-युद्ध कितना धीमा और हानि-रहित, इन पुराने और चपटी नाकवाले लडाकू वायुयानो की गति कितनी स्फूर्ति-रहित और उनकी मशीनगनो की खटपट कितनी मासूम मालूम होती है, उसे कुछ घरेलू चीजो की याद आ गयी – जैसे सिलाई की मशीन खडखडाती है, या कपडा जब फाडा जाता है तो उसमे चर्राहट होती है।

सारसो की पात जैसी कतार मे बारह जर्मन बममारो ने हवाई अड्डे का चक्कर लगाया और आसमान मे ऊचे चढ आये सूरज की चमकीली किरणो के बीच गायब हो गये। वहा से, उन बादलो के पीछे से, जिनके किनारे धूप से इतने चकाचौंध हो रहे थे कि उनकी तरफ देखने से आखें दुखने लगती थी, विमानो के इजिनो की हल्की-सी घरघराहट, भौरो की गुजार की तरह, सुनाई दे रही थी। जगल मे वायुयान-भजक तोपे पहले से भी अधिक क्रुद्ध होकर गरज और गुर्रा रही थी। फूटनेवाले गोलो से धुआ डैंडेलियन के रोएदार बीज की तरह, आकाश मे उतराने लगता था। लेकिन किसी लडाकू विमान के पखो की विरली चमक के अलावा और कुछ नही दिखाई दे रहा था।

थोडी-थोडी देर बाद भौरो का गुजार कपडे के चीरने की आवाज से खडित हो जाता था र्र-र्र-र्र-रिप, र्र-र्र-र्र-रिप, र्र-र्र-र्र-रिप! सूर्य की किरणो की चकाचौंध के बीच आकाश-युद्ध घमासान चल रहा था, लेकिन आकाश-युद्ध में भाग लेनेवाले को वह जैसा दिखाई देता है, उससे वह इतना भिन्न था और नीचे से इतना तुच्छ और नीरस जान पडता था कि उसे देखकर अलेक्सेई को तनिक-सा भी रोमाच न महसूस हुआ।

यहा तक कि जब आसमान मे अधिकाधिक तेज आवाज के साथ मर्मभेदक, मनहूस-सी चर्राहट सुनाई देती और बम की कोई खपच्ची, वृक्ष से गिरी बूद की तरह नीचे आ गिरती और ज्यो-ज्यो नीचे की तरफ आती, त्यो-त्यो आकाश मे बडी होती जाती, तब भी अलेक्सेई को

कोई भय न मालूम होता और वह सिर उठाकर देखता कि गगन्धी कहा गिरेगी।

इस क्षण 'मौसमी सार्जेन्ट' का व्यवहार देखकर अलेक्सेई चकित रह गया। जब बमो का चीत्कार शिखर पर पहुच गया, तब वह लड़की जो कमर तक खाई मे थी और हमेशा की तरह नजर बनाकर उसकी तरफ निहार रही थी, यकायक उछल पड़ी, स्ट्रेचर की तरफ झपटी, जमीन पर गिर पडी और भय तथा उत्तेजना से कापते हुए उसने अपने शरीर से अलेक्सेई को ढक लिया।

उस क्षण अलेक्सेई ने ठीक अपनी आखो के पास एक भरी-सी, शिशु-सुलभ मुखाकृति, गदराये होठ और चपटी-सी नाक देखी। जगल में कही से किसी विस्फोट की गड़गड़ाहट आती सुनाई दी और उसके बाद पास ही कही दूसरा, तीसरा और चौथा विस्फोट सुनाई दिया। पाचवा इतना भयकर था कि धरती कापने और डोलने लगी, और जिस पेड के नीचे अलेक्सेई लेटा हुआ था, उसका शीश, बम के टुकडे से कटकर, बडे जोर से सनसनाता हुआ धरती पर आ गिरा। एक बार फिर लड़की की पीली-पीली, भयग्रस्त मुखाकृति उसकी आखो के सामने कौंध गयी और उसके ठडे कपोल उसे अपने कपोलो से चिपके महसूस हुए, और बमों के दो गोलो के धमाके के अतराल मे यह आतंकित लड़की फुसफुसा रही थी

"प्यारे! प्यारे! "

बमो के एक और आघात से भयकर गरजना के साथ धरती हिल गयी और ऐसा जान पड़ा कि मानो सारे पेड जमीन से उखडकर हवाई अड्डे के ऊपर आकाश में उड़ने लगे हो, उनके शिखर छिन्न-भिन्न हो गये थे, और फिर जमी हुई मिट्टी के लोदे, बादलो जैसी गरजना के साथ हवा में भूरे से, तीखे धुए की लकीर छोड़ते हुए धरती पर आ गिरे जिससे लहसुन जैसी गध आ रही थी।

जब धुआं तितर-बितर हो गया, तब तक चारो तरफ शान्ति छा चुकी थी। जंगल की ओर से आकाश-युद्ध की आवाजे मुश्किल से ही सुनाई देती थी। लडकी भी उछलकर अलग खडी हो चुकी थी, उसके कपोल अब पीले-पीले नही, लाल हो गये थे। बुरी तरह लजाते हुए और मानो रोने ही वाली है, उसने अलेक्सेई की तरफ से आंखें दूर रखते हुए क्षमा-याचना जैसे स्वर मे कहा

"मेरे कारण तुम्हे चोट तो नही पहुची? मै भी क्या बेवकूफ हू, हे भगवान, क्या बेवकूफ हू! मुझे बडा अफसोस है!"

"माफी मागने से अब कोई फायदा नही," यूरा बडबडाया, उसे शर्म महसूस हो रही थी कि अपने मित्र की रक्षा के लिए वह स्वय नही, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की यह लडकी दौड पडी।

बडबडाते हुए उसने अपने कपडो से धूल झाडी, अपनी खोपडी का पिछला भाग खुजलाया और आश्चर्य से भोज वृक्ष के कटे सिर की टूट को देखने लगा, जिसके तने से पारदर्शी रस बुरी तरह गिर रहा था। घायल वृक्ष का रस, धूप में झिलमिलाता, काईदार छाल पर बह रहा था और धरती पर टपक रहा था—स्वच्छ और पारदर्शी आसुओ की तरह।

"देखो! पेड रो रहा है!" लेनोच्का बोली, जो इस खतरे के बीच भी अपना पुरजोश कौतूहलता का भाव बनाये थी।

"तो तुम भी रोओगी!" यूरा ने उदास-भाव से जवाब दिया। "खैर, तमाशा खत्म हुआ। चलो चले! एम्बुलेस विमान को कोई क्षति तो नही पहुची है, क्यो?"

वृक्ष के खडित तने को, उससे जमीन पर टपकती हुई चमचमाती पारदर्शी रस की बूदो को और अपने से काफी बडा ग्रेटकोट पहने, चपटी नाकवाली 'मौसमी सार्जेन्ट' को, जिसका नाम भी अलेक्सेई को न मालूम था, निहारता वह बोल उठा "वसन्त आ गया है!"

बमो से बने गड्ढो के बीच, जिनसे अभी भी धुआ उठ रहा था

तक पहुच गये।

शीघ्र ही आकाश में पूर्ण शान्ति छा गयी। चारों ओर साफ हो गया और जगलो मे इजिनो की घर्राहट भी बद हो गयी। लेकिन लोग अभी भी कमाण्ड की चौकी पर खड़े थे और आखों पर हथेलियों से छाया करके आसमान छान रहे थे।

"नम्बर नौ नही लौटा। कुकूश्किन कही फस गया है," यूरा बोला।

अलेक्सेई ने कुकूश्किन का छोटा-सा, पीलिया जैसा चेहरा स्मरण किया, जिस पर हमेशा असतोष का भाव अकित रहता था, और उसे याद आया कि सुबह ही कितनी सावधानी से उसने स्ट्रेचर सभाला था। क्या यह सच है? यह विचार आना, सरगर्मियो के दिनो मे विमान-

चालक के लिए बडी ही साधारण बात है, लेकिन आज, जब हवाई अड्डे की जिंदगी से उसे अलग रखा जा रहा है, यह ख्याल आते ही, अलेक्सेई सिहर उठा। इसी क्षण आकाश में गरज सुनाई पडी।

यूरा हर्ष से चीखता उछल पडा

"वह आ गया!"

कमान्डर के केन्द्र पर उपस्थित लोगो मे हर्ष छा गया। कोई बात हो गयी थी। 'नम्बर नौ' उतरा नही, बल्कि वह हवाई अड्डे के ऊपर चक्कर काटता रहा, और जब वह अलेक्सेई के सिर पर पहुचा तो उसने देखा कि उसके पख का कुछ भाग टूटकर गायब हो गया है, और बुरी बात तो यह थी कि ढाचे के नीचे उसका एक ही 'पैर' नजर आ रहा था। एक के बाद एक लाल राकेट आसमान मे छोडे गये। कुकूश्किन एक बार फिर सिर पर आकर उडने लगा। उसका हवाई जहाज ऐसा लग रहा था मानो कोई पछी अपने टूटे घोसले पर मडरा रहा हो और यह न समझ पा रहा हो कि कहा उसे बसेरा लेना है। उसने तीसरा चक्कर शुरू किया।

"वह एक मिनट मे ही कूद पडेगा। उसका पेट्रोल खत्म हो गया है। आखिरी बूदो के बल उड रहा है!" यूरा ने कानाफूसी के स्वर में कहा और उसकी आखे अपनी घडी पर टिक गयी।

ऐसी स्थिति मे, जब जहाज उतारना असम्भव होता है, तब विमान-चालको को ऊचाई पर जाने और पैराशूट के बल पर उतर आने की इजाजत है। शायद 'नम्बर नौ' को जमीन से इस तरह का हुक्म मिल भी चुका था, फिर भी वह हठपूर्वक चक्कर लगाता जा रहा था।

यूरा कभी हवाई जहाज की ओर और कभी घड़ी की ओर देखता रहा। जब उसे लगा कि इजिन धीमा पड गया है, तो वह कूल्हे के बल बैठ गया और अपना सिर दूसरी तरफ मोड लिया। "क्या वह हवाई

जहाज बचाने की बात सोच रहा है?" हर आदमी मन ही मन चिल्ला रहा था "कूद पड़ो! कूद पड़ो, भाई!"

एक लड़ाकू जहाज, जिसकी पूछ पर नम्बर 'एक' लिखा था, हवाई अड्डे से बाहर निकला, झपट्टा मारकर हवा में उड़ गया और होशियारी से एक गोता खाकर, घायल 'नम्बर नौ' के पास पहुच गया। जिस धैर्य और कुशलता से वह जहाज चलाया जा रहा था, उससे अलेक्सेई भाप गया कि उसे रेजीमेंटल कमाडर खुद चला रहा है। स्पष्ट था, यह समझकर कि कुकूश्किन का रेडियो-सेट बिगड़ गया है, या चालक का होश दुरुस्त नही है, वह उसकी सहायता के लिए दौड पड़ा था। अपने पखो से इशारा करते हुए "जैसा मै करू, वैसा करो," वह उसके बगल मे जा पहुचा और फिर ऊचा उठ गया। उसने कुकूश्किन को आदेश दिया कि वह निकल आये और कूद पड़े। लेकिन उसी क्षण कुकूश्किन ने गैस कम कर दी और उतरने की तैयारी करने लगा। टूटे पखवाला उसका विमान ठीक अलेक्सेई के सिर के ऊपर से झपट्टा मारकर निकला और शीघ्रता से धरती के नजदीक पहुच गया। ठीक धरती की सतह पर पहुचकर वह यकायक बायी ओर झुक गया और अपनी सही-सलामत 'टाग' के बल उतर आया, कुछ दूर एक ही पहिए पर दौड़ते हुए, उसने चाल हल्की की, दाहिनी ओर को झोका खाया, अपने अक्षत पख के बल जमीन पकडकर अपनी धुरी पर चक्कर काटने लगा, जिससे बर्फ के बादल उठने लगे।

आखिरी क्षण में वह गायब हो गया। अब बर्फ के बादल बिखर गये तो क्षत-विक्षत झुके हुए वायुयान के पास एक स्याह-सी चीज पड़ी दिखाई दी। इस स्याह वस्तु की ओर लोग दौड़ पड़े और घटी बजाती हुई एम्बुलेंस मोटर भी उसी तरफ लपकी।

"उसने हवाई जहाज बचा लिया! कितना होशियार आदमी है कुकूश्किन भी! यह कला उसने कब सीखी?" मेरेस्येव ने स्ट्रेचर पर लेटे-लेटे सोचा और अपने साथी से ईर्ष्या अनुभव की।

वह उत्कंठित हो उठा कि अपनी पूरी शक्ति से दौडकर उस स्थान पर पहुंच जाय जहा वह नाटा-सा, सब का अप्रिय व्यक्ति पडा था जो इतना वीर और कुशल चालक सिद्ध हुआ। किन्तु वह तो स्ट्रेचर से बधा था और पैर पीडा से जकड गये थे जिसने एक बार फिर, ज्यो ही स्नायुओं का तनाव कम हो गया उसे धर दबोचा।

इन सब घटनाओं मे घंटे भर से अधिक न बीता था, लेकिन वे इतनी अनगिनत और तेज़ थी कि अलेक्सेई तुरत ही उनका विश्लेषण न कर पाया। जब उसका स्ट्रेचर रेडक्रास विमान मे बने हुए विशेष स्थान पर लगा दिया गया और एक बार फिर 'मौसमी सार्जेन्ट' की अपलक दृष्टि की ओर उसका ध्यान गया, तब वह उन शब्दो का महत्व वास्तविक रूप मे अवगत कर पाया, जो बममारी के अतराल में इस युवती के पीतवर्ण होठो से फूट पडे थे। वह यह सोचकर लज्जित हो उठा कि इस अच्छी, आत्म-त्यागिनी लडकी का नाम तक वह नही जानता।

कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर निहारते हुए वह आहिस्ते से पुकार उठा. "कामरेड सार्जेन्ट!"

इसमे सन्देह है कि इजिन की घडघडाहट के बीच वह उसकी आवाज सुन सकी या नहीं, किन्तु वह आगे बढी और एक छोटा-सा पैकेट निकालकर कहने लगी·

"कामरेड सीनियर लेफ्टीनेट, ये पत्र आपके लिए है। मैने इन्हे बचा रखा था, इसलिए कि मुझे विश्वास था कि आप जिन्दा है और वापिस जरूर लौट आयेंगे। मै जानती थी, महसूस करती थी।"

उसने चिट्ठियो का छोटा-सा पुलिंदा उसके वक्ष पर रख दिया। उनमे अनेक पत्र उसे अपनी मा के दिखाई दिये—त्रिकोणाकार मोडे हुए, बूढे हाथो की छोटी-बडी अनियमित लिखावट मे लिखे पते, और कई उसी प्रकार के सुपरिचित लिफाफे थे जैसे कि वह अपनी वर्दी की जेब मे सदा रखे रहता है। उन लिफाफो को देखकर उसका चेहरा दमक उठा और उसने कम्बल से अपना हाथ मुक्त करने का प्रयत्न किया।

"ये किसी लडकी ने भेजे है?" दुखित भाव से 'मौसमी सार्जेन्ट' ने पूछा और शर्म से लाल हो गयी, उधर उसकी आखो में आसू भर आये जिनसे उसकी लम्बी-लम्बी भूरी बरौनिया चिपक गयी।

मेरेस्येव को विश्वास हो गया कि विस्फोट के बीच मे जब वे शब्द सुनाई दिये थे तो वह भ्रम न था, और इस विश्वास के बाद अब वह सच-सच बताने का साहस न कर सका।

"ये मेरी विवाहित बहिन ने भेजे है। उसका कुलनाम अब दूसरा है," उसने उत्तर दिया और अपने आपसे घृणा अनुभव कर उठा।

इजिन की घर्राहट के बीच उसे कुछ स्वर सुनाई दिये। बगल का दरवाजा खुला और एक अजनबी सर्जन ने वायुयान में पैर रखा, जो अपने ग्रेटकोट के ऊपर एक सफेद लबादा पहने था।

"एक रोगी तो पहले से ही आ गया है? ठीक!" उसने मेरेस्येव की ओर देखकर कहा। "दूसरे को भी अन्दर ले आओ! एक मिनट में ही हम रवाना हो जायेंगे। और मैडम, आप यहा क्या कर रही है?" उसने भाप से धुधले चश्मे के भीतर से 'मौसमी सार्जेन्ट' की ओर घूरकर पूछा, जो यूरा के पीछे छिपने का प्रयत्न कर रही थी। "कृपया जाइये, हम मिनट भर मे ही चल देंगे। ए, स्ट्रेचर अन्दर लगाओ!"

"लिखना, भगवान के लिए मुझे चिट्ठी लिखना, मैं इतजार करूगी!" अलेक्सेई ने उस लडकी की फुसफुसाहट सुनी।

यूरा की सहायता से सर्जन ने हवाई जहाज मे एक स्ट्रेचर चढाया जिस पर कोई हल्के-से कराह रहा था। उसे जब लगाया जा रहा था, तब वह चादर खिसक पडी जिससे वह ढका था और मेरेस्येव ने कुकूश्किन का चेहरा देखा—दर्द से ऐंठा हुआ। सर्जन ने हाथ मले, केबिन मे चारो तरफ नजर डाली और मेरेस्येव का पेट थपथपाते हुए बोला

"बढिया! बहुत बढिया! तुम्हारा साथ देने के लिए एक साथी यात्री है, नौजवान! क्या? और अब जिन लोगो को इसपर सफर नही

करना है, वे उतर जायें, कृपया जल्दी! अच्छा तो सार्जेन्टी विल्लेवाली लोरेली चली गयी, एह? ठीक! अब चलो!."

यूरा की उतरने की मशा न दिखाई दे रही थी। आखिरकार सर्जन ने उसे जबर्दस्ती बाहर किया! दरवाजा बद कर दिया गया, विमान कापा, चला, फुदका और फिर शान्त भाव से, स्वाभाविक गति से इजिन की नियमित घडकनो के साथ उड चला। सर्जन दीवार के सहारे मेरेस्येव के पास गया।

"कैसे हो?" उसने पूछा। "लाओ तुम्हारी नाड़ी देखू।" उसने कौतूहल से मेरेस्येव की ओर देखा, सिर हिलाया और बडबड़ाया: "ठीक। मजबूत आदमी हो।" और फिर मेरेस्येव से बोला: "तुम्हारे दोस्त लोग तुम्हारे साहसिक कामो की ऐसी कहानिया सुनाते है कि जो बिल्कुल अद्‌भुत हैं, जेक लडन की कहानी की तरह।"

वह अपनी सीट पर बैठ गया, उसने अपने को आराम से जमाया, फौरन शिथिल हो गया और ऊघने लगा। स्पष्ट था कि ढलती उम्र वाला यह पीत-वर्ण व्यक्ति थककर निर्जीव हो गया है।

"जेक लडन की कहानी की तरह," मेरेस्येव ने सोचा और सुदूर बचपन की स्मृतिया, उस व्यक्ति की स्मृतिया जो हिम-जडित पैरो से रेगिस्तानी क्षेत्र में रेग रहा था और एक बीमार और भूखा भेडिया उसका पीछा कर रहा था, उसके मस्तिष्क पर छा गयी। वह इजिनो की लगातार गुजार से उनीदा हो गया, हर चीज तैरने लगी, अपनी रूपरेखा खोने लगी, मटमैले अधेरे में विलीन होने लगी, और अलेक्सेई के मस्तिष्क के सामने से जो अतिम दृश्य गुजरा, वह यह कि अब युद्ध नही, बमबारी नही, पैरो में अनवरत पीडा नही, मास्को की ओर भागता हुआ कोई वायुयान नही, और यह सब घटनाए किसी अद्‌भुत पुस्तक का अध्याय मात्र थी, जिसे उसने सुदूर कमीशन नगर में अपने बचपन में पढा था।

द्वितीय खण्ड

१

अन्द्रेई देगत्यरेन्को और लेनोच्का ने तब कोई अत्युक्ति न की थी, जब उन्होंने अपने मित्र को राजधानी के उस अस्पताल की शान-शौकत का वर्णन दिया था, जिसमे मेरेस्येव को और लेफ्टीनेंट कुकूश्किन, दोनो को रखा गया था।

युद्ध के पहले यह एक सस्थान का चिकित्सालय था जिसमें एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, बीमारी या चोट के बाद लोगो को शीघ्रतापूर्वक स्वस्थ बनाने के नये उपायो के विषय में शोध-कार्य करते थे। इस सस्थान की अपनी परम्पराए थी और विश्व-व्यापी प्रसिद्धि थी। जब युद्ध छिड गया तो वैज्ञानिक ने इसे घायल फौजी अफसरो के अस्पताल के रूप मे परिवर्तित कर दिया। इस समय प्रगतिशील विज्ञान-जगत में जितने भी प्रकार के इलाजो की जानकारी थी, वे सब इस अस्पताल में रोगियो को बराबर उपलब्ध किये जाते रहे। मास्को के बाहर ही जो युद्ध छिडा हुआ था, उससे घायलो की ऐसी बाढ आ गयी कि यह चिकित्सालय जितनी रोगशैय्याओ के लिए बनाया गया था, उससे चार गुनी रोगशैय्याए बढानी पडी। अभ्यागतो के कमरे, वाचनालय, मनोरजन कक्ष, कर्मचारियो के कमरे और आम भोजनालय—सभी वार्ड बना दिये गये थे। वैज्ञानिक ने प्रयोगशाला के बगल में स्थित अपना अध्ययन कक्ष तक

दे डाला और अपनी पुस्तकें तथा अन्य व्यावहारिक सामग्री लेकर खुद एक छोटे-से कमरे मे चला गया जो ड्यूटी पर रहनेवाले डाक्टर के लिए निश्चित था। तब भी अक्सर गलियारो मे रोगशैय्याए डालने की आवश्यकता पड जाती थी।

चमकदार दीवारो के पीछे से, जो इस तरह मालूम होती थी, मानो शिल्पकार ने आरोग्य मदिर की पवित्र शान्ति की रक्षा के लिए उनकी रचना जानबूझकर इस प्रकार की है, रोगियो का देर तक कराहना, रोना और सोनेवालो के खर्राटे तथा सन्निपात-ग्रस्त लोगो की बक-झक सुनाई दे रही थी। सारा क्षेत्र युद्ध की दमघोटू, तीखी गधो से भरा था—जुननी पट्टिया, सूजे हुए घाव, जीवित मनुष्यो के मास की सडाध—जिन्हे हवा का लाख प्रवन्ध करके भी दूर नही किया जा सकता। वैज्ञानिक की अपनी रूपरेखा के अनुसार बनायी गयी आरामदेह चारपाइयो के साथ ही कैम्पो में तह करके रखी जानेवाली चारपाइया भी पडी थी। बर्तनो की कमी थी। चिकित्सालय मे सुन्दर चीनी मिट्टी के बर्तनो के अलावा अलुमीनम के गहरे कटोरे भी इस्तेमाल किये जा रहे थे। किसी बम की धमक से, जो पडोस में ही फूटा था, बडी-बडी इटालियन खिड़कियो के शीशे चूर-चूर हो गये थे और उनकी जगह प्लाईवुड के तख्ते जड दिये गये थे। यहा पानी तक की कमी थी, जब तब गैस बद हो जाती थी, और औजारो को बाबा आदम के जमाने के स्टोवो पर गर्म करके शुद्ध करना पडता था। मगर घायलो की बाढ आती रही। हवाई जहाजो, मोटरो, ट्रेनो के जरिए उन्हे बराबर बढती हुई सख्या में लाया जा रहा था। और जिस अनुपात में हमारा आक्रमण बढा, उसी अनुपात मे घायलो के आने की सख्या भी बढती गयी।

इस सबके बावजूद अस्पताल के सारे कर्मचारी—सम्मानित वैज्ञानिक तथा सर्वोच्च सोवियत के सदस्य उसके प्रधान से लेकर वार्डों की नौकरानियो, कपडे बदलने के कमरे के सेवको और पोर्टरो तक—सभी

थके हुए और कभी-कभी अधभूखे रह जानेवाले लोग, जिन्होंने सारी रात सोने का सुख कभी नही जाना, अपने सस्थान के सुस्थापित नियमो का धर्मोन्मत्त भाव से अनवरत पालन कर रहे थे। वार्डो की परिचारिकाओ को जो कभी-कभी बिना विश्राम किये लगातार दो-दो तीन-तीन पालिया ड्यूटी देती थी, कोई भी वक्त खाली मिलता तो वे सफाई धुलाई और रगडाई का काम कर डालती थी। दुबली-पतली, ढली हुई, थकान से लडखडाती हुई नर्सें, पहले की ही तरह, सफेद, कलफदार पोशाके पहनकर बराबर आती रहती और डाक्टरो की हिदायतो का पालन करने में वही सख्ती बरतती रही। हाउस सर्जन, हमेशा की तरह, रोगियो की चादरो पर जरा-सा धब्बा पाकर झिडकिया देने लगते तथा दीवारो, रेलिगो और दरवाजो की मूठो को रूमाल से रगडकर देखते कि वे बिल्कुल साफ है या नही। और निश्चित समयो पर, दिन में दो बार, स्वय प्रधान महोदय—लम्बा कद, लाल-लाल चेहरा, चौडे माथे के ऊपर खडे हुए काले-सफेद खिचडी बाल, मूछोवाले, शाही रोबदाबवाली खिचडी दाढीवाले वयोवृद्ध सज्जन—जो नियम के बडे पक्के थे, युद्ध से पहले की ही भाति, कलफदार पोशाक पहने हाउस सर्जनो और सहकारियो की भीड के साथ वार्डो का चक्कर लगाते, हर नये मरीज के रोग-कार्ड का निरीक्षण करते और सगीन मामलो में सलाह देते।

इन सरगर्म दिनो में उन्हे अस्पताल के बाहर का भी भारी काम करना पडता था, मगर वे फिर भी अपने आराम और नीद का बलिदान कर इस स्वनिर्मित सस्थान का निरीक्षण करने के लिए समय निकाल ही लेते। कोई कमजोरी देखकर जब वे अस्पताल के किसी कर्मचारी को झिडकते—और यह काम वे हमेशा बडे प्रचण्ड रूप में, बहुत आवेशपूर्वक, 'अपराध' के स्थल पर ही करते—तो वे हमेशा जोर देते कि इस युद्धकालीन, सदा सचेत, अंधकार-ग्रस्त मास्को में भी इस चिकित्सालय को एक आदर्श सस्था के रूप में काम जारी रखना चाहिए—हिटलरो और गोयरिंगो को

यही उनका जवाब होगा; वे युद्धकालीन कठिनाइयो के नाम पर कोई बहाना न सुनते और कहते कि आरामतलब और कामचोर यहा से जहन्नुम जाय, और खूबी तो यही होगी कि आज जब कठिनाइया है, तब इस स्थान पर सुदृढ व्यवस्था हो। उन्होने खुद वक्त की इतनी पाबदी के साथ वार्डो का चक्कर लगाने के लिए आना जारी रखा कि पहले की ही तरह परिचारिकाए उनके आगमन को देखकर वार्ड की घडिया मिला लेती। हवाई हमलो मे भी इस व्यक्ति की पावन्दी नही टूटी। यही कारण था कि कल्पनातीत कठिनाइयों के बीच भी सारे कर्मचारी चमत्कार दिखाते रहे और युद्ध-पूर्व जैसी व्यवस्था सुरक्षित रखते रहे।

एक सुबह वार्ड में चक्कर लगाते समय प्रधान ने—हम उन्हे वसीली वसील्येविच कहेंगे—दूसरी मंजिल पर सीढियो के नीचे दो चारपाइया एक दूसरे के पास पडी देखी।

"यह क्या नुमाइश है?" वे चिल्ला पडे और अपनी घनी भौहो के नीचे से हाउस सर्जन की तरफ उन्होने ऐसी भयावनी दृष्टि से देखा कि वह लम्बे कद का, गोल कधोवाला व्यक्ति—जो अब जवान न रह गया था, मगर देखने में रोबदार था—स्कूली लडके की तरह सीधा 'अटेंशन' खडा रह गया और बोला

"कल रात ही आये हैं ये हवाबाज। इस व्यक्ति की जाघ और दाहिने हाथ की हड्डिया टूट गयी है। स्थिति सामान्य है। लेकिन इस व्यक्ति की"—उसने अनिश्चित आयु की दुबली-पतली आकृति की ओर इशारा किया जो आखें बद किये निस्पन्द पडी थी—"हालत बहुत खराब है। पैरो में कम्पाउन्ड फ्रैक्चर है, दोनो पैरो में गैंगरीन है, लेकिन मुख्य बात है अत्यन्त शक्ति-क्षीणता। मै विश्वास नही करता, मगर इनके साथ दूसरी श्रेणी का मेडिकल डाक्टर आया था, उसने रिपोर्ट दी है कि वह टूटे हुए पैरो से अठारह दिन तक जर्मन पातो के पीछे रेंगता रहा। यह बात, सचमुच अत्युक्ति है "

आविष्कार करते घूमते हैं।"

वे अपने रोब भरे सहकारियों के साथ चले गये, लेकिन शीघ्र ही लौट पड़े, मेरेस्येव की चारपाई के ऊपर आ झुके और हवाबाज के कंधे पर अपना मोटा हाथ रखकर, जो तमाम तरह के कीटाणुनाशक द्रवों के प्रभाव से छिल गया था, उन्होंने पूछा

"क्या यह सच है कि तुम दो सप्ताह से ज्यादा जर्मन पांतों के पीछे घिसटते रहे?"

"क्या मुझे गैंगरीन हो गया है?" जवाब में मेरेस्येव ने डूबती हुई आवाज में पूछा।

प्रोफेसर ने अपने सहकारियो की ओर, जो द्वार पर रुक गये थे, क्रुद्ध निगाह डाली और हवाबाज की बडी-बडी काली आखो में, जिनसे दुख और चिन्ता टपक रही थी, अपनी आखें डालकर मुहफट ढग से कहा .

"तुम जैसे आदमी को धोखा देना गलत होगा। हा, गैंगरीन हो गया है। लेकिन हौसला ऊचा रखो। जैसे कोई भी परिस्थिति निराशाजनक नही होती, ऐसे ही कोई भी रोग असाध्य नही होता। समझे तुम? ठीक है!"

और वह लम्बे-लम्बे, तेज कदम बढाते हुए, गलियारे के शीशेवाले दरवाजे को पारकर अकड के साथ चले गये, और उनकी गुर्राहट भरी आवाज की गूज दूर पर सुनाई दी।

"बूढा मजेदार है," अपनी भारी आखो से जाती हुई आकृति का पीछा करते हुए मेरेस्येव ने कहा।

"उसका दिमाग खराब है। सुनी उसकी बाते? हमे बना रहा है। ये मामूली बाते हमें खूब मालूम है," कुकूश्किन ने शैतानी से मुसकुराकर जवाब दिया, "तो हमें कर्नल वार्ड मे रहने की इज्जत बख्शी जा रही है।"

"गैंगरीन," मेरेस्येव ने आहिस्ते से कहा और दुखी भाव से दोहराया, "गैंगरीन।"

२

तथाकथित 'कर्नल वार्ड' पहली मजिल के गलियारे के अत में था। उसकी खिडकियो का मुह दक्षिण और पूर्व की ओर था इसलिए उसमे सारे दिन सूरज का प्रकाश रहता और उसकी किरणें एक चारपाई से दूसरी चारपाई तक सरकती रहती। यह छोटा वार्ड था। लकडी के फर्श पर स्याह चकत्ते पडे देखकर यह अनुमान हो जाता है कि पहले यहा

दो रोगशैय्याए थी, उनके किनारे दो आलमारिया थी और बीच मे एक गोल मेज थी। अब कमरे में चार शैय्याए थी। एक पर पट्टियां में लिपटा कोई घायल व्यक्ति पडा था, जो नवजात शिशु की भाति गठरी-सा पडा था। वह पीठ के बल पडा रहने और पट्टियो की दरारो मे से शून्य, निस्पन्द आखो से छत की तरफ ताकते रहने के अलावा कुछ नही करता था। अलेक्सेई की बगल में एक चारपाई पर एक उदार, बातूनी और स्फूर्तिवान व्यक्ति पडा था– झुर्रियोंदार, चेचक-मुह, सिपाहियाना चेहरा और पतली-बारीक मूछें।

अस्पताल में लोग दोस्त जल्दी बन जाते हैं। शाम तक अलेक्सेई को मालूम हो गया कि चेचक-मुह व्यक्ति साइबेरियाई है–एक सामूहिक खेत का अध्यक्ष और शिकारी था–और फौज में घात लगाकर हमला करनेवाला स्नाइपर है, और बडा ही कुशल स्नाइपर। येल्ना के पास के युद्ध से लगाकर, जहा अपनी साइबेरियाई डिवीजन के साथ, जिसमे उसके दो बेटे और दामाद भी हैं, उसने लडाई मे प्रवेश किया था, अब तक वह सत्तर फासिस्टो का नाम–जैसा कि वह कहा करता है–"काट चुका था।" वह सोवियत सघ के वीर का पद प्राप्त कर चुका है, और जब उसने अलेक्सेई को अपना नाम बताया तो इस आकर्षणरहित आकृति की ओर अलेक्सेई कौतुकतापूर्वक ताकता रह गया। उस समय यह नाम फौज में व्यापक रूप से विख्यात था और उसके विषय में प्रमुख पत्रो ने अग्रलेख लिखे थे। अस्पताल में प्रत्येक व्यक्ति –नर्सें, हाउस सर्जन और स्वय वसीली वसील्येविच–उसे सम्मानपूर्वक स्तेपान इवानोविच कहकर पुकारते थे।

वार्ड में चौथे साथी ने, जिसका अग-अग पट्टियो में लिपटा था, सारे दिन अपने विषय में कुछ नही कहा, दरअसल, उसने एक शब्द भी नही कहा। लेकिन स्तेपान इवानोविच ने, जिसे दुनिया की हर बात का ज्ञान था, मेरेस्येव को उसकी सारी कहानी सुना दी। उसका नाम

ग्रिगोरी ग्वोज्देव था। वह टैंक सेना मे लेफ्टीनेंट था श्रौर उसे भी सोवियत सघ के वीर का पद प्राप्त हुआ था। टैंक-स्कूल से परीक्षा पास करके वह फौज मे भरती हो गया श्रौर प्रारम्भ से ही युद्ध मे भाग ले रहा था। उसने सीमा पर, ब्रेस्त-लितोव्स्क की गढी के आसपास कही पहली मुठभेड मे भाग लिया था। बेलोस्तोक के पास प्रसिद्ध टैंक-युद्ध में उसका टैंक चूर-चूर हो गया था, लेकिन उसने फौरन ही दूसरा टैंक सभाल लिया जिसका कमांडर मारा जा चुका था, श्रौर बची-खुची टैंक डिवीजन लेकर उसने मिन्स्क की तरफ पीछे हटती हुई सेनाश्रो को श्राड दी थी। बूग के पास युद्ध मे उसका टैंक फिर ध्वस्त हो गया श्रौर वह स्वय भी घायल हो गया। उसने फिर एक श्रौर टैंक ले लिया जिसका कमाण्डर मारा जा चुका था श्रौर कम्पनी की कमान खुद सभाल ली। बाद मे शत्रु की पातो के पीछे रह जाने पर उसने तीन टैंको का घूमता-फिरता दस्ता बना लिया, श्रौर एक महीने तक जर्मन पात के पीछे दूर तक शत्रु के यातायात को श्रौर फौजी दस्तो को परेशान करता घूमता रहा। वह ताजे युद्ध क्षेत्रो से श्रपने टैंको के लिए पेट्रोल, गोला-बारूद श्रौर फालतू पुर्जे जुटा लेता था। सडको के किनारे हरे-भरे गह्वरो में, जंगलो में श्रौर दलदलो में, हर तरह की टूटी-फूटी मशीने कितनी ही पडी मिल जाती थी।

वह दोरोगोबुज के पास एक स्थान का निवासी था। जब उसे सोवियत सूचना केन्द्र की विज्ञप्तियो से, जिन्हे टैंक-चालक कमाण्डर के टैंक में लगे रेडियो पर सुनते थे, पता चला कि युद्ध का मोर्चा उसके निवासस्थान के निकट पहुच गया है, तो वह श्रपने को रोक न सका, श्रौर श्रपने तीनो टैंको को बारूद से उडा देने के बाद, श्रपने श्राठ बचे-खुचे श्रादमियो सहित, श्रपने गाव की श्रोर जगल पार करता हुश्रा बढ चला।

घर बुलाया था।

ग्वोज्देव के सामने साकार हो गया [illegible] के पास [illegible] में बना छोटा-सा घर, अपनी मा, पुराने ढंग पर [illegible] हुई छोटी-सी दुबली औरत, और अपने पिता, पुराने [illegible] कोट पहने, मा के सिरहाने सामने और [illegible] से अपनी छोटी-सी [illegible] दोनों खड़े हुए और अपनी तीन नन्ही, [illegible] बहिनें, जिनकी आखें मा से मिलती-जुलती थीं। उसे अपने गाव की [illegible], नीली आंखोंवाली जेन्या—भी याद आयी, जो उसे विदा करने के लिए उसके साथ घोड़ा-गाड़ी पर स्टेशन तक आयी थी और जिससे उसने हर रोज पत्र लिखने का वायदा किया था। [illegible] के [illegible] और जले हुए वीरान गावों में जंगली जानवर की तरह भटकते हुए, शहरों और सड़कों को छोड़ते हुए, वह अपने दिल के दर्द को दबाकर यह अनुमान करने का प्रयत्न करता कि अपने गाव में जाकर उसे क्या देखने को मिलेगा, क्या उसके परिवार के लोग बच निकलने में सफल हो गये और अगर नहीं कामयाब हुए तो उनका क्या हाल हुआ।

अपने गाव पहुचकर उसने जो कुछ आखों देखा, वह उसकी भयकरतम कल्पनाओं से भी गया-बीता था। उसे न अपना मकान मिला, न परिवार के लोग, न जेन्या और न वह गाव ही। उसे एक अधपगली बुढ़िया मिली, जो राख बने खडहरों के ढेरों के बीच, एक चूल्हे के पास खड़ी, अपने आप बड़बड़ाती हुई और कदम इस तरह उचकाती हुई, मानो नाच रही हो, कुछ पका रही थी, उसी के मुह उसे पता चला

कि जब हिटलरी सिपाही निकट आ रहे थे, तो अध्यापिका इतनी बीमार थी कि कृषि विशेषज्ञ और उसकी पुत्रियों को उसे कहीं ले जाने का, या उसे छोड़कर खुद चले जाने का साहस न हुआ। फासिस्टो को पता चल गया कि क्षेत्रीय सोवियत का एक सदस्य और उसका परिवार गाव में रह गया है। उन्होंने पूरे परिवार को पकड लिया और उसी रात उन्हें मकान के सामने एक भोज वृक्ष पर फासी लटका दिया और घर को जलाकर खाक कर दिया। बूढी ने यह भी बताया कि ग्वोज्देव परिवार के लिए दया की भिक्षा मागने के लिए जन्या बडे अफसर के पास गयी थी, मगर अफसर ने उसे सर्वस्व समर्पण करने के लिए बडी देर तक यातनाए दी। फिर क्या हुआ, यह बुढिया को न मालूम था, लेकिन दूसरे दिन वह लडकी उस मकान से मरी हुई निकाली गयी जिसमें वह अफसर टिका हुआ था, और दो दिन तक उसकी लाश नदी के किनारे पडी रही। बाद में जर्मनो ने सारा गाव जला डाला क्योकि किसी ने उनके पेट्रोल टैंको में आग लगा दी थी, जो सामूहिक खेत की घुडसाल में खडे थे। यह सिर्फ पाच दिन पहले की घटना थी।

बुढिया ग्वोज्देव को उसके मकान के ध्वसावशेषो तक ले गयी और उसे वह भोज वृक्ष दिखाया। बचपन में उसका झूला उस वृक्ष की मजबूत शाखा से बधा लटका रहता था। वह अब सूख गया था और जली हुई शाखा पर पाच रस्सियो के छोर हवा में झूल रहे थे। अपने पैर पटकती हुई और कोई प्रार्थना बडबडाती हुई बुढिया ग्वोज्देव को नदी के किनारे ले गयी, जहा उस लडकी का शव पडा रहा था, जिससे उसने हर रोज पत्र लिखने का वायदा किया था और जिसके लिए उसे कभी समय न मिला। एक क्षण वह खडखडाती झाडियो के बीच खडा रहा और फिर जगल में वापिस लौट गया, जहा उसके साथी उसका इतजार कर रहे थे। उसने न एक शब्द कहा और न एक आसू बहाया।

जून के अत मे, पश्चिमी मोर्चे पर जनरल कोनेव के आक्रमण

काल में, सिगोरी ख्वोज्देव और उसके साथी जर्मन पांतों को पार करने में सफल हो गये। [illegible] में उन्हें एक नया टैंक दिया गया— प्रसिद्ध 'त-३४', और शीतकाल में [illegible] '[illegible]' के नाम से बटालियन में प्रसिद्ध हो गया। इसके बारे में ऐसी कहानियां कही और लिखी जाती थी, जो अविश्वसनीय मालूम होती थी, मगर थी सत्य। एक रात जब उसे निरीक्षण में [illegible] भेजा गया तो वह पूरे वेग से जर्मन किलेबन्दी चीरता गुजर गया। उसी गुप्त [illegible] को भी उसने सुरक्षित ढंग से पार कर लिया और अपनी तोपें चलाते हुए शत्रु की पांत में भगदड़ मचाता, वह उस रास्ते से निकल गया जो लाल सेना से आधा घिरा था, और दूसरी तरफ जाकर अपनी पांत में फिर शामिल हो गया। शत्रु की पांतों में कोई कम गड़बड़ाहट नहीं फैली। एक दूसरे अवसर पर, जर्मन पांतों के पीछे एक गश्त-फिरने [illegible] को लेकर वह ओट में से टूट पड़ा और जर्मन यातायात रास्ते पर हमला कर दिया, और अपने टैंकों से उनके सिपाहियों, घोड़ों और गाड़ियों को रौंद डाला।

शीतकाल में एक छोटे-से टैंक दल का नेतृत्व करते हुए उसने र्ज़ेव के निकट किलेवद गांव की रक्षक सेना पर धावा कर दिया, जहां शत्रु के संचालक अधिकारियों का प्रधान कार्यालय था। गांव की सरहद पर, जब उसके टैंक रक्षा क्षेत्र पार कर रहे थे, तब खुद उसके टैंक पर दाहक द्रव की बोतल आ गिरी। धुआं उगलती दमघोंटू लपटों से सारा टैंक छा गया, लेकिन टैंक-चालक लड़ते ही रहे। बड़ी-भारी मशाल की तरह वह टैंक गांव भर में दौड़ लगाता रहा, अपनी अगल-बगल की तोपों से गोले बरसाता रहा, मोड़ लेता और भागते हुए जर्मन सिपाहियों का पीछा करता और उन्हें रौंदता रहा। ख्वोज्देव और उसके साथी चालक, जिन्हें उसने अपने साथ शत्रु की पांत के पीछे लड़नेवालों में से चुना था, यह जानते थे कि किसी भी क्षण पेट्रोल की टंकी या गोला-बारूद के

भण्डार मे आग लग जाने पर उनके उड़ जाने की सम्भावना थी, धुए ने उनका दम घुट रहा था, टैंक की गर्म लाल दीवारो से टकराकर उनके अग जल गये थे. उनके कपडे भी सुलगने लगे थे, फिर भी वे लडते रहे। टैंक के नीचे किसी भारी बम के आ जाने से टैंक उलट गया और या तो विस्फोट के धमाके मे या उसमे धूल और बर्फ का जो बादल छा गया उसके कारण, लपटे बुझ गयी। ग्वोज्देव को टैंक से निकाला गया तो वह बुरी तरह जला हुआ था। वह टैंक की मीनार मे तोपची के शव की बगल मे मिला, जिसका स्थान उसने स्वय ले लिया था।

एक महीने मे टैंक-चालक, बचे होने की आशा बिना, जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहा था, वह किसी बात मे कोई दिलचस्पी न लेता था और कभी-कभी कई दिनो तक एक शब्द भी न बोलता था।

सगीन रूप मे घायल लोगों की दुनिया अक्सर अस्पताल के वार्ड की चहारदीवारी तक ही सीमित रहती है। उन दीवारो के पार कही घमासान युद्ध छिडा हुआ है, बडे और छोटे महत्व की घटनाए घट रही हैं, उत्तेजना अपने शिखर पर है और प्रत्येक दिन हर व्यक्ति की आत्मा पर कोई एक ताजा चिह्न छोड जाता है। लेकिन बाहरी दुनिया की जिन्दगी की हवा भी 'सगीन घायलो' के वार्ड में आने नही दी जाती, और अस्पताल की दीवारों के बाहर जो तूफान घहरा रहा है, उसकी दूरागत, दबी हुई गूज मात्र यहा आ पाती है। वार्ड की जिदगी सिर्फ अपनी ही छोटी-मोटी दिलचस्पियो तक सीमित रहती है। धूप से उष्ण खिडकी के शीशे पर किसी उनीदी, धूल-सनी मक्खी का आ बैठना ही यहा एक घटना है। वार्ड की इनचार्ज नर्स क्लावदिया मिखाइलोव्ना का नये, ऊची एडीवाले जूते पहनकर आना, क्योकि वह अस्पताल से सीधे थियेटर देखने जाना चाहती है, एक खबर है। भोजन के तीसरे दौर मे खुबानी की जेली के बजाय, जिससे हर आदमी ऊब गया है, उबले हुए बेरो का परोसा जाना, बातचीत का विषय होता है।

लेकिन 'संगीन रूप से घायल' आदमी के अस्पताल के, लम्बे-लम्बे दिनो पर जो चीज सबसे भारी रहती है, जिस चीज पर उसका सारा चिन्तन केन्द्रित रहता है, वह होता है उसका घाव, जिसने उसे योद्धाओ की पाँत से, युद्ध के जोशीले जीवन से, अलग कर दिया और इस मुलायम और आरामदेह चारपाई पर ला पटका जिससे वह उसी क्षण से नफरत करता है जिस क्षण उसपर लेटाया गया था। वह अपने घाव, सूजन या दूसरी टूटी हुई हड्डी के बारे मे सोचा-विचारा करता, अपनी नींद में भी वह उसी को देखता और जब जागता तो यह जानने का प्रयत्न करता कि सूजन कम हुई या नहीं, ताप घटा या नहीं, बुखार कम हुआ या बढा। और जिस प्रकार रात मे चौकन्ने कान प्रत्येक आहट को बढा-चढाकर सुनते है, उसी प्रकार यहा अपनी रुग्ण अवस्था पर मस्तिष्क बराबर केन्द्रित रहने के कारण घाव की पीड़ा और तेज हो जाती है, और अत्यन्त पराक्रमी और मनस्वी व्यक्ति तक, जो युद्ध क्षेत्र मे शान्तिपूर्वक मृत्यु से आँखें चार कर लेता है, यहा प्रोफेसर के स्वरो के उतार-चढाव को भयभीत भाव से सुनने के लिए विवश होता है और धडकते दिल से उनके चेहरे के भाव पढकर यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करता है कि उसकी बीमारी कौनसा रुख ले रही है।

कुकूश्किन बराबर गुर्रा रहा था और बड़बड़ा रहा था। उसका ख्याल था कि उसकी टूटी हड्डियो पर खपच्ची ठीक तरह से नही बाधी गयी थी, वह बहुत सख्त कसी थी और इसके फलस्वरूप हड्डिया ठीक से नही बैठेंगी और उन्हे फिर से तोडना पडेगा। किन्तु नैराश्यपूर्ण अर्द्धमूर्च्छा में डूबा हुआ ग्रिशा ग्वोज्देव कुछ नही बोला। लेकिन जब क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने उसकी पट्टिया बदलते वक्त उसके घावो मे मुट्ठिया भर भर वेसलीन भरी तो वह किस अधीरता के साथ अपने सूजे हुए शरीर और फटी हुई चमडी को देख रहा था, और सर्जनो के आपसी सलाह-मशविरे को कितने ध्यानपूर्वक सुन रहा था, यह

समझना आसान था। वार्ड में स्तेपान इवानोविच ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो चल फिर सकता था – यह ठीक है कि वह झुककर लगभग दुहरा हो जाता, और चारपाई की पाटिया पकडकर 'उस बेवकूफ बम' को जिसने उसे धराशायी किया था और इस 'पापी साइटिका' को जो उसके आघात के कारण उसे हो गया था, बराबर कोसता रहता।

मेरेस्येव ने अपने भाव छिपाने की सख्त कोशिश की और यह बहाना करने का प्रयत्न किया कि सर्जन आपस मे जो बाते कर रहे है, उनमे उसे कोई दिलचस्पी नही है। लेकिन हर बार जब विद्युत्-चिकित्सा के लिए उसके पैरो पर से पट्टिया खोली जाती, और वह देखता कि अभागी लाल सूजन, धीरे-धीरे मगर लगातार, पैरो पर बढती जा रही है तो वह भयभीत होकर आखें फाडे रह जाता।

वह बेचैन और निराश हो उठा। किसी साथी रोगी के किसी भौंडे मजाक पर, चादर पर तनिक-सी सिकुडन देखकर, या वार्ड की बूढी परिचारिका के हाथो से झाडू के गिर भर जाने पर वह क्रोध से उबल पडता और उसे बडी मुश्किल से दबा पाता। यह ठीक है कि सख्त पाबदी के साथ, धीरे-धीरे बढते जानेवाले बढिया अस्पताली भोजन से उसकी शक्ति तेजी से वापिस लौट आयी थी, और जब पट्टिया बदली जाती या उसे विद्युत्-चिकित्सा के लिए बैठाया जाता तो उसके कृशकाय शरीर को देखकर आपरेशन देखनेवाली युवती छात्राओ की निगाहो मे अब भय का भाव न दिखाई देता था। लेकिन जितना ही उसका शरीर मजबूत होता जाता, उतनी ही उसके पैरो की हालत खराब होती जाती। अब उसके पैरो के समस्त अग्रभाग पर सूजन छा गयी थी और टखनो से ऊपर की तरफ बढ रही थी। पैरो की उगलिया बिल्कुल सुन्न पड गयी थी, सर्जन ने उनमें सुइया चुभोयी, मास मे गहराई तक, मगर अलेक्सेई को कोई दर्द न महसूस हुआ। वे एक नयी विधि से, जिसका अजीब-सा नाम था 'घिराव', सूजन रोकने में सफल तो हो गये मगर

उसके पैरो मे दर्द बढ गया। वह बिल्कुल असह्य हो उठा। दिन में अलेक्सेई तकिये मे मुह दवाये चुपचाप पडा रहता। रात में क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसे मार्फिया देती।

आपसी सलाह-मशविरे मे सर्जन लोग, अधिकाधिक बार, भयानक शब्द 'अग विच्छेद' का नाम लेने लगे। कभी-कभी वसीली वसील्येविच मेरेस्येव की शैय्या के पास रुकते और पूछते

"अच्छा तो, हमारे घसीटे महाशय के क्या हाल-चाल है? शायद हम अग-विच्छेद करेगे, एह? बस, चिक–और अलग हो जायेंगे।"

अलेक्सेई ठडा पड जाता और कापने लगता। अपने को चिल्ला उठने से रोकने के लिए वह बत्तीसी भीच लेता और सिर्फ सिर हिला देता, और प्रोफेसर महोदय गुर्राते

"अच्छा, सहे जाओ, सहे जाओ–यह तुम्हारा मामला है! हम देखते है, इससे क्या होता है," और वह कोई नया इलाज लिख जाते।

उनके पीछे दरवाजा बद हो गया, गलियारे मे उनकी पगध्वनि भी विलीन हो गयी, लेकिन मेरेस्येव आखें बद किये हुए शैय्या पर पडा था और सोच रहा था "मेरे पैर, मेरे पैर, मेरे पैर! " क्या उसके पैर नही रहेगे और क्या पगु बनकर उसे अपने कमीशिन के माझी अरकाशा की तरह लकडी के पैरो के बल चलना पडेगा? क्या उस बूढे की ही तरह उसे भी नहाने के लिए नदी किनारे अपने पाव उतार देने और छोड देने होगे और बदर की तरह चार पैरो से रेगकर पानी में घुसना होगा?

ये तीखे विचार एक और बात से गहरे हो गये। अस्पताल मे पहुचने के पहले ही दिन उसने कमीशिन से आये अपने पत्र पढ डाले थे। छोटी-सी त्रिकोणाकार चिट्ठिया उसकी मा की थी, जो हमेशा की तरह सक्षिप्त थी और जिनमे आधे से अधिक हिस्से मे रिश्तेदारो की सलाम-दुआए लिखी थी और यह आश्वासन था कि भगवान का शुक्र

है, वे सब सकुशल हैं और यह कि वह, अल्योशा, उसकी फ़िक्र न करे, और आधे भाग में यह अनुरोध होता था कि वह ठीक से अपनी देखभाल करे, ठंड न खाये, पांव गीले न हो पायें, किसी खतरे में न कूदे और जर्मनों की चालाकियों से होशियार रहे जिनके बारे में उसने अपने पड़ोसियों से बहुत कुछ सुन रखा था। इन सभी पत्रों का भाव एक ही था। सिर्फ एक में उसने यह सूचना भेजी थी कि अल्योशा के कुशल-मंगल के लिए गिरजाघर में दुआ मांगने का अनुरोध उसने अपने एक पड़ोसी से किया—इसलिए नहीं कि वह खुद धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करती है, बल्कि इसलिए कि ऊपर शायद कहीं कोई हो तो वह भी क्यों रह जाय। एक पत्र में उसने लिखा था कि वह उसके बड़े भाइयों के बारे में चिन्तित है, जो दक्षिण में कहीं लड़ रहे हैं और बहुत दिनों से उनका कोई पत्र नहीं आया है, और आखिरी पत्र में उसने लिखा था कि उसने सपना देखा था कि वोल्गा की वसंतकालीन बाढ़ के दौर में उसके सभी बेटे वापिस लौट आये हैं और वे सब अपने पिता के साथ—जो मर चुके हैं—मछली का शिकार करके लौटे हैं और उनके लिए उसने उनकी रुचि की कचौड़ी—व्याजिगा कचौड़ी*—पकायी है, और पड़ोसियों ने इस स्वप्न का फल यह बताया है कि उसका एक बेटा अवश्य मोर्चे से वापिस आ जायगा। इसलिए उसने अलेक्सेई से प्रार्थना की थी कि वह अपने अफसर से घर जाने के लिए, चाहे एक ही दिन के लिए, इजाजत मांगे।

नीले लिफाफे, जिनपर बड़ी-बड़ी, गोल-गोल, स्कूली लड़कियों जैसी लिखावट में, किसी लड़की के पत्र थे जो फैक्टरी के प्रशिक्षण विद्यालय में उसकी सहपाठिनी थी। उसका नाम ओल्या था। वह अब कमीशिन

---

*यह कचौड़ी, स्तरजियन नामक मछली की रीढ़ की नर्म हड्डी भरकर पकायी जाती है।

की लकडी चीरने की मिल में टेकनीशियन थी, जहा वह खुद भी किशोरावस्था में टर्नर की हैसियत से काम कर चुका है। यह लडकी बचपन की मित्र से अधिक-सी कुछ थी और उसके पत्र भी असाधारण थे। कोई आश्चर्य नही कि उसने हर पत्र को कई बार पढा, वह उन्हे बार-बार उठाता और बिल्कुल सीधी-सादी पक्तियो को भी इस भाति पढता कि उनमें शायद कोई और सुखद, अप्रकट भाव निकल आये, हालाकि वह कौनसा अर्थ खोजना चाहता था, यह बात साफ-साफ वह खुद भी नही जानता था।

उसने लिखा था कि वह नाक तक अपने काम में डूबी हुई है, वह रात को अपने घर तक नही जाती, वही आफिस मे सो जाती है, ताकि घर आने-जाने में वक्त बरबाद न हो, अलेक्सेई तो इस लकडी चीरने की मिल को अब पहचान भी नही पायगा और अगर उसे यह पता लग जाय कि वहा क्या-क्या चीजें बनने लगी है तो वह खुशी से पागल हो जायगा। प्रसगवश उसने लिखा था कि कभी-कभी जब उसे छुट्टी मिलती है—महीने में एक बार से अधिक नही—तो वह अलेक्सेई की मा से मिलने जाती है। अपने बडे बेटो की कोई खबर न पाने के कारण बूढी बहुत परेशान है, उसे बडी मुसीबत भुगतनी पड रही है और इधर कुछ दिनो से उसका स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा है। लडकी ने अलेक्सेई से प्रार्थना की थी कि वह मा को और जल्दी चिट्ठिया लिखा करे और अपने विषय में कोई बुरा समाचार देकर उसे हैरान न करे, क्योकि, शायद उसके आनन्द का एक मात्र सहारा अब वही रह गया है।

ओल्या के पत्र पढकर और बार-बार पढकर अलेक्सेई समझ गया कि उसको सपने का हाल लिख भेजने के पीछे मा की नन्ही-सी चाल क्या है। वह समझ गया कि उसकी मा उसे देखने के लिए बेचैन है, अपनी सारी आशाए उसी पर टिकाये हुए है, और वह यह भी समझ गया कि वह जिस दुर्घटना का शिकार हो गया है, उसके बारे में

अगर वह मा को या ओल्या को लिखेगा तो उन्हें कैसा भयानक धक्का लगेगा। वह बहुत देर तक सोचता रहा कि क्या किया जाय और उसे पत्र लिखने तथा सच्चाई प्रकट करने का साहस न हुआ। उसने यह समाचार कुछ दिनों और रोकने का फैसला किया और निश्चय किया कि वह दोनो को सूचित करेगा कि वह सकुशल है और एक शान्त क्षेत्र मे उसका तबादला कर दिया गया है, अपना पता बदल जाने का कारण देने और उसे सच्चा जताने के लिए उसने लिखा कि वह पृष्ठ प्रदेश में विशेष काम पर नियुक्त टुकडी मे काम कर रहा है, जहा उसे शायद बहुत दिनो तक रहना पडेगा।

और अब, जब कि उसकी शैय्या के पास सर्जनो के आपसी परामर्श के बीच 'अग विच्छेद' शब्द अधिकाधिक बार आने लगा तो एक भय का भाव उसपर सवार हो गया। यह अग-भग लेकर वह अपने घर कमीशिन कैसे लौटेगा? ओल्या को वह अपने लकडी के पैर कैसे दिखायेगा? इससे उसकी मा को, जिसके और सब बेटे लडाई की बलि चढ गये और अब अपने आखिरी बेटे का इतजार कर रही है, कितना बडा सदमा पहुचेगा! अलेक्सेई के मस्तिष्क में यही विचार चक्कर काट रहे थे, जब वह वार्ड के शोकार्त्त, दमघोटू मौन के बीच लेटे हुए, कुक्शिकन के बेचैन शरीर के भार से चरमराती शैय्या की स्प्रिंगो के क्रुद्ध स्वर, खामोश टैंक-चालक की आहे और उस स्तेपान इवानोविच की बाते सुन रहा था, जो बिल्कुल दोहरे झुककर खिडकी के पास खडा था वही पर वह खिडकियो के शीशो पर ताल देता हुआ सारे दिन खडा रहता था।

"अग विच्छेद? नही! और कुछ भी हो ले, यह नही होगा! इससे मौत बेहतर कितना दाहक और भयानक है यह शब्द 'अग-विच्छेद'—ऐसा लगता है जैसे किसी ने छूरा भोक दिया हो। अग-विच्छेद? कभी नही। यह नही होगा!" अलेक्सेई ने सोचा। इस भयानक शब्द को उसने सपने मे एक अनिश्चित आकृति की इस्पाती मकडी के रूप में देखा जो अपने तेज, टेढे पजो से उसका गोश्त नोच रही थी।

३

एक सप्ताह तक तो बयालीस नम्बर के कमरे में शान्ति सी बनी रही। लेकिन एक दिन क्लावदिया मिखाइलोव्ना परिचारिकाओं व अर्दलियों के साथ आयी और उसने कहा कि उन्हें यहां थोड़ा खिसकना पड़ेगा। स्तेपान इवानोविच की चारपाई बिल्कुल खिड़की तक खिसका दी गयी, जिससे स्तेपान को बड़ा आनन्द हुआ। स्तेपान इवानोविच की बगल में ही कोने की तरफ कुकुश्किन की चारपाई लगा दी गयी और उसकी जगह पर एक बढ़िया-सी नीची चारपाई लगा दी गयी जिसपर स्प्रिंगदार गद्दा था।

उसपर कुकुश्किन बिगड़ खड़ा हुआ। उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसने अपनी चारपाई की बगल में रखी आलमारी पर घूसा जमाया और चीखती हुई ऊंची आवाज में नर्स को, अस्पताल को और वसीली वसील्येविच तक को गाली दे डाली, इस-इस से शिकायत कर देने की धमकी दी। वह इस तरह आपे से बाहर हो गया कि बेचारी क्लावदिया मिखाइलोव्ना के ऊपर एक मग फेंकने के लिए तैयार हो गया और अगर अलेक्सेई जिप्सी जैसी भयानक रूप से कौंधती आंखों से उसकी तरफ घूरकर, उसको सख्ती से डाट न देता तो वह मग मार ही देता।

तभी पाचवा रोगी भी वहा ले आया गया।

वह बहुत भारी रहा होगा, क्योंकि स्ट्रेचर चर्रमर्र बोल रहा था और स्ट्रेचर-वाहकों के कदमों की ताल पर बोझ से झुक-झुक जाता था। एक गोल, मुडा हुआ सिर असहाय भाव से तकिये पर इधर-उधर लुढक रहा था। चौडा, सूजा हुआ, मोम जैसा चेहरा निर्जीव दिखाई दे रहा था। मोटे-मोटे, पीले होंठो पर पीडा का स्थिर भाव अकित था।

ऐसा लगता था मानो नया मरीज अचेत है, मगर ज्यों ही स्ट्रेचर फर्श पर रखा गया उसने आखें खोल दी, वह कुहनी के बल उठ बैठा,

कौतूहलतापूर्वक उसने वार्ड मे चारो तरफ नजर डाली और किसी कारण स्तेपान इवानोविच की तरफ आख मार दी, मानो कह रहा हो "कैसी कट रही है, कुछ बुरी नही?" और जोर से खास उठा। स्पष्ट था कि उसके शरीर को बडी चोट लगी थी और उसे बहुत पीडा हो रही थी। पहली नजर मे, पता नही क्यो, मेरेस्येव को यह भारी-भरकम सूजी हुई आकृति पसद नही आयी, और वह बडी उपेक्षापूर्ण दृष्टि से दो अर्दलियो, दो परिचारिकाओ और नर्स को उसे स्ट्रेचर से उठाते और चारपाई पर रखते देखता रहा। चारपाई पर लेटाने के साथ उन लोगो ने उसके सख्त, लट्ठे जैसे पैर को भौडे तरीके से मोड दिया। अलेक्सेई ने देखा कि नये मरीज का चेहरा यकायक और फीका पड गया और पसीने की बूदे छलक आयी, उसके होठो पर से दर्द की थिरकन गुजर गयी। लेकिन मरीज ने तनिक भी आवाज न की, सिर्फ दात भीजकर रह गया।

ज्यो ही उसने अपने को चारपाई पर पाया, उसने अपने कम्बल पर पडी चादर को ठीक किया, अपने साथ जो किताबे-कापिया लाया था, उन्हे चारपाई की बगल मे खडी आल्मारी मे करीने से सजा दिया, नीचे के खाने में सावधानी से टूथपेस्ट और ब्रश, यू-डी-कोलोन, दाढी बनाने का सामान और साबुनदानी लगा दी, फिर अपनी सारी कारगुजारी पर आलोचनात्मक नजर डाली और मानो अब पूरी तरह आराम से जम गया हो, उसने अपनी गहरी, गूजती आवाज मे कहा

"अच्छा, तो अब हम लोग परिचित हो ले। मै हू रेजीमेंटल कमिसार सेम्योन वोरोब्योव। ठीक। सिगरेट नही पीता। कृपया, मुझे अपना साथी बनाइये।"

उसने वार्ड के अपने साथियो पर शान्त दिलचस्पी के साथ नजर डाली और उसकी कटीली, छोटी-सी सुनहली आखो की तीव्र, सूक्ष्मान्वेषी दृष्टि से मेरेस्येव ने अपनी दृष्टि मिला दी।

"मैं आप लोगो के बीच अधिक नही रहूगा। दूसरो के बारे में मैं नही जानता, लेकिन यहा पड़े रहने के लिए मेरे पास अधिक समय नही है। मेरे घुड़सवार दस्ते के लोग मेरा इतजार कर रहे है। जब बर्फ खत्म हो जायगी और सड़के सूख जायगी, तब तक मैं भी खिसक जाऊगा! 'लाल सैन्य के हम विख्यात घुड़सवार सिपाही और हमारा ' क्या?" वह अपनी प्रफुल्ल, गूजती हुई मद आवाज से वार्ड को भरता हुआ बोलता चला गया।

"हममें से कोई भी यहा बहुत दिन न रहेगा। जब बर्फ पिघल जायगी—तो हम सब चले जायेंगे—पहले पैर जायेंगे, वार्ड नम्बर पचास में"—कुकूश्किन ने उसकी बात काट दी, और यकायक दीवार की तरफ मुह फेर लिया।

अस्पताल मे पचास नम्बर का कोई वार्ड न था। मरीजो ने यह नम्बर कब्रिस्तान को दे दिया था। कमिसार ने यह बात पहले भी सुनी थी या नही, इसमें सदेह है, मगर इस मजाक के पीछे छिपे भयानक अर्थ को वह फौरन समझ गया। फिर भी उसने बुरा नही माना, उसने सिर्फ आश्चर्य से कुकूश्किन की ओर देखा और पूछने लगा

"और तुम्हारी क्या उम्र होगी, दोस्त? आह सफेद दाढ़ीवाले! सफेद दाढ़ीवाले! तुम जरा जल्दी बूढ़े हो गये हो!"

४

वार्ड नम्बर बयालीस में नये मरीज के आ जाने से—आपस मे जिसकी चर्चा करते हुए, लोग कमिसार कहकर हवाला देते थे—वार्ड की सारी जिंदगी बदल गयी। उसकी उपस्थिति के दूसरे दिन तक इस भारी-भरकम कमजोर आदमी ने सभी से दोस्ती कर ली और जैसा कि स्तेपान इवानोविच ने बाद में कहा, उसने "हर एक के दिल की चाबी खोज ली थी।"

स्तेपान इवानोविच के साथ वह जी भरकर घोडो और शिकार के बारे मे बाते करता, जिसके दोनो ही शौकीन थे और जिसके बारे मे दोनो ही विशेषज्ञ थे। मेरेस्येव के साथ, जो युद्ध के बारे मे दार्शनिक भाव से बाते करना पसद करता था, वह हवाई जहाजो, टैको और घुडसवार सेनाओ के इस्तेमाल की वर्तमान विधियो के बारे में जबर्दस्त बहस छेड देता और सिद्ध करने की कोशिश करता – जिसमे कुछ न कुछ गरमा-गरमी भी हो जाती – कि यद्यपि हवाई जहाज और टैंक भी बडे उपयोगी है, फिर भी घोडो का इस्तेमाल व्यर्थ नही हो गया है। वह आज भी उनकी उपयोगिता साबित करके दिखा सकता है। अगर घुडसवार सेना के घोडे तथा सवार बढिया हो और उसे आधुनिक हथियारो से लैस किया जाय और पुराने, मजे-मजाये कमाण्डरो की सहायता के लिए साहसी और बुद्धिमान जवान अफसर प्रशिक्षित किये जायें तो हमारी घुडसवार सेना आज भी दुनिया को हैरत मे डाल सकती है। उसने मौन टैंक-चालक से भी बाते करने के विषय खोज निकाले। सयोग से जिस डिवीजन में वह कमिसार की हैसियत से काम कर रहा था, उसने यार्त्सेवो के पास युद्ध लडा था और बाद में दुखोवश्चिना में जनरल कोनेव के प्रसिद्ध प्रत्याक्रमण मे भाग लिया था, जहा इस टैंक-चालक और उसके दल ने जर्मन पातो को तोडा था। और कमिसार इसकी चर्चा करते हुए उन गावो के नाम गिनाने लगता जिनसे वे दोनो ही परिचित थे और बताने लगता कि कहा और कैसे उन्होने फासिस्टो को मजा चखाया था। टैंक-चालक हमेशा की तरह खामोश रहता, लेकिन अब वह यह बाते सुनकर अपना सिर दूसरी तरफ न घुमा लेता, जैसा कि पहले किसी की बात सुनकर किया करता था। पट्टियो की वजह से उसका चेहरा तो न दिखाई देता, लेकिन समर्थन में उसका सिर हिलता दिखाई दे जाता। कुकूश्किन को कमिसार ने जहा शतरज खेलने का निमत्रण दिया तो उसका गुस्सा भी हसी-खुशी मे बदल गया। शतरज

ना पट कुकूश्किन की चारपाई पर रखा गया और कमिसार ने 'अंधी' शतरंज खेलना शुरू किया—अपनी चारपाई पर ही आंखें बंद किये लेटे रहकर। उसने खीझते-बड़बड़ाते लेफ्टीनेंट को मात दे दी और इस प्रकार वह लेफ्टीनेंट कुकूश्किन की नजरों में भी बहुत ऊंचा उठ गया।

कमिसार का वार्ड में आ जाना, मार्च के नवागत वसंत की ताजी और नम हवा के आ जाने के समान था, जो हर सुबह परिचारिकाओं द्वारा खिड़कियों के खोले जाने पर वार्ड में घुस आती थी और तब रोगियों के कमरे की दमघोंटू खामोशी सड़क की आवाजों के हमले से छिन्न-भिन्न हो जाती थी। आनन्द का वातावरण पैदा करने में कमिसार को कोई मेहनत भी न करनी पड़ती थी। वह तो जीवन में—आनन्द विह्वल, छलकते हुए जीवन रस में—भरपूर था, और अपनी व्याधि से उत्पन्न यंत्रणाओं को भूल गया था या भुलाने के लिए अपने को विवश कर रहा था।

सुबह जब वह जाग उठता तो चारपाई पर बैठ जाता और कसरत करने लगता—सिर के ऊपर दोनों बांहें फैलाता, अपने शरीर को पहले एक तरफ झुकाता और फिर दूसरी तरफ, और बड़े ताल के साथ सिर को झुकाता और इधर-उधर मोड़ता। हाथ-मुंह धोने के लिए जब पानी आता तो वह जितना भी ठंडा हो सके, उतना ठंडा पानी लाने पर जोर देता, चिलमची के ऊपर मुंह करके बड़ी देर तक छींटे मारता, नाक बजाता और फिर तौलिया से इतनी जोर से रगड़कर बदन पोंछता कि उसका सूजा हुआ शरीर लाल पड़ जाता, और उसे ऐसा करते देखकर अन्य मरीजों की भी इच्छा होती कि काश, वे भी यह सब कर पाते। जब अखबार आते तो वह उन्हें उत्सुकतापूर्वक नर्स के हाथ से छीन लेता और तेजी से सोवियत सूचना विभाग की विज्ञप्ति पढ़ जाता और उसके बाद शांतिपूर्वक, धीरे-धीरे वह विभिन्न मोर्चों के युद्ध-संवाददाताओं की रिपोर्टें पढ़ना शुरू करता। पढ़ने का भी उसका

अपना ही तरीका था जिसे 'मस्विय पाठ' कहा जा सकता है। किसी क्षण वह किसी रिपोर्ट का कोई अंश जो उसे पसद आयेगा, फुसफुस आवाज में पढेगा और कह उठेगा "ठीक है," और उस अंश पर निशान लगा देगा. कभी वह यकायक चिल्ला उठेगा "यह झूठ बोल रहा है, चुड़ैल का बच्चा! बीयर की बोतल के मुकाबले अपना सिर दाव पर लगाकर कह सकता हू, वह उस जगह था ही नही। बदमाश! और फिर भी वह लिखने की जुर्रत करता है!" एक दिन वह किसी अत्यन्त कल्पनाशील युद्ध-संवाददाता के लेख पर इतना क्रुद्ध हो उठा कि उसने उस अखबार के नाम बडी ही क्रोधपूर्ण शैली में एक पोस्ट कार्ड लिख भेजा कि ऐसी बाते युद्ध में नही घटती और न घट सकती है, और अनुरोध किया कि इस "बेशर्म झूठे" पर लगाम लगायी जाय। कभी कोई रिपोर्ट उसे चिन्तनलीन कर देती, वह तकिये से टिक जाता, आखें खुली रह जाती, और विचारो में खो जाता, या वह अपने घुड़सवार दल के बारे मे कोई दिलचस्प किस्सा सुनाने लगता, जिसमे—अगर उसकी बातो पर विश्वास किया जाय तो हर सिपाही परम वीर था, "सिर से पैर तक बहादुर जवान।" और तब वह फिर पढने लगता। और यह बात कितनी ही अचरज की क्यो न मालूम हो, मगर सच यह था, कि उसकी इन टिप्पणियो से, इन कवित्वपूर्ण भटकावो से, श्रोताओं का ध्यान इधर-उधर न भटकता था, बल्कि इसके विपरीत, इससे उन्हे वह बाते और अच्छी तरह समझने में सहायता मिलती थी, जो वह पढकर सुनाता था।

भोजन और दवादारू के बीच दिन मे दो घटे वह जर्मन पढता था, शब्दो को रटता, वाक्य बनाता और कभी-कभी उन विदेशी शब्दो की ध्वनि से चमत्कृत होकर वह कहता

"तुम्हे पता है दोस्तो, जर्मन में 'मुर्गी के बच्चो' को क्या कहते है? 'कुशेल्चेन'। ध्वनि कैसी बढिया है! पता है, इससे किसी नन्ही-

सी, रूई के गाले जैसी नरम चीज का बोध मिलता है। और पता है कि 'छोटी-सी घटी' को क्या कहते हैं? 'ग्लोकनिग।' इस शब्द में टनक की ध्वनि है, क्या नही?"

एक दिन स्तेपान इवानोविच अपने को रोक न सका और पूछ बैठा

"कामरेड कमिसार, तुम जर्मन क्यो सीखना चाहते हो? तुम बेकार ही अपने को खपा रहे हो। अच्छा हो, कि तुम अपनी शक्ति बरबाद न होने दो "

कमिसार ने इस पुराने सिपाही की तरफ पैनी निगाह से देखा और बोला "अक्ख, सफेद दाढीवाले। अरे, एक रूसी के लिए क्या यही जिदगी है? हम जब बर्लिन पहुचेंगे तो मैं जर्मन लडकियो से किस भाषा में बात करूगा? रूसी मे?"

कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठा स्तेपान इवानोविच यह जवाब देना चाहता था, और बात तर्क-सगत भी थी, कि इस समय तो युद्ध की पात मास्को से भी दूर नही है और जर्मन लडकियो तक पहुचने के लिए तो अभी बहुत रास्ता तय करना होगा, लेकिन कमिसार की आवाज में ऐसे सुखद आत्म-विश्वास की गूज थी कि पुराने योद्धा ने खासा और गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया

"नही, सचमुच, रूसी में नही। लेकिन, फिर भी कामरेड कमिसार तुम्हे जो मुसीबत भोगनी पडी है, उसके बाद तो तुम्हे अपनी फिक्र करनी चाहिए।"

"मोटा घोडा पहले लुढके। क्या पहले नही सुनी यह कहावत? यह बुरी सलाह है जो तुम मुझे दे रहे हो, सफेद दाढीवाले।"

वार्ड में किसी मरीज के दाढी न थी, फिर भी, पता नही क्यो, कमिसार सभी को 'दाढीवाले' कहकर पुकारता था, लेकिन वह जिस ढग से कहता था, उसमें अपमानजनक कोई बात न होती थी, उलटे,

इसमें से ज्यादा [illegible] की [illegible] निकलती थी, और मरीजों को उससे सख्त नफ़रत होती थी।

अलेक्सेई लगातार कई दिन तक कमिसार को जाँचता रहा और उसकी इतनी प्रसन्नता का भेद खोजने का प्रयत्न करता रहा। उसमें तो कोई सन्देह नहीं था कि वह भयानक पीड़ा झेल रहा था। ज्यों ही वह सो जाता और अपने आप पर काबू खो बैठता, त्यों ही वह कराहने लगता, हाथ-पाँव फेंकने लगता और दाँत पीसने लगता और उसका चेहरा भी दर्द से विकृत हो उठता। स्पष्ट था कि इस बात को वह भी जानता था और इसी लिए वह दिन में न सोने की कोशिश करता और कुछ न कुछ काम खोज निकालता। जागृत अवस्था में वह हमेशा शान्त और हँसमुख बना रहता, मानो उसे जरा भी दर्द न हो। वह बड़े आराम से साथ सर्जनों से बातें करता, जब वे उसके चोट लगे अंगों को ठोक-बजाकर जाँच करते तो वह हँसी-मजाक करने लगता, और सिर्फ जिस तरह उसके हाथ चादर को मुट्ठी में जकड़ लेते और नाक पर जिस प्रकार पसीने की बूंदें झलक आती, उसी से यह भापना सम्भव था कि अपने को काबू में रखने में उसे कितनी कठिनाई हो रही है। विमान-चालक यह न समझ पाया कि इतनी भयानक दर्द को यह व्यक्ति कैसे दबा लेता है और इतनी शक्ति, इतनी जिंदादिली और इतनी स्फूर्ति कहा से जुटा लेता है। अलेक्सेई इस पहेली को हल करने के लिए, इसलिए और भी उत्सुक था कि दवा की अधिकाधिक मात्रा लेनें के बावजूद वह स्वय रात भर सो नही पाता था और कभी-कभी सुबह तक आखे खोले पडा रहता और अपनी कराहे दबाने के लिए कम्बल को दातो से काटता रहता।

और भी अधिकाधिक बार और लगातार, उसे सर्जनो के निरीक्षण के दौर में वही भयानक शब्द 'अग-विच्छेद' सुनाई देने लगा। यह अनुभव कर कि वह भयानक दिन नजदीक आ रहा है, अलेक्सेई ने तय कर लिया कि पैरो के बिना जिदगी जीने लायक न रह जायगी।

५

और वह दिन भी आ गया। अपने निरीक्षण के समय एक दिन वसीली वसील्येविच बडी देर तक खडे-खडे अलेक्सेई के नीले-नीले, बिल्कुल असवेदनशील पैरो को ठोक बजाकर देखते रहे फिर यकायक कमर सीधी कर अलेक्सेई की आखो में आखें डालकर बोले "इन्हे अलग कर देना होगा।" और इसके पहले कि मुर्दे की तरह पीला पड गया विमान-चालक कोई एक शब्द कह पाता, प्रोफेसर ने सख्ती से दोहराया "इन्हे अलग कर देना होगा। अब एक शब्द नही सुनूगा, सुन रहे हो? वरना तुम अपना काम तमाम समझो! मेरी बात समझ रहे हो?"

इतना कहकर वे अपने अनुचरो की तरफ एक नजर डाले बिना वार्ड से बाहर निकल गये। वार्ड में एक दमघोटू खामोशी भर गयी। मेरेस्येव आखें फाडे, पत्थर की तरह पडा रह गया। उसकी आखो के सामने, मानो कुहरे के अदर, स्याह और भौडे ठूठो के समान बूढे माझी के पैर नाचने लगे और फिर उसने देखा कि वह माझी बन्दर की तरह चारो पैरो के बल बालू पर रेगता नदी में उतर रहा है।

"ल्योशा," कमिसार ने उसे आहिस्ते से पुकारा।

"क्या?" अलेक्सेई ने दूरागत, अनुपस्थित स्वर मे उत्तर दिया।

"तुम्हे यह कराना ही होगा, मेरे यार।"

उस क्षण अलेक्सेई को महसूस हुआ कि माझी नही, वह स्वय ही ठूठो के बल रेग रहा है और उसकी प्रेमिका, उसकी ओल्या, रेतीले किनारे पर भडकीले रगो की फ्राक—हल्की-फुलकी, दमकीली और सुन्दर फ्राक, जो हवा में उड रही है—पहने हुए उसकी तरफ टकटकी बाधकर निहार रही है और अपने होठ काट रही है। तो यह हालत होगी। और वह तकिये में चेहरा गडाकर, फूट-फूटकर खामोशी के साथ आसू बहाने लगा। वार्ड के हर व्यक्ति पर गहरा प्रभाव पडा। स्तेपान इवानोविच कराहता-

गुर्राता चारपाई मे उठ बैठा, उसने अपना चोगा पहन लिया और अपने बधे हुए पैरो को घसीटता, चारपाई की पाटी के सहारे अलेक्सेई की चारपाई की तरफ बढने लगा, मगर कमिसार ने चेतावनी देने के लिए उगली से इशारा किया, मानो कह रहा हो, "हस्तक्षेप मत करो, खूब रो लेने दो उसे!"

और सचमुच उसके बाद अलेक्सेई ने अपने को बेहतर महसूस किया। शीघ्र ही वह शान्त हो गया, और जैसे आदमी बहुत दिनो से सतानेवाली समस्या का आखिरकार हल कर लेने के बाद राहत महसूस करता है, वैसी ही राहत भी उसे महसूस होने लगी। शाम तक, जब तक अर्दली लोग उसे उठाकर आपरेशन कक्ष मे न ले गये, तब तक वह एक शब्द भी न बोला। उस चकाचौध सफेद कमरे मे भी वह एक शब्द न बोला। यहा तक कि जब उससे कहा गया कि उसके दिल की हालत के कारण उसे सुलाया नही जा सकता और इसलिए स्थल विशेष को चेतनाशून्य करके आपरेशन किया जायगा तब भी उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। आपरेशन के दौर मे उसने न एक चीख निकाली और न एक कराह। कई बार वसीली वसील्येविच, जो यह सीधा-सादा आपरेशन खुद कर रहे थे और हमेशा की भाति नर्सों और सहकारियो पर गुस्से से गुर्रा रहे थे, बार-बार चिन्तापूर्वक उस सहकारी पर नजर डालते जो अलेक्सेई की नब्ज देख रहा था।

जब हड्डिया रेतकर काटी जाने लगी तो भयकर दर्द हुआ, मगर अलेक्सेई अब दर्द सहने का अभ्यासी हो गया था, और वह यह भी न समझ पा रहा था कि सफेद पोशाके पहने और सफेद जाली की नकाबें चेहरे पर लगाये हुए ये लोग उसके पैरो के साथ क्या कर रहे है। लेकिन जब उसे वार्ड में वापिस ले जाया जा रहा था, तब वह अचेत हो गया।

जब उसे होश आया तो जो पहली चीज उसे देखने को मिली, वह था क्लावदिया मिखाइलोव्ना का सहानुभूतिपूर्ण चेहरा। बडे आश्चर्य

की बात थी कि उसे कुछ याद नही पड रहा था और वह हैरान हो उठा कि इस सुन्दर, दयालुहृदया, सुनहरे बालोवाली महिला के मुख पर चिन्ता और जिज्ञासा का भाव क्यो है। यह देखकर कि उसने आखें खोल दी हैं, नर्स का चेहरा खिल उठा और उसने कम्बल के नीचे हाथ डालकर कोमलतापूर्वक उसका हाथ दबाया।

"तुमने तो कमाल कर दिया," वह बोली और उसकी नब्ज़ देखने के लिए फौरन उसकी कलाई पकड ली।

"यह किस बात का जिक्र कर रही है?" अलेक्सेई हैरान था। तभी उसे पैरो में पहले से कुछ अधिक ऊचाई पर दर्द महसूस हुआ और इस दर्द में पहले जैसी जलन, फटन और उचकन न थी, बल्कि एक टीस-सी थी मानो नसो को घुटने के नीचे बाध दिया गया हो। यकायक उसने कम्बल की सलवटे देखकर समझ लिया कि उसका शरीर पहले से छोटा हो गया है, और एक कौंध की तरह उसे स्मरण हो आया चकाचौंध भरा सफेद कमरा, वसीली वसील्येविच की भयकर गुर्राहट, और मीनाकारी की हुई बालटी में हल्की-सी खटपट। "हो गया?" वह किंचित उदासीन भाव से हैरान रह गया और जबर्दस्ती मुसकुराकर नर्स से बोला

"ऐसा लगता है कि मै थोडा नाटा हो गया हू।"

यह विकृत मुसकान थी, बहुत कुछ मुह बनाने जैसी। क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने मृदुल भाव से उसके बाल सहलाये और बोली

"फिक्र न करो, प्यारे, अब तुम्हे आराम महसूस होगा।"

"हा, कम बोझा ढोना होगा।"

"मत कहो। ऐसा न कहो, प्यारे। लेकिन तुमने सचमुच कमाल कर दिया कुछ लोग चीखते-चिल्लाते है और कुछ लोगो को तो बाधना पडता है। लेकिन तुमने उफ तक न की। ओह, यह युद्ध! यह युद्ध!"

इस पर मध्याकाल के गोधूलि प्रकाश मे कमिसार का क्रुद्ध स्वर गूज उठा।

"यह मर्सिया वद करो अव। नर्स, अव ये चिट्ठिया उसे दे दो। कुछ लोग भाग्यशाली है। मुझे ईर्ष्यालु वनाते है। देखो तो कितने पत्र आये है एक वार मे।"

कमिसार ने मेरेस्येव को चिट्ठियो का एक वण्डल दे दिया। वे अलेक्सेई की रेजीमेंट से आये थे उनपर भिन्न-भिन्न तारीखे थी, मगर किसी कारण वे सव एक ही समय यहा आये थे। और अव कटे हुए पैर लिये वह लेटा था और ये मैत्रीपूर्ण पत्र पढ रहा था जो उससे उस सुदूर जीवन की कथा कह रहे थे जो दुस्साध्य श्रम, कठिनाइयो और खतरो से भरपूर था, जो उसे चुम्वक की तरह आकर्षित करता है, मगर जो अव सदा के लिए उससे छिन गया हे। उसकी रेजीमेंट की वडी खवरो और छोटी घटनाओ के वारे मे उन लोगो ने जो कुछ लिखा था, उसे वह उत्सुकतापूर्वक पढ रहा था किसी को कोर-हैडक्वार्टर के एक राजनीतिक कार्यकर्ता ने गुपचुप यह वात वतायी है कि रेजीमेंट को 'लाल झण्डे का पदक' प्रदान करने की सिफारिश की गयी है, इवान्चुक को फौरन दो पुरस्कार प्राप्त हुए है, याशिन शिकार करने गया था और एक लोमडी मारकर लाया जो किसी कारण विना पूछ की निकली, स्तेपान रोस्तोव को फोडा हो गया और इस कारण लेनोच्का के साथ उसके प्रेमालाप मे खलल पड गया—ये सभी खवरे उसके लिए समान रूप से दिलचस्प थी। एक क्षण को उसका मस्तिष्क उसे जगल मे छिपे हुए और झीलो से घिरे हुए उस हवाई अड्डे पर ले गया जिसकी जमीन भरोसे की न होने के कारण उसे विमान-चालक कोसते रहते है, मगर वही इस समय अलेक्सेई को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थल लगने लगा।

चिट्ठियो की वाते पढने में वह ऐसा व्यस्त था कि वह न तो उनकी भिन्न-भिन्न तारीखें देख सका और न कमिसार को नर्स की तरफ आख मारते और कानाफूसी के स्वर में यह कहते देख पाया "तुम्हारी सारी वारविटलो और वेरोनलो के मुकावले मेरी दवा वेहतर है।" अलेक्सेई

यह कभी न जान सका कि इस असाधारण परिस्थिति में पत्रों में आपका कमिसार ने उसे कुछ पत्र देने से रोक लिये थे, ताकि अपने प्यारे हवाई अड्डे से प्राप्त इन मैत्रीपूर्ण सदेशो और समाचारों को पढ़कर इस प्रचण्ड आघात की संवेदना को कम किया जा सके। कमिसार पुराना सिपाही था। वह जल्दबाजी और असावधानी में लिखे गये इन कागज के टुकडो का मूल्य जानता था। ये मोर्चे पर कभी कभी दवाओं और पट्टियों से भी अधिक मूल्यवान सिद्ध होते है।

अन्द्रेई देगत्यरेन्को के पत्र मे, जो स्वय उसी की तरह सीधा-सादा और रूखा था, बारीक घुघराली लिखावट मे लिखा गया और विस्मय-सूचक चिह्नों से भरपूर, छोटा-सा पुर्जा था। वह यो था

"कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट! यह बहुत बुरी बात है कि तुमने अपना वायदा नही पूरा किया!!! रेजीमेंट मे तुम्हे बडा याद किया जाता है, मै झूठ नही कह रही हू, वे लोग बाते करते है तो तुम्हारे बारे मे। अभी थोडी देर पहले रेजीमेंटल कमाडर ने भोजन कक्ष मे कहा था 'हा, अलेक्सेई मेरेस्येव, आदमी तो वही है!!!' तुम खुद जानते हो कि वह सबसे उत्तम आदमी के बारे में ही ऐसा कहता है। जल्दी लौट आओ, हर आदमी तुम्हारा इतजार कर रहा है!!! भोजन कक्ष की भारी-भरकम ल्योल्या मुझसे यह लिखने को कह रही है कि वह तुमसे अब जरा भी झगडा नही करेगी और भोजन के दूसरे दौर मे तुम्हे तीन बार परोसा करेगी, फिर चाहे उसे काम से हाथ धोना पडे। और यह कितनी बुरी बात है कि तुम अपना वायदा पूरा नही करते!!! तुमने दूसरो के नाम पत्र लिखे, लेकिन मुझको नही लिखा। इससे मुझे बडी ठेस लगी, और इसी लिए मैं तुम्हे अलग से चिट्ठी नही लिख रही हू। कृपा करके अब जरूर अलग से पत्र लिखना—और बताना कि तुम्हारा क्या हाल है और अपने बारे में सारे हाल-चाल लिखना! "

इस मनोरजक पुरजे के अत में दस्तखत थे· 'मौसमी सार्जेन्ट'।

मेरेस्येव मुसकुराया मगर उसकी नजर फिर इन शब्दो पर पड गयी, "जल्दी लौट आओ, हर आदमी तुम्हारा इतजार कर रहा है," और इसके नीचे रेखा खिची हुई थी। वह चारपाई पर उठकर बैठ गया और इस भाव से मानो कोई अपनी जेबो की तलाशी ले रहा है और उसे पता चला है कि एक आवश्यक दस्तावेज खो गया है, उसने व्याकुलतापूर्वक वह स्थान टटोला जहा उसके पाव थे। उसके हाथ खाली स्थान पर पड गये।

अब जाकर अलेक्सेई को अपनी क्षति की गम्भीरता का पता लगा। वह अपनी रेजीमेंट को, वायुसेना को, मोर्चे को, अब कभी वापिस न लौट सकेगा। वह हवाई जहाज पर सवार होकर आसमान मे न उड सकेगा और अपने को आकाश-युद्ध मे न झोक सकेगा—कभी भी नही। वह अब पगु हो गया था, अपना प्यारा कामकाज खो बैठा था, और अब उसे एक जगह बधे बैठे रहना पडेगा, घर पर बोझा बन जायगा, जिदगी मे कोई उसकी पूछ न करेगा। और उसके आखिरी दिन तक यह सब यो ही चलता रहेगा।

६

आपरेशन के बाद, ऐसी स्थिति में जो सबसे बुरी बात हो सकती है, उसका शिकार अलेक्सेई मेरेस्येव भी हो गया—वह अपने आप मे खोया-सा रहने लगा। वह शिकायत न करता, कभी न रोता और न कभी चिडचिडा पडता। बस, वह खामोश बना रहता।

कई दिनो तक वह चित पडा रहा और छत की टेढी-मेढी दरार पर आखे गडाये रहा। जब वार्ड के साथी कोई बात करते तो वह "हा" या "नही" मे जवाब दे देता—कभी-कभी तो असगत भाव से, और फिर खामोश होकर पलस्तर की स्याह दरार पर आखे जमाकर इस प्रकार ताकता रह जाता, मानो वह कोई गूढ लेख है, जिसका रहस्य

उद्घाटन कर लेने के ऊपर ही उसकी मुक्ति निर्भर हो। वह डाक्टर की हिदायतो का बडे आज्ञाकारी ढग से पालन करता, वह जो भी दवा निर्धारित करते उसे पी लेता, उदासीन भाव से, रुचि बिना वह भोजन कर लेता और फिर चित लेट जाता।

"ए, सफेद दाढीवाले," कमिसार ने पुकारा। "क्या सोच रहे हो?"

अलेक्सेई ने कमिसार की तरफ गरदन मोडी और ऐसी सूनी नजरो से उसकी तरफ देखा मानो उसे वह दिखाई न दे रहा हो।

"तुम क्या सोच रहे हो, मै तुम्ही से पूछ रहा हू।"

"कुछ नही।"

एक दिन वसीली वसील्येविच वार्ड मे आये तो उन्होने अपने हमेशा जैसे उद्दण्ड ढग से पूछा·

"अच्छा, रेगूमल! तुम जिदा तो हो? क्या हाल-चाल है? तुम परम वीर, परम वीर हो, मै कहता हू। तुमने तो उफ तक न की। अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम चारो हाथ-पैरो के बल जरूर अठारह दिन तक जर्मनो से बच निकलने के लिए रेगते रहे होगे। तुमने जितने आलू खाये होगे, मैने उनसे भी ज्यादा लोगो का आपरेशन किया है, मगर तुम जैसे आदमी का आपरेशन मैने कभी नही किया,"—प्रोफेसर ने अपने लाल-लाल खुरदरे हाथ मले, जिसके नाखून झर से गये थे—"तुम भौहे क्यो चढा रहे हो? मै तो इसकी तारीफ कर रहा हू, लेकिन यह भौहे चढाता है। मै चिकित्सा विभाग का लेफ्टीनेंट जनरल हू। मै तुम्हे हुक्म देता हू कि मुसकुराओ!"

बडी कठिनाई से अपने होठ फैलाकर रबड जैसी सूनी-सूनी मुसकान लाकर, मेरेस्येव ने मन ही मन कहा "अगर मुझे मालूम होता कि आखिरकार यह हश्र होगा, तो मै रेगने का कष्ट न करता। मेरी पिस्तौल मे तीन गोलिया तब भी शेष थी।"

कमिसार ने किसी दिलचस्प आकाश-युद्ध का विवरण अखबार से

पढकर सुनाया। हमारे छे लडाकू विमानों ने बाईस जर्मन विमानो से मोर्चा लिया, उनमें से आठ मार गिराये और अपना सिर्फ एक खेत रहा। यह विवरण कमिसार ने इतनी रुचि के साथ पढकर सुनाया कि ऐसा जान पड़ता था मानो उसे यही मालूम है कि विमान-चालको ने नही, उसके अपने घुडसवार सैनिको ने अपना जौहर दिखाया है। इस पर जो विवाद उठ खडा हुआ, उसमें कुकूश्किन तक ने उत्साह दिखाया और दोनो यह कल्पना करने की कोशिश करने लगे कि यह सब हुआ कैसे। मगर अलेक्सेई लेटा ही रहा और सोचता रहा "कैसे भाग्यवान है वे लोग, उडाने भर रहे है और लड रहे है, मगर मैं अब कभी नही उड पाऊंगा।"

सोवियत सूचना विभाग की विज्ञप्तिया अधिकाधिक सक्षिप्त होने लगी। सभी चिह्नो को देखकर यही पता लगता था कि अगले आक्रमण के लिए सोवियत सेना के पृष्ठ-प्रदेश मे कही पर भारी शक्ति जमा की जा रही है। कमिसार और स्तेपान इवानोविच बडी गम्भीरतापूर्वक यह बहस करते कि यह आक्रमण कहा किया जायगा और जर्मनो पर उसका प्रभाव क्या पडेगा। अभी कुछ दिनो पहले अलेक्सेई ने इस तरह की बहस मे अगुआई की थी, मगर अब वह इस विषय को न सुनने का प्रयत्न कर रहा था। उसे भी बडी-बडी घटनाओ, भीषण और शायद निर्णयकारी लडाइयो के होने का आभास मिल रहा था। लेकिन उसे ख्याल आता कि उसके साथी, और शायद कुकूश्किन भी जो तेजी से अच्छा होता जा रहा था, उन लडाइयो मे हिस्सा लेगे और इधर उसके भाग में शायद किसी पृष्ठ-प्रदेश मे पडे हुए सडते रहना बदा है, और इस मामले मे कुछ किया भी नही जा सकता—और ये ख्याल उसे इतने तीखे मालूम होते कि जब कमिसार अखबार पढने लगता या युद्ध के बारे में कोई बातचीत छिड जाती तो अलेक्सेई कम्बल से अपना सिर ढाक लेता और तकिये पर अपने कपोल रगडने लगता, ताकि वह न कुछ देख पाये

और न कुछ सुन पाये। और पता नही क्यो उसके दिमाग में वह सुपरिचित पंक्ति चक्कर काटने लगती "जो रेंगने के लिए पैदा हुए, वे उड नही सकते।"*

क्लावदिया मिखाइलोव्ना बेंत की कुछ टहनिया ले आयी थी—इस दुर्गम, युद्धकालीन, मोर्चाबन्द मास्को मे ये कहा से आ गयी, यह भगवान ही जाने—और उन्हे उसने हर एक चारपाई के पास गिलासो मे सजा दिया। अरुणाभ टहनिया और फुज्जीदार सफेद फूल इस ताजगी के साथ महक रहे थे कि ऐसा लगने लगा मानो वार्ड नम्बर बयालीस में स्वय वसन्त उतर आया हो। उस दिन हर व्यक्ति ने उल्लास और स्फूर्ति अनुभव की। मौन टैंक-चालक तक अपनी पट्टियो के बीच कुछ अस्फुट शब्द बोल उठा।

अलेक्सेई लेटा था और उसके सामने वह दृश्य साकार हो उठा कमीशिन में झरनो की गदली धारा पंकिल पटरियो के किनारे उफनती हुई, ऊबड-खाबड पत्थरो से जडी, दमकती सडक पर बह रही है, उष्ण धरती, ताजी नमी और घोडो की लीद की गंध फैल गयी है। एक ऐसे ही दिन वह और ओल्या वोल्गा के ऊंचे कगार पर खडे थे और उनके पास से नदी के अनन्त प्रसार के ऊपर सहज भाव से तैरती हुई बर्फ बही चली जा रही थी, गम्भीर मौन के बीच, जो लवा पक्षी की घंटी जैसी, मधुर स्वर-लहरी से ही कभी-कभी भंग हो जाता था। और ऐसा महसूस होता था कि धारा के साथ बर्फ नही, वह और ओल्गा ही तैर रहे है और नीरवतापूर्वक तैरते-उतराते किसी तूफानी, सर्पाकार नदी से मिलने बढे जा रहे है। वे वहा मौन खडे थे, भविष्य के सुखो के सपनो में इस तरह मग्न कि उस स्थान पर जहा सामने वोल्गा का सुविस्तृत

---

*महान रूसी लेखक अ० म० गोर्की लिखित 'बाज के गीत' का उद्धरण।—स०

प्रसार था और वागती पवन के झोंके उन्मुक्त रूप से वह रहे थे, उन्हे मास लेने के लिए भी सघर्ष करना पड रहा था। वे सपने अब कभी मच न होंगे। वह उनसे विमुख हो जायगी। और अगर न भी हो, तो क्या वह उतनी कुर्बानी स्वीकार कर सकता हे, क्या वह यह सहन कर सकता है कि जव वह ठूठ जैसे पावो के वल घसिटता चले तो उसके साथ वगल में हो वह शोख, सुन्दर और सुकोमल युवती? और उसने नर्स से प्रार्थना की कि उसकी चारपाई के पास से वसत के इन नादान दूतों को हटा दे।

वेंत की टहनिया हटा दी गयी, लेकिन वह अपनी कटु स्मृतियो से इतनी आसानी से छुटकारा न पा सका अगर ओल्या को पता चला कि उसके पैर कट गये है तो वह क्या सोचेगी? क्या वह उसे त्याग देगी, अपने जीवन से वहिष्कृत कर देगी? नही! वह इस तरह की नही है। वह उसे ठुकरायेगी नही, उससे मुख न मोडेगी! लेकिन यह तो और भी वुरी वात होगी। उसने अपनी आखो के सामने चित्र वनाया कि अपने उदात्त हृदय की प्रेरणावश ओल्या ने उससे विवाह कर लिया है, एक पगु से विवाह कर लिया है और उसकी खातिर उसने उच्चतर टेक्निकल शिक्षा प्राप्त करने का सपना त्याग दिया है, और स्वय अपना, अपने पगु पति का, और क्या जाने, शायद वच्चो तक का भरण-पोषण करने के लिए दफ्तर के कोल्हू मे अपने आपको जोत चुकी है।

इतनी कुर्वानी स्वीकार करने का क्या उसको अधिकार है? वे अभी एक दूसरे से वधे नही हैं, उनकी सिर्फ सगाई हुई है, लेकिन वे अभी पति-पत्नी नही है। वह उसे प्यार करता है, दिल से प्यार करता है, और इसलिए उसने निश्चय किया कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नही है, उसे खुद ही फौरन, एकवारगी, आपसी सम्बन्ध तोड लेना चाहिए, ताकि वह उसे न केवल भार जैसा भविष्य वनाने से वचा सके, वरन् अतर्द्वंद्व की यातना से भी मुक्त कर सके।

घर से पत्र प्राप्त करना सदा आनन्द का अवसर होता था। इसी से उसके हृदय को लड़ाई के मोर्चे की जिन्दगी की कठिनाइयों के बीच एक दीर्घ काल तक शान्ति प्राप्त होती रही। लेकिन अब, पहली बार, उसे कोई आनन्द नही प्राप्त हुआ। उससे उसका हृदय और बोझिल हो गया और यहीं उसने ऐसी गलती कर डाली जिससे उसे बाद में इतनी यातना सहन करनी पड़ी वह घर को यह लिखने का साहस न कर सका कि उसके पैर काट दिये गये है।

वह अपने दुर्भाग्य के विषय में विस्तारपूर्वक किसी को लिख सकता तो मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की उस लड़की को। वे मुश्किल से ही परिचित थे और इसलिए उसको इन बातों के बारे में लिखना आसान था। उसका नाम न जानने के कारण उसने पत्र पर यों पता लिखा "फील्ड पोस्ट ऑफिस—अमुक-अमुक, मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र, 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम।" वह जानता था कि मोर्चे पर चिट्ठियों को क्या महत्त्व दिया जाता है, इसलिए इस अद्भुत पते पर भी वह पत्र पहुंच ही जायगा। और अगर न भी पहुंचे, तो कोई बात नहीं, वह सिर्फ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता था।

अस्पताल में अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपने दिन बड़े कटु चिन्तन मे काटे। और यद्यपि उसके फौलादी जिस्म ने कुशलतापूर्वक किये गये अंग-विच्छेद को आसानी से सहन कर लिया था और घाव भी जल्दी भर गये थे, फिर भी वह स्पष्ट रूप मे निर्बलतर हो गया था और इसकी रोकथाम के लिए तमाम उपाय किये जाने के बावजूद, हर व्यक्ति देख रहा था कि वह घुलता जा रहा है और दिन-प्रति दिन क्षीण होता जा रहा है।

७

और बाहर वसंत लहरा रहा था।

वह इस वार्ड नम्बर बयालीस] मे, इस कमरे मे, भी घुस आया था जिसमें आइडोफार्म की गंध छायी रहती थी। वह खिडकी से होकर आया और अपने साथ लाया पिघलती हुई वर्फ की नम सास, गौरैयो की उत्तेजनापूर्ण चहक, मोड पर घूमती हुई ट्रामो की गूजती हुई घरघराहट, वर्फ से मुक्त तारकोली सडक पर पैरो की प्रतिध्वनि और शाम को किसी अकार्डियन की मद-मद एकरस स्वर-लहरी। वह वगल की खिडकी से झाक उठा, जिसमे से पोपलर के वृक्ष की भूप से

आलोकित एक शाखा दिखाई देती थी जिस पर पीली-सी गोद से ढकी लम्बी-लम्बी कलिया फूल रही थी। वसन्त आया तो क्लावदिया मिखाइलोव्ना के पीले-से, उदार चेहरे पर सुनहरी झाइया बनकर, जो हर तरह के पाउडर की अवहेलना कर देती थी और नर्स को कोई कम परेशान न करती थी। वह खिड़कियो के बाहर टीन से ढकी देहरी पर नमी की भारी बूदें टपकाकर उल्लासपूर्वक ताल देता हुआ सबका ध्यान बराबर आकर्षित करता।

सदा की भाति वसत ने दिलो को मुलायम कर दिया और सपनो को उकसा दिया।

"एक्ख! ऐसे में किसी वनस्थली मे बदूक लिये बैठे होते तो कितना मजा आता। क्यो स्तेपान इवानोविच?" लालसापूर्वक कमिसार ने कल्पना की उड़ान भरी। "भोर के समय झोपड़ी में बैठे हुए किसी दाव का इन्तजार करना इससे भी मजेदार कोई बात हो सकती है? समझे—गुलाबी सुबह, खुनकी और थोड़ा-सा पाला, और तुम वहा बैठे हो। यकायक—गिल-गिल-गिल, और पखो की फड़फड़ाहट—फर-फर-फर . और ठीक तुम्हारे सिर पर किसी डाल पर पछी आ बैठे—पूछ पखे की तरह फैलाये हुए—और फिर दूसरा आये और तीसरा "

स्तेपान इवानोविच ने एक दीर्घ निश्वास खीचा और फिर सड़ोपने की आवाज की, मानो उसके मुह मे पानी भर आया हो, मगर कमिसार अपने स्वप्न में मगन रहा।

"और फिर तुम आग जलाओ, बिछावन बिछा लो, थोड़ी-सी बढ़िया, खुशबूदार चाय बनाओ जिसमें धुए जैसा स्वाद हो और फिर शरीर के पुट्ठो को गरम करने के लिए वोदका का एक घूट भर लो, एह? और इतने हार्दिक परिश्रम के बाद कही "

"ओह, इसकी चर्चा मत करो, कामरेड कमिसार!" स्तेपान इवानोविच ने जवाब दिया। "तुम्हे पता है कि इस मौसम मे हमारी

तरफ कैसे शिकार मिलते है? ढेर मछलिया! तुम शायद यकीन न करो, मगर है सच। क्या तुमने नही सुना इसके बारे मे? बडा मजा रहता है और हा, कुछ पैसा भी कमाया जा सकता है। झील पर ज्यो ही बर्फ टूटने लगती है और नदिया लबालब बहने लगती है, तो किनारो की तरफ, ऊची ऊची घास और काई की तरफ, जिसे बसती पानी ढाके रहता है, वे मछलिया उमड पडती है। वे घास मे घुस जाती है और अडे देती है। बस, जरा किनारे-किनारे चले जाओ और जहा तुम्हे कोई चीज डूबे हुए लट्ठो जैसी दिखाई दे, तो समझ लो, वही मछलिया है! यहा दिखाओ बदूक के करतब। कभी-कभी तुम्हे इतनी मछलिया मिलेगी कि तुम इन सबको अपने थैले मे भी न भर पाओगे, मै शर्त बदता हू! वरना "

और इसके बाद शिकारियो के सस्मरण शुरू हो गये। अनजाने ही बातचीत युद्ध पर आ गयी और वे अटकल लगाने लगे कि इस समय डिवीजन मे या कम्पनी में क्या हो रहा होगा, जाडे मे बनायी गयी खोहे "रोने लगी" होगी या नही, या किलेबन्दी "खिसकने" लगी है या नही और फासिस्टो का क्या हाल होगा, क्योकि पश्चिम मे तो वे कोलतार की पक्की सडको पर चलने के ही आदी रहे है।

भोजन के बाद उन्होने चिडियो को चुग्गा दिया। इस मनोरजन का आविष्कार स्तेपान इवानोविच ने किया था। उसके लिए निठल्ले बैठना सम्भव नही था और वह अपने कमजोर और बेचैन हाथो से कुछ न कुछ किया ही करता था। एक दिन उसने सुझाव दिया कि भोजन के बाद बचे हुए टुकडो को चिडियो के वास्ते खिडकी की देहरी पर बिखेर दिया जाय। यह भी एक रिवाज बन गया और अब सिर्फ बचे-खुचे भोजन को ही वे खिडकी से बाहर न फेकते, बल्कि वे जानबूझकर रोटियो के टुकडे छोड देते और उन्हे मसल कर चूरा बना लेते ताकि, जैसा कि स्तेपान इवानोविच ने अभिव्यक्त किया था, गौरैयो का पूरा गिरोह "राशन की

सूची में" शामिल हो गये। ये थे "गंदे-छोटे, शोर मचानेवाले चोर किसी बड़े दुर्ग पर धावा मारते, [illegible] और आपस में [illegible], और खिड़की की देहरी साफ करते। वार्ड नंबर दो की शाखाओं पर आसन जमा लेते और वहां से अपने पर साफ करते और फिर फुर्र उड़कर अपने-अपने कारोबार चलाने चल देते। यह सब देखकर वार्ड के निवासियों को असीम आनन्द प्राप्त होता। वे अलग-अलग चिड़ियों को पहचानने लगे और कुछेक के उन्होंने नाम भी रख दिये। इनमें सबसे प्रिय थी एक पूंछ-कटी, लड़ाका, फुर्तीली चिड़िया जिसने शायद अपनी झगड़ालू आदत की वजह से अपनी पूंछ खो दी थी। स्तेपान इवानोविच ने उसका नाम 'टामी गनर' रख दिया था।

यह दिलचस्प बात है कि इस शोरगुल मचानेवाले जीवों के साथ मनोरंजन का कार्यक्रम ही था कि जिसने टैंक-चालक को मनहूसियत से उबार लिया। जब इसने पहली बार स्तेपान इवानोविच को बैसाखियों के सहारे उठते और अपनी खिड़की तक पहुंचने के लिए [illegible] के ऊपर चढने की कोशिश करने में लगभग दुहरे हो जाते देखा, तो वह इसे बडी उदासीनता और बिना किसी तरह की दिलचस्पी के ताकता रहा। लेकिन अगले दिन जब गौरैया उड़ती हुई खिड़की पर आयीं, तो वह इन नन्हें-से चंचल जीवों का दृश्य भली भांति देखने के लिए चारपाई पर उठकर बैठ तक गया, हालांकि वह दर्द से चिहुक उठा। अगले दिन तो उसने अपने भोजन में से रोटी का अच्छा-खासा, टुकड़ा बचा लिया—स्पष्ट ही, यह सोचकर कि उन उपद्रवी भिक्षुकों को अस्पताली भोजन के ये टुकडे विशेष रूप से पसंद आयेंगे। एक दिन 'टामी गनर' नहीं आयी और कुकूश्किन ने अनुमान लगाया कि किसी बिल्ली ने उसे चट कर लिया है, और यह बात उसे जंच गयी। उदासीन टैंक-चालक इसपर आग-बबूला हो गया और कुकूश्किन को 'झक्की' कह बैठा, और अगले दिन जब कटी-पूंछवाली गौरैया फिर आयी, फिर चहक उठी और खिड़की

की देहरी पर झगडा मचाने लगी—उसी तरह सिर तानते हुए और विजयी भाव से अपनी नादान, गुरैया जैसी आखे मटकाते हुए—तो टैंक-चालक का अट्टहास फूट पडा। कई महीनो बाद उस दिन वह पहली वार हसा था।

कुछ दिनो वाद ग्वोज्देव पूरी तरह खिल उठा। सभी चकित थे कि वह प्रफुल्ल चित्त, वातून और आसानी से निभानेवाला व्यक्ति निकला। वास्तव मे, यह भी कमिसार की ही करनी थी, क्योकि जैसा स्तेपान इवानोविच ने कहा, वह हर दिल की कुजी खोज लेने में माहिर था। और यह काम उसने इस प्रकार किया।

वार्ड नम्बर वयालीस मे सवसे आनन्द का समय वह था, जब क्लावदिया मिखाइलोव्ना चेहरे पर रहस्य-भाव धारण किये और हाथ पीछे वाधे हुए, अपनी हर्षोत्फुल्ल दृष्टि से वार्ड के सभी निवासियो को आंकते हुए पूछने लगी

"वोलो, आज कौन नाच दिखायेगा?"

इसका अर्थ था कि डाक आ गयी है। भाग्यशाली प्राप्त कर्त्ताओ को उनकी चिट्ठिया देने से पहले क्लावदिया मिखाइलोव्ना उन्हे नाच की नकल के रूप मे, चाहे थोडा ही हो, कुछ न कुछ हाथ पैर हिलाने के लिए मजवूर करती थी। अक्सर कमिसार ही होता था, जिसे यह करना पडता था, क्योकि कभी-कभी उसे एक वार में दस चिट्ठिया तक प्राप्त होती थी। उसे अपनी डिवीजन से, पृष्ठ-प्रदेश से, अपने साथी अफसरो से, सैनिको से और अफसरो की पत्नियो से चिट्ठिया प्राप्त होती, जिनमे या तो वीते दिनो की याद दिलायी जाती या उससे प्रार्थना की जाती कि वह पतियो को जरा "सभाले" क्योकि वे हाथ से वाहर हो गये है, अपने साथी अफसरो की विधवा पत्नियों से उसे पत्र प्राप्त होते जो अपने मामलो मे सलाह या सहायता मागती, और उसे कजाखस्तान की एक युवती पायोनियर तक से पत्र मिलते, जो

लडाई मे मारे गये एक रेजीमेटल कमाडर की पुत्री है और जिसका नाम उसे कभी याद नही आ सका। वह इन सब पत्रो को गहनतम दिलचस्पी के साथ पढता और सावधानी से प्रत्येक का उत्तर लिखता, वह उचित अधिकारियो को लिखकर कमाडर फला-फला की पत्नी की सहायता करने की प्रार्थना करता, उस पति को लिखता जो "हाथ से बाहर निकल गया है," और उसकी अच्छी खबर लेता, वह किसी मकान-मैनेजर को लिखता और धमकाता कि अगर फला सैनिक के, जो मोर्चे पर है, परिवार के कमरे मे उसने चूल्हा न बनवाया तो वह खुद आ धमकेगा और "सिर कलम कर देगा" और वह कजाखस्तान की उस लडकी को भी लिखता, जिसका नाम उच्चारण की क्लिष्टता के कारण उसे याद भी नही रहता और उसे दूसरी तिमाही परीक्षा मे व्याकरण में बुरे अक प्राप्त करने के कारण झिडकिया देता।

स्तेपान इवानोविच भी मोर्चे और पृष्ठ-प्रदेश के लोगो के साथ बडा सजीव पत्र-व्यवहार करता। उसे अपने बेटो से पत्र मिलते जो खुद भी बडे सफल स्नाइपर थे, और उसे अपनी बेटी से पत्र प्राप्त होते जो अपने सामूहिक खेत मे एक टीम की नेत्री थी और उसमें तमाम रिश्तेदारो और परिचितो की दुआ-सलाम लिखी होती और उसको सूचना दी जाती कि हालाकि सामूहिक खेत ने और भी लोगो को नये निर्माण कार्यो के लिए भेज दिया है, फिर भी फला-फला योजनाए इतने फीसदी अधिक पूरी हो गयी है। ये पत्र जिस क्षण मिलते स्तेपान इवानोविच उन्हे जोर-जोर से पढकर सुनाता, और सारे वार्ड को सारी परिचारिकाओ, नर्सो और हाउस सर्जन जैसे नीरस, पीले-से व्यक्ति को भी, अपने परिवार के बारे मे सभी समाचारो से नियमित रूप से सूचित रखता।

गैर मिलनसार कुकूश्किन तक को, जो सारी दुनिया से वैर मोल लिये मालूम होता था, अपनी मा से पत्र मिलते जो बरनौल मे कही रहती थी। वह नर्स के हाथो से पत्र छीन लेता और तब तक इतजार

रहता जब तक सब सो न जाते और फिर एक एक शब्द फुसफुसाते हुए वह उन्हें मन ही मन पढ़ डालता। उन क्षणों मे उसकी कर्कश आकृति कोमल पड़ जाती और उसके चेहरे पर ऐसा मृदुल और गम्भीर भाव आ जाता जो उसकी प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध था। वह अपनी मा को, जो गाव की डाक्टरनी है, बहुत अधिक प्यार करता था, मगर पता नही क्यो वह उन मनोभाव को प्रगट करने मे झेंपता था, उसे छिपाने का भरसक प्रयत्न करता था।

टैंक-चालक ही एक ऐसा व्यक्ति था जो हसी-खुशी की उन घडियो का जरा मजा न लेता, जब वार्ड मे समाचारो का सजीव आदान-प्रदान होने लगता था। वह और भी खिन्न हो उठता, दीवार की तरफ मुह फेर लेता तथा सिर पर कम्बल खीच लेता। उसको पत्र लिखनेवाला कोई था ही नही। वार्ड मे जितनी अधिक सख्या मे चिट्ठिया आती, उतना ही अधिक उसको अकेलापन महसूस होता। लेकिन एक दिन क्लावदिया मिखाइलोव्ना दरवाजे पर प्रगट हुई तो उसका चेहरा हमेशा से भी अधिक प्रफुल्ल था। कमिसार की तरफ से आखे दूर रखने की कोशिश करते हुए उसने शीघ्रतापूर्वक कहा

"अच्छा तो, आज कौन नाचनेवाला है?"

उसने टैंक-चालक की चारपाई पर नजर डाली और उसके उदार चेहरे पर व्यापक मुसकान की आभा फैल गयी। सभी ने अनुभव किया कि कोई असाधारण बात हो गयी है। वार्ड मे उत्सुकतापूर्ण सन्नाटा खिच गया।

"लेफ्टीनेंट ग्वोज्देव, आज आपके नाचने की बारी है। अच्छा, अब उठ तो बैठो।"

मेरेस्येव ने देखा कि ग्वोज्देव चौक उठा और उसने तेजी से गर्दन मोडी, और उसने पट्टियो की दरारो मे उसकी आखे कौंधती देखी। लेकिन ग्वोज्देव ने तुरन्त अपने को सभाल लिया और कापती हुई आवाज मे बोला, जिसमें उसने उपेक्षा का भाव भरने का प्रयत्न किया

"कोई गलती हो गयी है। अगले वार्ड मे कोई और ग्वोज्देव होगा," लेकिन उसकी आखें उत्सुकता से लालसापूर्वक उन तीन चिट्ठियों को निहार रही थी, जिन्हे झण्डे की तरह नर्स ऊचा उठाये हुए थी।

"नही! कोई गलती नही है," नर्स ने कहा। "देखो! लेफ्टीनेंट जी० एम० ग्वोज्देव और वार्ड का नम्बर भी लिखा है बयालीस! अब बोलो?"

पट्टियो में लिपटा हुआ एक हाथ कम्बल के नीचे से झपटा। जब लेफ्टीनेट ने एक पत्र को मुह से लगाया और वेगपूर्वक लिफाफे को दात से फाडकर खोल लिया तो वह हाथ काप रहा था। उत्तेजना से उसकी आखें दमकने लगी। आश्चर्य था। तीन युवती मित्रो ने, जो एक ही विश्वविद्यालय मे डाक्टरी की एक ही कक्षा की छात्राए थी, भिन्न-भिन्न लिखावट और भिन्न-भिन्न भाषा में लगभग एक ही बात लिखी थी। यह समाचार सुनकर कि वीर टैंक-चालक ग्वोज्देव घायल स्थिति में मास्को मे पडा है, उन्होने उसके साथ पत्र-व्यवहार करने का फैसला किया था। उन्होंने लिखा था कि अगर उनका आग्रह लेफ्टीनेंट को बुरा न लगे तो क्या वह उन्हे पत्र न लिखेगा और यह न बतायेगा कि उसकी हालत कैसी चल रही है और उनमे से एक ने, जिसने अपना नाम अन्यूता लिखा था, पूछा था कि क्या वह किसी रूप मे उसकी सहायता कर सकती है, क्या उसे अच्छी किताबें चाहिए, और अगर उसे किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो निस्सकोच भाव से उसे सूचित कर दे।

सारे दिन लेफ्टीनेट उन्ही पत्रो को बार-बार उलटता-पलटता रहा, उनके पते पढता रहा और लिखावट की परीक्षा करता रहा। वास्तव में वह जानता था कि इस तरह का पत्र-व्यवहार तो चलता ही रहता है, और एक बार स्वय उसने भी एक अपरिचित से पत्र-व्यवहार चलाया था जिसके हाथ का लिखा स्नेह-सदेश उसे एक ऊनी दस्तानो के जोडे में पडा मिला था, जो उसे अवकाशोपहार के रूप में प्राप्त हुए थे। लेकिन

जब उसके साथ पत्र-व्यवहार करनेवाली ने पुरमजाक चिट्ठी के साथ स्वय अपना—वह एक प्रौढा थी—और अपने चार बच्चो का चित्र भेज दिया था तो उसके बाद वह पत्र-व्यवहार अपने आप समाप्त हो गया था। लेकिन यह पत्र-व्यवहार भिन्न प्रकार का था। उसे हैरानी और अचरज सिर्फ इस बात से था कि इन पत्रो का आगमन अप्रत्याशित था, और वे एक ही साथ आये थे। वह एक और बात भी नही समझ पा रहा था इन मेडिकल छात्राओ को उसके युद्ध-सम्बन्धी कामो के बारे मे जानकारी कैसे प्राप्त हुई? सारा वार्ड इसपर आश्चर्य प्रकट कर रहा था और सबसे अधिक वह कमिसार। लेकिन जिस महत्वपूर्ण ढग से स्तेपान इवानोविच और नर्स के साथ कमिसार आखे मिला रहा था, उन नजरो को मेरेस्येव ने पकड लिया और वह समझ गया कि इसकी जड मे कमिसार ही है।

जो भी हो, अगले दिन सुबह ग्वोज्देव ने कमिसार से कुछ कागज मागा और इजाजत का इतजार किये बिना उसने अपने दाहिने हाथ की पट्टिया खोल डाली और शाम तक लिखता रहा—कभी पक्तिया काट देता, कभी कागज मरोडकर फेंक देता और कभी फिर नयी पक्ति लिखता और इस प्रकार, अतत, उसने अपने अपरिचित पत्र-याचको के नाम उत्तर रच ही डाले।

दो लडकियो ने पत्र लिखना शीघ्र ही बद कर दिया, किन्तु सहृदय अन्यूता कितना ही लिखती रही। ग्वोज्देव बकवादी प्रकृति का आदमी था और अब सारे वार्ड को मालूम होने लगा कि विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग की तृतीय वर्ष की कक्षा मे क्या हो रहा है, प्राणिविज्ञान कितना रोमाचक विषय है, लेकिन जीव रसायन विज्ञान कितना नीरस विषय है, प्रोफेसर की आवाज कितनी बढिया है और कितनी अच्छी तरह वह अपना विषय प्रस्तुत करता है, फला-फला अध्यापक कितना मनहूस है, पिछले रविवार को स्वेच्छित सहायता कार्य करते हुए छात्र-

छात्राओं ने बोझा ढोनेवाली ट्रामों पर कितना काठ लादा था, अस्पताल में काम के साथ अध्ययन का संयोग स्थापित करना कितना कठिन है, और एक मूर्ख छात्रा, जो तनिक भी भली लडकी नहीं थी, अपने आप पर कितना "घमंड" करती थी।

ग्वोज्देव सिर्फ बातचीत ही नहीं करने लगा। वह मानो खिल उठा और शीघ्र ही चंगा भी होने लगा।

कुकूश्किन ने अपनी कमठी खुलवा ली थी। स्तेपान इवानोविच बैसाखी के बिना चलना सीख रहा था और अब काफी सीधे खड़े होकर चलने लगा था। वह अब सारा दिन खिडकी के पास बिताने लगा और निरीक्षण करने लगा कि 'विस्तृत-विश्व' मे कहा क्या हो रहा है। सिर्फ जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते मेरेस्येव और कमिसार की हालत बिगडती जाती। कमिसार की हालत विशेष खराब हो रही थी। अब वह अपना प्रातःकालीन व्यायाम भी न कर पाता। उसके शरीर पर मनहूस पीली-सी लगभग पारदर्शी सूजन अधिकाधिक उभरने लगी। वह अपनी बाहें कठिनाई से ही मोड पाता और अब वह पेंसिल या चम्मच न पकड पाता।

सुबह वार्ड की परिचारिका ने उसे नहलाया और खिलाया, और यह समझना सहज था कि उसे जो बात सबसे अधिक खिन्न करती और यन्त्रणा देती, वह सख्त दर्द न था, यह असहायता थी। फिर भी वह उदास न रहता। उसका कंठ पहले की ही तरह उल्लासपूर्वक गूंज उठता, पहले जैसी ही जिंदादिली से वह अखबार पढकर सुनाता और जर्मन भाषा का अध्ययन भी जारी रखता रहा; लेकिन पढते समय अब किताब वह स्वयं न पकड पाता, इसलिए स्तेपान इवानोविच ने किताब रखने के लिए तार की चौकी बना दी और उसके सिरहाने रख दी, और उसके लिए पन्ने पलटते जाने के लिए वह स्वयं सिरहाने आ बैठता। सुबह अखबार आने से पहले, कमिसार उत्सुकतापूर्वक नर्स से पूछता कि आखिरी विज्ञप्ति मे क्या खबर थी, रेडियो पर क्या समाचार आया है,

मौसम कैसा है और मोर्चों में क्या देखा-सुना। उसने रेडियो का एक एक्सटेंशन अपने सिरहाने लगवाने की इजाजत वसीली वसील्येविच से ले ली थी।

ऐसा लगता था कि उसका शरीर जितना दुर्बल होता जाता था, उतना ही उसका मनोबल सशक्त होता जा रहा था। उसे जो अनगिनत पत्र प्राप्त होते, उन्हे वह उसी अमद दिलचस्पी के साथ पढता और बारी-बारी मे कुकूश्किन और स्त्रोज्देव को उनके जवाब लिखाता। एक दिन किसी चिकित्सा के बाद मेरेस्येव ऊघ रहा था, तभी वह कमिसार की मद्धिम आवाज की गरजना से चौंक गया।

उसके सिरहाने तारो से बनी चौकी पर उसके डिवीजन के अखबार की एक प्रति पडी थी, जिसपर यद्यपि इस आदेश की मुहर लगी थी "ले जाने के लिए नही है," फिर भी कोई व्यक्ति उसे बराबर कमिसार के पास भेज देता था।

"रक्षात्मक रहते-रहते, क्या वे लोग पागल हो गये है या कुछ और?" वह गरज उठा। "अवत्सोव नौकरशाह बन गया? फौज का सर्वोत्तम पशुचिकित्सक और नौकरशाह? क्लीशा! लो, फौरन लिख डालो।"

और उसने स्त्रोज्देव से फौजी कौंसिल के एक सदस्य के नाम एक क्रोधपूर्ण पत्र लिखवाया और अनुरोध किया कि इस 'अखबारवाले' पर लगाम लगायी जाय जिसने एक बढिया और उत्साही अफसर पर अनुचित आक्षेप लगाये। यह पत्र डाक मे रवाना करने के लिए नर्स को देने के बाद भी वह 'ऐसे पत्रकारो' को झिडकता रहा और एक ऐसे व्यक्ति के मुह से, जो तकिये पर अपना सिर भी नही घुमा पाता था, इतने भावावेशपूर्ण शब्द सुनकर हैरानी होती थी।

उस शाम एक और भी विलक्षण घटना हुई। उन नीरव घडियो मे, जब कमरे के कोनो मे साये गहरे होने लगे थे और अभी रोशनिया जलायी न गयी थी, तब स्तेपान इवानोविच खिडकी के पास बैठा,

विचारो में खोया हुआ दूर किनारे की ओर हेर रहा था। जीन के लबादे पहने हुए कुछ औरतें नदी पर वर्फ काट रही थी। वे वर्फ में चौकोर, स्याह छेद के किनारो पर लोहे की छडें लगाकर वर्फ की वडी-वडी पट्टिया उखाड रही थी, इन पट्टियो को वे छडो की दो एक चोट से तोड लेती थी और फिर अकुडो की सहायता से इन टुकडो को लकडी के तख्तो के ऊपर घसीटकर पानी से वाहर निकाल लेती थी। वर्फ के ये टुकडे—नीचे की तरफ हरे-हरे और पारदर्शी, और ऊपर की तरफ पीले और कटे-फटे—पातो में रखे थे। वर्फ पर चलनेवाली स्लेज गाडियो की एक लम्बी कतार, एक दूसरे से वधी हुई, नदी के किनारे किनारे उस जगह आ रही थी, जहा वर्फ कट रही थी। एक वूढा जो कनटोपी, रूई भरी पतलून और उसी तरह का कोट कमर पर पेटी कसे पहने हुए था जिससे एक कुल्हाडी लटक रही थी, घोडो को उस जगह ले जा रहा था जहा वर्फ पडी थी और औरते हिम-खण्डो को स्लेजो पर लाद रही थी।

स्तेपान इवानोविच की अनुभवी आखो ने उसे वता दिया कि किसी सामूहिक खेती की टीम द्वारा काम हो रहा है, मगर वुरी तरह सगठित किया गया था। काम पर वहुत ज्यादा लोग जुटे हुए थे और वे सिर्फ एक दूसरे के रास्ते मे ही आते थे। उसके व्यावहारिक मस्तिष्क मे काम की एक योजना पैदा हो गयी। उसने मन ही मन टीम को तीन दलो में वाटा—जो वर्फ के टुकडो को किसी कठिनाई विना पानी से वाहर निकाल सकते थे। फिर उसने हर दल के लिए एक खास हिस्सा निश्चित किया और तय किया कि इस काम के लिए पूरी टीम को एक मुश्त रकम न दी जाय, वल्कि हर दल को अलग-अलग—वह जितने वर्फ खण्ड ढोये, उसके अनुसार—मेहनताना दिया जाय। उसने टीम में एक गोल चेहरे, गुलावी कपोलोवाली फुर्तीली औरत देखी और मन ही मन उसे सुझाव दिया कि वह इन दलो के वीच समाजवादी होड की

पहलकदमी करे. वह अपने विचारो मे ऐसा लीन था कि वह एक घोडे को वर्फ के छेद के इतने करीब जाते न देख पाया कि उस घोडे के पिछले पैर फिसल गये और वह घोडा पानी मे गिर गया। स्लेज के वोझ के कारण घोडा रहा तो सतह के ऊपर, मगर धारा की तेजी उसे वर्फ के नीचे खीच रही थी। कुल्हाडी धारी बूढा असहाय भाव से चीखने-चिल्लाने लगा, वह कभी स्लेज की पाटियो पर जोर लगाता और कभी घोडे की लगाम खीचता।

स्तेपान इवानोविच विस्मित-सा सास रोके रह गया और पूरी आवाज भरकर चिल्ला उठा "घोडा डूब रहा है।"

कमिसार अविश्वसनीय जोर लगाकर कुहनी के वल उठ बैठा, यद्यपि दर्द से उसका चेहरा स्याह पड गया, और खिडकी की देहरी पर वक्ष टेककर वाहर देखने लगा और फुसफुस स्वर मे बुदबुदा उठा "मूर्ख! इतना भी समझ मे नही आता? रासे! उसे रासे काट देना चाहिए। तव घोडा अपने आप निकल आयेगा। अक्ख! वह बेचारे जानवर को मार ही डालेगा!"

फूहड ढग से स्तेपान इवानोविच खिडकी की देहरी पर चढ गया। घोडा डूबा जा रहा था। गदा पानी उसके ऊपर तक छपछपाने लगा था, लेकिन फिर भी बाहर निकलने के लिए जबर्दस्त जोर लगा रहा था और अपने नाल लगे अगले खुरो को उसने बर्फ के किनारे पर धसा दिया था।

"रासे काट दो!" कमिसार चिल्लाया, मानो नदी तट का बूढा उसकी आवाज सुन ही लेगा।

स्तेपान इवानोविच ने अपने हाथो का भोंपू बनाया और रोशनदान मे से चीखकर उसने कमिसार की सलाह सडक के पार भेजी "ए! वुढऊ! रासे काट दो। तुम्हारी कमर की पेटी में कुल्हाडी बधी है—रासे काट दो और घोडे को छोड दो!"

बूढे ने यह आवाज सुन ली जो उसे किसी आकाशवाणी की सलाह मालूम हुई। उसने अपनी पेटी से कुल्हाडी खींच ली और दो चोटों से रासें काट दी। जुए से छुटकारा पाकर घोडा फौरन बर्फ पर चढ गया, बर्फ मे बने छेद से दूर जा खडा हुआ और हाफता हुआ कुत्ते की भांति कापता रहा।

"यह क्या हो रहा है?" उसी क्षण एक आवाज ने सवाल किया।

वसीली वसील्येविच, अपनी बटन-खुली पोशाक में और सिर पर चपक कर बैठनेवाली टोपी पहने बिना, जिसे वे अक्सर पहने रहते थे, दरवाजे पर खडे थे। वे आग-बबूला हो उठे, पैर पटकने लगे और कोई सफाई सुनने के लिए तैयार न थे। वे बोले कि वार्ड भर पागल हो गया है, वे एक-एक को यहा से जहन्नुम भेज देंगे, और बिना यह पता लगाये कि क्या हुआ है, वे हाफते हुए और हर एक को झिडकते हुए बाहर निकल गये। थोडी देर बाद क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने प्रवेश किया—चेहरा आसुओ से तर था और वह बडी ही परेशान दिखाई दे रही थी। वसीली वसील्येविच ने उसे अभी बडी फटकार सुनायी थी, मगर उसकी नजर कमिसार के स्याह और निर्जीव चेहरे पर पडी, जो आखे बद किये गतिहीन लेटा हुआ था, और वह उसकी तरफ दौड पडी।

शाम को कमिसार की हालत बहुत बुरी हो गयी। उन्होंने उसे कैम्फर का इजेक्शन दिया, ऑक्सीजन दिया, मगर वह बडी देर तक अचेत पडा रहा। मगर जब उसे होश आया तो उसने क्लावदिया मिखाइलोव्ना की तरफ देखकर मुसकुराने की कोशिश की जो ऑक्सीजन का थैला लिये उसके ऊपर झुकी खडी थी, और मजाक करने लगा।

"नर्स, फिक्र न करना, मै जहन्नुम से भी वह चीज लेकर लौट आऊगा जिसको दानव लोग अपनी झाइया दूर करने के लिए इस्तेमाल करते है।"

अपनी व्याधि से जूझते हुए, यह भारी-भरकम, शक्तिशाली व्यक्ति जिस प्रकार दिन प्रति दिन क्षीणतर होता जा रहा था, यह देखा न जाता था।

८

मेरेस्येव भी दिन प्रति दिन निर्बल होता जा रहा था। उसने 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम जो अगला पत्र लिखा—वही तो एक व्यक्ति था, जिसको वह अपना क्लेश बता पाता था—उसने यहा तक लिख डाला कि वह इस अस्पताल को शायद जीवित अवस्था मे न छोडेगा, मगर यह भी ठीक ही रहेगा, क्योकि पैरो के बिना विमान-चालक ऐसा ही है, जैसे पख बिना पछी, जो वैसे तो जिंदा रह सकता है और खा-पी सकता है, मगर उडना—कभी नही! वह पखहीन पछी नही बनना चाहता और वह बुरी से बुरी बात के लिए तैयार है—बस, यही है कि वह जल्दी आ जाय। ऐसा लिखना कितनी क्रूरता थी, क्योकि पत्र-व्यवहार के दौरान में उस लडकी ने स्वीकार किया था कि "कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट के लिए" उसके दिल मे बहुत-बहुत दिनो से एक कोमल स्थान था, लेकिन अगर उसपर यह मुसीबत न टूट पड़ती तो शायद वह कभी भी यह स्वीकार न कर पाती।

"वह शादी करना चाहती है। इस वक्त हमारी हैसियत बडी भारी है। अगर पेंशन अच्छी-खासी हो, तो वह इन भौंडे पैरो की परवाह क्यो करेगी," हमेशा की तरह सुनिश्चित भाव से कुकूश्किन ने टीका की।

लेकिन अलेक्सेई को वह पीला चेहरा याद आ गया, जो उस घडी जब मौत उनके सिर पर मडरा रही थी, उसके चेहरे से चिपका हुआ था और वह समझ गया कि स्थिति वह नही है जो कुकूश्किन बता रहा है। वह यह भी जानता था कि उसका दुखद आत्म-विवरण पढकर उस लडकी का दिल तडप उठेगा। वह 'मौसमी सार्जेंट' का नाम तक

जाने विना, अपने आनन्द-जन्य मनोभाव उससे प्रगट करता चला जा रहा था।

कमिसार हर दिल की कुजी खोज लेने मे पटु था, लेकिन अब तक वह मेरेस्येव की कुजी खोजने मे सफल नही हो सका था। जिस दिन आपरेशन हुआ, उसके अगले दिन डाक मे ओस्त्रोव्स्की की 'अग्निदीक्षा' आ गयी। पुस्तक जोर-जोर से पढी जाती थी। अलेक्सेई भाप गया था कि यह पाठ किसके लिए हो रहा है, लेकिन कहानी मे उसे कोई सान्त्वना न मिल सकी। वचपन से ही उसे पावेल कोर्चागिन के प्रति अपार श्रद्धा थी, वह उसके परम प्रिय नायकों मे से एक था। "मगर कोर्चागिन विमान-चालक न था," अलेक्सेई अब सोचने लगा। "क्या वह जानता था कि 'हवा मे उडने की आकाक्षा' का क्या मतलब होता है?" ओस्त्रोव्स्की ने अपनी किताव, एक ऐसे समय मे चारपाई पर लेटे-लेटे नही लिखी थी, जब कि देश के सभी मर्द और अधिकाश औरते लड रहे हो, जब कि वहती नाकवाले लडके तक चौकियों पर खडे होकर, क्योकि वे इतने लम्बे नही है कि लेथ तक पहुच सके, गोला-वारूद तैयार कर रहे हो।"

सक्षेप में यह कि इस अवसर पर यह पुस्तक कोई लोकप्रिय नही हुई। इसलिए कमिसार ने पार्श्व से हमला शुरू किया। जैसा कि अक्सर होता था, आकस्मिक ढग से उसने एक अन्य व्यक्ति की कहानी सुनाना शुरू कर दिया जिसके पैरो को लकवा मार गया है, मगर आज वह एक ऊचे सार्वजनिक पद पर है।' स्तेपान इवानोविच, जो दुनिया में कोई वात हो, हर चीज मे दिलचस्पी लेता था, इसपर आश्चर्य से मुह फाडे रह गया, और फिर उसे याद पडा कि वह जिस जगह से आया था, वहा एक डाक्टर था जिसके सिर्फ एक ही वाह थी, मगर इसके वावजूद वह जिले में सवसे अच्छा डाक्टर था, वह घोडे की सवारी कर लेता था, और शिकार खेल लेता था, और एक ही हाथ से वदूक तो ऐसी वढिया

[illegible] था कि [illegible] की [illegible] में भी निशाना मार सकता था। [illegible] जिन्हें वह [illegible] में [illegible] रूप से जानता था। [illegible] था, वह एक ही [illegible] था, फिर भी [illegible] के काम [illegible] पैमाने पर कामों का संचालन करता था।

[illegible] यह बातें [illegible] हुआ सुनता रहा। पांवों की बात ही क्या, पूरी टांगों के बिना भी दौड़ना, बात करना, लिखना, हुक्म निकालना, लोगों का इलाज करना और शिकार खेलना तक सम्भव है, लेकिन वह तो विमान-चालक है, जन्मजात विमान-चालक, बचपन से ही विमान-चालक है, उसी दिन से है, जब उसने तरबूज के उस खेत की रखवाली करते समय, जिसमें पटी धरती पर मुलायम पत्तियों के बीच ऐसे भारी-भरकम धारीदार तरबूज पड़े हुए थे जो सारे वोल्गा क्षेत्र में प्रसिद्ध है—उसने एक आवाज सुनी थी और फिर देखा था एक नन्ही-सी, रुपहली दानवी मक्खी को, जिसके दो पंख धूप में झिलमिला रहे थे और वह स्तेपी मैदान के ऊपर धीरे-धीरे फिसलती हुई स्तालिनग्राद की तरफ बढ़ी जा रही थी।

उसी क्षण से हवाबाज बनने का स्वप्न उसे कभी नहीं छोड़ सका। स्कूल में कक्षा में पढ़ते समय और बाद में लेथ पर काम करते समय उसके मस्तिष्क में यही सपना रहता था। रात में जब सब लोग सो जाते थे, तब वह और प्रसिद्ध हवाबाज ल्यपिदेव्स्की, चेल्यूस्किन के अनुसंधान-यात्रियों को खोज निकालते और बचा लेते, वोदोप्यानोव के साथ वह उत्तरी ध्रुव की सख्त बर्फ के ऊपर भारी हवाई जहाज उतारता तथा चकालोव के साथ उत्तरी ध्रुव होकर अमरीका तक पहुंचने का अनखोजा रास्ता निकाल लेता।

युवक कम्युनिस्ट लीग ने उसे सुदूर पूर्व भेजा और वहां ताइगा में उसने युवकों के नगर—कोम्सोमोल्स्क—का निर्माण करने में सहायता पहुचायी, किन्तु उस सुदूर स्थान तक भी वह विमान-संचालन का अपना सपना साथ लिये गया। नगर के निर्माणकर्ताओं में उसे अपनी ही तरह के अनेक नर-नारी मिले जो विमान-चालक के गौरवशाली पेशे में प्रवेश करने का स्वप्न देख रहे थे, और यद्यपि उस नगर में, जिसका अस्तित्व अभी सिर्फ नक्शे पर ही था, यह विलास रखना कठिन था, फिर भी उन्होंने अपने हाथों से अपने उड्डयन क्लब के लिए एक हवाई अड्डा तैयार किया था। जब शाम आती और निस्तब्ध निर्माणक्षेत्र धुंधलके से ढक जाता, तो सारे निर्माणकर्त्ता अपने झोंपड़ों में घुस जाते, खिड़कियां बन्द कर लेते और दरवाजे के बाहर सब टहनियों की आग जलाते, ताकि उसके धुएं से मच्छड़ों और वनमक्खियों के झुण्ड भगाये जा सकें जिनकी मनहूस और जोरदार भन्-भन् से सारा वातावरण भर जाता। उसी क्षण, जब सारे निर्माणकर्त्ता दिन के परिश्रम से चूर होकर आराम करते, तब अलेक्सेई की अगुआई में उड्डयन क्लब के सदस्य, अपने शरीरों पर मिट्टी का तेल मल कर—समझा जाता था कि इससे मच्छड़ और वनमक्खियां दूर रहती हैं—कुल्हाड़ियां, गेंतियां, आरियां, सुरंगियां और विस्फोटक टी० एन० टी० लेकर ताइगा में चले जाते थे और वहां वे पेड गिराते, ठूठों को उडा देते, जमीन को समतल बनाते ताकि हवाई अड्डे के लिए ताइगा से कुछ जमीन निकाल सके। और अपने ही हाथों से अछूते जंगलों को साफ कर उन्होंने अपने हवाई अड्डे के लिए कई किलोमीटर भूमि जीत ली।

यही अड्डा था जहां से पहली बार अलेक्सेई ने एक प्रशिक्षण विमान में चढ़कर हवा में उड़ान भरी थी और आखिरकार अपने बचपन के सपने को सफल बना पाया था।

बाद में वह फौजी उड्डयन स्कूल में गया और इस कला में पारंगत

बन गया तथा अनेक नवागतो को सिखाने लगा। जब युद्ध छिडा, तब वह इसी स्कूल में था। स्कूल अधिकारियो के विरोध के बावजूद उसने शिक्षक का पद त्याग दिया और सक्रिय सैनिक के रूप मे फौज मे शामिल हो गया। उसके जीवन के सारे लक्ष्य, भविष्य के लिए उसकी सारी योजनाए, आनन्द और दिलचस्पिया और वास्तविक रूप मे प्राप्त सफलताए, सभी उड्डयन विद्या से बधी थी

और फिर भी वे लोग उससे विल्यम्स की बाते करते थे।

"लेकिन विल्यम्स तो हवाबाज नही था," अलेक्सेई ने कहा और दीवार की ओर मुह फेर लिया।

लेकिन उसके मन की "गाठे खोलने" के लिए कमिसार ने अपने प्रयत्न जारी रखे। एक दिन, जब अलेक्सेई हमेशा की तरह अपने चारो ओर की चीजो की तरफ से उदासीन था, उसने कमिसार को यह कहते सुना

"ल्योशा। पढो तो इसे। यह तुम्हारे बारे मे है।"

कमिसार जो पत्रिका पढ रहा था, उसे मेरेस्येव को देने के लिए स्तेपान इवानोविच झपट पडा। उसमे एक लेख था जिसपर पेंसिल से निशान बना था। अलेक्सेई ने अपना नाम खोजने के लिए सारे पृष्ठ पर ऊपर से नीचे तक नजर डाली, मगर न मिला। यह लेख प्रथम युद्ध-काल के एक रूसी हवाबाज के बारे मे था। पत्रिका के पृष्ठ मे से एक अज्ञात युवक अफसर का चेहरा उसकी ओर घूर रहा था—उस चेहरे पर पैनी ऐठी हुई छोटी मूछे थी और सिर पर चालक की टोपी, जिसमे सफेद बिल्ला लगा हुआ था, कानो को छू रही थी।

"पढ लो, पढ डालो, यह तुम्हारे लिए ही लिखा गया है," कमिसार ने अनुरोध किया।

मेरेस्येव ने लेख पढ डाला। वह एक रूसी फौजी विमान-चालक, लेफ्टीनेंट वलेरियान अरकादियेविच कार्पोविच के विषय मे था, जिसके पैर

में, शत्रु की पातों पर उड़ते समय, एक जर्मन ड्रमडम गोली लग गयी थी। पैर के चिथड़े उड़ जाने के बावजूद वह अपने 'फग्मान' विमान को शत्रु की पातों से निकाल लाया और अपने अड्डे पर उतर आया। पैर कट चुका था, मगर युवक अफसर को फौज मे रिटायर होने की कोई आकांक्षा न थी। उसने एक कृत्रिम पैर का आविष्कार किया और अपने डिजाइन के अनुसार बनवाकर उसने दूसरा पैर लगवा लिया। दीर्घकाल तक और धैर्यपूर्वक वह जिमनास्टिक करता रहा और अपने को अभ्यस्त करता रहा, जिसके फलस्वरूप वह युद्ध के अंतिम दिनों मे फिर अपने काम पर वापिस लौट आया। वह एक फौजी उड्डयन स्कूल में निरीक्षक नियुक्त कर दिया गया और जैसा कि लेख मे बताया गया था, "कभी कभी वह अपने विमान में उड़ान करने का खतरा मोल लिया करता था।" उसे अफसरों वाला सेंट ज्यार्ज क्रास का पुरस्कार दिया गया और अपनी मृत्यु तक—जो विमान के गिरकर चूर हो जाने के कारण हुई—वह रूसी वायु सेना की सफलतापूर्वक सेवा करता रहा।

मेरेस्येव ने लेख एक बार, दो बार और तीसरी बार भी पढ़ डाला। क्षीणकाय, युवक लेफ्टीनेंट का थका हुआ, मगर सकल्पपूर्ण चेहरा अपने होंठो पर किंचित हठात्, किन्तु वीरतापूर्ण मुसकान लिये हुए उसकी ओर घूर रहा था। इधर सारा वार्ड बड़ी उत्तेजना के साथ अलेक्सेई को देख रहा था। उसने अपने बालो मे उंगलिया फेरी, उसने पत्रिका में आखे गड़ाये हुए, पेंसिल खोजने के लिए चारपाई के पास रखी अल्मारी टटोली और बड़े सभालकर लेख के चारो ओर एक हाशिया बना दिया।

"पढ़ डाला?" कमिसार ने आखो मे शैतानी भरी नजर छिपाये हुए पूछा। अलेक्सेई चुप रहा, उसकी आखें अभी भी लेख की पक्तियां छान रही थी। "तो तुम क्या कहते हो इसके बारे में?"

"लेकिन उसने तो एक ही पैर खोया था।"

"मगर तुम सोवियत हवाबाज हो।"

"वह 'फरमान' चलाता था। उसे भी क्या हवाई जहाज कहोगे? उसमे क्या रखा था। उसको तो कोई भी चला सकता था। उसका स्टीमरिंग गीयर इतना सादा होता है कि उसके चलाने के लिए किसी भी कुशलता या तेजी की जरूरत नही होती थी।"

"लेकिन तुम तो सोवियत हवाबाज हो।" कमिसार ने फिर जोर दिया।

"सोवियत हवाबाज," अलेक्सेई ने यान्त्रिक ढग से दोहराया। और आखे अभी भी पत्रिका पर चिपकाये रहा। फिर उसका चेहरा दमक उठा, मानो किसी आतरिक प्रकाश से, और उसने आनन्द और विस्मयपूर्ण दृष्टि से चारो ओर अपने प्रत्येक साथी मरीज की ओर देखा।

उस रात सोने से पहले अलेक्सेई ने पत्रिका अपने तकिये के नीचे रख ली और उसे याद आया कि जब वह बच्चा था, तब पटरे पर लेटते समय—जहां वह अपने भाइयो के साथ सोता था—इसी भाति भोडे नन्हे भालू को छिपा लिया करता था जिसे उसकी मा ने एक पुरानी रेशमी जाकेट फाडकर बना दिया था। इस स्मृति पर वह हस पडा और वह हसी वार्ड भर मे गूज गयी।

उस रात उसकी आख न लगी। सारा वार्ड गहरी नीद मे डूबा था। ग्वोज्देव अपनी चारपाई पर लुढक रहा था, जिसके कारण गद्दे की स्प्रिगे चू चू बोल रही थी। स्तेपान इवानोविच मुह फाडे, सीटी बजाता हुआ, इस प्रकार खुर्राटे भर रहा था मानो उसका अतर बाहर निकलने के लिए व्याकुल है। जब-तब कमिसार करवटे बदल रहा था और दात मीजता हल्के-से कराह भर उठता था। लेकिन अलेक्सेई को कुछ न सुनाई दे रहा था। बार बार अपने तकिये के नीचे से वह पत्रिका निकाल लेता और रात के लैम्प की रोशनी मे लेफ्टीनेट के मुसकुराते हुए चेहरे की तरफ देखने लगता और मानो उससे बाते कर रहा हो, इस भाव मे

बुदबुदा उठता "तुम्हारी मुसीबत थी, मगर तुम निभा ले गये। मेरी तो दस गुना अधिक है, मगर मै भी निभा ले जाऊगा, तुम देख लेना।"

आधी रात को यकायक कमिसार बिल्कुल शान्त लेटा रह गया। अलेक्सेई कुहनी के बल उठा और उसने कमिसार को पीला और ठंडा पड़ा देखा, मानो वह सास भी न ले रहा हो। उसने उन्मत्त भाव से घंटी बजा दी। क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड मे दौड़ी हुई आयी—नगे सिर, उनीदी आखे और पीठ पर उसकी चोटे लटकी हुई। कुछ क्षण बाद हाउस सर्जन भी बुलाया गया। उसने कमिसार की नब्ज देखी, उसे केम्फर का इजेक्शन दिया और ओक्सीजन के थैले की टोटी उसके मुह से लगा दी। सर्जन और नर्स कोई एक घंटे तक मरीज से जूझते रहे और ऐसा लगता था, मानो परिश्रम व्यर्थ हो रहा था। आखिरकार कमिसार ने आखें खोली, वह क्लावदिया मिखाइलोव्ना की ओर देखकर आहिस्ते से, लगभग अगोचर रूप मे मुसकुराया, और धीमे से बोला

"खेद है, मैने तुम्हे व्यर्थ ही कष्ट दिया। मै नरक तक नही पहुच पाया और तुम्हारी झाइयो की दवा न ला पाया। इसलिए, प्रिये, अभी तो तुम्हे ये बरदाश्त करनी पड़ेगी। कुछ नही किया जा सकता।"

यह मजाक सुनकर हर व्यक्ति ने सतोष की सास ली। यह व्यक्ति मजबूत बलूत वृक्ष के समान है, जो किसी भी आधी तूफान का सामना कर सकता है। हाउस सर्जन वार्ड छोड़कर चला गया, उसके जूतो की चरमराहट गलियारे मे धीरे धीरे खो गयी, वार्ड परिचारिकाए भी चली गयी और सिर्फ क्लावदिया मिखाईलोव्ना रह गयी जो कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठी थी। मरीज फिर सो गये, सिर्फ मेरेस्येव को छोड़कर, जो आखें बद किये पड़ा था और कल्पना कर रहा था कि उसके हवाई जहाज के पैडलो के साथ बनावटी पाव लगाये जा सकते है, चाहे फिर उन्हें तस्मो से ही क्यो न बाधना पड़े। उसे याद पड़ा कि जब वह उड्डयन क्लब में था, तब शिक्षक ने गृह-युद्ध काल के एक हवाबाज की

चर्चा की थी, जिसकी टागे छोटी थी और इसलिए उसके अपने हवाई जहाज के पैडलो मे लकडी के साचे लगा लिये थे, ताकि उसके पैर वहा तक पहुच सके।

"मै तुमसे पीछे नही रहूगा, भाई," वह कार्पोविच को विश्वास दिलाता रहा। और "मै उडूगा, मै उडूगा," ये शब्द मस्तिष्क मे बराबर गूजते, और गाते रहे, और उसकी नीद भगाते रहे। वह अपनी आखे बद किये खामोश पडा रहा। उसे देखकर यही भ्रम होता कि वह सो गया है और नीद मे मुसकरा रहा है।

और इस प्रकार लेटे लेटे उसने एक वार्तालाप सुना, जिसे बाद मे वह अपने जीवन की कठिन घडियो मे अनेक बार स्मरण करता रहा।

"ओह, मगर तुम इस तरह व्यवहार क्यो करते हो? जब तुम्हे इतना दर्द सता रहा है, तब इस तरह तुम्हारा हसना और मजाक करना कितना भयानक है। तुम कैसी यत्रणा भोग रहे हो, यह देखकर मेरा दिल बैठ जाता है। तुम अलग वार्ड मे जाने से इनकार क्यो करते हो?"

ऐसा लगता था मानो यह उदार और सुन्दर, मगर ऊपर से राग-अनुराग-विहीन दिखाई देनेवाली नर्स क्लावदिया मिखाइलोव्ना नही, एक नारी बोल रही है—उत्तेजित और अप्रसन्न, उसके स्वर से वेदना अभिव्यक्त हो रही थी और शायद कोई और भाव भी। मेरेस्येव ने आख खोली। रात के लैम्प की रोशनी मे, जिसपर रूमाल पडा था, उसने तकिये की पृष्ठभूमि मे कमिसार का पीला और सूजा हुआ चेहरा और सुहृद चमकती हुई आखें, तथा नर्स की कोमल आकृति देखी। उसके सिर के पीछे पडती हुई रोशनी में उसके मुलायम और सुन्दर केश दैवी प्रभा के समान चमक रहे थे, और मेरेस्येव, यद्यपि यह समझता था कि इस प्रकार देखना उचित नही है, फिर भी वह अपनी आखे उधर से हटा न पाया।

"लो, देखो, नन्ही सिस्टर, इस तरह तुम्हे नही रोना चाहिए। क्या तुम्हे कुछ ब्रोमाइड पिलाया जाय?" कमिसार ने कहा, मानो वह किसी नन्ही लडकी से बाते कर रहा हो।

"देखो! तुम फिर मजाक करने लगे! कैसे भयानक जीव हो तुम! यह कितनी भयानक बात है, सचमुच कितनी भयानक बात है कि जब रोना चाहिए तो कोई हंसता हो, जब तुम्हारा अपना शरीर दर्द से फटा जा रहा है, तो तुम दूसरों को राहत देने की कोशिश करते हो। मेरे प्यारे, अच्छे से प्यारे जीव, तुम अब कभी—सुनते हो—तुम अब कभी इस तरह का व्यवहार करने की कोशिश न करना!"

उसने सिर झुका लिया और खामोशी के साथ रोती रही, और कमिसार उसके दुबले-पतले, सफेद पोशाक में सजे, कांपते हुए कंधों को अपनी वेदनापूर्ण सुहृद आंखों से निहारता रहा।

"अब तो वक्त निकल गया, वक्त निकल ही गया, मेरी प्राण-प्यारी," उसने कहा, "अपने व्यक्तिगत मामलों में तो मैं हमेशा निन्दनीय रूप से मौका खो देता रहा हूं। मैं हमेशा दूसरी बातों में व्यस्त रहा। और अब, मेरा ख्याल है, कि मेरे लिए वक्त बिल्कुल निकल गया है।"

कमिसार ने आह भरी। नर्स ने सिर उठाया और अश्रुमय, उत्सुक आशापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा। वह मुसकुराया, फिर उसने निःश्वास ली और सदा की भांति अपने उदार और किंचित विनोदपूर्ण स्वर में कहता गया

"नन्ही-मुन्नी चालाक छोकरी, अच्छा तो यह कहानी सुन ले। मुझे अभी याद आ गयी। यह घटना बहुत दिनों पहले, गृह-युद्ध के काल में, तुर्किस्तान में घटी थी। हां तो एक घुड़सवार टुकड़ी बस्माचियों का इतनी सरगर्मी के साथ पीछा करती गयी कि वह एक रेगिस्तान में पहुंच गयी जो इतना भयानक था कि घोड़े एक के बाद एक मरकर गिर गये। वे रूसी घोड़े थे और रेगिस्तान के अभ्यस्त न थे। इस तरह घुड़सवार सेना से हम लोग पैदल सेना बन गये। तब टुकड़ी के कमांडर ने यह फैसला लिया "सारा सामान छोड़ दो, और सिवाय अपने हथियारों

के, और कोई चीज पास मत रखो और किसी बडे नगर की ओर चल दो।" यह नगर एक सौ साठ किलोमीटर दूर था, और हमें नगी रेत पर चलकर जाना था। तुम उसकी कल्पना कर सकती हो, नन्ही लडकी? हम एक दिन चले, दो दिन चले, तीन दिन चले। धूप तप रही थी। पीने को कुछ न था। हमारे मुह इतने सूख गये थे कि चमडी फटने लगी थी, और हवा रेत से भरी थी, पैरो के नीचे रेत कुडकुडा रही थी, दातो के नीचे रेत किसकती, आखो मे भर जाती, गले मे उतर जाती, कितना भयानक था, तुम्हे क्या बताऊ! अगर कोई आदमी ठोकर खाकर गिर पडा तो वह औधे मुह रेत पर पडा रह जाता था और उठ नही पाता था। हमारा एक कमिसार था, उसका नाम था याकोव पावलोविच वोलोदिन। देखने से ही वह ढीला-ढाला बुद्धिजीवी मालूम होता था—वह इतिहासज्ञ था। लेकिन वह कट्टर वोल्शेविक था। उसे देखकर कोई यही ख्याल करता कि सबसे पहले वही गिर जायगा, मगर वह चलता रहा और दूसरो को भी उत्साहित करता रहा 'अब ज्यादा दूर नही चलना है। हम शीघ्र ही वहा पहुच जायगे,' वह बराबर यही दुहराता रहता, और अगर कोई व्यक्ति लेट जाता तो उसपर वह अपनी पिस्तौल तान देता और कहता 'उठ बैठो, वरना गोली मार दूगा।'

"चौथे दिन, जब हम नगर से सिर्फ पद्रह किलोमीटर दूर रह गये थे, सभी आदमी पूरी तरह चकनाचूर हो गये। हम इस तरह लडखडा उठे मानो पिये हुए हो और हम जो पदचिह्न छोडते जा रहे थे, वे इस तरह थे मानो किसी घायल जानवर के चिह्न हो। यकायक कमिसार ने एक गीत शुरू कर दिया। उसका स्वर बडा भोडा और बारीक था और गीत भी जो छेडा था, वह बेसिरपैर था—वह प्रयाण-गीत था जो पुरानी फौज में गाया जाता था 'चुबारिकी, चुबूचिकी', मगर हम सब सुर मिलाकर गाने लगे। मैंने हुक्म दिया 'पात बनाओ!'

और कदम मिलवाने लगा 'बाया! दाया! बाया! दाया!' और तुम्हे यकीन न होगा कि रास्ता आसान हो गया।

"इस गीत के बाद हमने दूसरा गीत गाया, और फिर तीसरा गीत गाया। तुम कल्पना कर सकती हो, नन्ही छोकरी? हम सूखे, चटखे हुए गलो से गा रहे थे और ऐसी आग-सी गर्मी में! हमें जितने भी गीत याद थे, सब गा डाले और अत में, रेगिस्तान मे एक भी आदमी छोडे बिना हम अपनी मजिल पर पहुच गये उसके बारे मे क्या ख्याल है तुम्हारा?"

"कमिसार का क्या हुआ?"

"उसका क्या होता? वह अभी भी जीवित है और सकुशल है। वह पुरातत्व शास्त्र का प्रोफेसर है। प्रागैतिहासिक बस्तियों को जमीन से खोद निकालता है। यह सच है कि उस अभियान के बाद वह अपनी आवाज खो बैठा। उसकी आवाज फट गयी है। लेकिन वह आवाज का क्या करेगा? अच्छा, आज की रात अब और कोई कहानी नही। जाओ, छोकरी, मै घुडसवार सैनिक की हैसियत से तुम्हे आश्वासन देता हू कि अब आज की रात मै नही मरूगा।"

आखिरकार मेरेस्येव गहरी नीद में सो गया और उसने स्वप्न में एक रेतीला रेगिस्तान देखा, जिसे उसने अपने जीवन में कभी न देखा था, उसने फटे हुए, खून से लथपथ होठो को गीतो की धारा उगलते देखा, उसने कमिसार वोलोदिन को देखा जो पता नही क्यो, स्वप्न में, कमिसार वोरोब्योव से मिलता-जुलता था।

वह देर से उठा, तब तक सूर्य की किरणें वार्ड के बीच अठखेलिया करने लगी थी, जिससे पता चलता था कि दोपहर हो गयी है, और वह अपने हृदय मे उल्लास का भाव सजोये उठा। स्वप्न? कौनसा स्वप्न? उसकी नजर उस पत्रिका पर पडी जिसे वह सोते समय अपने हाथो में जोर से जकडे हुए था, सिकुडे हुए पृष्ठ से लेफ्टीनेंट

कार्पोविच वही सयमित, किन्तु वीरतापूर्ण मुसकान बिखेर रहा था। मेरेस्येव ने पत्रिका को आहिस्ते से सीधा किया और लेफ्टीनेट की तरफ आख मार दी।

कमिसार हाथ-मुह धो चुका और वाल काढ चुका था और लेटे लेटे मुसकुराते हुए अलेक्सेई को निहार रहा था।

"उसकी तरफ तुम आख क्यो मार रहे हो?" उसने आनन्द अनुभव करते हुए पूछ डाला।

"हम फिर उडने जा रहे है," अलेक्सेई ने जवाब दिया।

"कैसे? उसने एक ही पैर गवाया था, मगर तुम तो दोनो गवा वैठे हो।"

"मगर मै हू सोवियत, रूसी!" अलेक्सेई ने जवाब दिया।

उसने ये शब्द इस अदाज और विश्वास के साथ कहे थे कि जैसे वह लेफ्टीनेंट कार्पोविच से भी एक वात में वाजी मार ले जायगा और दोनो पांवो विना उड सकेगा।

भोजन के समय वार्ड परिचारिका जो कुछ भी लायी थी, उसने सब खा डाला, साश्चर्य से अपनी खाली तश्तरी की तरफ देखने लगा और कुछ और माग वैठा। वह स्नायविक उत्तेजना की स्थिति मे था, वह गीत गा उठा, सीटी वजाने की कोशिश करने लगा, और जोर जोर से अपने आपसे वहस करने लगा। जब प्रोफेसर अपने नित्य के चक्कर पर आये तो उन्होने जो विशेष व्यवहार किया, उसका लाभ उठाकर, अलेक्सेई ने प्रश्नो की झडी लगा दी कि उसे अपने शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए क्या क्या करना चाहिए। प्रोफेसर ने जवाव दिया कि उसे अधिक खाना और अधिक सोना चाहिए। उसके वाद अलेक्सेई ने भोजन के दूसरे दौर में दो वार परोसने की माग की और अपने को चार कटलेट पूरे के पूरे खाने के लिए मजबूर किया।

सुखानुभूति मनुष्य को अहकारी वना देती है। प्रोफेसर पर प्रश्नो की झडी लगाने समय, अलेक्सेई वह वात न देख सका जिसकी तरफ

देखा, उसके लिए कोई दवा लिखी थी और सहायकों के साथ बाहर चले गये—उनके अनुचर भी उसी खामोशी और शिष्टता भाव से पीछे-पीछे चले गये। वे देहलीज पर जाकर ठोकर खा गये और अगर कोई उन्हें कुहनी के बल संभाल न लेता तो शायद वे गिर जाते। इस लम्बे, भारी-भरकम, रुक्ष-स्वर, प्रचण्ड व्यक्तित्व वाले के लिए इतना शान्त और विनम्र होना, बिल्कुल अस्वाभाविक मालूम होता था। वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी आश्चर्य भरी दृष्टि से उसे बाहर जाते देखते रहे। इस विशालकाय, दयालु-हृदय व्यक्ति को सभी लोग प्यार करने लगे थे और उसमें यह परिवर्तन देखकर सभी चिन्तित हो उठे।

अगले दिन सुबह उन्हें इसका कारण विदित हुआ। वसीली वसील्येविच के एकमात्र पुत्र, जिसका नाम भी वसीली वसील्येविच ही था और जो एक चिकित्सक और होनहार वैज्ञानिक था, अपने पिता के लिए गर्व और आनन्द का विषय था, पश्चिमी मोर्चे पर मारा गया था। सुनिश्चित समय पर सारा अस्पताल सांस रोककर यह देखने का इंतजार करने लगा कि प्रोफेसर वार्डों में नित्य की तरह चक्कर लगाने

श्रायेंगे या नही। वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी फर्श पर सूर्य की किरणो की मद मद लगभग निर्वोध गति को सूक्ष्मता से देख रहे थे। अत में वे वहा पहुच गयी, जहा फर्श की एक तख्ती गायब थी और वे सभी एक दूसरे को देखने लगे वे नही श्रायेंगे। लेकिन तभी गलियारे से सुपरिचित भारी पदचाप और अनेक अनुचरो की पग-ध्वनिया सुनाई देने लगी। प्रोफेसर आज कुछ बेहतर भी दिखाई दे रहे थे। यह सच था कि उनकी आखे सूजी हुई थीं और पलके तथा नाक फूली हुई थी, जैसा कि किसी को सख्त जुकाम हो जाने से हो जाता है, और उनके गुदाज, खुरखुरे हाथ भी उस समय साफ कापते हुए नजर आये जब उन्होने मेज से कमिसार का टेम्परेचर चार्ट उठाया, किन्तु वे सदा ही की तरह स्फूर्तिवान और नियमवद्ध रहे। फिर भी उनकी प्रचण्डता और डाट-फटकार आज गायब थी।

उस दिन सभी घायल और बीमार व्यक्ति उन्हे हर प्रकार से खुश करने के लिए एक दूसरे से होड कर रहे थे, मानो इस विषय मे उन्होने आपस मे कोई समझौता कर लिया हो। हर व्यक्ति उन्हे विश्वास दिलाने लगा कि आज वह बेहतर महसूस कर रहा है, सगीन हालतवाले लोग भी कोई शिकायत नही कर रहे थे, और सिद्ध कर रहे थे कि वे स्वास्थ्य-लाभ की ओर बढ रहे है। और हर व्यक्ति उत्साहपूर्वक अस्पताल के प्रबध की सराहना कर रहा था और यहा की विभिन्न चिकित्साओ के सुस्पष्ट चमत्कारपूर्ण प्रभाव को प्रमाणित कर रहा था। यह आम दु ख के सूत्र मे बधा हुआ एक मैत्रीपूर्ण परिवार लग रहा था।

वार्ड का चक्कर लगाते हुए वसीली वसील्येविच हैरान थे कि आज की सुबह उन्हे इतनी असाधारण सफलता क्यो प्राप्त हो रही है।

लेकिन वे क्या सचमुच हैरान थे? शायद इस मासूम और खामोश षड्यन्त्र का भेद वे समझ गये थे और अगर वे समझ भी गये होगे तो उन्हे जो ठेस पहुची थी, उसे बरदाश्त करना शायद उनके लिए आसान हो गया होगा।

६

पूरब की तरफ की खिडकी के बाहर पोपलर वृक्ष की शाखा में अब हल्के पीले रग की चिपचिपी पत्तिया निकल आयी थी, जिनके नीचे लाल, रोएदार फल मोटे मोटे कीडो की तरह दिखाई दे रहे थे। सुबह धूप मे पत्तिया चमकने लगी और ऐसी लगने लगी मानो तेल-सने कागज की बनी हो। वे नमकीन ताजगी की ऐसी तीखी और कडवी गध छोड रही थी कि वह गध रोशनदानो के खुले पलडो में से अन्दर घुस आयी और वार्ड में छायी हुई अस्पताली गध पर हावी हो गयी।

और गौरैयो की, जो स्तेपान इवानोविच की उदारता के कारण मोटी-ताजी हो गयी थी, उच्छृखलता का कोई ठिकाना न रहा। वसत आगमन के प्रमाण-स्वरूप, 'टामी-गनर' ने अपने लिए नयी पूछ प्राप्त कर ली थी और पहले से भी अधिक शोरगुल मचानेवाली और झगडालू हो गयी थी। प्रात काल खिडकी की देहरी के बाहर ये चिडिया ऐसी कोलाहलपूर्ण सभाए करती कि वार्ड परिचारिका, जो वार्ड साफ करने आती थी, उनके कारण धीरज खो बैठती थी, वह बडबडाती हुई खिडकी की देहरी पर चढ जाती और हाथ रोशनदान मे घुसेडकर अपने झाडन से उन्हे दुश-श कर देती।

मास्को नदी की बर्फ बह गयी थी। थोडे से तूफानी दौर के बाद, नदी शान्त हो गयी, अपने किनारो तक आ गयी और आज्ञाकारी की भाति उसने अपनी पीठ जहाजो, नौकाओ और नदीवाली ट्रामो को सौप दी, जिनसे उस सख्त जमाने में राजधानी के मोटर-यातायात की भयकर कमी पूरी होती थी। कुकूश्किन की निराशाजनक भविष्यवाणियो के बावजूद वार्ड नम्बर बयालीस का कोई भी व्यक्ति वसतकाल की बाढ में न "बह गया"। कमिसार के अतिरिक्त हर व्यक्ति स्वास्थ्य-लाभ की ओर अच्छी प्रगति कर रहा था, और अब वार्ड के अदर अधिकाश बातचीत अस्पताल मे छूटने के विषय पर ही होती रहती।

वार्ड को सबसे पहले छोडनेवाला था स्तेपान इवानोविच। वार्ड से मुक्त किये जाने के एक दिन पहले वह चिन्ता, आनन्द और उत्तेजना की मिश्रित भावनाओ के साथ अस्पताल का चक्कर लगाता रहा। वह एक क्षण भी शान्त न रह पाता। गलियारे के मरीजो से बात करने के बाद वह वार्ड मे लौट आया, खिडकी के पास बैठा रहा, रोटी तोडकर कुछ बनाने लगा, मगर यकायक फिर उछल पडा और वार्ड के बाहर चला गया। सिर्फ शाम को, जब झुटपुटा होने लगा, तो वह खिडकी की देहरी पर चढ गया और गहरे सोच-विचार में लीन-सा, बुदबुदाता रहा और सासें भरता रहा। यही वह घडी थी जब रोगी विभिन्न चिकित्साए लेते थे, और इस समय वहा सिर्फ दो मरीज और रह गये थे कमिसार, जो खामोशी के साथ स्तेपान इवानोविच को निहार रहा था और मेरेस्येव जो सोने की जबर्दस्त कोशिश कर रहा था।

शान्ति का राज्य था। यकायक कमिसार ने स्तेपान इवानोविच की ओर सिर घुमाया—जिसका छाया-चित्र डूबते हुए सूरज की आखिरी किरणो के प्रकाश में साफ उभर रहा था—और इतने मद स्वर मे बोला कि वह मुश्किल से ही सुनाई देता था.

"गाव मे अब गोधूलि बेला आ गयी है और शान्त, ओह, कितनी शान्त। गलती हुई बर्फ वाली धरती, नम खाद, लकडियो के धुए की गध। गाय खलिहान में होगी और पुआल की शैय्या रौद रही होगी, वह बेचैन होगी, क्योकि बच्चा जनने का वक्त आ गया है। बसत काल मैं हैरान हू कि औरते खेत में खाद बिछा पायी होगी या नही। और बीज का, और घोडो के साज-सामान का क्या हुआ होगा? इस मामले मे क्या सब कुछ ठीक हो गया होगा?"

मेरेस्येव को लगा कि स्तेपान इवानोविच ने मुसकुराते हुए कमिसार की तरफ जितने घबराकर देखा, उतने आश्चर्य से नही, और कह उठा

"अच्छा तो तुम भी दरख्वास्त दे दो मुझे डिसचार्ज मजूर किया जाय, क्योंकि मैं मोर्चे के पीछे औरतो का हाथ बटाना चाहता हू। जर्मनो से मेरी रक्षा दूसरे लोग करें," मेरेस्येव चारपाई से ही चिल्ला पडा क्योंकि वह अपने को न रोक पाया।

स्तेपान इवानोविच ने अपराधी जैसी दृष्टि से उसकी ओर देखा। कमिसार ने भौंहे सिकोड़ी और बोला

"मै तुम्हे क्या सलाह दे सकता हू, स्तेपान इवानोविच, तुम अपने दिल से पूछो। तुम्हारा दिल स्वर्ण है। जो सलाह तुम्हे चाहिए, वह तुम्हे उसी से प्राप्त हो जायगी।"

अगले दिन स्तेपान इवानोविच को अस्पताल से डिसचार्ज मिल गया। विदा लेने के लिए वह फौजी वर्दी पहनकर वार्ड मे आया। अपनी पुरानी, उडे रग की वर्दी पहने हुए, जो धुल-धुलकर सफेद हो गयी थी, कमर पर कसकर पेटी बाधे हुए और वर्दी को पीठ पर इतने बढिया ढग से खीचे हुए कि सामने एक भी सिकुडन न थी, वह नाटा व्यक्ति जितनी उम्र का था, उससे भी पन्द्रह वर्ष छोटा नजर आ रहा था। अपने वक्ष पर वह सोने का 'सोवियत सघ का वीर' का सितारा लगाये था, जिसपर इस कदर पालिश थी कि वह दमक रहा था, वह लेनिन पदक और 'वीरता के सम्मान' मे प्राप्त पदक भी लगाये हुए था। मरीज की पोशाक वह अपने कधे पर बरसाती की तरह डाले था, लेकिन उससे फौजी पदचिह्न ढक नही पाये थे। और वह सर्वांग रूप से, अपने पुराने फौजी बूटों की नोक से लेकर मोम लगी मूछो की नोकों तक, जो 'सूजे' की तरह ऐंठी हुई लहरा रही थी, उस बहादुर रूसी सिपाही की भांति लगता था, जिसकी तस्वीर १६१४ के युद्ध-कालीन क्रिसमस कार्डो पर बनी रहती थी।

यह सिपाही विदा लेने के लिए अपने वार्ड के साथियो में से प्रत्येक की चारपाई तक गया। वह उनके फौजी पदो से उन्हे पुकारता और इतनी फुर्ती से एडिया मारता कि उसकी ओर देखना भी आनन्द का विषय था।

वह जब आखिरी चारपाई के पास पहुंचा तो असाधारण नम्रता के साथ बोल उठा, "मुझे विदा दीजिए, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार।"

"अलविदा स्त्योपा। यात्रा सकुशल हो," कमिसार ने जवाब दिया और अपने दर्द को दबाते हुए सिपाही की ओर मुड़ा।

सिपाही घुटनों के बल बैठ गया और कमिसार का भारी-भरकम सिर अपने हाथों में लेकर, पुराने रूसी रिवाज के अनुसार उन्होंने एक दूसरे का तीन बार चुम्बन किया।

"अच्छे हो जाओ, सेम्योन वसील्येविच। भगवान तुम्हें स्वस्थ और दीर्घायु करे। तुम्हारा दिल सोना है, सोना। तुम हम सब के लिए पिता से भी अधिक रहे हो। मैं जब तक जिंदा रहूंगा, तुम्हें याद करूंगा," गहरे भावावेश में सिपाही बुदबुदाया।

"जाओ, अब जाओ, स्तेपान इवानोविच! उन्हें उत्तेजित नहीं होना चाहिए," क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने सिपाही की आस्तीनें खींचते हुए कहा।

"और नर्स, तुम्हारी कृपा और देखभाल के लिए तुम्हें धन्यवाद," स्तेपान इवानोविच ने नर्स की तरफ मुखातिब होकर अत्यन्त गम्भीर स्वर में कहा और सम्मानपूर्वक काफी झुककर प्रणाम किया। "तुम हमारी सोवियत अप्सरा हो, यही तो हो तुम।"

किंकर्त्तव्यविमूढता वश लजाते हुए, और अब क्या कहा जाय, यह न समझ पाते हुए, वह दरवाजे की ओर वापिस मुड़ गया।

"हम तुम्हें किस पते पर लिखें, साइबेरिया को?" कमिसार ने मुसकुराते हुए पूछा।

"क्यों पूछते हो, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार? तुम जानते ही हो कि मोर्चे पर जानेवाले सिपाही को कहां लिखा जाता है," स्तेपान इवानोविच ने कुछ हड़बड़ाकर कहा और एक बार फिर झुककर प्रणाम कर—इस बार सभी की ओर—वह दरवाजे से बाहर विलीन हो गया।

एक खामोशी छा गयी और वार्ड खाली मालूम होने लगा।
मे इन लोगो ने अपनी अपनी रेजीमेंटो के विषय मे, अपने साथि
के वारे मे, और मोर्चे पर जाकर उन्हे जिन वडी वडी कार्रवाइयो
भाग लेना है, उनके वारे मे वातचीत छेड दी। वे सभी अब अच्छे
जा रहे थे और इसलिए ये वाते अब महज सपना नही रह गयी
वल्कि असली असलियत वन गयी थी। कुकूश्किन अब गलियारो मे
फिर लेता था जहा वह नर्सों के काम में मीन-मेख निकालता, स्वास
लाभ करते जानेवाले अन्य रोगियो को चिढाता और अनेक के साथ झ
भी मोल ले वैठता था। टैंक-चालक भी चारपाई से निकलने लगा
और अक्सर गलियारे मे लगे शीशे के सामने खडे होकर वडी देर
अपने चेहरे, गर्दन और कधो की परीक्षा करता खडा रहता, जिन
से अब पट्टिया उतर गयी थी और घाव भर रहे थे। अन्यूता के स
उसका पत्र-व्यवहार जितना ही सजीव होता जाता और उ
विश्वविद्यालय सम्वन्धी मामलो से वह जितना ही सर्वांग रूप मे परि
होता जाता, उतनी ही सूक्ष्मता से वह अपने जले हुए और विकृत चे
की परीक्षा करता। झुटपुटे मे अथवा वार्ड की कम रोशनी मे वह इत
वुरा न मालूम होता, वास्तव में अच्छा ही लगता था नखशिख सु
था–ऊचा मस्तक और छोटी-सी सीधी नाक, छोटी-सी काली मूछे
अस्पताल में उग आयी थी और ताजगी तथा यौवन से पूर्ण दृढ हो
किन्तु उज्ज्वल प्रकाश मे यह दिखाई देने लगता था कि उसके चेहरे
घावो के चिह्न है जिनके आसपास चमडी सख्ती से तनी हुई है।
कभी वह उत्तेजित हो उठता या स्नान-चिकित्सा से ताजा होकर लौट
तो ये चिह्न उसकी आकृति को भयावना बना देते और इन क्षणो मे
शीशे के सामने जब अपनी परीक्षा करता तो उसे रोना आ जाता।
सान्त्वना देने का प्रयत्न करते हुए मेरेस्येव ने कहा

"क्या वावले हो रहे हो? तुम्हे कोई फिल्म अभिनेता तो वन

नही, कि बनना है? अगर तुम्हारी वह सच्ची सच्ची होगी, तो उसके लिए कोई फर्क नही पडेगा। और फर्क पडता है, तो इसका मतलब है कि वह मूर्ख है। ऐसी सूरत मे, उसपर लानत भेजो। उससे छुटकारा भला। तुम्हे कोई दूसरी अच्छी मिल जायगी।"

"सब औरतें एक-सी होती है," कुकुश्किन बीच मे बोल पडा।

"आपकी मा कैसी है?" कमिसार ने पूछा। उसने "तुम" के बजाय "आप" का सम्बोधन किया। वार्ड मे कुकुश्किन ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसको वह इतने तकल्लुफवाला ढग से सम्बोधित करता था।

इस शान्त प्रश्न से लेफ्टीनेंट पर क्या प्रभाव पडा, यह वर्णन करना कठिन है। वह चारपाई पर उछल पडा, उसकी आखे भयानक रूप से चमक उठी और उसका चेहरा चादर से भी अधिक सफेद पड गया।

"अब आप माने! तो आप देख लीजिए कि दुनिया में कुछ अच्छी औरतें भी है," कमिसार ने समझाने के स्वर में कहा। "आप क्यो समझते है कि ग्रीशा भाग्यशाली नही है? जिन खोजा तिन पाइया जिदगी मे यही होता है।"

सक्षेप में सारा वार्ड पुन प्रफुल्ल हो उठा। कमिसार ही एक व्यक्ति था जिसकी हालत बिगडती जा रही थी। उसे मार्फिया और कैम्फर से जिदा रखा जा रहा था और कभी कभी इसके फलस्वरूप वह सारे दिन दवा के आधे नशे मे चारपाई पर बेचैनी के साथ लुटकता रहता। स्तेपान इवानोविच के चले जाने के बाद तो वह और भी तेजी से डूबता नजर आने लगा। मेरेस्येव ने अनुरोध किया कि उसकी चारपाई कमिसार के और निकट सरका दी जाय ताकि आवश्यकता पडने पर वह उसकी सहायता कर सके। इस व्यक्ति की ओर वह अधिकाधिक आकर्षित होता महसूस कर रहा था।

अलेक्सेई जानता था कि पैरो के बिना उसका जीवन अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक कठिन और जटिल होगा, और इसलिए वह

अन्तर्प्रेर्णावश इस व्यक्ति की ओर आकृष्ट हो गया था जो हर बात के बावजूद असली जिदगी जीना जानता था और जो अपनी रुग्णावस्था के बावजूद लोगो को चुम्बक की तरह आकर्षित कर लेता था। कमिसार अब शायद कभी ही अपनी अर्धचेतन अवस्था से उभर पाता था, मगर जब उसे बिल्कुल होश आ जाता तो वह फिर हमेशा की तरह हो जाता था।

एक बार, काफी शाम गये, जब अस्पताल का कोलाहल शान्त हो गया और खामोशी का साम्राज्य सिर्फ वार्डो से आनेवाले हल्के-से, कठिनाई ही से कर्णगोचर खर्राटो, कराहो और सन्निपात के प्रलापो से कभी कभी भग हो जाता था, तब गलियारे मे सुपरिचित कदमो की जोरदार और भारी आहट सुनाई दी। दरवाजे के काच के शीशो से मेरेस्येव हल्की-सी रोशनी से आलोकित पूरे गलियारे की लम्बाई देख सकता था, जिसके अत मे एक मेज के सामने न जाने कब से जम्पर बनाती हुई एक नर्स बैठी थी। गलियारे के छोर पर वसीली वसील्येविच की लम्बी आकृति दिखाई दी – हाथ पीछे बाधे धीमे-धीमे चलते हुए। उनके आते ही नर्स उछल पडी, मगर उन्होने अप्रसन्नता का भाव प्रगट कर उसे एक तरफ हो जाने का इशारा किया। उनकी पोशाक के बटन खुले हुए थे, सिर नगा था और उनके मोटे, सफेद बालो की कुछ लटे भौहो पर लटक आयी थी।

"वास्या आ रहा है," मेरेस्येव कमिसार की ओर फुसफुसाया, जिसे वह कृत्रिम पैरो की विशेष नवीनतम डिजायन के बारे मे बता रहा था।

वसीली वसील्येविच रुक गये, मानो राह मे कोई रुकावट आ गयी हो। उन्होने अपने को दीवाल का सहारा दिया, कुछ बडबडाये और फिर दीवाल से अलग हो गये और वार्ड नम्बर बयालीस मे प्रवेश किया। वे अपना माथा रगडते हुए कमरे के मध्य मे रुक गये, मानो कोई बात

वह यहा मेरे साथ रह सकता था और हम दोनो मिलकर देश के लिए उपयोगी कार्य करते होते। उसमें वास्तविक प्रतिभा थी–स्फूर्तिवान, साहसी, बुद्धिमान था। वह सोवियत चिकित्सा क्षेत्र का गौरव बन सकता था–अगर उस दिन मैंने टेलीफोन कर दिया होता!"

"क्या आपको अफसोस है कि आपने टेलीफोन नही किया?"

"क्या कहते हो? आह, हा मैं नही जानता। मैं नही जानता।"

"मान लो आज फिर ऐसी परिस्थिति पैदा हो तो क्या आप पहले से भिन्न कार्य करेंगे?"

खामोशी छा गयी। रोगियो की नियमित सासे सुनाई दे रही थी। चारपाई बडे ताल के साथ चरमरा उठी–स्पष्ट था कि प्रोफेसर, गहन चिन्तन में लीन होकर अपने शरीर को इधर-उधर हिला-डुला रहे थे–और भाप की नलियो मे पानी खट-खट बोल रहा था।

"फिर?" कमिसार ने ऐसे स्वर मे पूछा कि जिसमे गहरी सहानुभूति और सद्भावना गूज उठी।

"मैं नही जानता तुम्हारे सवाल का कोई तैयार शुदा जवाब नही हो सकता। मै नही जानता। मेरा ख्याल है कि फिर वही बात दोहरायी जायगी, मैं फिर उसी ढग से व्यवहार करूगा। मैं दूसरे पिताओ से किसी तरह बेहतर नही हू, तो बुरा भी नही हू युद्ध कितनी भयावनी चीज है "

"और यकीन मानिये कि ऐसे भयानक समाचार को बर्दाश्त करना दूसरे पिताओ के लिए भी इतना ही आसान नही है जितना कि आपके लिए। तनिक भी आसान नही।"

वसीली वसील्येविच बडी देर तक खामोश बैठे रहे। वे क्या सोच रहे थे, मद गति से बीतती चली जानेवाली उन घडियो में उनके ऊचे झुर्रीदार मस्तक के पीछे कौनसे विचार चक्कर काट रहे थे? अत में वे बोले

"हा, तुम ठीक कहते हो। उसके लिए भी वह कोई आसान न था, फिर भी उसने दूसरे बेटे को भेज दिया . धन्यवाद, प्यारे दोस्त, धन्यवाद, भाई! अफ्ख! हमें इसे वर्दाश्त करना ही होगा. "

वह चारपाई से उठ बैठे, आहिस्ते से उन्होंने कमिसार का हाथ कम्बल के नीचे रख दिया, उसके कधो तक कम्बल खीच दिया और खामोशी के साथ कमरे से बाहर हो गये।

बहुत रात बीते कमिसार को बुरी तरह दौरा आया। अचेत अवस्था मे, वह बिस्तर पर लुढकने लगा—दात पीसते हुए और जोर से कराहते हुए। यकायक वह खामोश पड जाता और लम्बा लेटा रह जाता, और हर आदमी यह समझता कि अतकाल निकट आ गया है। उसकी हालत इतनी खराब थी कि वसीली वसील्येविच ने—जो अपने बेटे के मारे जाने के बाद, अपने बडे भारी, खाली निवास-स्थान से हटकर अस्पताल के छोटे कमरे मे आ गये थे, जहा वे मोमजामे से मढे कोच पर सोया करते थे—यह हुक्म दे दिया कि कमिसार की चारपाई के चारो ओर परदा लगा दिया जाय, जो—जैसा कि सभी जानते है—इस बात का चिह्न था कि रोगी के 'वार्ड नम्बर पचास' मे भेजे जाने की सम्भावना है।

कैम्फर और ऑक्सीजन की सहायता से उन्होने उसकी नब्ज फिर चालू कर दी और रात्रिकालीन सर्जन और वसीली वसील्येविच, शेष रात मे जितना भी सम्भव हो सके, उतनी नीद लेने चले गये। क्लावदिया मिखाइलोव्ना, आसू-सना और चिन्तित चेहरा लिये, पर्दे के अदर रोगी की शैय्या के पास बैठी रह गयी। मेरेस्येव न सो सका, बल्कि आतक भाव से सोचता रहा "क्या अत आ गया है?" स्पष्ट ही कमिसार अभी भी बडा पीडाग्रस्त था। सन्निपात की अवस्था मे वह लुढकता रहा और कोई शब्द दोहराता रहा जो मेरेस्येव को "दे दो," "दे दो," "मुझे दे दो " जैसा लगता रहा।

क्लावदिया मिखाइलोव्ना, यह सोचकर कि रोगी प्यासा है, पर्दे के बाहर आयी और कापते हुए हाथो से एक गिलास मे पानी डाल ले गयी।

लेकिन रोगी को प्यास नही थी। गिलास उसके भिंचे हुए दांतो से टन-टन कर उठा और पानी तकिये पर बिखर गया; मगर वह फिर भी, कभी आदेशात्मक स्वर मे और कभी प्रार्थना के स्वर मे वही शब्द दोहराता रहा जो "दे दो" जैसा मालूम होता था। यकायक मेरेस्येव को अहसास हुआ, यह शब्द "दे दो" नहीं, "जीने दो" है, और यह महामानव अपनी अवशिष्ट शक्ति के एक एक कण से मृत्यु को दूर रखने का प्रयत्न कर रहा है।

थोडी देर बाद कमिसार शान्त हो गया और उसने अपनी आखें खोल दी।

"शुक्र है खुदा का!" राहत से क्लावदिया मिखाइलोव्ना बुदबुदायी और पर्दे की तह करने लगी।

"मत करो! रहने दो!" कमिसार ने विरोध किया। "इसे मत हटाओ, नर्स प्रिये। इस तरह बडा आराम मिलता है। और रोना बद करो, वैसे ही दुनिया में कच्चापन बहुत ज्यादा है तुम रो क्यों रही हो, मेरी सोवियत अप्सरा? तरस आता है कि हमें अप्सराए तुम जैसी अप्सराए भी, तभी मिलती है जब हम उस जगह की दहलीज पर पहुच जाते है।"

१०

अलेक्सेई की मानसिक अवस्था अत्यन्त विचित्र थी।

जिस क्षण से उसे यह विश्वास हो गया कि अभ्यास के द्वारा, पाव बिना भी, हवाई जहाज उडाना सीख लेना सम्भव है, और वह फिर विमान-चालक बन सकता है, तभी से उसके ऊपर जीवन और सक्रियता की उत्कट आकाक्षा सवार हो गयी।

अब उसके जीवन का एक उद्देश्य था : फिर से लड़ाकू विमान को चला पाना और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वह उसी अगम दृढ़ता से जुट गया जिससे वह पैर खो देने के बाद अपने ही लोगों को प्राप्त करने के लिए सारी [illegible] के बल रेंगता रहा था। बाल्यकाल से ही आगे की ओर देखने का अभ्यासी होने के कारण, उसने सुनिश्चित रूप से, सबसे पहले यह निर्धारित किया कि अमूल्य समय बरबाद किये बिना, यथासम्भव कम से कम दिनों में वह अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त कर सकता है। और इसलिए उसने निश्चय किया कि, प्रथमत:, उसे शीघ्र ही अच्छे हो जाना चाहिए, स्वास्थ्य-लाभ कर लेना चाहिए और वह शक्ति प्राप्त कर लेना चाहिए जो भूखे रहने के कारण वह खो बैठा था, और इसलिए उसे और अधिक खाना तथा और अधिक सोना चाहिए। दूसरे, उसे विमान-चालक के लड़ाकू गुण पुन प्राप्त कर लेने चाहिए और इसलिए चारपाई से लगा व्यक्ति जितनी जिमनास्टिक कसरते करने के योग्य होता है, उन सबके द्वारा अपने को शारीरिक रूप से विकसित करना चाहिए। तीसरे—और यही सबसे अधिक महत्वपूर्ण और कठिन था—उसे अपनी टागो को, पावो और पिंडलियो के एक हिस्से के बिना ही, उतना विकसित कर लेना चाहिए ताकि उनकी शक्ति और लोच सुरक्षित रहे, और बाद में, जब उसके कृत्रिम अवयव लग जाय, तो उनसे वह सभी काम करना सीख ले जो हवाई जहाज चलाने के लिए आवश्यक होते हैं।

बिना पाव आदमी के लिए चलना-फिरना भी कठिन होता है। फिर भी मेरेस्येव हवाई जहाज चलाने का और वह भी लडाकू विमान चलाने का इरादा कर रहा था। लडाकू विमान चलाने के लिए और वह भी आकाश-युद्ध की कौंध मे, जब हर बात का हिसाब एक सेकड के भी हिस्से करके लगाया जाता है और सारी गति का अत्यत तीव्र और सहज होना आवश्यक होता है, तब पैरो को कार्य-सचालन में इतना सूक्ष्म,

इतना कुशल और सबसे बड़ी बात यह कि इतना वेगवान होना चाहिए जितना कि हाथ होते है। उसे अपने को इस हद तक अभ्यासी बनाना होगा कि उसकी टागो के ठूठ से जुड़ी लकड़ी और चमड़ा, इस प्रकार क्रियाशील हो, मानो वे शरीर के सजीव अग हो।

उड़ान की कला से परिचित व्यक्ति को यह बात असम्भव मालूम होगी, मगर अलेक्सेई को अब विश्वास हो गया था कि यह बात मानवीय रूप से सम्भव है और ऐसी स्थिति मे, वह इस कार्य में निस्सदेह सफल होगा। और इसलिए वह अपनी योजना पूरी करने मे जुट गया। वह अपने लिए निर्धारित सभी इलाजो और दवाओ को इतनी नियमबद्धता से ग्रहण करता कि इसपर उसे स्वय ही आश्चर्य होने लगा था। वह खूब खाता और विशेष भूख न भी मालूम होती तब भी दूसरी बार परोसने की माग करता। चाहे कोई भी सूरत पैदा हो जाय, वह अपने को निर्धारित घटो तक सोने के लिए मजबूर करता और भोजन के बाद थोड़ी देर ऊघ लेने तक के लिए उसने अपने को अभ्यस्त बना डाला, हालाकि उस जैसे क्रियाशील और स्फूर्तिवान प्रकृति के व्यक्ति के लिए यह घृणास्पद था।

अपने को खाने, सोने और दवा पीने के लिए मजबूर करना उसके लिए कठिन नही था। मगर जिमनास्टिक की बात और ही थी। उसने पहले कभी नियमपूर्वक जो कसरते की थी, वे एक पैर-विहीन, चारपाई से लगे व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त थी। इसलिए उसने नयी कसरतो का आविष्कार किया वह घटो तक कमर पर हाथ रखकर अपने शरीर को आगे, पीछे और अगल-बगल, दाये से बाये और बाये से दाये झुकाता रहता और वह अपने सिर को इधर-उधर इतनी तेजी और फुर्ती से घुमाता कि रीढ की हड्डी तड़कने लगती। वार्ड के साथी इन कसरतो के बारे में उसके साथ मजाक करते और कुकूश्किन उसे व्यग्यपूर्वक बधाई देता और उसे ज्नामेन्स्की बन्धुओ, लेदोमेग या अन्य सुप्रसिद्ध दौड़बाजो

के नाम से पुकारता। कुकूश्किन को इस कसरतो से नफरत थी और वह इन्हे भी महज अस्पताली सनको मे से एक समझता था। अलेक्सेई जैसे ही अपनी कसरते शुरू करता, वह भन्नाता और बडबडाता गलियारे की राह लेता।

जब उसकी टागो की पट्टिया हटा दी गयी और वह अपने बिस्तरे पर तनिक और आजादी के साथ हिलने-डुलने के योग्य हो गया तो अलेक्सेई ने एक और कसरत शुरू कर दी। चारपाई के पावदान की तरफ लगे सीखचे मे वह अपनी टाग का ठूठ फसा लेता, कमर पर हाथ रख लेता और अपने शरीर को आगे की ओर जहा तक सम्भव होता झुकाता चला जाता और फिर पीछे की ओर झुकाता। हर रोज वह झुकने की गति कम करता जाता और सख्या बढाता जाता। तभी उसने अपने पैरो के लिए कुछ कसरते निकाल ली। वह पीठ के बल लेट जाता और बारी बारी से पैर मोडकर घुटने को वक्ष की ओर समेट लेता और फिर पैर को आगे फेक देता। जब उसने पहली बार यह कसरत की, तो वह समझ गया कि आगे उसे कितनी भारी और शायद असाध्य कठिनाइयो का सामना करना पडेगा। टागो को समेटने मे—जिनसे पिडुलियो तक पाव काटकर अलग कर दिये गये थे—उसे सख्त दर्द होता था। सारी चेष्टाओ मे हिचकिचाहट और अनियमितता थी। उनका हिसाब लगाना उतना ही कठिन था जितना क्षत-विक्षत पख या पूछ का हवाई जहाज चलाना। मानसिक रूप से अपनी तुलना वायुयान से करने पर अलेक्सेई यह देखता कि अगर किसी कारण शरीर का आदर्श सतुलन गडबड हो जाय तो फिर चाहे उसका शरीर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहे, मनुष्य अपने विभिन्न भागो का वह तारतम्य कभी स्थापित नही कर सकता जिसका अभ्यास उसे बचपन से हो जाता है।

टागो की कसरतो से मेरेस्येव को सख्त दर्द होता, लेकिन हर दिन वह पिछले दिन के मुकाबले एक मिनट अधिक कर लेता। वे क्षण

जब उसकी आखो में अनामंत्रित आसू भर आते और अनिच्छित कराह को दबाने के लिए वह होठो को दातो से इतने कसकर दबा लेता कि खून बहने लगता, बडे भयकर क्षण होते। लेकिन वह अपने को ये कसरते करने के लिए विवश करता रहा—पहले दिन मे एक बार और बाद में दिन मे दो बार। हर पारी के बाद वह असहाय-सा तकियें पर लुढक जाता और हैरान रह जाता कि दोबारा वह इन्हे फिर कर सकेगा या नही। लेकिन जब निश्चित घडी आ जाती तो वह फिर इसी क्रिया में जुट जाता। शाम को वह अपनी जाघो की मासपेशियो को छूकर देखता और उसे सतोष होता कि कसरते शुरू करने के वक्त उसे अपने हाथो के स्पर्श से वे जितने फुसफुसे मास की और मोटी मालूम हुई थी, वैसे अब नही है, बल्कि उस तरह की सुदृढ मासपेशिया बन गयी हैं जैसी कि कभी थी।

मेरेस्येव के सारे विचार उसके पैरो पर केन्द्रित रहते थे। कभी कभी जब विचारो में खो जाता तो उसे पैरो मे दर्द महसूस होता और जब वह अपनी टागो की स्थिति बदलता तभी उसे याद पडता कि उसके पाव तो अब है ही नही। बहुत दिनो तक, किसी स्नायुगत दोष के कारण कटे हुए पैर शरीर के साथ सजीव सम्बन्ध बनाये रहे, यकायक उनमें टीस उठने लगती, नम मौसम मे दर्द होने लगता और कभी कभी दुखने तक लगते। अपने पैरो की तरफ उसका दिमाग इतना लगा रहता था कि कभी कभी वह नीद में अपने को बिल्कुल हृष्ट-पुष्ट और चलने-फिरने में स्फूर्तिवान पाता। वह सपना देखता कि "अलर्ट" बज गया है और वह अपने हवाई जहाज की ओर दौड गया है, उसके पख पर उछलकर चढ गया है, कॉकपिट मे गद्दी पर बैठ गया है और उधर यूरा इजिन मे हुड हटा रहा है और वह स्वय पैडलो पर पाव जमा रहा है। कभी वह और ओल्या, हाथ में हाथ लिये, फूलो से भरे स्तेपी मैदान में, गर्म और नम भूमि के सुहावने स्पर्श का आनन्द लूटते हुए अपनी

पूरी शक्ति से नगे पैर भागते नजर आते। वह कितना भला लगता। लेकिन जाग पडता और देखता कि अब उसके पैर नही है। कितना निराशाजनक होता था।

ऐसे स्वप्नो के बाद अलेक्सेई कभी कभी मायूस हो जाता। वह सोचने लगता कि वह व्यर्थ ही अपने शरीर को यत्रणा दे रहा है, अब वह कभी न उड पायेगा और न अब स्तेपी के मैदानो में वह नगे पाव दौड सकेगा कमीशिन की उस प्यारी प्यारी लडकी के साथ, जो उसे उतनी ही अधिक प्रिय और उतनी ही अधिक मनोवाछित होती जा रही है जितना ही अधिक काल-चक्र उन्हे एक दूसरे से दूर रख रहा है।

ओल्या के साथ अपने सम्बन्धो का स्मरण कर अलेक्सेई को सुख न अनुभव होता। लगभग हर सप्ताह उसे क्लावदिया मिखाइलोव्ना "नृत्य" करने के लिए यानी चारपाई पर पडे पडे ही अपने ही शरीर को झटका देने और ताली बजाने के लिए मजबूर करती ताकि उसे वह पत्र दिया जा सके जिसपर उसी सुपरिचित गोल-गोल, स्वच्छ, स्कूली लडकी जैसी लिखावट मे पता लिखा होता था। ये पत्र अधिकाधिक लम्बे और प्यारे होने लगे थे, मानो लडकी का युवा प्रेम, जिसमें युद्ध से बाधा पड गयी थी, अधिकाधिक परिपक्व होता जा रहा था। वह उन पक्तियो को बडी विरहातुरता और उद्विग्नता के साथ पढता, क्योकि वह समझता था कि उसे उनका उसी प्रकार प्रत्युत्तर देने का कोई अधिकार नही है।

लकडी के कारखाने के प्रशिक्षण विद्यालय मे जिन सहपाठियो ने साथ साथ पढा था और रोमानी भावनाओ को सजोया था, जिसको उन्होने, बडो की नकल उतारकर, प्रेम कह डाला था, वे सहपाठी बाद में छै-सात साल के लिए बिछुड गये। पहले तो लड़की टेक्निकल स्कूल में पढने चली गयी। जब वह लौटी और कारखाने में मेकेनिक की हैसियत से काम करने लगी, तब तक अलेक्सेई कस्बा छोड चुका था

और उड्डयन विद्यालय मे अध्ययन करने लगा था। वे फिर मिले युद्ध छिडने के ठीक पहले। इस मिलन की आकाक्षा उन दोनो में किसी ने न की थी और शायद वे एक दूसरे को भूल भी चुके थे—उनके विछोह के बाद न जाने कितना पानी बह चुका था। लेकिन एक वसती शाम अलेक्सेई अपनी मा के साथ कही जा रहा था, तभी उलटी दिशा से कोई लडकी आयी। उसने उस लडकी की ओर कोई ध्यान नही दिया, सिर्फ यह देख पाया कि उसकी टागें सुडौल थी।

"उस लडकी को तुमने अभिवादन क्यो नही किया? वह ओल्या थी!" उसकी मा ने उसे झिडक दिया और लडकी का कुलनाम बताया।

अलेक्सेई ने मुडकर देखा। लडकी भी पीछे देखने के लिए घूम गयी थी। उनकी आखे मिली और अलेक्सेई को लगा कि उसका हृदय उछलने लगा है। मा को छोडकर वह उस लडकी की ओर दौडा जो एक नगे पोपलर वृक्ष के तले रुक गयी थी।

"तुम?" उसने आश्चर्य से सबोधन किया और उस लडकी की ओर इस भाति देखने लगा कि मानो यह अनूठा और सुन्दर जीव समुद्रपार से आया है, और किसी विचित्र सयोग से इस वसती शाम को शान्त और कीचड भरी सडक पर निकल आया हो।

"अल्योशा?" लडकी ने भी उसी विस्मय और अविश्वास के स्वर में सम्बोधित किया।

छै या सात साल के विछोह के बाद वे पहली बार एक दूसरे को निहारते रहे। अलेक्सेई ने अपनी आखो के सामने सूक्ष्माकार लडकी को देखा—सुन्दर, गोल, लडको जैसा चेहरा, लावण्यमयी और कोमल आकृति, नाक के ऊपर कुछ सुनहरी झाइया। उस लडकी ने उसकी ओर अपनी बडी-बडी, भूरी, दमकती हुई आखो से, हल्की रेखाकित भौहो को किंचित उठाकर देखा जिनकी कोरे कुछ घनी थी। प्रशिक्षण विद्यालय में जब वे आखिरी बार मिले थे, तब वह जैसी थी—हृष्ट-पुष्ट, गोल

चेहरा, गुलावी कपोल, किंचित झगडालू बालिका, जो अपने पिता की चिकनी जाकेट पहने और उसकी बाहे उलटाये हुए गर्व से चलती थी— उस वालिका के चिह्न इस नवयौवना, लावण्यमयी लडकी मे बहुत कम थे।

मा की सुधि भूलकर अलेक्सेई इस लडकी को निहारता खडा रहा और उसे ऐसा लगा कि इन वर्षो मे कभी भी वह इसे भुला नही पाया है और इस मिलन का स्वप्न देखता रहा है।

"अच्छा तो तुम अब ऐसी लगने लगी हो!" आखिरकार वह वोल पडा।

"कैसी?" उसने गूजते हुए आकण्ठ स्वर मे पूछा और यह स्वर भी उससे विल्कुल भिन्न था जो उसने तव सुना था, जब वे स्कूल मे साथ साथ थे।

गली के कोने से हवा का एक झोका आया और पोपलर की नगी शाखाओ से गुजरकर सीटी बजा उठा। लडकी के सुगठित पैरो से लिपटता-फडफडाता उसका फ्राक उडने लगा। हसी की लहरियो की गूज के साथ वह झुकी और वडी सहज और स्वभावत: सौन्दर्यपूर्ण गति से उसने अपना फ्राक सभाल लिया।

"वस उसी तरह!" अलेक्सेई ने जवाब दिया और वह प्रशसा के भाव को अव छिपाये न रह सका।

"तो किस तरह?" लडकी ने फिर हसते हुए पूछा।

मा ने एक क्षण दोनो जवान व्यक्तियो की ओर देखा, किंचित दुखित भाव से मुसकुरायी और अपनी राह चली गयी। लेकिन वे एक दूसरे को सराहते हुए खडे रहे, उत्साहपूर्वक वाते करते रहे—वे एक दूसरे की बात काट देते और वार्तालाप मे इस तरह के विस्मयो की भरमार कर रहे थे जैसे "तुम्हे याद है?", "तुम्हे पता है?", "कहा है वह?", "क्या हो गया है उस... को?"

वे बडी देर तक इसी प्रकार बातचीत करते रहे थे—अंत में ओल्या ने पडोस के मकानों की खिडकियों की तरफ इशारा किया जहा जिरेनियम के गमलों और देवदारों की शाखाओं के पीछे से उत्सुक चेहरे झाकते नजर आ रहे थे।

"अगर तुम्हारे पास वक्त हो तो चलो वोल्गा की तरफ चलें," ओल्या ने सुझाव दिया, और एक दूसरे का हाथ पकडे हुए—जो बात उन्होंने कभी बचपन तक में नही की थी—और गुन-गुन झूलते हुए, वे उस ऊची पहाडी पर चढ गये जो नदी के किनारे सीधी खडी थी और जहा से वोल्गा के विस्तृत प्रसार और उसकी धार पर तैरते हुए हिम-खण्डो के शानदार जलूस का मनोहर दृश्य दिखाई देता था।

इसके बाद से मा को घर पर अपना प्यारा बेटा बहुत ही कम दिखाई देने लगा। कपडो की अधिक परवाह न करनेवाला अर्नेस्गेई अब अपने पतलूनो पर रोज लोहा करता; खडिया से अपनी वर्दी के बटन साफ करता, वायुसेना के बैज से विभूषित सफेद टोपी पहनता जिसे अक्सर परेड पर ही पहना जाता है, रोज ही दाढी बनाता और शाम को शीशे के सामने कुछ देर आडे-तिरछे, अगल-बगल देखकर ओल्या से मिलने चला जाता जो उस समय कारखाने से घर लौटती होती। दिन में भी वह जब-तब गायब हो जाता, खोया खोया-सा रहता और पूछे गये सवालों का ऊटपटाग जवाब दे बैठता। मा की ममता ने उसे बता दिया कि लडके को क्या हो गया है, और इसलिए सद्भावनापूर्वक उसने अपनी उपेक्षा किये जाने को माफ कर दिया और अपने को उस उक्ति से सान्त्वना दे दी बूढे तो और बूढे होते ही जाते है, जवानो को बढने देना चाहिए।

इन युवा व्यक्तियो ने आपस में एक बार भी अपने प्यार की चर्चा नही की थी। हर बार जब साझ की किरणो से जगमगाती, मदगामी वोल्गा के ऊचे किनारो से सैर करके वह घर लौटता

या कस्बे के बाहर स्थित तरबूजो के खेतो से लौटता, जहा कोलतार की तरह काली और घनी धरती पर मोटी मोटी लताए और मकडी के पैरो के आकार की गहरी हरी पत्तिया पडी हुई थी, तो वह तेजी से खत्म होती हुई छुट्टियो के बाकी दिनो को गिनता और ओल्या के सामने हृदय खोलकर रख देने का निश्चय करता। लेकिन शाम फिर आती। वह कारखाने के दरवाजे पर उससे मिलता और उसके साथ लकडी के छोटे-से दुमजिले मकान तक जाता जहा उसका एक छोटा-सा कमरा था इतना स्वच्छ और निर्मल जैसे हवाई जहाज का केबिन होता है। उधर जब कपडे की अलमारी के खुले किवाड की आड में छिपी वह कपडे बदलती, तो वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता और उसकी नगी कुहनियो, कंधो और पैरो की तरफ से, जो किवाड के पीछे से झाक उठते थे, अपनी आखे दूर रखने की कोशिश करता। फिर वह हाथ-मुह धोने चली जाती और वही सफेद सिल्क का ब्लाउज पहने, जिसे वह छुट्टी के दिन पहनती थी, वह ताजगी, गुलाबी कपोल और गीले केश लिये वापिस लौट आती।

और फिर वे सिनेमा, सर्कस या पार्क की सैर के लिए चले जाते। वे कहा जाते है, इससे अलेक्सेई के लिए कोई अतर नही पडता था। वह सिनेमा के पर्दे को, सर्कस के क्रीडा-क्षेत्र को या इधर-उधर घूमते हुए लोगो को न देख पाता, वह सिर्फ उसी की तरफ निहारता और उसी की ओर देखता हुआ सोचता रह जाता "बस, आज की रात घर की तरफ लौटते समय राह में ही मुझे प्रस्ताव रख देना चाहिए।" लेकिन राह भी खत्म हो जाती और वह साहस न जुटा पाता।

एक रविवार की सुबह वे वोल्गा के दूसरे किनारे के उपवन में सैर करने के लिए निकले। वह जब उसके घर उसे लेने गया तो वह अपनी दूध जैसी सफेद पतलून और खुले कालर की कमीज पहने था, जो उसकी मा के कथनानुसार उसके ताम्रवर्ण, चौडे चेहरे के साथ खूब फबती थी। जब वह पहुचा तो ओल्या तैयार थी। उसने एक रूमाल में लिपटा

पार्सल अलेक्सेई को थमा दिया और वे दोनो नदी की ओर चल दिये। बूढे, पैर-विहीन मल्लाह ने—पहले विश्व-युद्ध का पगु वीर, अडोस-पडोस के बच्चो का परमप्रिय और जिसने अलेक्सेई को बचपन में सिखाया था कि रेतीले किनारे पर मछली कैसे पकडी जाती है—लकडी के ठूठो के बल फुदकते हुए, भारी नाव को धकेला और पतवार की हल्की-हल्की चोटो से खेने लगा। धारा को तिरछे काटती हुई, हल्के-से हिचकोले खाती हुई नाव ने दूसरी तरफ स्थित निचले साफ हरे रग के किनारे तक पहुचने के लिए नदी पार करना शुरू किया। लडकी नाव के किनारे पर हाथ रखे, गहन चिन्तन मे लीन, जड-सी बैठी थी और अपनी उगलियो पर से पानी को बह जाने दे रही थी।

"चाचा अरकाशा, क्या तुम्हे हमारी याद नही?" अलेक्सेई ने पूछा।

मल्लाह ने इन युवा चेहरो की ओर उपेक्षा से देखा और कहा "नही तो।"

"क्यो, यह क्या बात है? मैं हू अल्योश्का मेरेस्येव। तुमने मुझे सिखाया था कि रेतीले किनारे पर काटे से मछली कैसे पकडते हैं।"

"शायद सिखाया हो। तुम जैसे यहा बहुत से छोकरे खेलते-फिरते थे। मैं उन सबको नही याद रख सकता।"

नाव एक घाट के पास से गुजरी, जहा एक चौडे पाल वाली नाव बधी थी, जिसके फूले हुए पाल पर गर्वपूर्वक नाम लिखा था 'अरोरा' और फिर नाव चरमर करती रेत में फस गयी।

"मेरी जगह अब यही है। अब मैं म्यूनिसिपैल्टी के लिए काम नही करता, अपना ही काम करता हू! तुम समझ ही गये मेरा मतलब—'व्यक्तिगत व्यवसाय'," चाचा अरकाशा ने समझाया और पानी में उतर-कर नाव को और ऊपर धकेलने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसके ठूठ रेत में धुस गये, नाव भारी थी और वह उसे चढा न पाया। "आप लोगो को कूदना पडेगा," उसने मद स्वर से कहा।

"कितना हुआ ?" अलेक्सेई ने पूछा।

"मै तुम्हारे ऊपर छोडता हू। तुम लोग इतने सुखी दिखाई देते हो कि तुम्हे कुछ ज्यादा ही देना चाहिए। लेकिन मुझे तुम्हारी याद नही पडती—याद ही नही आ रहा है।"

नाव से कूदने मे उनके पैर भीग गये और ओल्या ने सुझाव दिया कि जूते उतार दिये जाय। उन्होने यही किया और नदी के नम और गर्म रेत के अपने नगे पैरो से छू जाते ही, वे इतना आनन्दित और उन्मुक्त अनुभव करने लगे कि घास पर बच्चो की तरह दौडने और उछलने-कूदने को उनका जी चाहने लगा।

"मुझे पकडो!" ओल्या चिल्लायी और कछार पार कर, वह निचले, हीरे जैसे हरे रग के मैदान की तरफ दौड पडी और उसकी पुष्ट, धूप खाकर ताम्रवर्ण बनी टागे चमकने लगी।

अलेक्सेई पूरी ताकत से उसके पीछे भागा, उसे अपने सामने एक रगबिरगा टुकडा मात्र नजर आ रहा था, जो ओल्या की हल्की, चमकीले रगो वाली फ्राक से बना था। वह दौडा तो जगली फूल और चुक्र की झाडिया उसके नगे पैरो से लिपट झपटकर दर्दनाक चोट करने लगी और उसे महसूस हुआ कि नर्म, नम और धूप से तप्त धरती उसके तलवो के नीचे से खिसक रही है, उसे लगा कि ओल्या को पकडना उसके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, कि इसी पर उनके भावी जीवन का काफी दारोमदार है और यहा, इस फूलो भरे उपवन मे, उन्मत्तकारी सुगधो के बीच उसे वह सब बाते बताना आसान होगा जिन्हे कहने के लिए वह अब तक साहस न जुटा पाया था। लेकिन ज्यो ही वह उसके पास पहुचा और उसको पकडने के लिए ज्यो ही उसने हाथ बढाया, त्यो ही वह लडकी अकस्मात मुड गयी, बिल्ली जैसी फुर्ती के साथ उसकी पकड से खिसक गयी और उल्लासपूर्वक, लहराती हुई हसी के साथ भिन्न दिशा मे भाग गयी।

वह इरादा कर चुकी थी कि पकड़ मे न आयगी, और उसने उसे पकड़ा भी नही। वह स्वयं ही मैदान मे नदी की ओर मुड़ी और गर्म सुनहरी रेत पर लोट गयी—उसका चेहरा लाल हो गया था, मुह खुला था और सास फूलने के कारण वक्ष ऊपर-नीचे हो रहा था और वह लालसापूर्वक सासें लेती हुई हस रही थी। बाद मे उसने फूलो भरे मैदान पर सफेद, सितारो जैसे बाबूनो के बीच उसका फोटो लिया। फिर उन्होने स्नान किया, जिसके बाद वह आज्ञाकारी की भाति एक झाड़ी के पीछे चला गया और दूसरी ओर मुह फेरकर खड़ा हो गया और उधर वह कपड़े बदलती और स्नान की पोशाक निचोड़ती रही।

उसने जब बुलाया तो अलेक्सेई ने देखा कि वह अपनी महीन, हल्की फ्राक पहने और टर्किश तौलिया सिर पर लपेटे, बालू के ऊपर अपनी धूप से तपी ताम्रवर्ण टागें सिकोड़े बैठी हुई है। घास पर स्वच्छ, सफेद रुमाल बिछाकर और उसे उड़ने से बचाने के लिए उसके चारो कोनो पर पत्थर रखकर उसने अपनी पार्सल की चीजें रख दी थी। उन्होने सलाद, ठंडी मछली, जो सावधानी से चिकने कागज मे बधी थी, और घर के बने बिस्कुट खाकर सतोष किया। वह नमक और राई तक लाना न भूली थी, जिन्हे वह कोल्ड क्रीम के नन्हे मर्तबानो में रख कर लायी थी। इस नन्ही लड़की ने जिस गम्भीर और कुशल ढग से मेजबान का काम किया, उसमें न जाने क्या मनहर और मार्मिक बात थी। अलेक्सेई ने अपने आप से कहा "अब कोई ढील-ढाल नही। बस तय हुआ। आज की शाम ही में उसके सामने प्रस्ताव रख दूगा। मै सिद्ध कर दूगा, उसे समझा लूगा कि उसे मेरी पत्नी बन जाना चाहिए।"

वे कुछ देर तक धूप खाते रहे, उन्होने एक बार फिर स्नान किया और शाम को ओल्या के कमरे में फिर मिलने का निश्चय करने के बाद, वे धीरे धीरे नाव की ओर बढे—थकित, किन्तु आनन्दित भाव से। किसी कारण वहा न तो मोटरवाली किश्ती और न नौका ही थी।

वे बडी देर तक और जोर-जोर से चाचा अरकाशा को आवाजे देते रहे कि उनके गले बैठ गये। स्तेपी मे सूरज डूबने लगा था। उज्ज्वल गुलाबी धूप की किरणे नदी के दूसरे किनारे पर स्थित पहाडी की सतह पर फिसलती हुई, मकानो पर और कस्बे के वृक्षो के धूल-धूसरित, निश्चल शिखरो पर मुलम्मा चढा रही थी और खिडकियो पर रक्तिम लालिमा बिखेर रही थी। यह ग्रीष्म की साझ गर्म और शान्त थी। लेकिन कस्बे मे कोई बात हो गयी थी। सडको पर, जो इस समय अक्सर वीरान रहा करती थी, काफी भीड थी, लोगो से भरे दो ट्रक गुजर रहे थे, फौजी पात बनाये एक छोटी-सी टुकडी मार्च कर रही थी।

"चाचा अरकाशा ने पी डाली होगी," अलेक्सेई ने अनुमान लगाया। "मान लो, हमे रात यहा काटनी पडे तो?"

"जब तुम्हारे साथ हू, तो मुझे कोई डर नही सतायेगा," ओल्या ने उसकी तरफ बडी-बडी, चमकती हुई आखो से देखकर उत्तर दिया।

अलेक्सेई ने उसको भुजाओ मे बाध लिया और चुम्बन कर लिया – पहली और आखिरी बार। नदी की ओर से पतवारो की खडक सुनाई पडने लगी, दूसरी ओर से नाव मुसाफिरो को लादे चली आ रही थी। इस समय नाव की तरफ उन्होने घृणा से देखा, फिर भी मानो किसी पूर्वबोध के वशीभूत होकर, वे आज्ञाबद्ध से उसकी ओर बढ गये।

लोग खामोशी के साथ नाव से उतर रहे थे। सभी छुट्टियो की पोशाके पहने थे, मगर उनके चेहरो पर चिन्ता और उदासी के भाव थे। मुह लटकाये हुए और किसी जल्दी में जान पडनेवाले आदमी, और रोने के कारण लाल-लाल आखोवाली औरते, बिना कुछ कहे-सुने, इस युवा जोडे के पास से गुजर गये। क्या हुआ है, यह न समझ पाते हुए वे दोनो नाव मे कूद गये। चाचा अरकाशा ने उनके आनन्दित चेहरो की ओर देखे बिना ही कहा

"युद्ध आज सुबह कामरेड मोलोतोव रेडियो पर बोले थे।"

"युद्ध? किससे?" अपनी सीट से लगभग उछलते हुए अलेक्सेई ने पूछा।

"उन्ही मनहूस जर्मनो से, और किससे?" चाचा अरकाशा क्रुद्ध भाव से पतवारें खडकाते हुए बडबडाया। "मर्द लोग जिले के फौजी हैडक्वार्टर के लिए रवाना भी हो गये हैं। भरती।"

अलेक्सेई घर गये बिना सीधा हैडक्वार्टर गया और रात में १२.४० की गाडी से वह वायुसेना की उस टुकडी के लिए रवाना भी हो गया जिसमें उसकी नियुक्ति हुई थी—घर से सूटकेस तक लाने का वक्त भी बडी मुश्किल से मिला था, ओल्या से विदा तक न ले पाया था।

उन्होने कभी ही पत्र-व्यवहार किया, इसलिए नही कि एक दूसरे के प्रति उनकी भावनाए ठडी पड गयी थी या वे एक दूसरे को भूलते जा रहे थे। नही। वह अधीरतापूर्वक गोल-गोल, स्कूली लडकियों जैसी लिखावट में लिखे गये पत्रो की प्रतीक्षा करता, उन्हे हमेशा जेब मे रखता और जब अकेला होता तो उन्हे बार बार पढता। यही पत्र थे जिन्हे, उस विपत्ति-काल में, जब वह जगल में मारा-मारा घूम रहा था, अपने हृदय से चिपकाये रहता था और निहारा करता था। लेकिन इन दो प्रेमियो के सम्बन्ध इतने आकस्मिक रूप से और इतनी अनिश्चित अवस्था में टूट गये थे कि जो पत्र वे लिखते, उनमे वे पुराने, घनिष्ट मित्रो की तरह, एक दूसरे से आदान-प्रदान करते और वह बडी बात लिखने से डरते जो अतत अनकही रह गयी थी।

और अब अपने को अस्पताल में पाकर, वह बडी हैरानी के साथ देखता, और ओल्या का नया पत्र पाकर यह घबराहट और बढती जाती, कि ओल्या अब स्वय उससे मिलने के लिए आगे बढ रही है, कि अब वह अपने पत्रो मे बिल्कुल स्पष्ट रूप से अपनी आकाक्षाए व्यक्त करने लगी है, वह अफसोस प्रकट करती कि उस शाम चाचा अरकाशा उसी

खास क्षण मे आ गये और अलेक्सेई को विश्वास दिलाती उसे चाहे कुछ हो जाय, एक व्यक्ति है जिसपर वह हमेशा विश्वास कर सकता है, और उससे प्रार्थना करती कि विदेशो मे घूमते हुए वह याद रखे कि एक घर है जिसे वह हमेशा अपना समझ सकता है और युद्ध जब खत्म हो जाय तो वही लौट सकता है। ऐसा लगता कि ये पत्र जो लिख रही है वह एक नयी, भिन्न ओल्या है। जब कभी वह उसके फोटो की ओर देखता तो वह हमेशा सोचता कि अगर हवा का झोका आये तो फूलोवाली फ्राक समेत वह डैडेलियन के पके बीजो की छतरी की भाति उड जायगी। लेकिन ये पत्र लिख रही थी एक महिला—एक भली प्रेममयी महिला जो अपने प्रियतम की कामना और प्रतीक्षा कर रही थी। इससे उसे सुख भी होता और दुख भी, सुख होता अपने आपको रोकने के बावजूद और दुख होता इसलिए कि वह सोचता उसे ऐसा प्रेम प्राप्त करने का कोई अधिकार नही है और ऐसी स्वीकृतोक्तियो के योग्य नही है। यही देखो, उसे कभी यह लिखने का भी साहस नही हुआ कि अब वह वही स्फूर्त्तिवान, धूप में तपा ताम्रवर्ण युवक नही रहा जिससे कि वह परिचित थी, बल्कि वह चाचा मरकाशा की तरह पगु व्यक्ति है। इस भय से कि इससे उसकी बीमार मा मर जायगी, चूकि वह सत्य लिखने का साहस न कर सका इसलिए अब ओल्या को धोखा देने के लिए विवश हो गया, और जो भी पत्र वह लिखता था, उससे वह इस प्रवचना में अधिकाधिक फसता जाता था।

यही कारण है कि कमीशिन से उसे जो पत्र मिलते, उनसे उसके हृदय में इतनी अतर्विरोधी भावनाए जागृत होती—आनन्द और दुख, आशा और उद्विग्नता—वे उसे एक ही साथ हर्षित करती और यन्त्रणा देती। एक बार झूठ बोलने के बाद वह दूसरे झूठ भी गढने के लिए मजबूर होता चला जा रहा था, लेकिन इस काम में उसका हाथ सधा न था और इसी लिए ओल्या को उसके उत्तर सक्षिप्त और शुष्क होते थे।

'मौसमी सार्जेन्ट' को सब बाते लिखना उसे आसान मालूम होता था। उसकी आत्मा सरल और अनुरागपूर्ण थी। आपरेशन के बाद मायूसी की हालत में जब उसे दुख किसी को सुनाने की आवश्यकता थी, उसने उसको एक लम्बा और निराशापूर्ण पत्र लिखा था। कुछ दिनो बाद उसे किसी कापी से फाड़े गये पन्ने पर, टेढी-मेढी लिखावट में लिखा गया एक पत्र मिला, जिसमें जगह जगह विस्मयादिबोधक चिह्न बिखरे थे जो ऐसे दिखाई देते थे मानो मीठी रोटी के ऊपर अजमोद के दाने बिखर गये हो, और सारा पत्र आसुओ के धब्बो से अलकृत था। लडकी ने लिखा था कि अगर फौजी अनुशासन का ध्यान न होता तो वह सब काम फौरन छोड देती और फौरन उसकी देखभाल करने तथा दुख बटाने चली आती। उसने और जल्दी-जल्दी पत्र लिखने का अनुरोध किया था। इस उलझे हुए पत्र में इतनी खुली और अर्द्ध बचकानी भावनाए व्यक्त की गयी थी कि उससे अलेक्सेई को दुख महसूस हुआ और वह अपने आपको कोसने लगा कि जब उस लडकी ने ओल्या के पत्र दिये थे, तब उसने यह क्यो कह दिया कि ओल्या उसकी शादीशुदा बहिन है। ऐसी लडकी को कभी धोखा नही देना चाहिए। और इसलिए उसने उसको स्पष्ट रूप से लिख दिया और जता दिया कि कमीशिन में उसकी एक प्रेमिका है और वह अभी तक यह साहस नही कर सका कि उसको या अपनी मा को अपने दुर्भाग्य के विषय में सच सच बता सके।

'मौसमी सार्जेन्ट' के पास से इस बार उत्तर इतनी जल्दी आया कि जिसकी उन दिनो आशा नही की जा सकती थी। लडकी ने लिखा था कि इस पत्र को वह एक मेजर के हाथो भेज रही है, जो उस रेजीमेंट में आया था और उसकी ओर आकर्षित हुआ था, और निस्सदेह, जिसकी उसने उपेक्षा की थी, यद्यपि वह भला और ज़िदादिल आदमी था। पत्र की ध्वनि से ही यह स्पष्ट था कि उसे निराशा हुई थी और ठेस पहुची थी, और यद्यपि उसने अपनी भावनाओ को सयमित

करने का प्रयत्न किया था, मगर सफल नही हो सकी थी। उसे झिडकते हुए कि उस बार उसने सच सच क्यो नही बताया था, उसने अनुरोध किया था कि वह उसे अपना मित्र समझे। इस पत्र के अत मे एक बाद की लिखी हुई टिप्पणी थी, स्याही से नही, पेंसिल से लिखी हुई, जिसमे उसने "कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट" को आश्वासन दिया था कि वह सदा अनुरक्त मित्र रहेगी और कहा था कि अगर वह "कमीशिन वाली" उसके साथ विश्वासघात करे (वह जानती थी कि युद्ध-क्षेत्र के पीछे औरते किस तरह व्यवहार कर रही है) या अगर वह उसे प्रेम करना छोड दे या उसके पगु हो जाने के कारण उससे विरक्त हो जाय, तो वह 'मौसमी सार्जेन्ट' को न भुलाये, सिर्फ यह करे कि उसे सच के अलावा और कभी कुछ न लिखे। जो व्यक्ति यह पत्र लाया था, वह सुथरे ढग से बधा एक पार्सल भी लाया था, जिसमे पैराशूट के कपडे से बनाये गये, हाथ से कढे अनेक रूमाल थे जिनपर अलेक्सेई के नाम के प्रारम्भिक अक्षर अकित थे, तम्बाकू रखने का एक बटुआ था जिसपर उडता हुआ हवाई जहाज बना था, एक कघा था, 'मैग्नोलिया' यू-डि-कोलोन की एक शीशी थी और नहाने का एक साबुन था। अलेक्सेई जानता था कि उन कठिन दिनो में फौज मे काम करनेवाली लडकियो के लिए ये सब चीजें कितनी बहुमूल्य थी। वह जानता था कि साबुन या यू-डि-कोलोन की शीशी को जो उन्हे छुट्टी के उपहार के रूप मे प्राप्त होती है, वे पवित्र तावीज की तरह रखती है, जिनसे उन्हे युद्ध से पहले के नागरिक जीवन का स्मरण हो आता है। वह इन उपहारो का मूल्य जानता था और इसलिए जब उसने इन चीजो को चारपाई के पास रखी आलमारी के ऊपर रखा तो वह प्रसन्न भी हुआ और लज्जित भी।

अब जब कि वह विलक्षण उत्साह के साथ अपनी पगु टागो को अभ्यास करा रहा था और पुन उड सकने और युद्ध करने का सपना देख रहा था, तब मिश्रित मनोभाव उसके हृदय में द्वन्द्व मचाने लगे। यह बात

कि ओल्या को, जिसके लिए हर रोज उसका प्रेम गहरा होता जा रहा था, वह धोखा देने और अपने पत्रों में अपंगत्व छिपाने के लिए विवश हो गया था, और एक लड़की को, जिसको वह मुश्किल ही से जानता था, सब कुछ साफ साफ बता देना था,—यह तथ्य उसकी आत्मा पर भारी बोझ बन गया।

लेकिन उसने निष्ठाभाव से संकल्प किया कि वह ओल्गा को अपने प्रेम के बारे में तभी बतायेगा जब उसके सपने सच हो जायगे, वह पुन युद्ध करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा और फिर योद्धाओं की पांत में पहुच जायगा। और इससे उसका वह उत्साह और भी पुष्ट हो गया, जिस उत्साह के साथ वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था।

११

एक मई को कमिसार की मृत्यु हो गयी।

अकस्मात ही उसका देहावसान हो गया। सुबह जब उसे नहलाया धुलाया जा चुका और बाल काढे जा चुके, तो उसने महिला हज्जाम से, जो उसकी दाढी बना रही थी, मौसम के बारे में और इस छुट्टी के दिन मास्को कैसा लग रहा है, उसके बारे में पूछताछ की। उसे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि सड़को पर से मोर्चेबंदी हटायी जा रही है, और इस बात पर उसने अफसोस प्रगट किया कि इस गौरवशाली वासंती दिन को कोई प्रदर्शन न होगा, उसने क्लावदिया मिखाइलोव्ना को चिढाया भी, जिसने आज की छुट्टी के अवसर पर अपने चेहरे की झाइयो को पाउडर पोतकर छिपाने का जोरदार प्रयत्न किया था। वह कुछ बेहतर लग रहा था, और हर व्यक्ति को आशा होने लगी कि अब वह बच गया है और शायद अब स्वास्थ्य-लाभ की राह पर बढ रहा है।

कुछ दिनो से, चूंकि वह अखबार नही पढ पाता था, इसलिए उसकी चारपाई के पास रेडियो लगा दिया गया था। मूल रूप मे, इसे कान मे लगाकर इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन ग्वोज्देव ने, जो रेडियो टेक्नीक के बारे मे कुछ कुछ जानता था, उसमे कुछ सुधार किया जिससे कान मे लगाने का यत्र कुछ लाउडस्पीकर जैसा हो गया और अब उससे सारी वार्ता और सगीत पूरे वार्ड मे सुनाई देने लगा था। नौ बजे, उद्‌घोषक, जिसकी आवाज उन दिनो सारी दुनिया मे परिचित थी और सुनी जाती थी, रक्षा-मन्त्री का दिवसादेश पढकर सुनाने लगा। हर व्यक्ति दीवार से लटकी हुई उन दो काली टिकलियो की तरफ सारस जैसी गरदनें लम्बी कर, बिल्कुल खामोश हो गया—इस भय से कि कही कोई शब्द छूट न जाय। जब ये शब्द भी सुना दिये गये "महान लेनिन की अजेय पताका के नीचे, विजय की ओर आगे बढो!" तब भी वार्ड मे गहरी शान्ति छायी रही।

"अब, कृपया, मुझे यह समझाइये, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार . ." कुकूश्किन ने कहना शुरू किया और यकायक भयग्रस्त होकर चीख उठा—"कामरेड कमिसार!"

हर व्यक्ति ने घूमकर देखा। कमिसार अपने बिस्तर पर सीधा, सख्त, तना हुआ, पडा था और छत मे एक स्थान पर निस्पद आखो से घूर रहा था, उसके दुबले-पतले, पीले चेहरे पर एक शान्त पवित्र और गौरवपूर्ण भाव था।

"वह चल बसा है!" कुकूश्किन चीख उठा और उसकी चारपाई के पास घुटनो के बल गिर पडा। "चल बसा!"

किंकर्त्तव्यविमूढ परिचारिकाए अन्दर और बाहर की तरफ दौड पडी, नर्स भागी-भागी फिर रही थी, हाउस सर्जन अभी भी अपनी पोशाक के बटन लगाता दौडा आ रहा था। किसी की तरफ कोई ध्यान न देकर वह चिडचिडा, गैरमिलनसार लेफ्टीनेंट कोस्तंतीन कुकूश्किन मृतक

व्यक्ति के शव पर आडा पडा हुआ था और बच्चे की तरह कम्बल में मुह गडाये हुए रो रहा था, सिसक रहा था—कधे उठ-गिर रहे थे, सारा शरीर काप रहा था

उसी शाम, आघ खाली वार्ड नम्बर बयालीस मे एक नया मरीज लाया गया। वह था मास्को सुरक्षा एयर डिवीजन की एक टुकडी का मेजर पावेल इवानोविच स्त्रुच्कोव। फासिस्टो ने छुट्टी के दिन मास्को पर बडा भारी हवाई हमला करने का निश्चय किया था, मगर कई टुकडियो में उडकर आनेवाली उनकी विमान-सेना को बीच मे ही रोक लिया गया, और भयकर युद्ध के बाद, कही पोद्सोल्नेच्नाया क्षेत्र में उनका सफाया कर दिया गया। सिर्फ एक 'जकर' घेरा तोडने में सफल हुआ और वह बहुत ऊचाई पर चढकर मास्को की ओर बढ चला। स्पष्ट था कि उसका चालक, मास्को के समारोह को मारने के लिए, हर कीमत पर अपने काम को पूरा करने का सकल्प कर चुका था। युद्ध की सरगर्मी में स्त्रुच्कोव ने इस 'जकर' को देख ही लिया था और इसलिए वह फौरन उसके पीछे दौडा। वह शानदार सोवियत हवाई जहाज चला रहा था, जिनसे उस समय लडाकू वायुसेना को सुसज्जित किया गया था। जमीन से छै किलोमीटर पर, आसमान मे बहुत ऊचाई पर, उसने जर्मन विमान को पकड ही लिया जब कि वह मास्को के बाहरी क्षेत्र के ऊपर आ गया था। वह कुशलतापूर्वक शत्रु के पीछे पहुच गया, उसपर स्पष्ट रूप में निशाना साधा और अपनी मशीनगन का घोडा दबाया। उसने घोडा फिर दबाया, मगर वह चकित रह गया कि उसे सुपरिचित गूज नही सुनाई दी। घोडा काम नही कर रहा था।

जर्मन हवाई जहाज उससे थोडा आगे हो गया था। वह बराबर उसके पीछे लगा रहा और उस विमान की पूछ में लगी दोहरी मशीनगनो से बचता हुआ, अपने को सुरक्षित क्षेत्र में रखता रहा। मई के उस उज्ज्वल प्रभात में मास्को बारीक कुहरे मे लिपटे मटमैले ढेर की

भांति क्षितिज पर दिखाई पड़ने लगा था। स्त्रुच्कोव ने हताश भाव से भिड़ जाने की ठान ली। उसने अपनी पट्टियां खोल डाली, अपने आसन के काकपिट का ढक्कन खोल दिया और इस प्रकार अपनी मांसपेशियां तान लीं, मानो वह उछलने की तैयारी कर रहा हो। वह अपने वायुयान को बमवार के ठीक पीछे एक रेखा में ले आया और एक क्षण दोनों हवाई जहाज, एक के पीछे एक, इस तरह उड़ते रहे मानो वे किसी अदृश्य सूत्र में बंधे हों। 'जंकर' के पारदर्शी ढक्कन में से स्त्रुच्कोव को जर्मन तोपची की आंखें साफ साफ दिखाई दे रही थी, जो उसकी प्रत्येक गतिविधि को ताक रहा था और इस घात में बैठा था कि उसके विमान के पंख का एक हिस्सा भी सुरक्षित क्षेत्र से बाहर आ जाय। उसने देखा कि फासिस्ट ने अपनी उत्तेजना के कारण टोप उतार डाला है—उसे उसके सुनहरे और लम्बे बाल तक नजर आने लगे, जो लटों के रूप में उसके माथे पर लटक आये थे। दोहरी, भारी मशीनगन की काली नाक, बराबर स्त्रुच्कोव की दिशा में घुमायी जा रही थी और सजीव प्राणी की भांति अपनी घात का मौका देख रही थी। एक क्षण स्त्रुच्कोव ने अपने को निशस्त्र व्यक्ति की तरह महसूस किया, जिसके ऊपर किसी लुटेरे ने बंदूक तान दी हो, और ऐसी स्थिति में निशस्त्र, साहसी व्यक्ति जो कर बैठते हैं, उसी तरह वह शत्रु के ऊपर टूट पड़ा, लेकिन मुक्के तानकर नहीं, जैसा कि वह जमीन पर करता, उसने अपने वायुयान को आगे बढ़ाया और शत्रु की पूंछ पर अपने वायुयान के चमचमाते हुए प्रोपेलर का निशाना साधा।

टक्कर की आवाज उसे नहीं सुनाई दी। अगले क्षण, जबर्दस्त आघात से ऊपर फेंके जाने के बाद, उसे महसूस हुआ कि वह हवा में कुलाटें खा रहा है। धरती उसके सिर के ऊपर कौंध गयी, रुक गयी और फिर हरी-भरी और दमकती हुई उसकी तरफ दौड़ पड़ी। तभी उसने अपना पैराशूट खोल दिया, लेकिन अचेत होने और रस्सियों से लटके

रह जाने के पहले, उसने अपनी आंखों की कोर से देखा कि पूंछ से विहीन, 'जकर' का सिगार के आकार का ढांचा उसके नजदीक से गुजर रहा है और शरद की हवाओं में उड़ती फिरनेवाली मेपिल वृक्ष की पत्तियों की तरह चक्कर काट रहा है। पैराशूट की रस्सियों से असहाय भाव से लटकते हुए स्त्रुच्कोव किसी मकान की छत से टकरा गया और मास्को के बाहरी क्षेत्र में उत्सव-मग्न सड़क पर अचेतावस्था में आ गिरा, जहां के निवासी उसकी जोरदार मैढा-टक्कर को जमीन से देख रहे थे। उन्होंने उसको उठाया और निकटतम घर में ले गये। अड़ोस-पड़ोस की सड़कों पर इतनी भीड़ जमा हो गयी कि जिस डाक्टर को बुलाया गया था, वह बड़ी कठिनाई से मकान में जा सका। छत से टकराने के कारण स्त्रुच्कोव के घुटने टूट गये थे।

स्त्रुच्कोव के वीरतापूर्ण कौशल का समाचार फौरन रेडियो से "सबसे ताजी खबरें" के विशेष कार्यक्रम में प्रसारित कर दिया गया। मास्को सोवियत के अध्यक्ष महोदय उसे राजधानी के सर्वोत्तम अस्पताल के लिए ले जाने के वास्ते स्वयं आये। और जब स्त्रुच्कोव को वार्ड में लाया गया तो उसके पीछे-पीछे तमाम परिचारक फूलों के गुलदस्ते, फलों की डलिया और चाकलेटों के डिब्बे लेकर आये—ये सभी चीजें मास्को के कृतज्ञ निवासियों ने उपहार-स्वरूप भेजी थीं।

वह हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति सिद्ध हुआ। वार्ड की दहलीज पार करते ही उसने अन्य मरीजों से पूछा कि यहां "रातिब" कैसा मिलता है, नियम सख्त तो नहीं है, और यहां नर्सें सुन्दर भी हैं या नहीं। और जब उसके घुटनों पर पट्टियां बांधी जा रही थीं तो क्लावदिया मिखाइलोव्ना को उसने कैन्टीन की चर्चा के अनन्त विषय के बारे में एक मनोरंजक किस्सा भी सुना दिया और उसके सुन्दर मुख-मण्डल की किंचित साहसपूर्ण सराहना भी कर दी। जब नर्स वार्ड छोड़कर चली गयी तो उसने उसकी तरफ आंख मारी और बोला

"बढिया लडकी है। सख्त है क्या? मेरा ख्याल है, तुम लोगो को वह भगवान का डर दिखाती होगी, एह? मत डरना। तुम लोगो को चाले नही सिखायी गयी क्या? औरते किलो से अधिक दुर्भेद्य नही होती, और ऐसा कोई किला नही, जो फतह न किया जा सके," और इतना कहकर वह जोरदार हसी मे फूट पडा।

वह यहा के पुराने निवासी की तरह व्यवहार कर रहा था, मानो वह पूरे एक साल से इस अस्पताल में हो। वह फौरन हर एक को "तुम" से सम्बोधन करने लगा। जब उसे नाक साफ करने की जरूरत पडी उसने वेतकल्लुफी से मेरेस्येव की आलमारी से पैराशूट की सिल्क के रूमालो मे से एक उठा लिया जिस पर 'मौसमी सार्जेन्ट' ने बडी लगन के साथ कढाई की थी और अपने तकिये के नीचे रख लिया।

"तुम्हारी प्रेमिका ने भेजे है?" अलेक्सेई की ओर आख मारकर उसने पूछा। "तुम्हारे पास बहुत है, और न भी होते तो क्या, तुम्हारी प्रेमिका को तुम्हारे लिए एक और बनाकर भेजने मे आनन्द ही मिलेगा।"

यद्यपि उसके कपोलो पर अभी भी गुलाबी आभा फूट रही थी, फिर भी अब वह जवान न था। आखो से कनपटी तक, कौए के पजे की तरह, गहरी झुर्रिया चमक रही थी और उसकी एक एक बात यह सिद्ध कर रही थी कि वह पुराना सिपाही है जो हर उस जगह को जहा उसका झोला रख दिया जाय और जहा भी हाथ-मुह धोने की तिपाई पर उसका साबुन और दतब्रुश रख दिया जाय, उसको अपना घर समझने लगता है। वह अपने साथ वार्ड मे काफी शोरगुल और हसी-खुशी लेकर आया और वह इस तरह व्यवहार करता कि किसी को कुछ बुरा न मालूम होता और हर व्यक्ति को उसने महसूस करा दिया कि मानो वे उससे वर्षो से परिचित है। हर व्यक्ति नवागत व्यक्ति को पसंद करने लगा–सिवाय इसके कि मेरेस्येव कुछ विरक्त हुआ औरतो के प्रति उसकी कुछ

दुर्बलता देखकर, जिसको साधारणतया वह छिपाने की कोई कोशिश न करता था, और थोडा-सा भी बहाना मिलने पर उसकी चर्चा छेड देता था।

अगले दिन कमिसार की शव-यात्रा हुई।

मेरेस्येव, कुकूश्किन और ग्वोज्देव अहाते की तरफ की खिडकी की दहलीज पर बैठ गये और उन्होंने भारी तोप-गाडी को तोप-सेना के घोडो के दल द्वारा खीचे जाते देखा, बैंड को पात बाधते देखा जिनके बाजे धूप मे चमक रहे थे और फौज की एक टुकडी को मार्च करते देखा। वार्ड मे क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने प्रवेश किया और उसने मरीजो को खिडकी से उतर जाने की आज्ञा दी। वह हमेशा की तरह शान्त और फुर्तीली थी, मगर मेरेस्येव ने देखा कि बोलने मे उसकी आवाज काप रही थी। वह नये मरीज का टेम्परेचर लेने आयी थी, लेकिन जब वह यह करने जा ही रही थी, तभी शव-यात्रा का बैंड बज उठा। नर्स पीली पड गयी, थर्मामीटर उसके हाथ से छूट गया और लकड़ी के फर्श पर पारे की नन्ही-नन्ही, चमकीली बूंदें लुढक गयी। क्लावदिया मिखाइलोव्ना अपने हाथो में चेहरा छिपाकर वार्ड के बाहर भाग गयी।

"इसको क्या हो गया है? क्या वह उसका प्रेमी था?" स्त्रुच्कोव ने पूछा और सिर हिलाकर खिडकी की ओर इशारा किया जहा से शोकपूर्ण सगीत आ रहा था।

किसी ने उसे उत्तर नही दिया।

खिडकी से बाहर झुककर वे सब तोप-गाडी पर रखे खुले हुए लाल कफन की ओर देखते रहे—ज्यो ही वह दरवाजे से निकलकर बाहर सडक पर आया। पुष्पमालाओ और फूलो के ढेर के बीच कमिसार का शव लेटा हुआ था। तोप-गाडी के पीछे लोग मखमल की गद्दी पर लगाये गये उसके पदको को लिये चल रहे थे— एक, दो पाच आठ। पीछे सिर झुकाये हुए जनरल चले जा रहे थे। उन्ही मे वसीली वसील्येविच

भी जनरल का कोट पहने हुए चल रहे थे, मगर किसी कारण नगे सिर थे। और तभी सब लोगो से कुछ दूर पर, मार्च करते हुए सिपाहियो के आगे, क्लावदिया मिखाइलोव्ना भी नगे सिर और सफेद पोशाक पहने दिखाई दी—वह ठोकर खाती चल रही थी और स्पष्ट था कि सामने क्या है, इसको वह देख नही पा रही थी। दरवाजे पर किसी ने उसके कधे पर कोट फेक दिया, लेकिन जैसे वह आगे बढी, वह कोट जमीन पर गिर गया और उसके पीछे आनेवाले सिपाहियो को अपनी पाते चौडी करनी पडी ताकि कोट कुचला न जाय।

"किसकी शव-यात्रा है, मित्रो?" मेजर ने पूछा।

वह भी अपने को खिडकी तक उठाना चाहता था, मगर उसके पैर खपच्चियो से बधे थे और इसलिए वह न उठ सका।

शव-यात्रा अगोचर हो गयी। गम्भीर सगीत के शोकपूर्ण स्वर अब नदी की ओर से कही दूर से और मद-मद आ रहे थे और आहिस्ते से मकानो की दीवारो से प्रतिध्वनित हो उठते थे। लगडी द्वारपालिका लोहे के द्वार बद करने आ गयी थी, लेकिन वार्ड नम्बर बयालीस के निवासी अभी भी खिडकी पर खडे कमिसार की अतिम यात्रा देख रहे थे।

"यह किसकी शव-यात्रा थी? तुम सब तो काठ के पुतले बन गये हो!" मेजर ने अधीरतापूर्वक अभी भी अपने को खिडकी तक उठाने का प्रयत्न करते हुए कहा।

आखिरकार कुकूश्किन ने रूखी, भर्राई आवाज मे कहा:

"यह एक असली इसान की शव-यात्रा थी   एक बोल्शेविक की।"

"असली इसान" शब्द मेरेस्येव के दिमाग में पैठ गया। कमिसार के इससे बेहतर वर्णन की कल्पना नही की जा सकती। और अलेक्सेई में यह आकाक्षा उमड उठी कि वह भी असली इसान बने, उसी प्रकार जिस प्रकार के व्यक्ति ने अभी अतिम यात्रा की है।

१२

कमिसार की मृत्यु के बाद वार्ड नम्बर बयालीस की जिंदगी बिल्कुल बदल गयी।

अब कोई न रहा जो एक स्नेहपूर्ण बोल से उस मनहूस खामोशी को तोड़ देता जो अस्पताल के वार्ड में कभी-कभी छा जाती है, जब यकायक हर व्यक्ति अपने वेदना-विह्वल विचारो मे खो जाता है और हर एक का मन भारी हो जाता है। हसमुख छेड़छाड़ से ग्वोज्देव को उसकी उदासी से उबारनेवाला कोई न रहा, मेरेस्येव को सलाह देनेवाला कोई न रहा और कुकूश्किन के चिढ़चिढ़ेपन को पुरमजाक, मगर ठेस न पहुचानेवाले व्यग्य के जरिए शान्त कर देनेवाला कोई न रहा। वह चुम्बक न रहा जो इन भिन्न-भिन्न प्रकृति के व्यक्तियो को एक दूसरे के समीप खीच लाया था और एक सूत्र में बाध गया था।

लेकिन उसकी अब उतनी आवश्यकता भी न रह गयी थी। चिकित्सा और काल-चक्र ने अपना काम कर दिखाया था। सभी मरीज तेजी से स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे और अस्पताल से उनके छूटने के दिन जितने ही करीब आते जा रहे थे, उतने ही वे अपने रोगो के विषय में बाते भी कम करने लगे थे। वे सभी सपना देखते कि अस्पताल के बाहर उनका भाग्य कैसा होगा, जब वे वापिस लौट जायगे तो उनकी अपनी-अपनी टुकड़िया उनका अभिनन्दन किस प्रकार करेगी, और आगे कौनसे कार्य करने होगे। वे सभी फौजी जीवन की कामना करते, जिसके वे अभ्यस्त हो चुके थे और आनेवाले तूफान की भाति जिस प्रत्याक्रमण का अहसास सारे वायुमण्डल में व्याप्त था, यकायक सभी मोर्चों पर छा जानेवाली शान्ति को देखकर जिसे भापा जा सकता था, उस प्रत्याक्रमण में भाग लेने के लिए वक्त से अस्पताल के बाहर होने की आतुर आकाक्षा-वश, उनकी हथेलियां खुजला रही थी।

अस्पताल से सक्रिय मोर्चे पर लौट जाना किसी सिपाही के लिए कोई अनहोनी बात नही है, मगर मेरेस्येव के लिए वह समस्या बन गयी. पैरो की कमी क्या कुशलता और अभ्यास से पूरी हो जायगी, क्या लडाकू-विमान के काकपिट में अपनी गद्दी पर वह पुन बैठ पायेगा? वह निरतर बढते हुए उत्साह और सकल्प के साथ अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था। अभ्यास-काल धीरे-धीरे बढाते हुए, अब वह टागो को अभ्यस्त करने की कसरते और आम जिमनास्टिके दो दो घटे सुबह-शाम करने लगा। लेकिन उसे यह भी काफी नही लगता था। वह दोपहर मे भी कसरते करने लगा। अपनी आखो मे हसी और व्यग्यपूर्ण चमक भरकर कनखियो से उसकी ओर देखते हुए स्त्रुच्कोव बाजीगर की भाति ऐलान करता

"और अब, दोस्तो, आप प्रकृति का करिश्मा देखिये, अजीबो-गरीब जादूगर, अलेक्सेई मेरेस्येव, साइबेरिया के जगलो मे भी जिसका सानी नही मिलेगा, उसकी कलाबाजिया देखिये।"

वह जितने उन्मत्त उत्साह के साथ कसरते करता था, उनमें कुछ ऐसी बात थी कि अलेक्सेई जादूगर से मिलता-जुलता लगने लगता था। शरीर को आगे-पीछे, अगल-बगल झुकाने की अनन्त क्रियाए और गर्दन तथा भुजाओ की कसरते, जिन्हे वह ऐसी दृढता और घडी के पेंडुलम जैसी नियमितता से करता था, देखना इतना कष्टदायक था कि जब तक वह उनमें जुटा रहता तब तक उसके वार्ड के साथी, जो चल-फिर सकते थे, फौरन कमरे से बाहर गलियारे मे टहलने चले जाते, और चारपाई से लगा स्त्रुच्कोव अपने सिर पर कम्बल खीच लेता और सोने की कोशिश करता। सचमुच, वार्ड मे किसी को यह विश्वास न था कि बिना पैरोवाले व्यक्ति के लिए कभी उड पाना भी सम्भव हो सकता है, लेकिन उसकी लगन ने उनका सम्मान प्राप्त कर लिया था और शायद उनकी श्रद्धा भी, जिसे वे लोग अपने हसी-मजाक के पीछे छिपाते थे।

स्त्रुच्कोव के घुटनों की हड्डियों का टूटना, शुरू में जितना समझा गया था, उससे भी अधिक गम्भीर सिद्ध हुआ। वे धीरे-धीरे ठीक हो रही थी, पैर अभी भी खपच्चियों में बधे थे और यद्यपि उसमें कोई सन्देह नही था कि वे ठीक हो जायगी, फिर भी मेजर अपने "अभागे जोडो" को कोसने से बाज न आता जो उसे इतना कष्ट दे रहे थे। उसका गुर्राना-बडबडाना धीरे-धीरे गुस्से के रूप में बदल गया, वह किसी छोटी-सी बात पर ही पागल हो उठता और हर चीज और हर व्यक्ति को कोसने और गाली देने लगता। ऐसे क्षणो में, यह मालूम होता कि अगर कोई उसे समझाने की कोशिश करेगा तो वह मार बैठेगा। ऐसे दौरे आने पर उसके साथी आपसी सहमति से उसे बिल्कुल अकेला छोड देते—उसे "अपना सारा गोला-बारूद इस्तेमाल" कर लेने दो, जैसा कि वे कहा करते, और इस क्षण का इतजार करते जब युद्ध में ध्वस्त उसकी स्नायुओ पर उसका स्वाभाविक हसोड मन फिर हावी हो जाता।

अपनी बढती हुई बदतमीजी का कारण, स्त्रुच्कोव स्वय ही यह बताता कि वह टट्टी में जाकर सिगरेट नही पी पाता और यह भी बताता कि आपरेशन कक्ष की उस लाल केशो वाली नर्स से मिलने के लिए वह गलियारे में नही जा पाता, कि जिससे—जैसा कि वह कहा करता—उसकी आखें उस समय चार हो चुकी थी, जब वह अपने पैरो पर फिर से पट्टी बधवा रहा था, इसमें किसी हद तक सच्चाई हो सकती है, लेकिन मेरेस्येव यह गौर कर चुका था कि चिढचिढेपन के ये दौरे तभी आते थे जब मेजर अस्पताल के ऊपर किसी हवाई जहाज को उडते देख लेता था, या जब रेडियो या अखबार किसी दिलचस्प आकाश-युद्ध की या उसके किसी परिचित विमान-चालक की सफलता की रिपोर्ट देते थे। इससे मेरेस्येव भी चिडचिडेपन की बेसब्री का शिकार हो उठता था, मगर वह इसका कोई चिन्ह प्रगट न होने देता था और इस प्रकार स्त्रुच्कोव

े गाथ अपनी तुलना कर वह विजय की भावना को अनुभव करने र
ा। उसे लगने लगा कि "असली इन्सान" के जिस आदर्श को
नना था, कम से कम उससे कुछ नजदीक वह पहुच रहा है।

मेजर स्त्रूच्कोव अपनी प्रकृति के अनुरूप ही बना रहा वह
गाता, छोटी-सी बात पर भी जी भर कर हसता और औरतों के
में बाते करने का बड़ा शौकीन था—औरतो से प्रेम करनेवाला व
और साथ ही औरतो से घृणा करनेवाला भी। किसी कारण वह
मोर्चे के पीछे रहनेवाली औरतों की आलोचना करने मे विशेष रूप
मस्त था।

स्त्रूच्कोव जिन बातों मे मशगूल रहता, उनसे मेरेस्येव को ना
थी। उसकी बाते सुनते हुए उसकी आखो के सामने हमेशा ओल्या
तस्वीर आ जाती या मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की उस नन्ही-सी मनोर
लड़की की आकृति आ जाती, जिसके बारे में रेजीमेंट मे मशहूर
कि उसने हवाई अड्डे के सर्विस बटालियन के एक बहुत अधिक सा
सार्जेन्ट मेजर को बदूक के कुन्दे से अपनी झोपडी के बाहर खदेड़ वि
था और लगभग गोली ही मार दी थी, और अलेक्सेई को लगता
स्त्रूच्कोव उन्ही नारियो पर कलक मढ रहा है। एक दिन, मेजर स्त्रूच्
की कहानियों मे से एक को क्रोधपूर्वक सुनकर, जिसके अत मे टिप्प
थी कि "सब एक-सी होती है" और "दो चुटकियो" मे तुम उनमे
किसी को भी पा सकते हो, मेरेस्येव अपने को सयमित न रख स
और इतनी जोर से दात भीजकर कि उसके कपोलो की हड्डिया पी
पड गयी, उसने पूछा

"किसी को भी?"

"हा, किसी को भी," मेजर ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

इसी क्षण क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने वार्ड मे प्रवेश किया अं
मरीजों के चेहरो पर तनाव के भाव देखकर हैरान रह गयी।

"क्या बात है?" अनायास भगिमा से अपने रूमाल के द्वारा बालो की एक लट सभालते हुए उसने पूछा।

"हम लोग जिदगी पर बहस कर रहे है, नर्स। हम लोग अब झक्की बूढो की तरह हो गये है। बात करने के अलावा और कोई काम नही," मेजर ने प्रफुल्ल मुसकान के साथ जवाब दिया।

"इसी को भी?" जब नर्स चली गयी मेरेस्येव ने गुस्से भरी आवाज में पूछा।

"इसमे क्या विशेषता है?"

"क्लावदिया मिखाइलोव्ना को मत छुओ!" ग्वोज्देव ने सख्ती से कहा, "इधर एक आदमी उसे 'सोवियत अप्सरा' कहा करता था।"

"कौन बाजी लगाना चाहता है?"

"बाजी?" अपनी काली आखो मे चिनगारिया दिखाते हुए मेरेस्येव चिल्ला उठा, "किस चीज की बाजी लगाते हो!"

"पिस्तौल की गोली की, जैसा कि पुराने जमाने मे अफसर किया करते थे। तुम जीत जाओ, तो मै निशाना बनूगा और अगर मै जीत जाऊ, तो तुम मेरा निशाना बनोगे।" हसते हुए और सब कुछ को मजाक का रूप देने की कोशिश करते हुए स्त्रुच्कोव बोला।

"बाजी? और ऐसी? क्या तुम भूल गये हो कि तुम सोवियत कमाडर हो? यदि तुम्हारी बात सही सिद्ध हो, तो मेरे मुह पर थूक सकते हो।" स्त्रुच्कोव की ओर कनखियो से घूरकर अलेक्सेई ने कह दिया, "पर सम्हालो, कही मुझी को तुम्हारे मुह पर थूकना न पडे।"

"अगर बाजी लगाना नही चाहते, तो न लगाओ। मै बिना बाजी किये यह सिद्ध करूगा कि हमें इसके लिए लडने की कोई आवश्यकता नही।"

उस दिन के बाद से स्त्रुच्कोव ने उत्साहपूर्वक क्लावदिया मिखाइलोव्ना की तरफ ध्यान देना शुरू कर दिया वह हास्य कथाए कहकर उसका मनोरजन करता, जिनके कहने में वह विशेष पटु था, इस

अलिखित नियम का उल्लघन कर कि विमान-चालक को किसी अजनबी के सामने अपने युद्ध सम्बन्धी साहसिक कार्यो का वर्णन करने में सावधान होना चाहिए, वह उसको अपने अनेक अनुभव सुनाता जो सचमुच महान और दिलचस्प होते, भारी सास लेकर वह अपने अभागे पारिवारिक जीवन की तरफ इशारा करता और अपने कटु एकाकीपन की शिकायत करता, हालाकि वार्ड मे सभी जानते थे कि वह अविवाहित है और उसको कोई विशेप पारिवारिक कठिनाई नही है।

क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसके प्रति अन्य सब की अपेक्षा अधिक पक्षपात दिखाती, यद्यपि बहुत अधिक नही, यह सच है, वह उसकी चारपाई के किनारे बैठ जाती और उसकी उडानो की साहसिक घटनाओ की कथाए सुनती रहती, और वह, अनजाने ही, उसका हाथ अपने हाथ मे ले लेता और वह उसे वापिस न लेती। मेरेस्येव के दिल मे क्रोध उमडने लगा, सारा वार्ड स्त्रुच्कोव के खिलाफ पागल हो उठा, क्योकि वह इस तरह व्यवहार कर रहा था मानो वार्ड के अपने साथियो के सामने यह सिद्ध करना चाहता है कि क्लावदिया मिखाइलोव्ना उन सब औरतो से भिन्न नही है, जिन्हे वह अब तक जानता रहा है। इस गदे खेल को खत्म करने के लिए उसे चेतावनी दी गयी और वार्ड इस मामले मे दृढतापूर्वक हस्तक्षेप करने की तैयारी कर ही रहा था कि सारे मामले ने एक बिल्कुल भिन्न मोड ले लिया।

एक शाम, अपनी ड्यूटी की पारी मे, क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड मे किसी मरीज की देखभाल करने नही, सिर्फ गपशप करने आयी— यही गुण था जिसके कारण उसे मरीज लोग विशेष रूप से पसद करते थे। मेजर अपनी कहानियो मे से एक का बखान करने लगा और वह उसकी चारपाई के पास बैठ गयी। यकायक वह उछल पडी और हर व्यक्ति ने घूमकर देखा। गुस्से मे लाल कपोलो और चढी भौहो से नर्स ने स्त्रुच्कोव की ओर घूरा —जो शर्मिन्दा और भयभीत दिखाई दे रहा था—और बोली

"कामरेड मेजर, अगर तुम मरीज न होते और मैं नर्स न होती, तो मैं तुम्हारे चेहरे पर थप्पड़ जमा देती।"

"ओह, क्लावदिया मिखाइलोव्ना, मैं सौगंध खाता हू, मेरा मतलब यह नही था कि और फिर इसमे क्या था? "

"ओह, इसमें क्या था?" उसने इस बार स्त्रुच्कोव की तरफ गुस्से से नही, नफरत से देखा। "अच्छा। अब कुछ कहने की जरूरत नही है। सुनते हो? और अब मैं आपसे आपके साथियों के सामने कहती हू कि सिवाय इसके कि जब आपको डाक्टरी देखभाल की जरूरत हो, और किसी वक्त मुझसे कोई बात न करे। शुभ रात्रि, साथियो।"

और वह इतने भारी कदमो से वार्ड के बाहर चली गयी जो उसके लिए अस्वाभाविक थे, और स्पष्ट ही, वह शान्त दिखाई देने का प्रयत्न कर रही थी।

एक क्षण वार्ड में मौन छाया रहा। तभी अलेक्सेई का क्रूर विजयी अट्टहास सुनाई दिया और हर आदमी मेजर पर टूट पड़ा

"सो तुम्हे ठीक सबक मिल गया!"

उसकी ओर घूरते हुए मेरेस्येव ने व्यग्यात्मक विनम्रता से पूछा

"कामरेड मेजर, कहिये, मुझे आपके मुह पर अभी थूकना चाहिए कि बाद में?"

स्त्रुच्कोव कुछ सकुचाया-सा नजर तो आया, मगर वह पराजय स्वीकार करने को तैयार नही था। उसने कहा, हा बहुत विश्वास के साथ नही

"हा। हमला खदेड दिया गया। कोई परवाह नही, हम फिर कोशिश करेंगे।"

आहिस्ते से सीटी बजाते हुए वह आधी रात तक खामोशी से पड़ा रहा और कभी-कभी कुछ बडबडा उठता था, मानो अपने विचारो के जवाब में कह रहा हो "हा।"

इस घटना के कुछ ही दिन बाद कोन्स्तंतीन कुकूश्किन अस्पताल से फारिग हो गया। जाते समय उसने कोई भावुकता नही दिखायी और वार्ड के साथियों से विदा लेते समय उसने सिर्फ यही टीका की कि वह अस्पताल की जिंदगी से ऊब गया है। उसने लापरवाही के साथ सभी को "सलाम" कहा, मगर मेरेस्येव और नर्स से प्रार्थना करता गया कि अगर उसकी मा के पास से कोई पत्र आये तो उसका ख्याल रखे और उसकी रेजीमेट के पते पर उसके पास भेज दें।

"लिखना और हमे बताना कि कैसी कट रही है और साथी लोग तुम्हारा स्वागत कैसा करते है," विदाई के समय मेरेस्येव के यही शब्द थे।

"मै तुमको क्यो लिखू? तुम मेरी क्या चिन्ता करते हो? मै नही लिखूगा, यह महज कागज बरबाद करना होगा। तुम भी तो कभी जवाब न दोगे।"

"अच्छा, तुम्हारी मर्जी।"

स्पष्ट था कि कुकूश्किन आखिरी जुमला नही सुन सका था, वह पीठ पीछे फिर देखे बिना ही वार्ड से बाहर चला गया। और विदाई की नजर पीछे डाले बिना ही वह अस्पताल के दरवाजे से बाहर चला गया, नदी के किनारे-किनारे चलता रहा और मोड पर मुड गया, हालाकि वह बखूबी जानता था कि रिवाज के अनुसार उसके सभी भूतपूर्व साथी खिडकियो पर खडे हुए, अपने साथी को जाते देख रहे होगे।

फिर भी उसने अलेक्सेई को पत्र लिखा और काफी जल्दी लिखा। यह बडी ही रूखी और यथातथ्य शैली में लिखा गया था। अपने बारे में उसने सिर्फ इतना लिखा था कि उसे वापिस लौटा देखकर रेजीमेट प्रसन्न ही मालूम होती थी, मगर साथ ही जोड दिया था कि हाल की लडाइयो मे रेजीमेट को भारी क्षति उठानी पडी थी, और निश्चय ही उन्हे खुशी होगी अगर कोई तजुर्बेकार आदमी वापिस आ जाय। उसने

मारे गये और घायल हुए साथियों के नाम गिनाये थे- और लिखा था कि मेरेस्येव को रेजीमेंट में अभी भी याद किया जाता है और यह कि रेजीमेंटल कमाडर ने, जिसको अब लेफ्टीनेंट-कर्नल के ओहदे पर तरक्की मिल गयी है, मेरेस्येव के जिमनास्टिक करतबो और वायु सेना में फिर लौट आने के सकल्प के बारे मे सुनकर कहा था "मेरेस्येव लौट आयेगा। एक बार अगर उसने इसका सकल्प कर लिया है, तो करके ही रहेगा।" और इसके जवाब मे चीफ आफ स्टाफ ने कहा था कि असम्भव को कर दिखाना असम्भव है, और उसके प्रत्युत्तर में रेजीमेंटल कमाडर ने जवाब दिया था कि मेरेस्येव जैसे लोगो के लिए कोई काम असम्भव नही है। अलेक्सेई चकित रह गया कि उसमे कुछ पक्तिया 'मौसमी सार्जेन्ट' तक के बारे मे भी थी। कुकूश्किन ने लिखा था कि इस सार्जेन्ट ने उसके ऊपर प्रश्नो की ऐसी झडी लगा दी थी कि वह उसे यह हुक्म देने के लिए विवश हो गया "पीछे घूमो! मार्च!" कुकूश्किन ने पत्र का अत यह कहकर किया था कि रेजीमेंट में वापिस आने ही पहले दिन उसने दो उडाने की थी, उसकी टागें अब बिल्कुल अच्छी हो गयी है, और अगले कुछ ही दिनो मे रेजीमेंट को नये 'ला-५' किस्म के हवाई जहाज मिलनेवाले है, जिनके बारे में अन्द्रेई देगत्यरेन्को कहता है—वह उन्हे चलाकर देख चुका है—कि उनके मुकाबले मे सभी तरह के जर्मन हवाई जहाज सिर्फ लोहा-लक्कड से भरे सदूक मात्र है।

१३

ग्रीष्म ऋतु तनिक जल्दी ही शुरू हो गयी। वार्ड नम्बर बयालीस में वह उसी पोपलर वृक्ष से झाकने लगी, जिसकी पत्तिया सख्त और चमकीली हो गयी थी। वे बेसब्री के साथ मर्मर कर उठती, मानो एक दूसरे से कानाफूसी कर रही हो और शाम तक सडक से उडनेवाली

धूल से ढक जाने के कारण उनकी चमक खत्म हो जाती थी। लाल केटकिन्स बहुत दिनो पहिले ही निर्मल हरे अशो के रूप मे बदल गये थे, जो अब फूट पडे थे और उनसे हल्के रोए उडने लगे थे। दिन के सबसे गर्म भाग दोपहर मे पोपलर के ये उष्ण रोए मास्को भर मे उडते फिरते थे, अस्पताल की खुली खिडकियो मे से अन्दर उड आते थे और दरवाजो के किनारे और कमरे के कोनो मे—जहा उन्हे उष्ण हवाए उडाकर ले आती थी—फुसफुसे, गुलाबी ढेरो के रूप मे जमा हो जाते थे।

ग्रीष्म की एक शीतल, उज्ज्वल सुनहली सुबह को, क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड मे बडा गम्भीर रूप धारण किये हुए आयी—उसके साथ एक बुजुर्ग आदमी था जो लोहे के फ्रेम का चश्मा डोरे से बाधे हुए था और नया, सख्त कलफ किया हुआ सफेद लबादा पहने था, मगर इस सबसे यह बात छिप नही पायी थी कि वह एक पुराना दस्तकार है। वह सफेद कपडे मे लपेटे हुए कोई चीज लिए था। उसने मेरेस्येव की चारपाई के पास फर्श पर अपना बडल रख दिया और जादूगर की भाति उसे धीरे-धीरे, गम्भीरतापूर्वक खोलने लगा। चमडे की चर्राहट सुनाई दे रही थी और सारे वार्ड मे उसकी सुखद, कडवी और तीखी गध छा गयी।

जब कपडा हटा दिया गया तो नये, पीले रग के, चर्र बोलते हुए, कृत्रिम पैरो का एक जोडा दृष्टिगोचर हुआ, जो बडी कुशलता से, और नाप के हिसाब से बनाये गये थे। इन कृत्रिम पैरो मे नये, भूरे रग के फौजी बूट पहनाये गये थे, और वे इतनी खूबी से फिट थे कि ऐसा लगता था मानो वे बूट पहने हुए सजीव पैर हो।

"बस अब आपको जरूरत होगी सिर्फ एक जोडा बरसाती जूते की, और उन्हे पहनकर तो आप शौक से अपनी शादी के लिए जा सकते है," दस्तकार ने चश्मे के ऊपर से अपनी हस्तकला को सराहना की दृष्टि से देखते हुए कहा। "वसीली वसील्येविच ने स्वय इनका आर्डर दिया था। वे बोले 'जूयेव, पैरो का ऐसा जोडा बनाओ कि उनके आगे

असली भी मात खाये।' और लो ये आ गये! इन्हे जूरेव ने बनाया है। बादशाह को भी शोभा देंगे।"

कृत्रिम पैरो को देखकर मेरेस्येव का दिल बैठ गया, दिल ऐंठ गया, पथरा गया, मगर उनको पहनकर, उनके बल चलकर, बिना सहायता के चलकर देखने की उत्सुकतावश, वह भावना शीघ्र ही विलीन हो गयी। कम्बल के नीचे से उसने अपनी टागो के ठूठ बाहर फेंके और शीघ्रतापूर्वक उन्हे पहना देने के लिए दस्तकार से अनुरोध कर बैठा। लेकिन उस बूढे आदमी को, जो यह दावा कर रहा था कि क्रान्ति काल से पहले उसने एक 'बड़े भारी राजकुमार' के लिए कृत्रिम पैर बनाये थे, जिसने दौड मे अपनी टाग तोड ली थी, यह जल्दबाजी अच्छी न लगी। उसे अपनी कृति पर बडा नाज था और अपने ग्राहक को माल देने का आनन्द वह तनिक देर तक उठाना चाहता था।

उसने उन पैरो को अपनी आस्तीन मे पोछकर चमकाया, उगली के नाखून से खरोचकर एक के ऊपर से कोई धब्बा मिटाया, उस जगह मुह से थोडी भाप छोडी और अपने बर्फ जैसे सफेद लबादे मे पोछ दिया, फिर वे पैर फर्श पर खडे कर दिये, वे जिस कपडे में लिपटे थे, उसे आहिस्ते से तह कर जेब में रख लिया।

"आओ भी बुढऊ, जरा पहनकर देखे," मेरेस्येव ने चारपाई के किनारे बैठते हुए अधीरता से कहा।

किसी अजनबी जैसी आखो से उसने अपनी टागो के नगे ठूठो को देखा और उन्हे देखकर प्रसन्न हुआ। वे पुष्ट और सुगठ मालूम होते थे, और उनपर उस तरह चरबी नही चढी थी जैसी कि लगातार निश्चलता से अक्सर चढ जाया करती है, बल्कि पुष्ट मासपेशिया थी, जो सावली खाल के नीचे इस प्रकार सरकती दिखाई देती थी मानो वे किसी ठूठ की मासपेशिया नही, किसी ऐसे व्यक्ति के स्वस्थ अवयवो के पुट्ठे है जिसने तेज चाल से काफी घुमाई की हो।

दस्तकार ने उसका पैर भी चढ़ा दिया, लेकिन उसने तस्मे कस कर भी नहीं बांधे थे कि मेरेस्येव [illegible] झटका खाकर चारपाई से उछलकर फर्श पर आ गया। हल्का-सा धमाका हुआ। मेरेस्येव ने दर्द से चीख मारी और चारपाई की बगल में फर्श पर लम्बे लुढ़क गया।

बूढ़ा दस्तकार इतना विस्मित हुआ कि उसका चश्मा माथे पर चढ़ गया। वह अपने ग्राहक को इतना अधीर न समझता था। मेरेस्येव फर्श पर किंकर्तव्यविमूढ़ और असहाय-सा पड़ा था, उसके बूट चढ़े कृत्रिम पैर फैले हुए थे। उसकी आंखों में परेशानी, पीड़ा और भय का भाव था। तो क्या अब तक वह अपने को धोखा देता रहा है?

आश्चर्यवश अपने हाथ से हाथ जोड़कर क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसकी ओर दौड़ी। बूढ़े दस्तकार की सहायता से, उसने अलेक्सेई को उठाया और चारपाई पर बैठा दिया। शिथिल और हताश भाव से वह बैठा था, निराशा की मूर्त्ति बना।

"ए-एह, भले आदमी! तुम्हे यह नही करना चाहिए!" बूढ़े दस्तकार ने हिदायत दी। "तुम तो ऐसे उछल पड़े मानो यह असली, सजीव पैर हों। लेकिन तुम्हे दिल छोटा नही करना चाहिए। तुम्हे चलना सीखना पडेगा, बिल्कुल शुरू से। इस समय भूल जाओ कि तुम सिपाही हो। समझ लो कि नन्हे बच्चे हो, और तुम्हे कदम-ब-कदम चलना सीखना होगा, पहले बैसाखी के जरिए, फिर दीवार पकड़कर और उसके बाद छडी लेकर। तुम एकदम ही सब नही कर सकते, तुम्हे धीरे-धीरे सीखना होगा। लेकिन तुम हो कि इस तरह उतावले हो उठे! ये बढ़िया पैर हैं, लेकिन तुम्हारे अपने नही। तुम्हारे लिए वैसे पैर कोई नहीं बना सकता, जैसे तुम्हारे मा-बाप ने दिये थे।"

इस दुर्भाग्यपूर्ण उछाल के बाद अलेक्सेई की टागें बुरी तरह दुखती रही, लेकिन इस सबके बावजूद वह इन कृत्रिम पैरों को फौरन परखने के लिए आतुर था। वे उसके लिए अलुमीनम की बनी हल्की बैसाखी ले आये। उसने बैसाखी की नोंके फर्श पर रखी, उसकी गद्दियों को बगल में दबाया और अहिस्ते से इस बार सावधानी से, वह चारपाई से उठा और पैरो पर खडा हो गया। और सचमुच, इस तरह कदम रखे मानो वह बच्चा हो जो अभी-अभी चलना सीखने के लिए खडा हुआ हो, और सहज प्रवृत्तिवश यह भाप रहा हो कि वह चल सकता है, मगर दीवार के जीवनरक्षक सहारे के छूट जाने के भय से आशकित हो। मा या दादी की तरह, जो बच्चे के वक्ष पर तौलिया लपेटकर उसे पहली बार चलने के लिए ले जाती है, क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने सावधानी से उसको एक तरफ सहारा दिया और दूसरी तरफ बूढे दस्तकार ने। उस जगह पर, जहा पैर टाग से बधे हुए थे, सख्त दर्द महसूस करते हुए वह एक क्षण तो खडा रहा। फिर हिचकते हुए उसने बैसाखी की एक टाग आगे बढायी और फिर दूसरी भी, और उनपर अपने शरीर का बोझ टिकाकर एक पैर आगे बढाया और फिर दूसरा। चमडे के चर्राने

की ग्रावाज सुनाई दी ग्रौर साथ मे फर्श पर पैरो के गिरने की दो जोरदार थापे।

"मुवारिक हो। मुवारिक हो !" बूढे दस्तकार ने ग्राहिस्ते से कहा।

मेरेस्येव ने सावधानी से कुछ डग ग्रौर भरे, लेकिन कृत्रिम पैरो के ये प्रारम्भिक कदम इतने महगे पडे कि जव दरवाजे तक जाकर वह चारपाई पर वापिस लौटा तो उसे महसूस हुग्रा मानो कोई पियानो लादकर वह चार मजिल ऊपर चढकर रख ग्राया हो। वह विस्तर पर ग्रौधा लेट गया—पसीना बुरी तरह छूट रहा था, ग्रौर इतना कमजोर महसूस कर रहा था कि करवट लेकर पीठ के वल लेटना कठिन था।

"कहो, तुम्हे कैसे लगे ये? भगवान को धन्यवाद दो कि दुनिया मे जूयेव सरीखा ग्रादमी मौजूद है," बूढे ने शेखी वघारते हुए कहा ग्रौर तस्मे खोलकर ग्रलेक्सेई की टागे मुक्त कर दी जो ग्रनभ्यस्त दवाव के कारण हल्की-सी सूज ग्रायी थी। "इनके सहारे तुम न सिर्फ मामूली तौर से उडान कर सकोगे, वल्कि खुद भगवान के यहा तक पहुच सकोगे। वढिया काम है, वताये देता हू।"

"धन्यवाद। धन्यवाद, वुढऊ। वढिया काम है। मैने भी देख लिया है।" ग्रलेक्सेई वुदवुदाया।

दस्तकार कुछ ग्रकुलाहट में थोडी देर खडा रहा, मानो वह कोई सवाल पूछना चाहता है ग्रौर हिम्मत नही कर पा रहा है, या शायद, किसी सवाल के पूछे जाने की ग्राशा कर रहा है। ग्राखिरकार मायूसी की सास भरकर, उसने धीरे-धीरे दरवाजे की ग्रोर वढते हुए कहा "ग्रच्छा तो सलाम! इनके इस्तेमाल मे तुम्हारी कामयावी चाहता हू।"

लेकिन उसके दरवाजे तक पहुचने के पहले स्त्रुच्कोव ने पुकारा

"ऐ वुढऊ! यह लेते जाग्रो ग्रौर वादशाहो के काविल पैरो के वनाने की कुछ पी-पिला लेना!" इतना कहकर उसने रूवलो के नोटो की एक गड्डी उसे थमा दी।

प्रसन्नतापूर्ण पत्र था, अपनी प्रेमिका के नाम पहला पत्र, कि जिसमे उसने प्रगट किया था कि वह हमेशा ही उसकी याद किया करता है, उसके लिए व्याकुल रहा करता है। किंचित कातरता से, युद्ध के बाद दोनो के पुनर्मिलन के विषय मे अपने चिर संचित स्वप्न को और, अगर ओल्या ने अपना विचार न बदल दिया हो तो साथ मिलकर अपने घर की दुनिया बनाने की साध को भी, उसने व्यक्त कर दिया था। उसने यह पत्र कई बार पढा और अत मे भारी सास लेकर उसने अतिम पक्तिया काट दी।

दूसरी तरफ, इस महान दिन का उत्साहपूर्ण वर्णन करते हुए, उसने 'मौसमी सार्जेन्ट' के नाम पत्र लिखा जिसके एक एक शब्द से उल्लास और उमग फूटी पडती थी। उसने इन कृत्रिम पैरो का, जिस प्रकार के किसी शहशाह ने भी नही पहने, एक रेखाचित्र भी बना दिया, यह वर्णन कर दिया कि उन्हे पहनकर उसने प्रारम्भिक कदम किस प्रकार रखे थे, और उस बकवादी दस्तकार के बारे मे तथा उसकी इस भविष्यवाणी के बारे मे कि इन्हे पहनकर वह, अलेक्सेई, साइकिल पर सवार हो सकेगा, पोलका नाच सकेगा और सातवे आसमान तक उडकर जा सकेगा, उसने उसे सब कुछ लिख दिया। "और इसलिए तुम रेजीमेंट मे मेरे फिर आने की आशा कर सकती हो, कमाडेन्ट से कह देना कि नये अड्डे में वह मेरे लिए भी जगह रखे," उसने फर्श की तरफ कनखियो से नजर डालते हुए लिख डाला। उधर वे पैर इस तरह पडे हुए थे मानो कोई व्यक्ति पैर फैलाये हुए चारपाई के नीचे छिपा हुआ है और उसके नये भूरे जूते चारपाई के बाहर झाक रहे हो। अलेक्सेई ने चारो तरफ नजर डाली कि कोई उसकी तरफ देख तो नही रहा और फिर उनके ऊपर झुककर बडे प्यार से ठडे, चर्र बोलते हुए चमडे को थपथपाने लगा।

एक और भी स्थान था, जहा वार्ड बयालीस मे "बादशाह के योग्य कृत्रिम पैरो" के जोडे के प्रगट होने की घटना पर उत्सुकतापूर्वक

बहस हो रही थी, और वह थी मास्को विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग के तृतीय वर्ष की कक्षा। उस कक्षा की सभी लड़कियां, और उन दिनों उन्ही की सख्या सबसे ज्यादा थी, वार्ड बयालीस की एक एक घटना से पूरी तरह परिचित रहती थी। अन्यूता को अपने पत्र-व्यवहार पर बड़ा गर्व था और अफसोस कि लेफ्टीनेंट ख्वोरदेव के पत्र, जो सार्वजनिक सूचना के लिए नही लिखे जाते थे, वहा जोर जोर से पढ़कर सुनाये जाते थे—आशिक रूप से या पूरी तरह—सिर्फ आत्मीयतापूर्ण स्थल छोड़ दिये जाते थे, और सयोग से, जैसे-जैसे पत्र-व्यवहार आगे चला, उस तरह के स्थल अधिकाधिक प्रगट होने लगे।

चिकित्सा विज्ञान के तृतीय वर्ष के सभी छात्र वीर योद्धा ख्वोरदेव से प्रेम करने लगे थे, रूखे कुकूश्किन को नापसद करते थे, मेरेस्येव के अदम्य उत्साह की प्रशसा करते थे और कमिसार की मृत्यु से तो उन्हें अपने आत्मीय का बिछोह महसूस हुआ, क्योंकि उसके विषय में ख्वोरदेव का कवित्वपूर्ण वर्णन पढ़कर वे सभी उसको यथायोग्य सराहना और उससे प्रेम करने लगे थे। जब उन्होंने सुना कि उस विशाल हृदय, उत्साहपूर्ण व्यक्तित्व की इहलीला समाप्त हो गयी तो उनमें से अनेक अपने आसू न रोक सके थे।

अस्पताल और विश्वविद्यालय के बीच पत्रो का आदान-प्रदान अधिकाधिक बढ़ता गया। वे युवक-युवतिया साधारण डाक से सतुष्ट न होते थे, क्योंकि वह उन दिनो बड़ी धीमी थी। एक पत्र में ख्वोरदेव ने कमिसार की यह उक्ति लिखी थी कि आज चिट्ठिया अपने स्थान पर इस तरह पहुचती है जैसे सुदूर तारिकाओ की रोशनी। पत्र-लेखक की जिदगी की रोशनी बुझ भी जायगी, मगर उसका पत्र मद गति से ही जायगा और अतत प्राप्तकर्त्ता के पास पहुचकर व्यक्ति के बारे में बतायगा जो बहुत दिनो पहले मर चुका होगा। व्यावहारिक और चतुर अन्यूता ने पत्र-व्यवहार का और भी विश्वस्त उपाय खोजने का प्रयत्न किया और

एक बुजुर्ग नर्स को ढूढ निकाला जो विश्वविद्यालय के चिकित्सालय और वसीली वसील्येविच के अस्पताल मे, दोनो ही जगह काम करती थी।

इसके बाद से तो विश्वविद्यालय को वार्ड बयालीस की घटनाओं की जानकारी दूसरे ही दिन और बहुत देर हुई तो तीसरे दिन तक, होने लगी, और शीघ्र ही जवाब भी दिया जाने लगा। भोजनशाला मे "शहशाह के योग्य कृत्रिम पैरो" के सिलसिले मे विवाद यह पैदा हुआ कि मेरेस्येव हवाई जहाज चला सकेगा या नही। यह विवाद जवानी के जोश से भरपूर था, जिसमे दोनो ही पक्ष मेरेस्येव से सहानुभूति रखते थे। लडाकू विमान चलाने के काम की जटिलता को दृष्टिगत करके निराशावादी दावा करते थे कि वह कभी नही उड सकेगा। किन्तु आशावादी यह तर्क देते थे कि जो व्यक्ति शत्रु से बच निकलने के लिए हाथ-पैर चारो के बल एक पखवारे तक घने जगल मे रेग सकता है—भगवान जाने, कितने किलोमीटर तक—उसके लिए कोई बात असम्भव नही है। और अपने तर्क के समर्थन मे आशावादी, इतिहास और उपन्यासो से उदाहरण उपस्थित करते थे।

इस विवाद मे अन्यूता ने कोई भाग नही लिया। एक अपरिचित हवाबाज के कृत्रिम पैरो के विषय मे उसे कोई दिलचस्पी नही थी। अवकाश के अत्यन्त अल्प क्षणो में वह ग्वोज्देव के प्रति अपनी मनोभावनाओ के विषय मे विचार करती जो—उसे ऐसा अनुभव होता था—अधिकाधिक जटिल होती जा रही थी। प्रारम्भ मे इस वीर कमाडर के विषय मे सुनकर, जिसका जीवन इतना दुखद था, उसके सताप को हरने की निस्वार्थ आकाक्षा से उसने पत्र लिखा था। लेकिन पत्र-व्यवहार के दौर मे, जैसे-जैसे उनका परिचय बढता गया, देशभक्तिपूर्ण युद्ध के एक वीर की अस्पष्ट आकृति के स्थान पर, उसके मस्तिष्क में, एक वास्तविक, सजीव युवक का चित्र उभरने लगा, और इस युवक मे उसकी दिलचस्पी अधिकाधिक बढने लगी। उसने अनुभव

किया कि उसके पास से जब कोई पत्र नही आता है तो वह चिन्तित और उदास हो उठती है। यह एक नयी बात थी और इससे वह आनन्दित हुई और भयभीत भी। क्या यह प्रेम था? एक ऐसे व्यक्ति को, जिसको कभी देखा नही, जिसकी आवाज कभी सुनी नही, जिसको तुम सिर्फ पत्रो मे जानते हो, उसको प्यार करना क्या सम्भव है? टैक-ल्यानर के पत्रो में अधिकाधिक ऐसे स्थल आने लगे जिन्हे वह साथिन छात्राओं को पढकर न सुना पाती थी। ग्वोज्देव ने जब अपने एक पत्र मे यह स्वीकार किया कि वह "पत्र-व्यवहार के द्वारा प्रेम मे पड गया है"—उसने इसी तरह अभिव्यक्त किया था—तो उसके बाद अन्यूता को भी अहसास हुआ कि वह भी प्रेम करने लगी है—स्कूली लडकियो जैसा प्रेम नही, वास्तविक प्रेम। उसने महसूस किया कि अगर उसे वे पत्र प्राप्त होना बद हो गये, जिनकी अब वह इतनी अधीरता से प्रतीक्षा करती है, तो उसके लिए जीवन की सार्थकता समाप्त हो जायेगी।

और इसलिए उन दोनो ने, कभी मिले बिना ही, एक दूसरे से प्रेम स्वीकार कर लिया, किन्तु इसके बाद ग्वोज्देव के साथ जरूर कोई विचित्र बात घट गयी होगी। उसके पत्र भीरु, अशान्त और अस्पष्ट हो उठे। बाद मे उसने अन्यूता को यह लिखने का साहस कर ही लिया कि बिना मिले ही एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम स्वीकार कर उन्होने गलती की, शायद अन्यूता को यह पता नही कि उसका चेहरा कितने भयकर रूप से विकृत हो गया है और आज वह उस पुराने फोटोग्राफ जैसा बिल्कुल नही है, जो उसने भेज दिया था। उसने लिखा था कि वह उसको धोखा नही देना चाहता और इसलिए यह अनुरोध किया था कि उसके प्रति अपनी भावनाओ को प्रगट करना तब तक बद रखे, जब तक वह स्वय अपनी आखो से न देख ले कि वह कौन है जिसे वह प्यार कर रही है।

यह पढकर अन्यूता को पहले तो क्रोध आया और फिर भय भी अनुभव हुआ। उसने जेब से वह फोटोग्राफ निकाला। उसमे से एक

दुबला-पतला, युवा मुखमण्डल झाक उठा, जिस पर दृढता के भाव थे—सुन्दर, सीधी नाक, छोटी-छोटी मूछे, और सुगढ मुख। "और अब? अब तुम कैसे लगते हो, मेरे प्यारे प्रियतम?" वह उस फोटोग्राफ की तरफ निहारती हुई बुदबुदायी। चिकित्सा-विज्ञान की छात्रा की हैसियत से वह जानती थी कि जलने के घाव बुरी तरह भरते है और गहरे, अमिट निशान छोड जाते है। किसी कारण उसकी आखो के सामने, शरीर विज्ञान के सग्रहालय मे देखे उस आदमी के चेहरे का मॉडल घूम गया, जिसे एक चर्म रोग था नीले-नीले चकत्तो और फुसियो से भरा चेहरा, ऊबडखाबड़, सूखे होठ, भौहो के छोटे-छोटे लोदे और बरौनियो से रहित लाल पलके। कही वह भी ऐसा ही न हो? यह विचार आते ही उसका चेहरा भय से पीला पड गया, लेकिन उसने फौरन अपने को झिड़क दिया। अच्छा, मान लो, वह ऐसा ही है? ज्वालाओ से लहकता टैंक लेकर वह हमारे शत्रुओ से लडा और अन्यूता की स्वतन्त्रता, उसकी शिक्षा के अधिकार, उसकी इज्जत, उसकी जिदगी, सभी की रक्षा की। वह वीर पुरुष है। उसने अपना जीवन कितनी बार ख़तरे में डाला है और आज भी वह मोर्चे पर पुन लौट जाने के लिए, पुन लडने और अपने जीवन को खतरे मे डालने के लिए उत्कण्ठित है। और अन्यूता ने स्वय युद्ध मे क्या किया है? उसने भी खाइया खोदी, हवाई हमले से रक्षा की ड्यूटिया दी है, और फौजी अस्पताल मे काम कर रही है। लेकिन ग्वोज्देव के काम की तुलना में उसका यह काम क्या है? "इन सदेहो के कारण ही मैं उसके अयोग्य सिद्ध हो जाती हू।" उसने अपने पर लानत भेजी और इस प्रकार उस विकृत चेहरे के भयानक दृश्य को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न किया जो उसकी आखो के सामने उठ आया था।

उसने ग्वोज्देव को एक पत्र लिखा—अब तक के सम्पूर्ण पत्र-व्यवहार मे सबसे लम्बा और सबसे कोमल। उसके हृदय में जिन सदेहो ने

द्वंद्व मचाया था, उनके विषय मे, स्वभावत ग्वोज्देव को कुछ नही पता चला। उसने तो उत्सुकतापूर्ण पत्र लिखा था, उसके उत्तर मे इतना शानदार जवाब मिला तो वह उसे बार-बार पढे बिना न रह सका। उसने स्म्रुच्कोव तक को इसके बारे मे बता दिया, जिसने यह सब सुनने के बाद बडा रस लेते हुए कहा

"अपनी हिम्मत दिखाओ, टैंक-चालक। तुम यह कहावत जानते हो 'सुन्दर तन, पर मन के पाहन। साधारण तन, मन के कचन।' यह बात आज और भी सच है, जब आदमी मिलने इतने कठिन हो गये है।"

जाहिर है, इस दिलजोई से भी ग्वोज्देव को सात्वना न मिल सकी। अस्पताल से छूटने का दिन जितना नजदीक आता जाता, उतना ही अधिक बार-बार वह शीशे मे कभी दूर खडे होकर आखें दौडाते हुए सरसरी नजर डालता और कभी अपना चेहरा शीशे से बिल्कुल सटा लेता, वह दागो की मालिश करता और घटो तक चेहरे को थपथपाता रहता।

उसकी प्रार्थना पर क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसके लिए मुह का पाउडर और क्रीम खरीद लायी, शीघ्र ही उसे विश्वास हो गया कि चेहरे के दोष को कोई प्रसाधन सामग्री ठीक नही कर सकती। फिर भी रात को जब सारे लोग सो जाते, तो वह चुपके से टट्टी मे घुस जाता और बडी देर तक दागो की मालिश करता, उनपर पाउडर लगाता रहता और फिर मालिश करता और फिर बडी आशाए सजोकर शीशे में देखता। दूर से वह रोबदार व्यक्ति लगता था हृष्ट-पुष्ट आकृति, चौडे कधे और सीधी, पुष्ट टागो पर पतली-सी कमर। लेकिन नजदीक से। कपोलो और ठोडी पर लाल-लाल दाग और तनी हुई, सिकुडनदार खाल देखकर वह निराशा मे डूब जाता। "इसे वह देखेगी तो क्या सोचेगी?" वह अपने मन मे पूछता। वह डर जायगी। वह उसपर नजर डालेगी,

मुह फेर लेगी और अपने कधे उचकाकर वापिस चली जायगी। या—जो और भी बुरा होगा—वह सौजन्यवश एक-आध घटे बात करेगी और फिर कोई रस्मी और रूखी बात कह बैठेगी—और फिर अलविदा। वह क्रोध से इस तरह पीला पड जाता, मानो यह बात अभी ही उसके साथ घट गयी हो।

तभी वह अपने लबादे की जेब से एक फोटोग्राफ निकाल लेता और उस गोल चेहरेवाली लडकी के नखशिख को आलोचनात्मक दृष्टि से परखने लगता—नर्म और बारीक, मगर घनी केशराशि ऊचे मस्तक पर पीछे की ओर कढी हुई, मोटी-सी, ऊपर की ओर कुछ मुड़ी हुई, वास्तविक रूप मे रूसी नाक, और कोमल, शिशु-सुलभ अधर। ऊपर के होठ पर एक तिल मुश्किल से ही दिखाई देता था। वह निश्छल, मधुर मुखमण्डल, एक जोडा भूरी या शायद नीली आखें जो किंचित उभरी हुई थी, उसकी ओर बडी हार्दिकता और स्पष्टता से ताक रही थी।

"मुझे बताओ। तुम कैसी हो? तुम डर तो नही जाओगी? तुम भाग तो नही जाओगी? क्या तुम्हारे पास यह देख सकने का कलेजा है कि मैं कितना दानवाकार हू?" इस फोटोग्राफ की तरफ टकटकी बाधकर देखते हुए वह पूछता।

तभी बैसाखी खटपटाते हुए और चमडा चर्राते हुए सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव उसके पास से गुजरता, गलियारे मे इधर से उधर और उधर से इधर तक अथक रूप से फुदकते हुए—एक बार, दो बार, दस बार, बीस बार। अपने लिए उसने जो कार्यक्रम बनाया था, उसके अनुसार यह चहलकदमी सुबह शाम बराबर करता और हर दिन अपने अभ्यास की अवधि बढाता जाता।

"यह बडा बढिया आदमी है!" ग्वोज्देव ने उसके बारे मे अपने आप से कहा। "सच्ची जीवट का। असम्भव शब्द तो उसके लिए है

ही नही। हफ्ते भर में ही बैसाखी के बल चलना सीख लिया। कुछ लोगो को इसमे महीनों लगते है। कल उसने स्ट्रेचर से भी इनकार कर दिया और अपनी चिकित्सा के लिए सीढियो से उतरकर नीचे पहुचा और फिर ऊपर चढ आया। उसकी आखो से आसुओं की धारा बह रही थी, मगर वह चलता ही रहा—उस अर्दली पर चीख तक उठा जो उसकी मदद करना चाहती थी। और जब वह किसी सहायता बिना ऊपर पहुच गया तब क्या वह मुसकुरा न उठा था। मानो वह एल्बरस पर्वत की चोटी पर चढ गया हो!

ग्वोज्देव ने शीशे से नजर हटायी और मेरेस्येव को बैसाखी के बल फुदकते देखने लगा। "इसे देखो। सचमुच दौड रहा है! और इसका मुखडा कितना सुन्दर और सुगढ है। भौहों पर एक छोटा-सा दाग जरूर है, मगर उससे उसकी आकृति कुछ बिगडती नही, उलटे कुछ सुधर ही गयी है।" ऐसा चेहरा, काश, उसका—ग्वोज्देव का—भी होता। पैरो का क्या? पैर कोई नही देखता। और फिर वह तो चलना-फिरना सीख लेगा, और हवाई जहाज चलाना भी। लेकिन ऐसी भोंटी सूरत को कोई कैसे छिपायेगा, जिसे देखने से ऐसा लगता है, मानो नशे में धुत्त शैतानो ने उसपर रात भर मटर की दाय चलायी हो।

अलेक्सेई मेरेस्येव अपनी दोपहर की कसरत के दौर में गलियारे का तेईसवा चक्कर लगा रहा था। उसे अपने सारे शरीर पर, सूजी हुई जघाओ की जलन और बैसाखी की गद्दियो के ऊपर कधो का दर्द महसूस हो रहा था। वह फुदकता जा रहा था और कनखियो से शीशे के सामने खडे टैंक-चालक को भी देखता जा रहा था। "विचित्र व्यक्ति है!" उसने मन में विचार किया। "अपनी सूरत के बारे में उसे इतनी फिक्र क्यो है? कोई सिनेमा अभिनेता तो उसे बनना नही है। रहेगा टैंक-चालक ही। इससे उसे कौन रोक सकता है? जब तक दिमाग, भुजाए और टागें सही सलामत है, तब तक चेहरे से क्या बनता-बिगडता

है। हा टागें हो, असली टागे, इस तरह के ठूठ नही, जिनमें इस तरह दर्द और जलन होती है, मानो कृत्रिम पैर चमडे के नही सुर्ख गरम लोहे के बने हो।"

टप-टप। चर्र-चर्र। टप-टप। चर्र-चर्र।

होठ काटते हुए और आसू रोकते हुए, जो अपने पर काबू करने के बावजूद, दर्द के कारण आखो तक उमड आये थे, सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव ने बडी कठिनाई से गलियारे का उन्तीसवा चक्कर पूरा किया और आज की कसरत खत्म की।

१४

ग्रिगोरी ग्वोज्देव ने जून के मध्य में अस्पताल छोड दिया।

जाने से एक दो दिन पहले उसने अलेक्सेई से अच्छी, लम्बी बातचीत की। इस बात से कि विपत्ति मे वे एक दूसरे के साथी रहे और उनकी व्यक्तिगत समस्याए समान रूप से जटिल थी, वे एक दूसरे के नजदीक खिच आये थे और जैसा कि ऐसे मामलो मे होता है, उन्होने एक दूसरे के सामने अपने दिल खोलकर रख दिये थे, भविष्य के प्रति अपनी अपनी आशकाओ के विषय में एक दूसरे को साफ-साफ बता दिया था और वह सब भार उतार दिया था, जिसे बरदाश्त करना उन दोनो के लिए दूना कठिन था, क्योंकि स्वाभिमानवश वे अपनी-अपनी विपत्ति को दूसरो से बटा नही पाते थे। दोनो ने एक दूसरे को अपनी मित्र लडकियो के चित्र दिखाये।

अलेक्सेई के पास ओल्गा का किंचित घिसा हुआ और धुधला फोटोग्राफ था जो उसने जून के उस निर्मल-उज्ज्वल दिन स्वय खीचा था जब उन्होने वोल्गा के दूसरे तट पर फूलो से भरे स्तेपी मैदान में घास पर दौड लगायी थी। छरहरी लड़की, चटकीली सूती छीट की फ्राक पहने

हुए, पैर समेटे बैठी थी और जगली फूल उसकी गोद में उन्मुक्त रूप से खेल रहे थे। पूर्ण रूप से विकसित वाबूने के पुष्पों के बीच घास पर बैठी हुई वह स्वय प्रातःकालीन ओस से भीगे बाबूने की भाति सफेद और निर्मल लग रही थी। विचारलीन-सी वह अपना सिर एक ओर झुकाये हुए थी और उसकी आखे विस्फारित और आनन्द-विह्वल थी, मानो वह इस ऐश्वर्यपूर्ण ससार को जीवन मे पहली बार देख रही है।

इस फोटोग्राफ की ओर देखने के बाद, टैंक-चालक ने कहा कि इस प्रकार की लडकी किसी को विपत्तिकाल में नही त्याग सकती, लेकिन अगर वह त्याग दे—तो वह जहन्नुम मे जाय—इससे यही साबित होगा कि उसका रूप-रग फरेबी है, और ऐसी सूरत मे, यही बेहतर है कि वह उसे छोड ही जाय, क्योंकि वह सडी-गली है, और ऐसी सडी-गली लडकी के साथ जीवन भर अपने को बाधने से कोई लाभ नही, क्यो?

अलेक्सेई को अन्यूता का मुखडा पसद आया और, अनजाने ही, वह ग्वोज्देव से उसी तरह के विचार प्रगट कर गया—मगर अपने ही ढग से—जो विचार अभी ग्वोज्देव ने व्यक्त किये थे। उनकी बातो में कोई गहनता नही थी, और उनसे उनकी अपनी समस्याओ को हल करने में जरा भी सहायता न मिली, मगर दोनो को राहत महसूस हुई, मानो कोई बडा और पुराना फोडा फूट गया हो।

उन्होने निश्चित किया कि जब ग्वोज्देव अस्पताल से चला जायगा, तब वह और अन्यूता—जिसने आने और उससे मिलने का वायदा किया था—वार्ड की खिडकी के तले से गुजरेगे और उसके बाद अलेक्सेई ग्वोज्देव को पत्र लिखकर बतायेगा कि उस लडकी ने उसपर क्या प्रभाव डाला। उधर ग्वोज्देव ने अलेक्सेई को पत्र लिखने का और यह बताने का वायदा किया कि अन्यूता उससे किस प्रकार मिली, उसका विकृत चेहरा देखकर उसके मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई और उन दोनो में कैसी

निभ रही है। इसपर अलेक्सेई ने निश्चय कर लिया अगर ग्रीशा के साथ अच्छी बीती तो वह फौरन ओल्या को लिख देगा और अपने बारे मे उसे सब कुछ बता देगा, लेकिन यह अनुरोध कर लेगा कि मा को इसकी खबर न दी जाय, क्योंकि वह अभी भी बहुत बीमार हे और चारपाई मुश्किल से छोड पाती है।

इसी से पता चल जाता है कि टैक-चालक के मुक्त होने की पूर्वाशा के कारण वे दोनो क्यो इतने उत्तेजित थे। वे इतने उत्तेजित थे कि दोनो ही न सो सके, और रात को दोनों के दोनो चुपके से गलियारे में खिसक गये–ग्वोज्देव शीशे के सामने एक बार फिर अपने मुह के दागो की मालिश करने के लिए, और मेरेस्येव वैसाखी के छोरो पर गद्दिया लगाकर उनकी खटपट शान्त करके अपनी चलने-फिरने की कसरत का एक और अतिरिक्त क्रम पूरा कर डालने के लिए।

दस बजे क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड मे आयी और रहस्यपूर्ण मुसकुराहट के साथ ग्वोज्देव से बोली कि उससे कोई मिलने आया है। ग्वोज्देव बिस्तर से इस प्रकार उछल पडा मानो वह हवा के झोके से उड गया हो। इतनी बुरी तरह लजाते हुए कि उसके चेहरे के निशान पहले से भी अधिक प्रत्यक्ष रूप मे उभर आये, वह जल्दी-जल्दी अपनी चीजें समेटने लगा।

"वह बडी भली लडकी है, और इतनी गम्भीर दिखाई देती है," नर्स ने ग्वोज्देव को जल्दी-जल्दी अपने जाने की तैयारी करते देखकर मुसकुराते हुए कहा।

ग्वोज्देव का चेहरा आनन्द से दमक रहा था।

"क्या कह रही हो? तुम्हे वह पसन्द है? वह भली लडकी है, क्या नहीं?" उसने पूछा, और उत्तेजनावश, दुआ-सलाम करना भूलकर, वह वार्ड के बाहर भाग गया।

"बच्चा है! इसी तरह के लोग जाल में फस जाते है," मेजर स्त्रुच्कोव बडबडाया।

इस उन्मत्त व्यक्ति को पिछले कुछ दिनों में न जाने क्या हो गया था। वह चिडचिडा हो गया था, अक्सर बिना बात गुस्से में भड़क जाता था, और आजकल चूंकि बिस्तर पर बैठने योग्य हो गया था, इसलिए वह अपनी मुट्ठी पर कपोल टिकाये दिन भर खिड़की के बाहर ताकता रहता था और कोई बोले तो जवाब तक नहीं देता था।

सारा वार्ड—उदास मेजर, मेरेस्येव और दो नये मरीज—अपने वार्ड के भूतपूर्व साथी के सडक पर प्रगट होते देखने के लिए खिड़कियों के बाहिर झांक रहा था। दिन तनिक गर्म था। दीप्तमान, सुनहरी कोरों से सजे, हल्के-हल्के तरंगित बादल आसमान में तेजी से तिर रहे थे और रूप बदल रहे थे। उसी समय एक छोटी-सी, स्याह फूली-फूली घटा तेजी से नदी के ऊपर से गुजर रही थी और बूंदें बिखेर रही थी जो धूप में चमक उठती थी। इससे किनारे की पथरीली दीवारें इस प्रकार चमक उठी थी, मानो उन पर पालिश कर दी गयी हो, कोलतार की सडक पर काले, सगमरमर जैसे चकत्ते पड गये थे, और उससे ऐसी बढ़िया नम भाप उड रही थी कि वर्षा की इन आनन्ददायक बूंदों को पकडने के लिए सिर खिडकी से बाहर निकालने को जी चाहता था।

"वह आ रहा है," मेरेस्येव फुसफुसाया।

प्रवेश द्वार के भारी, बलूत की लकडी के दरवाजे धीरे-धीरे खुले और उनसे दो व्यक्ति प्रगट हुए; एक तो किंचित स्थूलकाय महिला, नगे सिर, अपने बालो को माथे से पीछे की ओर काढे हुए, सफेद ब्लाउज और काला साया पहने, और एक युवा सिपाही, जिसे अलेक्सेई पहली नजर में भी न पहचान पाया कि वह टैंक-चालक है। एक हाथ में वह अपना सूटकेस लिए था और दूसरे हाथ पर ओवरकोट डाले था, और वह ऐसी लचकदार चाल से चल रहा था कि उसकी ओर निहारते रहना बडा सुखद था। स्पष्ट था, वह अपनी शक्ति की परीक्षा कर रहा था और

सितारे और चांद धुएं और धूल पर गायब हो गये। खामोशी के साथ सभी मरीज अपने-अपने बिस्तरों पर लौट आये।

"हमारे मोर्चे से बात बनी नहीं" मेजर ने राय प्रगट की, लेकिन गलियारे में क्लावदिया मिखाइलोव्ना की एड़ियों की टप-टप सुनकर वह चौंक गया और यकायक खिड़की की तरफ मुंह मोड़ लिया।

अलेक्सेई उस दिन बेचैन रहा। उसने अपनी शाम की कसरत तक छोड़ दी और सभी से पहले लेट गया, मगर उसकी चारपाई

की खिरगे, शेष सभी मरीजो के सो जाने के बहुत देर बाद तक सरसर्र बोलती रही।

अगले दिन सुबह नर्स कमरे में घुस भी न पायी थी कि उसने पूछा कि उसके लिए कोई चिट्ठी तो नही आयी है। कोई चिट्ठी न आयी थी। उसने बडी उदासीनता के साथ हाथ-मुह धोया और नाश्ता किया, लेकिन उसने टहलने की कसरत रोज के मुकाबले अधिक देर तक की, पिछली शाम उसने जो कमजोरी दिखाई थी, उसके लिए अपने को दण्ड देने के लिए उसने पद्रह चक्कर अधिक लगाये ताकि जो कसरत उसने नहीं की थी, उसकी कमी पूरी हो सके। इस अप्रत्याशित सफलता से वह अपनी चिन्ता भूल गया। उसने सिद्ध कर दिया था कि अब वह थके बिना बैसाखी के बल चाहे जितना घूम सकता है। गलियारा पचास मीटर लम्बा था। जितनी बार उसने गलियारे का चक्कर लगाया था उनमें यानी पैतालीस से गुणा करने से दो हजार दो सौ पचास मीटर या सवा दो किलोमीटर होता है—यह उतना ही हुआ, जितना अफसरो के भोजनालय से हवाई अड्डा है। वह मन ही मन उस चिरस्मरणीय मार्ग का ध्यान करने लगा जो पुराने ग्रामीण गिरजे के खण्डहरो के पास से गुजरता है, जले हुए स्कूल के ईटो के ब्लाक के पास से गुजरता है जो अपनी काच रहित खिडकियो की खोखली आखो से शोकपूर्वक सडक की ओर ताक रहा था, उस जगल से गुजरता है जहा ईधन से लदी ट्रके देवदार की शाखो से छिपी खडी थी, कमाडर के खोह के पास से निकलता है और उस नन्ही-सी लकडी की झोपडी के पास से गुजरता है, जहां नक्शो और चार्टो के ऊपर झुकी हुई 'मौसमी सार्जेन्ट' अपनी रस्में पूरी करने में जुटी रहती है। कितना लम्बा मार्ग है। भगवान की सौगध, बहुत ही लम्बा मार्ग है।

मेरेस्येव ने अपना दैनिक अभ्यास छयालीस चक्कर तक बढाने का निश्चय किया, तेईस सुबह और तेईस शाम को, और अगले दिन

सुवह, जव वह रात भर आराम करने के वाद ताज़ा होगा, तो वैसाखी के विना चलने का प्रयत्न करेगा। इससे निराशापूर्ण विचारो की ओर से फ़ौरन उसका ध्यान हट गया, उसका मनोवल ऊचा हो गया और मानसिक अवस्था व्यावहारिक स्तर पर आयी। शाम को उसने इतने उत्साह से कसरत शुरू की कि उसे कुछ भान होने से पहले ही तीस चक्कर से ऊपर हो गये। इसी समय, एक चिट्ठी लेकर सामान घर के चपरासी के आ जाने से वाधा पड गयी। पत्र उसी के नाम था। छोटे-से लिफाफे पर पता लिखा था "सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव। अत्यन्त गोपनीय।" "अत्यन्त" शब्द रेखाकित था और अलेक्सेई को यही अच्छा नही लगा। अन्दर के पत्र पर भी "अत्यन्त गोपनीय" लिखा था और रेखाकित था।

खिडकी की पटिया पर झुककर अलेक्सेई ने पत्र खोला और इस लम्बे सदेश को, जिसे ग्वोज्देव ने पिछली रात स्टेशन पर लिखा था, जितना आगे वह पढता गया, उतना ही अधिक उसका चेहरा उदास होता गया। ग्वोज्देव ने लिखा था कि अन्यूता विल्कुल वैसी ही निकली, जैसी उन्होंने कल्पना की थी, कि वह शायद मास्को की सवसे सुन्दर लड़की है, कि वह उससे एक भाई की भाति मिली और उसे वह हमेशा से अधिक भाने लगी।

" लेकिन जिस चीज़ के वारे मे हम-तुमने वातचीत की थी, वह वैसी ही निकली जैसा की हमने कहा था। वह भली लडकी है। उसने मुझसे एक शब्द भी नही कहा और किसी वात का इशारा भी नही किया। उसने मुझसे वडे सहज भाव से व्यवहार किया। लेकिन मैं अधा नही हू। मैं देख रहा था कि मेरी विकृत, भोंडी सूरत देखकर वह भयभीत हो गयी है। हर वात ठीक नजर आती, मगर यकायक मुझे वह मेरी ओर इस तरह देखती जान पडती मानो वह लज्जित है, या भयभीत है या मेरे लिए दुखी है—मै नही कह सकता कि इनमे से क्या भाव था

वह मुझे अपने विश्वविद्यालय ले गयी। अच्छा होता कि मैं वहा न जाता। छात्राए मेरे चारो ओर जमा हो गयी और घूरने लगी तुम यकीन करोगे? वे हम सबको जानती थी! अन्यूता ने उन्हे हम सबके बारे में बता रखा था मै देख रहा था कि वह उनकी ओर क्षमा-याचना के भाव से देख रही थी मानो कह रही हो 'इस भयकर व्यक्ति को यहा लाने के वास्ते मुझे माफ करना।' लेकिन मुख्य बात, अल्योशा, यह है कि उसने भावनाए छिपाने का प्रयत्न किया। वह मेरे प्रति इतनी सहृदय और उदास थी कि इस तरह लगातार बात करती रही मानो बात खत्म करते डरती है। फिर हम उसके घर गये। वह अकेली रहती है। उसके मा-बाप अन्य विस्थापितो के साथ चले गये थे। स्पष्टतया वे काफी प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उसने मेरे लिए चाय बनायी और जब तक हम मेज के पास बैठे रहे, तब तक वह मेरा प्रतिबिम्ब निकिल की केतली में देखती रही और उससे डरती रही। सक्षेप मे, मैंने सोचा. 'भाई, इस तरह नही चल सकता।' मैंने उससे सीधे-सीधे कहा· 'मै देखता हू कि मेरी शक्ल-सूरत तुम्हारी मन-पसन्द नही है। बात ठीक है। मै समझता हू। मुझे बुरा नही लगा।' वह आसुओ मे फूट पड़ी, मगर मैंने उससे कहा 'रोओ मत। तुम भली लड़की हो। तुमसे कोई भी व्यक्ति प्रेम कर सकता है। तुम अपनी जिदगी बरबाद क्यो करो?' फिर मैंने उससे कहा 'अब तुमने देख ही लिया कि मै कितना सुन्दर हू। विचार कर देखना। मै अपनी सेना को लौट जाऊगा और अपना पता भेज दूगा। अगर तुम अपना इरादा न बदलो तो मुझे लिखना।' और मैंने उससे यह भी कहा 'अपने को किसी ऐसी बात के लिए मजबूर न करना जिसे तुम्हारा जी न चाहता हो। मै आज जीवित हू, मगर कल मर भी सकता हू—हम लोग लड़ाई के मैदान में है।' और सच, वह कहती ही रही· 'ओह, नही नही।' और रोती रही। इसी वक्त कम्बख्त खतरे का भोपू चीखने लगा—'अलर्ट!' वह बाहर चली गयी और मै इस

हलचल का लाभ उठाकर खिसक आया और सीधा अफसरो के हेड्क्वार्टर गया। उन्होंने मुझे फौरन तैनाती दे दी। अब सब ठीक हो गया है। मैं रेल-टिकट ले चुका हू और शीघ्र ही रवाना हो जाऊंगा। मगर मैं तुमसे कहूगा, अल्योशा, मैं उससे पहले से भी अधिक प्यार करने लगा हू और उसके बिना मैं कैसे जिदा रहूगा, मैं नही कह सकता।"

अपने मित्र का पत्र पढकर अलेक्सेई को लगा कि वह स्वय अपने भविष्य की ओर निहार रहा है। निस्सदेह यही उसके साथ भी बीतेगी। ओल्गा उसे अस्वीकार नही करेगी, उससे मुह नही मोडेगी, वह भी इसी प्रकार गौरवपूर्ण त्याग करना चाहेगी, वह उसके प्रति उदारता बरतेगी, आसुओ के बीच मुसकुरायेगी और अपने घृणाभाव को दबाने का प्रयत्न करेगी।

"नही! नही! मैं यह नही चाहता।" वह बोल उठा जो साफ सुना जा सकता था।

वह लगडाता हुआ वार्ड मे वापिस लौट आया, मेज के पास बैठ गया और सीधे-सीधे ओल्गा को पत्र लिखने लगा—सक्षिप्त, रूखा, यथा-तथ्य। वह सत्य प्रगट करने का साहस न कर सका। क्यो लिखे? उसकी मा बीमार है और उसके दुख को वह और क्यो बढाये? उसने ओल्गा को लिखा कि अपने आपसी सम्बन्धो के बारे मे उसने काफी विचार किया और इस परिणाम पर पहुचा कि ओल्गा के लिए प्रतीक्षा करना बड़ा कठिन होगा। कोई नही जानता युद्ध कितने समय और चलेगा, मगर वक्त और जवानी बीते जा रहे है। युद्ध ऐसी चीज है कि इतजार करना व्यर्थ भी हो सकता है। वह मारा जा सकता है और वह बिना उसकी पत्नी बने विधवा बनी रह जायगी, या, यह और भी बुरा होगा कि वह पगु हो जाय और उसे एक लगडे-लूले आदमी से विवाह करना पडे। उससे क्या लाभ होगा? इसलिए वह अपना यौवन बरबाद न करे और जितना शीघ्र हो सके

उसे भूल जाय। इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नही, अगर वह उत्तर न देगी तो उसे कुछ बुरा नही लगेगा। वह उसकी स्थिति समझता है—यद्यपि यह सब मान लेना उसके लिए कोई आसान नही है। लेकिन अच्छा यही होगा।

पत्र से मानो उसके हाथ जल रहे थे। उसे फिर पढे विना ही, उसने लिफाफे मे वन्द कर दिया और जल्दी ही उस नीली पत्र-पेटिका मे डाल आया जो जल-तापक के पीछे टगा हुआ था।

वह वार्ड मे लौट आया और फिर मेज के किनारे वैठ गया। अपना दुख वह किससे वाटे? अपनी मा से नही। ग्वोज्देव से? वह, सचमुच, उसका दुख समझ सकेगा, मगर वह कहा होगा? युद्ध मोर्चे की ओर जानेवाली सडको की भूल-भुलैया में वह उसका पता कैसे पा सकेगा? क्या उसकी सेना के नाम लिखा जाय? लेकिन उन सौभाग्यशाली व्यक्तियो को अपनी दैनिक युद्ध-व्यस्तता के वीच क्या उसकी चिन्ता करने का समय मिलता होगा? 'मौसमी सार्जेन्ट' को? हा, एक वह अवश्य है। वह फौरन लिखने वैठ गया और शब्द वडी स्वतन्त्रतापूर्वक उमडने लगे, उतने ही उन्मुक्त भाव से जिस प्रकार किसी मित्र के आलिगन में आसू उमड पडते है। यकायक वह एक वाक्य के वीच मे रुक गया, एक क्षण कुछ सोचा और कागज को मसलकर, फाडकर फेंक दिया।

"रचना के जन्म की पीर से वडी कोई पीर नही होती," स्त्रुच्कोव ने अपनी आदत के अनुसार व्यग्यात्मक स्वर मे कहा।

वह अपने विस्तर पर ग्वोज्देव का पत्र लिए वैठा था जिसे उसने वेतकल्लुफी के साथ अलेक्सेई की अलमारी से उठा लिया था और पढ रहा था।

"आजकल आदमियो को क्या हो गया है? और ग्वोज्देव भी! वाह रे गधे! किसी लडकी ने जरा नाक सिकोडी और वह आसुओ मे सरावोर हो गया। मनोवैज्ञानिक विश्लेपण यह पत्र पढ लेने के कारण

तुम मुझसे नाराज तो नही हो, क्यो? हम मोर्चे के सिपाहियो के बीच कोई राज की बात क्या हो सकती है?"

अलेक्सेई नाराज नही था। वह सोच रहा था "कल डाकिया पेटी साफ करने आयेगा, तो मुझे शायद उसका इतजार करना चाहिए और चिट्ठी वापिस ले लेनी चाहिए?"

उस रात अलेक्सेई को अच्छी तरह नीद नही आयी। पहले उसने स्वप्न देखा कि वह एक वर्फ से ढके हवाई अड्डे मे है, जहा एक 'ला-५' किस्म का हवाई जहाज बडे ही विचित्र आकार-प्रकार का है, उतार के पहियो की जगह उसके चिडियो जैसे पैर है। मेकेनिक यूरा, काकपिट की गद्दी पर चढ गया और बोला कि "अलेक्सेई के दिन बीत गये" और अब उसकी ही बारी है। फिर उसने सपना देखा कि वह पुआल के बिस्तर पर लेटा हुआ है और मिखाइल नाना सफेद कमीज और भीगी पैंट पहने अलेक्सेई के शरीर को भाप दे रहे है और हसते हुए कह रहे है "विवाह के पहले तुम्हे आवश्यक है तो भाप-स्नान।" और भोर से कुछ पहले उसने ओल्गा को सपने में देखा। वह अपनी बलिष्ठ, धूप से भूरी टागे पानी मे लटकाये एक उलटी नाव पर बैठी है—हल्की-फुलकी, छरहरी, और उद्दीप्त। वह एक हाथ से आखो के ऊपर धूप से छाया किये हुए है और हस रही है, और दूसरे हाथ के इशारे से उसे बुला रही है। वह उसकी तरफ तैरने लगा, लेकिन धारा बडी तेज और तूफानी थी और वह उसे तट से और लडकी से दूर बहा ले गयी। उसने अपनी बाहो, टागो और अपने शरीर के प्रत्येक पुट्ठे से तीव्र से तीव्रतर परिश्रम किया और उसके निकटतर पहुच गया, उसकी हवा मे उडती हुई केश-राशि और धूप से भूरी टागो पर पानी की चमकती हुई बूदें उसे साफ दिखाई देने लगी थी

इतने ही मे वह स्फूर्ति और सुख अनुभव करता हुआ जाग गया। वह बडी देर तक आखें बन्द किये लेटा रहा और उस सुखद स्वप्न को

पुन देखने की आशा में वह फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन यह तो सिर्फ बचपन ही में होता है। स्वप्न में उस उज्ज्वल, धूप से भूरी लड़की की मूर्ति मानो हर वस्तु को आलोकित कर गयी थी। उसे चिन्ता करने, उद्विग्न होने की कोई आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे ओलगा की ओर तैरकर बढ़ना चाहिए, धारा के विरुद्ध लड़ना चाहिए, हर कीमत पर आगे तैरना चाहिए, एक एक रत्ती शक्ति लगा देना चाहिए और उस युवती के पास पहुंच जाना चाहिए! लेकिन पत्र का क्या हो? वह चाहने लगा कि पत्र-पेटिका के पास जाकर बैठे और डाकिये का इंतजार करे, लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया और हाथ भुलाकर अपने आप से बोला "जाने भी दो। सच्चा प्रेम उससे भटक नहीं सकता।" और अब जब वह आश्वस्त हो गया कि प्रेम सच्चा है, और वह चाहे किसी भी परिस्थिति में हो—सुखी या दुखी, स्वस्थ या रोगी—वह प्रेम उसकी प्रतीक्षा करेगा, तो उसे अपने में नयी शक्ति का सचार अनुभव होने लगा।

उस सुबह उसने बैसाखी के बिना टहलने का प्रयत्न किया। वह सावधानी के साथ बिस्तर से उठा और टागें फैलाकर खड़ा हो गया और असहाय भाव से फैली हुई बाहो से सतुलन कायम करने का प्रयत्न करने लगा। दीवार के सहारे उसने एक डग बढाया। कृत्रिम पैरो का चमड़ा चर्रा उठा। उसका शरीर डगमगाया, लेकिन उसने अपनी बाहे फैलाकर सतुलन कायम करते हुए अपने को सभाल लिया। अभी भी दीवार का सहारा लिए उसने एक और कदम बढाया। उसने कभी स्वप्न में भी ख्याल न किया था कि चलना-फिरना इतना कठिन काम होता है। जब वह बालक था तो उसने बासो के बल चलना सीखा था, वह उन पर चढकर दीवार से अलग हो जाता और एक कदम बढाता, फिर दूसरा और फिर तीसरा डग भरता—मगर उसका शरीर एक तरफ झुक जाता, और तब वह कूदकर बासो से अलग हो जाता और उधर घास पर जो शहर

के बाहर की सडक पर बुरी तरह उग ग्रायी थी, वास के डडे पडे रह जाते। इन बांसो के बल चलना सीखना इतना बुरा नही था, क्योकि उन पर से कूदकर अलग हुआ जा सकता है, मगर इन कृत्रिम पैरो पर से कूदकर अलग तो नही हुआ जा सकता। और जब उसने तीसरा डग भरने की कोशिश की तो उसका शरीर झूलने लगा, पाव जवाब दे गये और वह फर्श पर औधे मुह गिर पडा।

अपने अभ्यास के लिए उसने ऐसा समय चुना था जब अन्य सभी मरीज अपनी विभिन्न चिकित्साओ के लिए चले जाते थे और वार्ड मे कोई न रहता था। उसने सहायता की पुकार न की। वह दीवार तक रेगकर गया और उसका सहारा लेकर धीरे-धीरे पैरो पर उठ खडा हुआ, उसने उस बगल मला जिस तरफ गिरने के कारण उसे चोट लग गयी थी, अपनी कुहनियो की खराश देखी जो नीली पड चली थी और दात भीचकर दीवार का सहारा लिए बिना, उसने एक कदम और आगे बढाया। उसने महसूस किया कि उसने रहस्य जान लिया है। कृत्रिम और साधारण पैरो के बीच भेद यह था कि कृत्रिम पैरो मे लोच की कमी थी। इनकी विशिष्टता से अभी तक वह अपरिचित था, और अभी तक ऐसी प्रवृत्ति और विचार-क्रिया नही बना पाया था कि चलने के अनुक्रम मे पैरो की स्थिति बदल सके, कदम उठाने मे शरीर का बोझ एडी से बदलकर आगे उगलियो पर और अगला डग भरने मे उगलियो से बदलकर एडी पर डाल सके और पैरो को एक दूसरे के समानान्तर न रखकर, पैरो की उगलिया बाहर की तरफ किये हुए ऐसे कोण पर रखे कि चलते-फिरते समय शरीर को अधिक स्थिरता प्राप्त हो सके।

आदमी जब बचपन मे मा की देख-रेख मे अपने नन्हे-नन्हे, कमजोर पैरो के बल पहले ऊबड-खाबड कदम उठाता है, तो वह ये सभी बाते सीख लेता है। वह ये आदते शेप जीवन भर के लिए प्राप्त कर लेता है और वे उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति बन जाती है। लेकिन जब मनुष्य

कृत्रिम ढंग धारण करने के लिए विवश हो जाता है और शरीर का प्राकृतिक संतुलन भंग हो जाता है, तो बचपन में अर्जित ये प्रवृत्तियां, सहायता करने के बजाय, उसकी गति में बाधक बन जाती हैं। नयी आदतें सीखने में, उसे पुरानी प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ता है। अनेक व्यक्ति, जो अपने पैर खो बैठे हैं, अगर उनमें इच्छा-शक्ति का अभाव है, तो वे चलने-फिरने की वही कला फिर कभी नहीं सीख सकेंगे, जिसे बचपन में हम इतनी आसानी से सीख लेते हैं।

लेकिन मेरेस्येव सख्त धातु का बना था। एक बार कोई लक्ष्य बना लिया तो फिर उसे वह प्राप्त करके ही रहता था। अपनी पहली कोशिश की गलतियां समझकर उसने फिर प्रयत्न किया। इस बार उसने अपने कृत्रिम पैर का अग्रभाग बाहर की तरफ मोड़ लिया, एड़ी पर बोझ टिकाया और फिर पैर के अग्रभाग पर शरीर का बोझ डाल दिया। चमड़ा बुरी तरह चर्रा उठा। जिस क्षण बोझ पैर के अग्रभाग पर डाला गया तभी अलेक्सेई ने दूसरा पैर फर्श से उठाया और उसे आगे फेंक दिया। एड़ी एक जोर की थप के साथ फर्श से लगी। अब वह बाहें फैलाकर अपने शरीर को संतुलित करते हुए दीवार से अलग हो गया, मगर अगला डग भरने का साहस न कर पा रहा था। और वहीं वह खड़ा रह गया, शरीर डगमगा रहा था, वह संतुलन कायम रखने का प्रयत्न कर रहा था और नाक पर ठंडा पसीना छूटता महसूस कर रहा था।

वह इस मुद्रा में था कि उस पर वसीली वसील्येविच की नजर पड़ गयी। वे एक क्षण तक उसे देखते दरवाजे पर खड़े रहे, फिर उसकी तरफ आगे बढ़े और बगलें पकड़कर उसे सहारा देते हुए बोले

"शाबाश, वसीटे! लेकिन यह क्या तुम अकेले हो, बिना किसी नर्स या अर्दली के? गर्वित हो, मेरा ख्याल है लेकिन कोई परवाह नहीं। जैसा कि हर मामले में होता है, पहला कदम ही महत्वपूर्ण होता है, और तुमने सबसे कठिन भाग पार कर लिया है।"

इसके कुछ ही दिन पहले वसीली वसील्येविच को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चिकित्सा सस्था का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया था। वह भारी काम था और बडा वक्त ले लेता था। अस्पताल का काम छोड देने के लिए वे विवश हो गये थे, मगर यह बूढा योद्धा अभी भी अधिकृत रूप से इसका प्रधान था, और यद्यपि अब दूसरे लोग इसका कार्य-सचालन करने लगे थे, फिर भी, वे हर रोज अस्पताल आते और जब उनके पास वक्त होता तो वार्डों का चक्कर भी लगा देते और सलाहे देते। लेकिन पुत्र हानि के बाद वे भिन्न व्यक्ति हो गये थे। उनकी पुरानी उत्कट प्रफुल्लता विलीन हो गयी थी, अब वे डाटते-झिडकते न थे और जो लोग उन्हे जानते थे, वे इसे उनकी वृद्धावस्था के आगमन का चिह्न समझते थे।

"आओ, मेरेस्येव, हम लोग इसे मिलकर सीखे," उन्होने प्रस्ताव किया। अपने सहकारियो की ओर मुडकर उन्होने कहा, "तुम जा सकते हो, यह सर्कस नही है, यहा देखने की कोई चीज नही है। मेरे बिना ही वार्ड का चक्कर लगा आओ।" और फिर मेरेस्येव से बोले "अच्छा तो, लडके एक! पकडे रहो, मुझे पकडे रहो! शर्म न करो। मै जनरल हू और तुम्हे मेरा हुक्म मानना पडेगा। अब, दो! बस ठीक है। अब दाहिना पाव बढाओ। ठीक। बायी तरफ! बहुत बढ़िया!"

इस प्रसिद्ध सर्जन ने प्रसन्नतापूर्वक हाथ मले, मानो एक आदमी को चलना मात्र सिखाकर, भगवान जाने वे कौनसा महत्वपूर्ण प्रयोग कर रहे है। लेकिन उनकी प्रकृति ही ऐसी थी कि वह जो कुछ भी करते, उससे उत्साहित हो उठते और उसमें अपनी सम्पूर्ण महान आत्मा लीन कर देते थे। उन्होने मेरेस्येव को पूरे वार्ड की लम्बाई पार करायी, और जब अलेक्सेई पूरी तरह चूर-चूर होकर एक कुर्सी पर गिर पडा, तो उन्होने भी दूसरी कुर्सी खीच ली, उसके पास बैठ गये और बोले:

"बोलो, हम लोग उडान कर सकेगे? मै कहूगा, जरूर! जिन लोगो

की एक बांह अलग हो गयी है, मेरे भाई, हमारे आक्रमणों में फौजी टुकड़ियों की रहनुमाई कर रहे हैं, बालक रूप में आकर तोप गाड़ियाँ चलाते हैं, शत्रु की तोपों के मुंह लाश अपने शरीर से बन्द कर देते हैं... सिर्फ मृतक व्यक्ति नहीं लड़ रहे हैं।" [illegible] के बोलने पर नर्स आयी पानी और चली गयी और वह सांस भर कर बोला. "मगर मुर्दे, दोस्त भी लड रहे हैं. अपने ढंग से। हां . बस, नौजवान। उठो, अब फिर शुरू करें।"

जब मेरेस्येव वार्ड का दूसरा चक्कर लगाकर आराम करने के लिए रुका, तब प्रोफेसर ने उस चारपाई की ओर इशारा किया, जिस पर ग्वोज्देव का अधिकार था और पूछा

"टैंक-चालक को क्या हुआ? क्या वह अच्छा हो गया और चला गया?"

मेरेस्येव ने बताया कि टैंक-चालक अच्छा हो गया और मोर्चे पर चला गया। उसके साथ मुसीबत सिर्फ इतनी थी कि जलने के कारण उसका चेहरा, विशेषकर नीचे का भाग, बुरी तरह विकृत हो गया था।

"अच्छा तो, तुम्हें उसने पत्र भी लिख दिया है? मेरा ख्याल है, उसका दिल टूट गया है क्योंकि लडकियां उससे प्रेम नहीं करतीं। उसे सलाह दो कि वह दाढ़ी और मूछें बढ़ा ले। मैं गम्भीरता से कह रहा हूं। वे बड़ी स्वाभाविक नजर आयेंगी, और लडकियां उस पर मुग्ध हो जायगी।"

एक नर्स हांफती हुई वार्ड में आयी और वसीली वसील्येविच से बोली कि मंत्रालय से उनके लिए टेलीफोन आया है। प्रोफेसर बोझिल गति से कुर्सी से उठे, और उठने में जिस तरह अपनी गुदाज, खाल उतरी हथेलियों को घुटनों पर टेका और पीठ झुकायी, उससे स्पष्ट हो जाता था कि पिछले कुछ हफ्तों में वे कितने बूढ़े हो गये हैं। जब वे दरवाजे तक पहुंचे, तो पीछे मुड़े और प्रसन्नतापूर्वक बोले

"लिखना न भूलना उसे क्या नाम है उसका . तुम्हारे मित्र

का, मेरा मतलब है .. और उसको बता देना कि मैं उसको दाढ़ी रखने की सलाह देता हूं। यह आजमाई हुई दवा है और महिलाओं में अत्यन्त लोकप्रिय है!"

उस शाम अस्पताल का एक वृद्ध अनुचर मेरेस्येव के लिए एक छड़ी ले आया—बढ़िया, पुराने आबनूस की छड़ी जिसमें हाथी के दांत की बड़ी आरामदेह मूठ लगी थी और उस पर नाम खोदा हुआ था।

"प्रोफेसर ने आपके लिए भेजी है," अनुचर ने कहा। "वसीली वसील्येविच ने। यह उनकी अपनी है। आपको भेंटस्वरूप भेजी है। उन्होंने कहा है कि आप छड़ी के सहारे चला करें।"

ग्रीष्म की वह सांझ अस्पताल में बड़ी नीरस थी और दायें, बायें और ऊपर की मंजिल तक के मरीज प्रोफेसर के उपहार को देखने के लिए वार्ड नम्बर बयालीस तक टहलने चले आये। सचमुच बड़ी सुन्दर छड़ी थी।

१५

तूफान के पहले की खामोशी लम्बी खिंच गयी। विज्ञप्तियों में स्थानीय महत्व के संघर्षों और गश्ती दलों के बीच मुठभेड़ों के समाचार होते थे। अस्पताल में अब पहले से थोड़े मरीज थे, और इसलिए प्रधान ने हुक्म दिया कि वार्ड बयालीस की खाली चारपाइयां हटा दी जायं। इस प्रकार पूरा वार्ड मेरेस्येव और मेजर स्त्रुच्कोव के हवाले रह गया था, मेरेस्येव की चारपाई दायीं तरफ और मेजर की चारपाई बायीं तरफ नदी तट की ओर वाली खिड़की के पास लगी थी।

गश्ती दलों के बीच मुठभेड़ें। मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव अनुभवी सिपाही थे और वे जानते थे कि यह शान्ति जितनी ही देर रहेगी, जितनी ही देर यह तनातनी की खामोशी कायम रहेगी, उतना ही भयंकर होगा वह तूफान, जो उसके बाद आयेगा।

एक दिन विज्ञप्ति में 'सोवियत संघ के वीर' पद से विभूषित स्तेपान ईवुदिकन का हवाला आया, जिसने वहीं दक्षिणी मोर्चे पर पन्द्रह जर्मनों का सफाया कर दिया था और इस प्रकार शत्रु के मारने की अपनी संख्या दो सौ तक पहुंचा दी थी। ग्वोज्देव का एक पत्र आया। उसने यह तो नहीं बताया कि वह कहां है या क्या कर रहा है, मगर इतना बताया था कि वह अपने भूतपूर्व कमांडर, पावेल अलेक्सेयेविच रोमानिस्त्रोव, के स्थान पर पहुंच गया है और वहां के जीवन से संतुष्ट है, वहां चेरी के वृक्ष बहुत हैं और वह स्वयं तथा अन्य छोकरे उनको खा-खाकर अपच किये ले रहे हैं, और उसने अलेक्सेई से अनुरोध किया था कि अगर यह पत्र मिल जाय तो एक पंक्ति अन्यूता को लिख दे। ग्वोज्देव ने लिखा था कि उसने अन्यूता को भी पत्र लिखा है, मगर पता नहीं उसके पत्र अन्यूता तक पहुंच रहे हैं या नहीं क्योंकि वह हमेशा मार्च पर रहता है और उसका पता अस्थायी है।

किसी फौजी को यह बताने के लिए ये दो सूचनाएं काफी थीं कि तूफान कहीं दक्षिण में फूटनेवाला है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अलेक्सेई ने अन्यूता को लिख दिया था और ग्वोज्देव को दाढ़ी बढ़ाने के विषय में प्रोफेसर की सलाह भेज दी थी; लेकिन अलेक्सेई जानता था कि ग्वोज्देव किसी युद्ध की आशा से उत्तेजित अवस्था में होगा जिससे हर सिपाही को कितनी वेदना होती है और फिर भी कितना आनन्द होता है, और इसलिए उसे दाढ़ी के बारे में सोचने या शायद, अन्यूता तक के विषय में सोचने का अवकाश भी न होगा।

वार्ड बयालीस में एक और सुखद घटना घटी। मेजर पावेल इवानोविच स्त्रुच्कोव को 'सोवियत संघ के वीर' के पद से विभूषित करने की घोषणा प्रकाशित हुई, लेकिन इस आनन्दपूर्ण समाचार से भी मेजर बहुत दिनों तक प्रफुल्लित नहीं हुआ। वह फिर उद्विग्नता का शिकार हो गया और अपने "मनहूस जोड़ों" को कोसने लगा, जिनके कारण

वह इन सरगर्म दिनो मे भी चारपाई से बंधा था। उसकी उद्विग्नता का एक और कारण भी था, जिसे वह छिपाता था, मगर जिसको अलेक्सेई ने अप्रत्याशित ढग से जान लिया।

अपना मस्तिष्क सिर्फ एक बात—चलना सीखने—पर पूरी तरह केन्द्रित कर देने के कारण मेरेस्येव अब कठिनाई से ही यह गौर कर पाता था कि आसपास क्या हो रहा है। उसने अपने लिए जो दैनिक कार्यक्रम बनाया था, उसके अनुसार वह बडी सख्ती से रहता था हर रोज तीन घटे—एक घटा सुबह, एक घटा दोपहर और एक घटा शाम को—वह गलियारे मे कृत्रिम पैरो के बल चलने का अभ्यास करता था। शुरू में दूसरे वार्डों के मरीजो को अपने खुले दरवाजो के सामने से एक नीली वर्दीवाली आकृति को पेन्डुलम जैसी नियमितता से बार बार गुजरते और चमडे के पावो की चर्राहट से पूरे गलियारे को गुजाते देखकर बडी चिढ होती थी, मगर बाद मे वे इसके इतने अभ्यस्त हो गये कि दिन के किन्ही भागो में अगर यह आकृति उनके दरवाजो से न गुजरती, तो उन्हे अजब मालूम होता। और सचमुच, यहा तक हुआ कि एक दिन जब मेरेस्येव 'फ्लू' का शिकार होकर लेट गया तो यह पता लेने के लिए कि पैर-विहीन लेफ्टीनेंट को क्या हो गया, अन्य वार्डों से दूत भेजे गये।

अलेक्सेई प्रात काल अपने शारीरिक व्यायाम करता और फिर एक कुर्सी पर बैठकर वह अपने को उस तरह की क्रियाओ के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयत्न करता कि जिनकी हवाई जहाज चलाने मे आवश्यकता होती है। कभी-कभी वह इतनी देर अभ्यास करता कि उसका सिर घूमने लगता, कानो मे छन-छन सुनाई देने लगता और पैरो के तले से फर्श खिसकता नजर आता। जब यह हालत हो जाती तो वह हाथ-मुह धोने चला जाता, सिर पर ठडा पानी डालता और थोडी देर लेटा रहता ताकि फौरन स्वस्थ हो जाय और टहलने तथा जिमनास्टिक करने की घडी न निकल जाय।

इस खास मौके पर, इतना टहलने के बाद कि उसका सिर चक्कर खाने लगा, वह अपने सामने कुछ न देख पाने के कारण रास्ता टटोलता वार्ड में गया और चारपाई पर लुढक गया। थोडा स्वस्थ होने पर, उसे वार्ड मे कुछ आवाजें सुनने की चेतना हुई क्लावदिया मिखाइलोव्ना का शान्त और किंचित व्यग्यपूर्ण स्वर तथा स्त्रुच्कोव का उत्तेजित और विनयपूर्ण स्वर। वे दोनो अपनी बातचीत में इतने मशगूल थे कि वे मेरेस्येव का वार्ड में आना देखने में असमर्थ रहे।

"मुझपर विश्वास करो, मै गम्भीरतापूर्वक कह रहा हू। इतना भी नही समझ सकती? तुम औरत हो या नही?"

"हा, मै औरत तो जरूर हू, मगर मै समझ नही पाती, और तुम इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक बात भी नही कर सकते। इसके अलावा, मुझे तुम्हारी गम्भीरता की जरूरत भी नही है।"

इस पर स्त्रुच्कोव आपे से बाहर हो गया और झिडकते हुए स्वर में चिल्लाया

"जहन्नुम में जाय, मै तुम्हे प्यार करता हू। तुम औरत नही हो, तुम हो लकडी की मूरत, जो समझ नही पायी। अब समझ गयी तुम?" इतना कहकर उसने मुह फेर लिया और खिडकी के दरवाजे पर उगलियो से ताल देने लगा।

नर्सो जैसे अभ्यस्त कोमल, सावधान पग धरती हुई क्लावदिया मिखाइलोव्ना दरवाजे की ओर बढी।

"तुम किधर चल दी? तुम्हारा क्या जवाब है?"

"इस पर बात करने की न तो यह जगह है और न वक्त है। मै ड्यूटी पर हू।"

"तुम साफ-साफ बात क्यो नही कहती? तुम मुझे यातना क्यो दे रही हो? जवाब दो।" मेजर की आवाज में वेदना की ध्वनि थी।

क्लावदिया मिखाइलोव्ना दरवाजे पर रुक गयी, उसकी छरहरी,

सुगठ आकृति अंधेरे गलियारे की पृष्ठभूमि मे उभर उठी। मेरेस्येव ने कभी अनुमान भी नही किया था कि यह शात नर्स, जो अब जवान नही रह गयी थी, इतने स्त्रैण रूप मे दृढ और आकर्षक हो सकती है। वह दरवाजे पर अपनी गर्दन पीछे मोडे खडी थी और मेजर की ओर इस तरह देख रही थी मानो कोई मूर्त्ति हो।

"अच्छा," उसने कहा। "मैं तुम्हे जवाब देती हू। मैं तुमसे प्रेम नही करती और शायद तुम्हे कभी भी प्यार न कर सकूगी।"

वह चली गयी। मेजर विस्तर पर लुढक गया और तकिये मे सिर गाड दिया। मेरेस्येव अब समझ गया कि पिछले कुछ दिनो से मेजर के विचित्र व्यवहार करने का कारण क्या था, वार्ड मे नर्स के आने पर वह चिड़चिडा और व्यग्र क्यो हो जाता था और यकायक प्रफुल्लता से वदलकर उग्र क्रोध मे क्यो फूट पडता था।

वह वास्तविक यत्रणा सह रहा होगा। अलेक्सेई उसके लिए दुखी हो उठा, मगर साथ ही प्रसन्न भी। जब मेजर चारपाई से उठा तो अलेक्सेई उसे चिढाने का मजा लेने से वाज न आया।

"कहो, कामरेड मेजर, क्या मै तुम्हारे मुह पर थूक सकता हू?"

अगर उसे यह पता होता कि मेजर पर इसका क्या असर होगा तो वह यह वात मजाक मे भी नही करता। स्त्रुच्कोव अलेक्सेई की चारपाई की ओर दौडा और हताश स्वर मे चिल्ला उठा

"हसते हो? अच्छा, हसे जाओ। तुम्ही ठीक कहते हो। मैं इसी के काबिल हू। लेकिन अव मैं क्या करू? तुम्ही वताओ। मै क्या करू, सिखा दो न। तुमने हमारी वाते सुनी, क्यो? "

वह चारपाई पर वैठ गया और हाथो मे सिर पकडकर अपने शरीर को इधर-उधर झुलाता वैठा रहा।

"शायद तुम सोचते हो, मैं मजे लेना चाहता था? लेकिन यह वात नही थी। मै गम्भीर था। उस पगली के सामने मैंने गम्भीरता से प्रस्ताव रखा था।"

शाम को अपने नित्य कार्य के सम्बन्ध में क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड मे आयी। सदा की तरह, वह शान्त, करुणामयी और धैर्यवती थी। उससे आनन्दमयी किरणें उद्भासित प्रतीत होती थी। वह मेरेस्येव की ओर देखकर मुसकुरायी और मेजर की ओर देखकर भी, मगर उसकी ओर उलझन और किंचित भय से देखा। स्त्रुच्कोव नाखून काटता खिड़की के पास बैठा था और जब क्लावदिया मिखाइलोव्ना की पदचाप गलियारे मे विलीन होती गयी, तब उसने उस दिशा मे क्रोध और सराहना के मिश्रित भाव से देखा।

"सोवियत अप्सरा।" वह बुदबुदाया। "किस बेवकूफ ने इसे यह नाम दे दिया? वह तो नर्स के भेष में राक्षसी है।"

आफिसवाली नर्स, दुबली-पतली, प्रौढ़ महिला वार्ड मे आयी और पूछने लगी

"मेरेस्येव अलेक्सेई, क्या यह रोगी चल फिर सकता है?"

"नही, वह तो दौड़नेवाला रोगी है।" स्त्रुच्कोव गुर्राया।

"मैं यहा मजाक करने नही आयी।" नर्स ने सख्ती से टीका की। "मेरेस्येव अलेक्सेई, सीनियर लेफ्टीनेंट को फोन पर बुलाया जा रहा है।"

"कोई युवती है?" स्त्रुच्कोव ने प्रफुल्ल होते हुए पूछा और कुपित नर्स की ओर आख मार दी।

"मैने उसका प्रमाणपत्र नही देखा है," नर्स फुफकारी और शान से सिर तानकर वार्ड के बाहर हो गयी।

मेरेस्येव बिस्तर से उछल पड़ा। प्रफुल्लतापूर्वक अपनी छड़ी टेकते हुए वह नर्स से आगे निकल गया और सचमुच सीढ़ियो पर दौड़ पड़ा। कोई एक महीने से वह ओल्गा के उत्तर की आशा कर रहा था और उसके दिमाग मे यह विचार कौंध गया शायद यह वही है? लेकिन यह कैसे सम्भव है? इस जमाने मे वह स्तालिनग्राद के पास से मास्को तक कैसे

सफर कर सकती है। इसके अलावा उसे इस अस्पताल का पता कैसे चल सकता है, क्योकि उसने तो उसे यही बताया था कि वह मोर्चे के पीछे के प्रशासन मे काम कर रहा है, और स्वय मास्को मे भी नही, कही उपनगर मे? लेकिन इस क्षण मेरेस्येव ने चमत्कारो मे विश्वास कर लिया और यद्यपि इस बात को वह स्वय भी देखने में असमर्थ था, मगर वह दौड रहा था, अपने कृत्रिम पैरो से पहली बार दौड़ रहा था, लुढकती हुई गति से, कभी ही कभी छडी का सहारा लेते हुए, और उसके बूट चर्रा रहे थे· चर्र, चर्र, चर्र

उसने रिसीवर उठाया और एक सुखद, आकण्ठ, मगर पूरी तरह अपरिचित स्वर सुना। उससे पूछा गया कि क्या वह वार्ड बयालीस का सीनियर लेफ्टीनेंट अलेक्सेई पेत्रोविच मेरेस्येव है? तेज और क्रुद्ध स्वर मे मानो उस प्रश्न मे कोई अपमानजनक बात थी, मेरेस्येव चीखा

"हा!"

एक क्षण मौन छाया रहा, और फिर वह आवाज, अब उत्साह-रहित और सयमित भाव से, उसे कष्ट देने के लिए क्षमा मागने लगी, जाहिर था कि सूखे जवाब से उसे बुरा लगा था, और फिर स्पष्टतया प्रयत्नपूर्वक बोली

"आन्ना ग्रिबोवा बोल रही है, तुम्हारे मित्र लेफ्टीनेंट ग्वोज्देव की परिचिता। आप मुझे नही जानते।"

मेरेस्येव ने दोनो हाथो से रिसीवर थाम लिया और अपनी आवाज का पूरा जोर लगाकर चिल्लाया

"तुम अन्यूता हो? अन्यूता? मै तुम्हे खूब जानता हू। ग्रीशा ने मुझे बताया था तुम्हारे "

"वह कहा है? उसका क्या हुआ? वह ऐसे यकायक चला गया। जब 'अलर्ट' का भोपू बजा तो मै कमरे से बाहर चली गयी थी। आप जानते ही है मै फर्स्ट-एड के दल मे हू। जब मै लौटकर आयी, तो वह

कमरे मे नही था और वह कोई पता या पता नही छोड गया .
अल्योशा, प्रिय   यह नाम लेने के लिए मुझे क्षमा करना   मैं भी खुद
जानती हू   मै उसके बारे मे बहुत चिन्तित हू। मै जानना चाहती कि
वह कहा है और वह इतने यकायक क्यों चला गया   "

अलेक्सेई को अपने हृदय मे एक मधुर भावना उमडती अनुभव हुई। वह अपने मित्र की कल्पना कर बडा प्रसन्न हो उठा। तो वह मूर्ख छोकरा भ्रम में था, बडा कुमई है। और लडकी लडाका सिपाही के पगु हो जाने से नही भयभीत होती। और इसका मतलब है कि वह स्वय यह विश्वास कर सकता है कि कोई उसके लिए भी इसी प्रकार चिन्तित होगा। और उसे इसी तरह खोज रहा होगा। ये विचार उसके दिमाग मे बिजली की तरह कौंध गये और वह उत्तेजनावश जल्दी-जल्दी बोलते हुए रिसीवर में चिल्लाने लगा

"अन्यूता! सब ठीक है। वह अफसोसनाक गलतफहमी थी। वह बिल्कुल सकुशल है और फिर मोर्चे पर जम गया है। हा, उसका पता है, फील्ड पोस्ट आफिस ४२५३१-ब। वह दाढी बढा रहा है। मेरी कसम, अन्यूता। बढिया दाढी . जैसी   अरे   जैसी . अरे, जैसी छापेमार बढा लेते है। उसमें वह बडा जचता है।"

अन्यूता ने दाढी का समर्थन नही किया। उसका ख्याल था कि वह व्यर्थ का जजाल है। इस बात को सुनकर मेरेस्येव और भी खुश हुआ और बोला कि अगर यह बात है तो ग्रीशा दाढी साफ करा लेगा, हालाकि सभी की राय है कि दाढी से उसका चेहरा-मुहरा बहुत भला लगता है।

अत में दोनो ने गहरी मित्रता के साथ अपने रिसीवर रख दिये और यह तै कर लिया कि अस्पताल छोडने से पहले मेरेस्येव उसे फोन कर देगा। वार्ड में लौटते समय अलेक्सेई को याद पडा कि वह टेलीफोन तक दौडता गया था, और इसलिए उसने फिर दौडने की कोशिश की,

मगर कुछ न बना। कठिन पैरों के सख्त दबाव से सारे शरीर मे दर्द की लहर-सी दौड़ने लगी। लेकिन कोई परवाह नही। अगर वह आज नही दौड़ पाता है तो कल दौड़ेगा, और कल नही दौड पायगा तो परसो और परसों नही तो उसके बाद के दिन, लेकिन वह जरूर दौडेगा। सब ठीक हो जायगा। उसे अब कोई सन्देह नही था, वह दौड सकेगा और उड़ भी सकेगा, और लड़ भी सकेगा, और प्रतिजाए करने का शौक होने के कारण उसने प्रतिज्ञा की कि पहले आकाश-युद्ध के बाद, पहले जर्मन हवाई जहाज को मार गिराने के बाद, वह ओल्गा को पत्र लिखेगा और सब कुछ बता देगा, चाहे जो कुछ हो जाय।

तृतीय खण्ड

१

१९४२ की ग्रीष्म के शिखर काल में विमान सेना की बाकायदा वर्दी—लम्बी पतलून और ऊंचे कालर का कोट जिसके कालर पर सीनियर लेफ्टीनेंट का परिचय-चिह्न टका हुआ था—पहने एक निर्बल रुग्ण युवक, मजबूत आबनूसी छड़ी टेकता, मास्को के फौजी अस्पताल के भारी-भरकम, बलूत के फाटक से प्रकट हुआ। उसके साथ सफेद पोशाक पहने एक महिला थी। पिछले महायुद्ध में नर्सें जिस प्रकार लाल-क्रास-चिह्न अंकित रूमाल ओढ़ती थी, उसी प्रकार का रूमाल ओढ़े होने के कारण उस महिला के सदय और सुन्दर मुखड़े पर पवित्र भावभंगिमा प्रगट हो आयी थी। वे पोर्च में आकर रुक गये। विमान-चालक ने अपनी गुजली हुई, उड़े हुए रंग की टोपी उतारी और भोंडे ढंग से नर्स का हाथ होठों तक उठाया और नर्स ने उसका मस्तक चूम लिया। इसके बाद विमान-चालक किंचित लुढ़कती हुई चाल से जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतरा और पीछे घूमकर देखे बिना अस्पताल की लम्बी इमारत पास से, नदी के अलकतरे से बने बाध के किनारे-किनारे चल पड़ा।

नीले, पीले और भूरे पंजामे पहने हुए मरीज लोग, खिड़कियों के पास खड़े थे और अपने हाथ, छड़िया या बैसाखिया हिला रहे थे तथा चिल्लाकर उसे अपनी अपनी आखिरी सलाह दे रहे थे। विमान-

चालक ने उत्तर में अपना हाथ हिलाया, किन्तु यह स्पष्ट था कि वह इस बडी भारी धूल धूसरित इमारत से यथासम्भव शीघ्र भागने के लिए आतुर था, और उन सिढ़ियों के पास खड़े लोगों से अपनी उत्तेजना छिपाने के लिए उसने अपना सिर मोड लिया था। वह विचित्र, स्प्रिंगदार चाल से अपनी छडी का किंचित सहारा लेते हुए जल्दी-जल्दी चला जा रहा था। उसके प्रत्येक पग के साथ अगर हल्की-सी चरमराहट न हो रही होती तो कोई यह ख्याल भी नही कर सकता था कि इस सुगठ, बलिष्ठ लगनेवाले स्फूर्तवान के पैर है ही नही।

अस्पताल से मुक्त होने के बाद अलेक्सेई मेरेस्येव को स्वास्थ्य-लाभ के लिए मास्को के निकटवर्ती विमान सेना स्वास्थ्य-गृह मे भेज दिया गया। मेजर स्त्रुच्कोव को भी उसी जगह भेजा गया था। उन्हे स्वास्थ्य-गृह ले जाने के लिए कार भेजी गयी थी, लेकिन मेरेस्येव ने अस्पताल के अधिकारियो को बताया कि मास्को मे उसके कुछ रिश्तेदार है और उनसे मिले बिना वह वहा नही जा सकता। उसने अपना सामान स्त्रुच्कोव के साथ भेज दिया था और अब अस्पताल से पैदल रवाना हो गया था, उसने वायदा किया था कि शाम को विद्युत् रेलवे के द्वारा वह स्वास्थ्य-गृह पहुच जायगा।

मास्को में उसका कोई रिश्तेदार नही था, लेकिन उसे राजधानी को घूमकर देखने की बडी आकाक्षा थी, वह बिना सहायता चल-फिरकर अपनी ताकत आजमाने के लिए उत्सुक था, और उस कोलाहलपूर्ण भीड में मिल जाना चाहता था जिसे उसके बारे में कोई चिन्ता न थी। उसने अन्यूता को फोन कर दिया था और पूछा था कि वह बारह बजे के करीब उससे मिल सकेगी या नही। कहा? अच्छा, मान लो पुश्किन स्मारक के करीब . और अब वह ग्रेनाइट पत्थर के तट से बधी हुई शानदार नदी के किनारे किनारे चला जा रहा था जिसका उद्वेलित धरातल धूप में चम-चम हो रहा था। ग्रीष्म के उष्ण वायुमण्डल मे, जो

सुपरिचित, सुगन्ध से पूरित था, वह लम्बी सांसें भरता चला जा रहा था।

चारो ओर वातावरण कितना मनोहर था!

उसके पास से जितनी भी महिलाएं गुजरीं, वे सभी उसे सुन्दर दिखाई दे रही थी और हरे-भरे वृक्ष आश्चर्यजनक रूप से उज्ज्वल प्रतीत हो रहे थे। पवन इतना मदमाता था कि उसका सिर इस तरह उन्मत्त हो उठा मानो कोई आसव पी डाला हो और वायुमण्डल इतना साफ था कि उसे दूर-अदूर के अन्तर की संवेदना न रही और उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि क्रेमलिन की कंगूरेदार दीवारों को, जिन्हें उसने तस्वीरो के अलावा और कभी न देखा था—और इवान महान के घण्टाघर के गुम्बद को तथा नदी के ऊपर टगे पुल की विशालकाय नीली मेहराब को छूने के लिए सिर्फ हाथ बढाने की आवश्यकता है। नगर पर जो मधुर, मस्त बनानेवाली सुगध मडरा रही थी, उससे उसको अपने बचपन की याद हो आयी। वह कहा से आया है? उसका हृदय इतनी तेजी से क्यो धडक रहा है और उसे अपनी मा की—आज की झुर्रीदार बूढी महिला की नही, बल्कि सुन्दर केशोवाली ऊचे कद की युवती की—याद क्यों आ रही है? उसके साथ वह मास्को कभी नही आया था।

अब तक मेरेस्येव ने राजधानी का परिचय पत्रिकाओ और समाचारपत्रो की चित्रावलियों से, पुस्तको से और मास्को से लौटनेवालो के मुह से, सुषुप्त ससार के ऊपर अर्द्धरात्रि में घण्टे बजानेवाले प्राचीन घडियाल से, तथा उत्सव-प्रदर्शनो के समय रेडियो में गूज उठनेवाले मिश्रित स्वरो से ही प्राप्त किया था और अब वही मास्को था, सामने फैला हुआ, उष्ण ग्रीष्म प्रकाश में सुन्दरतापूर्वक आलोकित।

वह क्रेमलिन की दीवार के साथ वीरान नदी के किनारे-किनारे चला गया, ग्रेनाइट की ठडी तटीय दीवार से टेककर विश्राम करने के लिए रुक गया और ग्रेनाइट की दीवार के चरणो पर रुपहले पानी की

सतरगी पछाड को ताकता रहा, और फिर धीरे-धीरे पहाडी से उतरकर रेड स्क्वायर की ओर जानेवाले मार्ग पर बढ गया। अलकतरे की सडको और चौराहो पर लगे लाइम वृक्ष फूल रहे थे और उनके कटे-छटे शीश पर सीधे-सादे, मधुर से पूरित पुष्पो पर मधुमक्खियो के दल, गुजरती हुई मोटरो के भोपुओ की आवाजे, ट्रामो की टन-टन और खड-खड, और गरम अलकतरे से उठनेवाली पेट्रोल की गध से भरी भाप की उपेक्षा करते हुए व्यस्ततापूर्वक गुजार कर रहे थे।

तो यह है मास्को।

चार महीने अस्पताल मे रहने के बाद, अलेक्सेई ग्रीष्म के ऐश्वर्य से इतना चकित रह गया था कि प्रारम्भ मे वह यह न देख पाया कि राजधानी युद्ध का वेप धारण किये हुए थी और जैसा कि वायु सेना मे कहा जाता है "अव्वल नम्बर की तत्परता" की स्थिति मे थी, यानी वह किसी भी क्षण शत्रु का मुकाबला करने के लिए तैयार थी। पुल के पास चौडी सडक एक बडे भारी, भौडे वर्गाकार लट्ठो के बैरीकेड से बद थी, जो रेत से भरा था, मानो किसी बच्चे ने मेज पर खिलौनो के घनाकार खण्ड छोड दिये हो, इस प्रकार पुल के कोनो पर कक्रीट के वर्गाकार गोली-बार स्थल खडे हुए थे जिनमे चार चार छेद थे। रेड स्क्वायर की चिकनी, धूसर सडक पर मकान, घास के मैदान और छायादार रास्ते भिन्न-भिन्न रगो से रगे हुए थे। गोर्की स्ट्रीट की दूकानो की खिडकियो पर तख्तिया जडी थी और वे रेत के बोरो से सुरक्षित थी, और बगल की सडको पर लोहे की छडो से बनायी गयी, जग खायी, रुकावटे बनायी गयी थी, जो ऐसी लगती थी, मानो राह मे खेलनेवाले बच्चे अपना खेल का सामान छोड गये हो। मोर्चे से आये हुए सिपाही के लिए, खास तौर से ऐसे सिपाही के लिए जो इससे पहले मास्को कभी न आया हो, इस सब मे कोई असाधारण बात शायद न दिखाई दी हो। उसे अगर कोई बात देखकर आश्चर्य हुआ होगा तो

'तास' समाचार एजेंसी द्वारा दीवारों और दूकानों की खिड़कियों पर बनायी गयी तस्वीरों को देखकर और कुछ मकानों के सामनेवाले हिस्सों को ऐसे विचित्र ढंग से रंगे हुए देखकर, जिनमे भविष्यवादी चित्रकारों द्वारा अंकित किसी ऊटपटांग चित्र की याद आ जाती थी।

मेरेस्येव जो इस समय तक काफी थक गया था, बूट चर्राते हुए, और अपनी छड़ी पर और भी बोझिल ढंग से सहारा लेते हुए गोर्की स्ट्रीट मे घुस गया और चारो ओर बमो के गड्ढो, टूटी-फूटी इमारतो, मुह बाये हुए खाली जगहो और चकनाचूर खिड़कियो को तलाश करने लगा और उन्हे न पाकर चकित रह गया। चूंकि वह सबसे पश्चिम के हवाई अड्डो में से एक पर काम करता रहा था, इसलिए वह लगभग हर रात अपनी खोहों के ऊपर उडकर पूर्व की ओर जानेवाले जर्मन बममार जहाजो की टुकड़ियो पर टुकड़ियों की आवाज़ सुनने का आदी था। एक लहर की गूज दूर पर खत्म भी न हो पाती थी कि दूसरी आवाज उमडती चली आती थी, और कभी-कभी तो सारी रात आसमान गरजता रहता था। हवाबाज जानते कि ये फासिस्ट मास्को की तरफ़ जा रहे है, और इसलिए वे अपने मन में चित्र बनाया करते थे कि मास्को मे नारकीय ज्वाला धधक रही होगी।

और अब युद्धकालीन मास्को मे घूमते-फिरते हुए मेरेस्येव हवाई हमले के चिह्न खोज रहा था, मगर उसे कोई न मिल रहा था। अलकतरे की सड़के चिकनी थी, इमारतो की अटूट पाते वैसी की वैसी खड़ी थी। खिड़किया भी, जिन पर कागज की आड़ी-तिरछी पट्टिया चिपकी थी, कुछ अपवादो को छोड़कर, सभी सुरक्षित थी। लेकिन मोर्चे की पात निकट ही थी, और इस बात को यहा के निवासियो के चिन्ताग्रस्त चेहरे देखकर समझा जा सकता था, जिनमे से आधे लोग सिपाही थे, जो धूल भरे बूट पहने रहते थे, जिनकी वर्दियां पसीने से कधो पर चिपक जाती थी और जिनकी पीठ पर सामान के थैले लदे नजर आते थे।

धूल से सनी मोटर-ट्रकों का एक लम्बा दस्ता, जिनके मडगार्ड टूटे-फूटे थे और सामने के शीशे चकनाचूर हो चुके थे, यकायक एक बगल की सडक से धूप से आलोकित मुख्य सडक पर प्रगट हुआ। इन जर्जर ट्रको के सिपाही, जिनके बरसाती लबादे हवा मे उड रहे थे, चारो ओर कौतूहलतापूर्वक देख रहे थे। दस्ता आगे बढता गया और ट्रालीबसो, कारों और ट्रामो को पछाड गया—यह सजीव स्मरण-चिह्न था कि शत्रु बहुत दूर नही है। लालसापूर्ण दृष्टि से मेरेस्येव उस दस्ते को देखता रहा और सोचता रहा अगर इन धूल सनी ट्रको मे से किसी एक पर वह उछलकर चढ जाय तो वह शाम तक मोर्चे पर अपने हवाई अड्डे पर, पहुच जायगा। उसने मन ही मन उस खोह की कल्पना की, जहा वह देगत्यरेन्को के साथ रहता था देवदार के लट्ठो के ढाचो से बनी चारपाइया, कोलतार, चीढ और गोले के खोल को चपटाकर बनाये गये आदिमकालीन लैम्प मे जलनेवाले पेट्रोल की तीखी गध; इजिनो की घडघडाहट जो हर सुबह जोर पकड लेती थी, और सिर के ऊपर चीढ वृक्षो के झूमने की गूज, जो रात हो या दिन, कभी बद न होती थी। वह खोह उसे वास्तविक, शान्तिपूर्ण, आरामदेह घर जैसी लगने लगी। काश, वह शीघ्र ही वहा पहुच सकता, उस दलदली स्थल पर पुन पहुच सकता जिसकी नमी को, फिसलनी जमीन को और मच्छडो की लगातार भनभनाहट को सारे हवाबाज कोसा करते थे।

वह बडी कठिनाई से पैर घसीटता पुश्किन स्मारक तक पहुंचा। रास्ते मे वह कई बार अपनी छडी पर दोनो हाथ टेककर खडे हो करके और दूकानो की खिडकियो पर प्रदर्शित मामूली चीजो की जाच करने का बहाना करके आराम करने के लिए रुका। स्मारक के पास हरी, सूरज से तपी हुई बेच पर वह कितनी राहत के साथ बैठ गया या गिर पडा और पैर फैला लिये, जिनमे कृत्रिम पैरो से ऊपर दर्द और जलन मच रही थी। यद्यपि वह थका था, उल्लास की भावना ने उसका साथ

न छोड़ा। वह निर्मल, धुला हुआ दिन कितना सुन्दर था। सामने पार की इमारत की छत पर खड़ी महिला मूर्ति के ऊपर, जो आसमान फैला हुआ था, वह अनन्त प्रतीत होता था। सड़क के किनारे लगे लाइम वृक्षों की ताजी, मधुर गंध लेकर हवा का झोंका आता जाता था। ट्रामगाड़ियों की खड़खड़ाहट प्यारी लग रही थी और उन बच्चों की हंसी भी उल्लासपूर्ण थी, जो पीले और भूरे रंग के, इमारत के नीचे उष्ण, सूखी बालू मे घरौंदे बनाने में व्यस्त थे। उधर सड़क पार और आगे, रस्सियों के घेरे के पीछे, जहां खाकी गणवेशधारी दो लड़कियां चुस्त फौजी वर्दियां पहने चौकसी कर रही थीं, एक सिगार जैसा रुपहले ढांचे का गुब्बारा नजर आ रहा था और यद्यपि वह युद्ध-साधन मास्को के आसमान में स्थित रात्रिकालीन पहरा देता था, एक विशालकाय, सुप्रकृति के पशु की भांति लगता था मानो किसी चिड़ियाघर से निकल भागा हो और अब पेड़ों की ठंडी छांह में ऊंघ रहा हो।

मेरेस्येव ने आंखें बंद कर ली और अपना मुसकराता हुआ चेहरा सूरज की ओर मोड़ लिया।

शुरू मे बच्चों ने हवाबाज की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें देखकर मेरेस्येव को वार्ड नम्बर बयालीस की खिड़की की पटिया पर आ जुटनेवाली गौरैयों का स्मरण हो आया और उनकी चहक की गूंज के बीच वह सूरज की उष्णता तथा सड़क के शोरगुल को अपने अंग-अंग मे सोख लेने में व्यस्त हो गया। लेकिन एक छोटा-सा छोकरा, अपने साथियों से अलग भाग कर अलेक्सेई के फैले हुए पैरों से टकरा गया और रेत में पछाड़ खाकर गिर पड़ा।

उस नन्हे छोकरे का चेहरा एक क्षण तो आंसू भरी पीड़ा से विकृत हो उठा, मगर दूसरे ही क्षण उसपर हैरानी का भाव आ गया और फिर भय-ग्रस्तता छा गयी। डर के मारे बालक चीख उठा और भाग खड़ा

हुआ। बच्चों का झुण्ड उसके चारों तरफ जमा हो गया और कुछ देर तक हवाबाज की तरफ कनखियों से नजरें डालते हुए घबराहट के साथ चहकता-चहकता रहा। फिर वे धीरे-धीरे, चोरी-चोरी उसकी ओर बढ़ने लगे।

अपने विचारों में लीन रहने के कारण मेरेस्येव यह दृश्य न देख सका। उसने आखें खोलीं और छोकरों को अपनी ओर आश्चर्य और भय से ताकते देखा, तभी उसे होश आया कि ये बालक क्या कह रहे हैं।

"तू झूठ बोल रहा है, वितमिन! वह असली हवाबाज है, सीनियर लेफ्टीनेंट," एक दस वर्ष के पीले-दुबले लड़के ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"मैं झूठ नहीं कह रहा हूं," वितमिन ने विरोध किया। "मैं मर जाऊ, अगर झूठ बोलू। सच मानो, वे लकड़ी के हैं! असली नहीं, लकड़ी के हैं, मैं कहे देता हू।"

मेरेस्येव के कलेजे में तीर-सा लगा और दिन की उज्ज्वलता यकायक उसके लिए मद पड गयी। उसने आखें उठायीं और उसकी नजर पड़ते ही, बालक अभी भी उसके पैरों की ओर देखते हुए पीछे हट गये।

अपने साथी के अविश्वास से क्रुद्ध होकर वितमिन ने उसे चुनौती देते हुए कहा

"तुम चाहो तो मैं उसी से पूछ लू। क्या समझते हो, मैं डरता हू? आओ, शर्त बद लो!"

इतना कहकर उसने अपने को बाकी लड़कों से अलहदा कर लिया और धीरे-धीरे, सावधानी से, अस्पताल की खिड़की की दहलीज पर फुदकनेवाले 'टामीगनर' की भांति, पलक मारते ही रफूचक्कर होने के लिए तैयार-सा, वह मेरेस्येव की तरफ बढ़ा। अत में, दौड़ के लिए तैयार खिलाड़ी की भांति कमर झुकाकर, तत्परतापूर्वक खड़े होकर, उसने पूछने का साहस किया

की गध आ रही थी।

अलेक्सेई ने अपना नाम पुकारे जाते सुना। वह उछलकर खड़ा हो गया। सामने अन्यूता खड़ी थी। वह उसे फौरन पहचान गया—यद्यपि वह उतनी सुन्दर नही थी, जितनी कि फोटोग्राफ मे दिखाई देती थी। उसका चेहरा पीला और थका हुआ दिखाई दे रहा था, और वह अर्ध-फौजी पोशाक पहने थी—सिपाहियों जैसी छोटी कमीज तथा घुटने तक के जूते पहने और एक पुरानी, रग उडी टोपी सिर पर जमाये हुए। लेकिन उसकी हरी-सी किंचित उभडी हुई आखे मेरेस्येव की ओर उस निर्मलता और सादगी से देख रही थी, उनमे से ऐसा मैत्री भाव आलोकित हो रहा था, कि वह लडकी जो उसके लिए अजनबी थी, उसे पुरानी परिचित जान पडी मानो बचपन में वे दोनो साथ-साथ इसी अहाते में खेलते रहे हो।

एक क्षण उन्होंने मौन भाव से एक दूसरे की परीक्षा की। अत मे वह बोली

"मैंने आपकी कल्पना बिल्कुल भिन्न रूप मे की थी।"

"कैसी कल्पना की थी?" मेरेस्येव ने पूछा और अपने चेहरे

पर उमड आयी मुसकान को, जो उसे कुछ उपयुक्त नही महसूस हो रही थी, बहुत कोशिश करने पर भी दूर नही कर सका।

"मै क्या बताऊ? समझ लीजिए, वीरो जैसा, ऊचे कद का, हृष्ट-पुष्ट। हा, ऐसा ही कुछ था, और भारी जबडा, इस तरह का, और सचमुच, मुह मे एक पाइप . ग्रीशा ने आपके बारे मे इतना कुछ लिखा था।"

"तुम्हारा ग्रीशा, वह तो है हीरो!" अलेक्सेई ने बीच मे ही उसकी बात काट दी और यह देखकर कि इस बात से लडकी खिल गयी है, उसने इसी तर्ज से बात जारी रखते हुए और "तुम्हारे" शब्द पर जोर देते हुए कहा "तुम्हारा ग्रीशा तो असली इसान है। मै क्या हू? लेकिन तुम्हारा ग्रीशा मेरा ख्याल है, उसने अपने बारे मे तुम्हे कुछ नही बताया "

"अच्छा, अल्योशा? मै अल्योशा कहूगी, इजाजत होगी? उसके पत्रो से मै इस नाम की अभ्यस्त हो चुकी हू। मास्को मे तुम्हे और कोई काम नही है, क्या? तो मेरे घर चलो। मै अपनी ड्यूटी पूरी कर चुकी हू और इसलिए अब सारा दिन फुर्सत मे रहूगी। आओ न! मेरे घर कुछ वोदका भी है। तुम्हे वोदका पसद है? मै तुम्हे कुछ पिलाऊगी।"

तत्क्षण, स्मृति के गर्भ से, अलेक्सेई की आखो के सामने मेजर स्त्रुच्कोव का चालाकी भरा चेहरा कौध गया और उसे लगा कि वह शेखी बघारता हुआ कह रहा है "लो, देख लो! देखते हो, यह कैसी है? अकेली रहती है। वोदका! आहा!" लेकिन स्त्रुच्कोव नजर से इतना गिर चुका था कि वह उसकी बातो पर अब किसी कीमत पर यकीन नही कर सकता। शाम होने को अभी बडी देर थी, इसलिए वे पेडो की छाहो तले सडक के किनारे-किनारे पुराने मित्रो की तरह बाते करते टहलते रहे। उसे यह देखकर आनन्द प्राप्त हो रहा था कि जब उसने बताया कि युद्ध शुरू होने पर ग्वोज्देव किस दुर्भाग्य का शिकार

हो गया था तो अपने आंसू रोकने के लिए उसने अपने होंठ काट लिये। जब उसने मोर्चे पर मेरेस्येव के आदमी मारा जाने का समाचार लिखा था उसकी हरी-सी आंखें चमकने लगीं। वह लगातार लिखती रही थी। और अधिक विस्तृत विवरण पाने के लिए वह किन बातों में [illegible] रही थी। और उस समय जब किसी तरह का उत्तर नहीं आया उसने स्वयं बताया कि मेरेस्येव ने अस्पताल से उसके पास अपनी तंदुरुस्ती का प्रमाणपत्र भेज दिया था। और वह अचानक कहां भाग गया था? न कोई चेतावनी, न कोई संदेश और न कोई पता ही छोड़ा? क्या यह भी कोई फौजी गुप्त बात है? कोई आदमी अगर बिना किसी निशान गायब हो जाय और फिर कभी एक शब्द भी न लिखे तो उसमें कितना फौजी रहस्य है?

"अच्छा, जरा यह भी बताओ, जब तुम यहां टेलीफोन पर बातें कर रहे थे, तब तुमने उस बात पर इतना अधिक जोर क्यों दिया था कि वह दाढ़ी बढ़ा रहा है?" अन्यूता ने उसकी ओर जिज्ञासापूर्वक देखते हुए पूछा।

"ओह, वैसे ही बक गया। उसमें कोई खास बात नहीं थी," मेरेस्येव ने बात टालते हुए जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, मुझे बता दो! जब तक तुम बताओगे नहीं, मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं। यह भी फौजी रहस्य है क्या?"

"बिल्कुल नहीं। सीधी बात यह कि हमारे प्रोफेसर वसीली वसील्येविच, समझीं उन्होंने दाढ़ी बढ़ाने की हिदायत दी थी ताकि लड़कियां मेरा मतलब है, ताकि कोई लड़की, उसे अधिक चाहने लगे।"

"ओह, यह बात है? अब मैं सब कुछ समझ गयी!"

यकायक अन्यूता की हरी-सी आंखों में रोशनी गुल हो गयी और वह जरा ज्यादा ढली हुई दिखाई देने लगी। उसके चेहरे का पीलापन जरा और उभर आया, और नन्ही-नन्ही झुर्रियां, इतनी बारीक कि सुई से

काढी गयी जान पडती थी, उसके माथे पर, आखो के कोने पर प्रगट हो गयी, और कुल मिलाकर, अपनी पुरानी, उडे हुए रग की वर्दी और अमरोटी रग के बालो के ऊपर उडे हुए रग की पाइलट टोपी पहने हुए वह थकित और जर्जर मालूम होने लगी। केवल उसका नन्हा-सा, रसीला गुलाबी मुख देखकर, जिसमे ऊपर के होठ पर एक छोटा-सा तिल था, यह प्रगट होता था कि वह अभी भी युवती है, और मुश्किल से बीस वर्ष की आयु तक पहुची होगी।

मास्को मे ऐसा भी होता है कि अगर आप शानदार अट्टालिकाओ की छाह मे चौडी सडक पर चलते जाये और यकायक कही उस सडक से मुड पडे तो एक-आध दर्जन कदम ही चल पायेगे कि आपको कोई छोटा-सा नाटा मकान मिल जायगा, जिसकी नन्ही-सी खिडकिया पुरानेपन के कारण धुधली पड गयी होगी। ऐसे ही एक मकान मे अन्यूता रहती थी, वे लोग एक तग जीना चढकर, जहा बिल्लियो और मिट्टी के तेल की गध आ रही थी, ऊपर की मजिल पर पहुचे। लडकी ने कुजी लगाकर दरवाजा खोला। तग रास्ते मे पडे हुए सामान भरे थैलो, टीन के कुछ तसलो और कनस्तरो को लाघते हुए, वे एक अधेरे और वीरान रसोईघर मे पहुचे, फिर एक छोटा-सा गलियारा पार किया और एक नाटे दरवाजे तक पहुचे। एक नाटी, दुबली-पतली वृद्धा ने सामने के दरवाजे से अपना सिर निकाला।

"आन्ना दनीलोव्ना, तुम्हारे लिए एक चिट्ठी है," उसने कहा और फिर उन युवा व्यक्तियो को जिज्ञासापूर्वक तब तक देखती रही, जब तक वे कमरे मे घुस न गये और फिर गायब हो गयी।

अन्यूता के पिता एक सस्थान मे प्राध्यापक थे। जब सस्थान यहा से अन्यत्र ले जाया गया तो अन्यूता के माता-पिता भी साथ ही चले गये और किसी पुरानी वस्तुओ के भण्डार की भाति कपडे से ढके-मुदे फर्नीचर से भरे ये दो छोटे-से कमरे इस लडकी की देखभाल मे छोड गये। सारे

फर्नीचर, दरवाजे और खिड़कियों के पुराने परदों, दीवारों की तस्वीरों और पियानो पर रखी हुई मूर्तियों और गुलदानों से उदासी और वीरानगी की गंध आ रही थी।

"इस जगह की यह हालत देखकर क्षमा करना। मैं सैनिक की भांति रहती हूं और अस्पताल से सीधे डिस्पेंसरी चली जाती हूं। इस जगह तो मैं कभी-कभी आती हूं," अन्यूता ने सकुचाते हुए कहा और कूड़ा करकट समेत मेजपोश को जल्दी से मेज से हटा लिया।

वह कमरे से बाहर चली गयी और लौटकर उसने मेजपोश को मेज पर फिर से बिछा दिया और सावधानी से उसके किनारे ठीक कर दिये।

"और जब कभी घर आने का मौका भी मिलता है, तो मैं इतनी थकी हुई होती हूं कि अपने को मुश्किल से खींच कर बिस्तर तक ले जाती हूं और कपड़े उतारे बिना ही सो जाती हूं। इसलिए सफाई के लिए कोई वक्त नहीं मिलता।"

कुछ क्षण बाद बिजली की केतली गुनगुनाने लगी, चीनी के पुराने प्याले, जिनके किनारे घिसे थे, मेज पर चमक रहे थे, एक तश्तरी पर राई की पावरोटी के पतले टुकड़े रखे हुए थे, और शराब के कटोरे के तल में चीनी के छोटे-छोटे टुकड़े रखे थे। फुदनादार टीकोजी—यह भी पिछली सदी की चीज थी—के नीचे रखे हुए टीपाट से कमरे में ऐसी सुगंध भर गयी थी कि युद्ध के पहले का जमाना याद आ जाता था, और मेज के बीचोंबीच नीले-से रंग की अनगुनी बोतल रखी थी, जिसके दोनों ओर एक एक जाम मानो उसकी रक्षा कर रहे थे।

मेरेस्येव एक गहरी, मखमल से मढ़ी आराम-कुर्सी पर बैठा हुआ था। हरे मखमल के खोल में से भराव इतना अधिक झांक रहा था कि कढ़े हुए ऊनी कालीन से, जिसे बड़ी सावधानी से कुर्सी की पीठ से सीट तक लगाया गया था, वह छिप नहीं पाया था। लेकिन कुर्सी

इतनी आरामदेह थी, उसने बैठनेवाले को इतनी उदारता और सुखमय ढंग से अपने आलिंगन में भर लिया था कि अलेक्सेई फौरन उसकी पीठ से टिक गया और बड़े चैन के साथ अपने थके और दर्द करते पैरों को फैला लिया।

अन्यूता उसके निकट एक छोटी-सी बेंच पर बैठ गयी और छोटे बच्चे की तरह उसके चेहरे की ओर ताकती हुई, फिर ग्वोज्देव के बारे में उससे सवाल पूछने लगी। सकायक मेजबान की हैसियत से अपना कर्तव्य स्मरण करके वह अपने आपको कोसती हुई उठ बैठी और अलेक्सेई को मेज तक खींच लायी।

"तुम्हें एक गिलास दूं? ग्रीशा ने मुझे बताया था कि टैंक-चालक और हवाबाज भी . "

उसने एक गिलास भरकर उसकी ओर बढ़ा दिया। सूरज की उज्ज्वल किरणें कमरे में तिरछी पड रही थी और उनकी रोशनी में वोदका का नीला-सा रंग दमक उठा। मद्यसार की गंध से अलेक्सेई को सुदूर जंगल में बने उस हवाई अड्डे की, अफसरों के भोजनालय की, और के दोपहर का खाना खाते समय जब 'ईंधन का राशन' बांटा जाता था, तो उसके साथ उमड पडनेवाले उत्फुल्ल गुंजन की यकायक याद आ गयी। यह देखकर कि दूसरा गिलास खाली ही है, अलेक्सेई ने पूछा

"और तुम?"

"मैं नही पीती," अन्यूता ने सहज भाव से उत्तर दिया।

"मगर मान लो, हम उसके, ग्रीशा के स्वास्थ्य के वास्ते पियें तो?"

लडकी मुसकरायी, खामोशी के साथ उसने अपना गिलास भर लिया, उसका पतला-सा तना पकडकर उठाया और अपनी आंखों में गम्भीर चिन्तन का भाव भरकर अपने गिलास को अलेक्सेई के गिलास से खडकाया और कहा

"उसके लिए शुभकामनाएं!"

यह कहकर उसने बड़ी शान से अपना गिलास उठाया, एक ही घूंट में खाली कर दिया और फौरन खांसने लगी। उसका चेहरा सुर्ख पड़ गया, वह बड़ी कठिनाई से सांस ले पा रही थी।

वोदका बहुत दिनों से न चखी थी, इसलिए अलेक्सेई को नशा चढ़ता महसूस हुआ और अपने शरीर में उष्ण सिहरन उमड़ती जान पड़ी। उसने पुनः गिलास भर दिये, लेकिन अन्यूता ने दृढ़तापूर्वक सिर हिलाकर मना कर दिया।

"नहीं, नहीं! मैं नहीं पीऊँगी। तुमने देख तो लिया कि मुझे क्या हो जाता है।"

"लेकिन क्या तुम मेरे शुभ के लिए नहीं पियोगी?" अलेक्सेई ने अनुरोध किया। "काश, तुम्हें मालूम होता, अन्यूता, कि मुझे शुभ कामनाओं की कितनी आवश्यकता है!"

लड़की ने उसकी ओर बड़ी गम्भीरतापूर्वक देखा, अपना गिलास उठाया और मुसकुराकर उसकी ओर सिर हिलाकर शुभकामना प्रगट की और आहिस्ते से उसकी कुहनी दबाकर फिर गिलास खाली कर गयी, मगर इस बार फिर खांसी आयी।

"मैं कर क्या रही हूं?" आखिरकार जब उसकी सांस फूलना बंद हुई, तो वह बोली। "और वह भी चौबीस घंटे ड्यूटी करने के बाद। मैं सिर्फ तुम्हारे वास्ते इतना कर रही हूं, अल्योशा! तुम हो ग्रीशा ने तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ लिखा था मैं तुम्हारे लिए भी शुभकामना करती हूं, मेरी हृदय से बहुत-बहुत शुभकामना है। और मुझे विश्वास है, तुम्हारी कामनाएं भी पूरी होंगी। सुन रहे हो, मैं क्या कह रही हूं, मुझे विश्वास है," और आनन्दपूर्ण खिलखिलाहट के साथ हंस पड़ी। "लेकिन तुम खा नहीं रहे हो! कुछ पावरोटी खा लो। तकल्लुफ न करो। मेरे पास अभी और है। यह तो कल की है। आज

उसे विदा करने स्टेशन तक आयी। वे [illegible]
और चूंकि [illegible] आराम कर रहा था, इसलिए उसने [illegible] के
साथ कदम रख रहा था कि अस्पताल में [illegible] "ग्रीशा ने
जब लिखा था कि उसके सिर के बाल नहीं हैं, तो [illegible] तो नहीं
कर रहा था?" उसने [illegible] के बारे में बताया
जहां वह और अन्य [illegible] काम करती थी, घायलों
की सेवा-शुश्रूषा करती थी। उसने बताया कि आजकल काम कितना
कठिन है, क्योंकि दक्षिण से हर दिन अनेक ट्रेनें घायलों को लेकर आती
है। और ये घायल भी कितने शानदार आदमी हैं और कितनी बहादुरी
से वे अपनी यातनाओं को सहन करते हैं! [illegible] के
बाद उसने अपनी ही बात काटकर यह पूछा

"तुमने जब कहा था कि ग्रीशा दाढ़ी बना रहा है, तो क्या तुम
सचमुच गम्भीर थे?" वह कुछ देर खामोश और चिन्तनशील रही और
फिर आगे बोली "मैं अब सब कुछ समझ गयी हूं। मैं तुम्हें ईमानदारी
से बताये देती हूं, जैसे मैंने अपने पिता जी को बता दिया था पहले
तो उसके चेहरे पर घाव के चिह्नों को देखना भर भी मैं बर्दाश्त नहीं
कर सकी। नहीं, बरदाश्त नहीं, यह सही शब्द नहीं होगा। मेरा मतलब
है–मैं घबरा गयी। नहीं! यह भी सही शब्द नहीं है। मैं कैसे बताऊं,
समझ मे नही आता। तुम मेरी बात समझ गये? शायद मेरा यह व्यवहार
सही नही था, लेकिन इसमे कोई कर ही क्या सकता है? लेकिन मेरे
पास से उसका भाग जाना! मूर्ख लडका! हे भगवान, कितना मूर्ख
लडका है। अगर तुम उसे पत्र लिखो, तो उसे बता देना कि मुझे उसके
व्यवहार से ठेस लगी है, बहुत ठेस लगी है।"

विशाल स्टेशन लगभग पूरी तरह सिपाहियो से भरा था, कुछ लोग
सुनिश्चित कार्यवश भाग-दौड़ कर रहे थे और कुछ लोग भौहे चढाये
हुए, चिन्ताग्रस्त चेहरे तनाये दीवारो के किनारे बेचो पर, या अपने

सामान के थैलों पर या फर्श पर आसन जमाये खामोशी से बैठे थे और ऐसा लगता था कि उनका दिमाग किसी एक ही बात पर केन्द्रित है। किसी समय यह लाइन पश्चिमी योरप से मुख्य सम्बन्ध स्थापित करती थी, शत्रु ने अब मास्को से पश्चिम मे लगभग ८० किलोमीटर की दूरी पर सडक काट दी थी। बाकी लाइन पर अब सिर्फ फौजी ट्रेनें ही दौडती थी, और राजधानी मे सफर कर, दो ही घटे मे अब सिपाही लोग सीधे अपनी अपनी डिवीजनो के दूसरे एचीलोन तक पहुच जाते थे, जो यहा रक्षा-पात सभाले हुए थी। और हर आधे घटे पर कोई विद्युत-चालित ट्रेन प्लेटफार्म पर मजदूरो की भारी भीड को, जो बाहरी क्षेत्रो मे रहते है, और दूध, फल, और साग-सब्जिया लानेवाली किसान महिलाओ को उतार जाती थी। एक क्षण मानवता के इस कोलाहलपूर्ण समूह से स्टेशन पर बाढ आ जाती थी, लेकिन शीघ्र ही वे सडको पर बह जाते थे, और एक बार फिर स्टेशन को एकमात्र फौजियो के अधिकार मे छोड जाते थे।

मुख्य हाल में सोवियत-जर्मन मोर्चे का एक बडा भारी, फर्श से ठीक छत तक ऊंचा नक्शा टगा था। एक मोटी-सी, गुलाबी कपोलो वाली फौजी वर्दीधारी लडकी एक अखबार थामे, जिसमे सोवियत सूचना-विभाग की ताजी विज्ञप्ति थी, नक्शे पर सीढी लगाये खडी थी और पिनो मे लगे हुए डोरे को खिसकाकर युद्ध की पात को अकित कर रही थी।

नक्शे के निचले हिस्से मे डोरा दाहिनी तरफ बडे भारी कोण पर मुडा हुआ था। जर्मन दक्षिण मे हमला कर रहे थे। वे लोग ईजिम-बारवेन्कोवो की रक्षा-पात मे धस गये थे। उनकी छठवी फौज ने देश की छाती में गहरा घाव बना दिया था और वे अब दोन नदी की नीली शिराओ की तरफ बढ रहे थे। लडकी ने डोरे को दोन की रेखा पर लगा दिया। उसके पास ही वोल्गा की मोटी-सी शिरा टेढी-मेढी फैली

हुई थी, जहा एक बडे गोल चिह्न से स्तालिनग्राद और उसके ऊपर एक छोटे-से बिंदु से कमीशिन अंकित था। स्पष्ट था कि शत्रु की जिस घुस-पैठ ने दोन पर चोट की है, वह अब मुख्य शिरा की ओर बढ रही है और उसके पास तथा ऐतिहासिक नगर के पास पहुच भी गयी है। भयानक खामोशी के साथ काफी बडी भीड, जिसके कंधो मे ऊपर वह लडकी सीढी के डंडे पर खडी थी, उस लडकी के स्थूल हाथो को पिनो की स्थिति बदलते देख रही थी। एक युवक सिपाही जिसके चेहरे पर पसीना झलक आया था, और जो एक नया, अब तक लोहा न किया गया कडा-सा ग्रेटकोट पहने हुए था, शोकपूर्वक उच्च स्वर मे सोचते हुए बोला

"हरामी लोग जोरो से बढ रहे है देखो किस तरह बढते जा रहे है ये!"

खिचडी मूछोवाले एक ऊचे और दुबले-पतले रेलवे-कर्मचारी ने, जो ग्रीज से सनी रेलवेई टोपी पहने था, सिपाही की ओर भौह चढाकर देखा और बडबडाया

"वे बढ रहे है, क्या सचमुच? लेकिन तुम लोग उन्हे बढने क्यो दे रहे हो? अगर तुम लोग उन्हे पीठ दिखा दोगे तो वे जरूर बढेगे। क्या योद्धा हो तुम लोग! देखो कहा तक आ गये है! बिल्कुल वोल्गा माता तक।" उसके स्वर से दर्द और दुख टपक रहा था, मानो कोई पिता अपने बेटे को कोई गम्भीर और अक्षम्य अपराध करने के कारण झिडक रहा हो।

सिपाही ने अपराधी की भाति चारो तरफ देखा और अपने बिल्कुल नये ग्रेटकोट को सभालने के लिए कधे उचकाये और भीड से बाहर जाने के लिए धक्का मारकर रास्ता बनाने लगा।

"ठीक कहते हो। हम काफी हार चुके है," एक और व्यक्ति ने आह भरी और कटुतापूर्वक सिर हिलाते हुए बोला। "एक्ख!"

तभी जीन का लबादा पहने हुए एक बूढे ने, जो एक ग्रामीण अध्यापक या शायद देहाती डाक्टर था, सिपाही की हिमायत मे कहा

"उसे क्यो दोष देते हो? यह कोई उसकी गलती है? उनमे से कितने लोग अभी ही मारे जा चुके है? जरा उस ताकत को तो देखो जो हमारे खिलाफ टूट पड़ी है। लगभग सारा योरप और वह भी टैको पर सवार... उस सब को तुम एक दम कैसे रोक सकते हो? सच तो यह है कि हम लोग घुटने टेककर उस लडके को धन्यवाद दे कि हम जिन्दा है और मास्को मे आजादी से घूम-फिर रहे है। देखो तो फासिस्टो ने हफ्तो भर मे अपने टैको से कितने देशो को रौद डाला था। लेकिन हम लोग एक साल से भी अधिक से लड रहे है और अभी भी उन पर चोट कर रहे है—और हमने कितनो ही को मौत के घाट उतार दिया है। सारी दुनिया को उस लडके के सामने घुटने टेककर उसका सम्मान करना चाहिए। लेकिन तुम लोग हो जो 'पीठ दिखाने' की बात किये जाते हो।"

"मै जानता हू, खूब जानता हू, भगवान के लिए मेरे ऊपर प्रचार न चलाओ। मेरा दिमाग इसे जानता है, मगर मेरा दिल ऐसे दुखता है, मानो फट ही जायगा।" रेलवे-कर्मचारी ने उदास भाव से जवाब दिया। "यह हमारी ही धरती है जिसे जर्मन रौद रहे है, ये हमारे ही घर है जिन्हे वे बरबाद कर रहे है।"

"क्या वह भी वही है," अन्यूता ने नक्शे के दक्षिणी भाग की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"हा। और वह लडकी भी वही है," अलेक्सेई ने उत्तर दिया।

वोल्गा की नीली रेखा पर, स्तालिनग्राद के ऊपर उसने एक बिन्दु देखा जिस पर लिखा था 'कमीशिन'। उसके लिए वह नक्शे के एक बिन्दु से अधिक था। उसकी आखो के सामने वह दृश्य साकार हो उठा एक छोटा-सा हरा-भरा कस्बा, घास भरी उपनगरीय सड़के, [illegible]

हुई चमकीली और धूल-धूसरित पत्तियों वाले पोपलर वृक्ष, बगीचों के बाड़ों के पीछे से आती हुई सोम्रा, अजवाइन और धूल की गंध, धारीदार तरबूज मानो खेतो की सूखी पत्तियों के ऊपर किसी ने उन्हें बिखेर दिया हो, चिरायते की तीखी गंध से पूरित स्तेपी हवाएं, नदी का अवर्णनीय चमकीला प्रसार एक सौन्दर्यपूर्ण, भूरी आंखोंवाली, ताम्रवर्ण लड़की और सफेद बालोंवाली असहाय-सी अमेलिया उसकी मां

"और वे दोनों वहीं हैं," उसने दोहराया।

२

विद्युत्-चालित ट्रेन आनन्दपूर्वक अपने पहिये खड़खड़ाती हुई और अपना भोंपू बजाती हुई मास्को के बाहरी क्षेत्रों से भागी जा रही थी। मेरेस्येव खिड़की के नजदीक बैठा था और एक दाढ़ी-मूंछ सफाचट बूढ़े व्यक्ति के कारण, जो चौड़ा-सा मैक्सिम गोर्की शैली का टोप लगाये था और काली डोर से बंधा सुनहरी कमानी का चश्मा नाक पर रखे, वह बिल्कुल दीवार से सटने के लिए मजबूर हो गया था। वह बूढ़ा सावधानी से कागज में लिपटी हुई और सुतली से बंधी हुई एक कुदाली, एक खुरपी और एक तगली घुटनों के बीच रखे था।

उन भयानक दिनों में अन्य लोगों की भांति यह बूढ़ा भी युद्ध के अलावा और कोई बात नहीं सोच रहा था। उसने बड़े जोर से अपना दुबला-पतला हाथ मेरेस्येव की नाक के सामने हिलाया और बड़े महत्वपूर्ण ढंग से उसके कान में बुदबुदाया

"तुम यह न सोचना कि चूंकि मैं साधारण नागरिक हूं, इसलिए मैं अपनी योजना नहीं समझता। मैं इसे पूरी तरह समझता हूं। यह सब शत्रु को वोल्गा के स्तेपी क्षेत्र तक लुभाकर ले आने के लिए हो रहा है, हां, ताकि वह अपने आवागमन की पांत फैला ले, और जैसा कि आजकल

कहा जाता है, वह अपने बुनियादी फौजी अड्डों से सम्बन्ध खो बैठे, और तब यहा पर पश्चिम और उत्तर मे उसके यातायात के आवागमन की पात काट दी जाय और उसे चकनाचूर कर दिया जाय। हा। और यह बडी चालाकी की योजना है। हमारे खिलाफ हिटलर ही नही है। वह सारे योरप को हमारे खिलाफ जुटा रहा है। हम अकेले दम छे देशो से लड रहे हैं। अकेले दम। और नही तो, हमे उनके हमले की ताकत को काफी बडे क्षेत्रो मे फैलाकर कम कर देना है। हा। यही वाजिब रास्ता है। क्योकि हमारे मित्र राष्ट्र तो हाथ पर हाथ धरे बैठे है, क्या नही? तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"मेरा ख्याल है, तुम दिल बहलावे की बाते कर रहे हो। हमारी मातृभूमि इतनी अमूल्य है कि उसे ढाल की तरह इस्तेमाल नही किया जा सकता।" मेरेस्येव ने अमैत्रीपूर्ण स्वर मे उत्तर दिया और उसे यकायक वह वीरान, जला हुआ गाव याद आ गया जहा से वह शीतकाल मे रेगते हुए गुजरा था।

लेकिन वह बूढा, मेरेस्येव के चेहरे पर तम्बाकू और जौ की काफी की गध से भरी सास छोडता और कानो मे भुनभुनाता ही चला गया।

अलेक्सेई खिडकी के बाहर झुक गया और उष्ण, धूल भरी हवा को अपने चेहरे पर थपकिया जमाने देने लगा, वह उत्सुकतापूर्वक हर आनेवाले स्टेशनो को ताकता, जिनकी हरी चहारदीवारिया मुरझा गयी थी और खुशनुमा रगो से पुते समाचार बेचने के स्टालो जिनकी खिडकी-दरवाजो पर तख्ते जड दिये गये थे, वह हरे भरे जगलो से झाकते हुए बगलो, छोटी-सी सूखी हुई नदियो के पन्ने जैसे रगो के किनारो, चीड वृक्षो के मोमबत्तीनुमा तनो को जो डूबते हुए सूर्य की रोशनी मे सुनहरे कहरुवो की भाति चमक रहे थे, और गोधूलि वेला मे जगलो के पार नीले विस्तृत प्रसार को निहार रहा था।

" नहीं, मगर तुम तो फौजी आदमी हो, मुझे बताओ, यह बात ठीक है? एक वर्ष से ऊपर से हम फासिज्म के खिलाफ अकेले दम लड़ते आ रहे हैं। इसके बारे मे तुम्हारा क्या ख्याल है? और हमारे मित्र राष्ट्र कहा हैं? और कहा है उनका दूसरा मोर्चा? जरा तुम अपने दिमाग में यह तस्वीर खीचो डाकू लोग एक ऐसे आदमी पर हमला कर देते है, जो निःशक भाव से अपना पसीना बहाता हुआ काम-काज मे लगा हुआ था। लेकिन यह आदमी बुद्धि नही खोता। वह उन डाकुओ से भिड जाता है और बराबर लड़ता रहता है। वह घावों से लहू-लुहान हो जाता है, मगर फिर भी जो भी हथियार हाथ लगता है, उससे लड़ता रहता है। अनेक के खिलाफ एक, वे लोग हथियारबन्द है और बहुत दिनो से उसकी घात मे बैठे थे। हा। और उस आदमी के पड़ोसी इस लड़ाई का तमाशा देखते रह जाते हैं। वे अपने दरवाजे पर आ खड़े होते हैं 'शाबास भाई! उन्हे सबक सिखा दो! उन्हें खूब मजा चखा दो!' और उसकी सहायता के लिए जाने के बजाय, वे उसे लाठिया और पत्थर देते हैं और कहते है 'लो ये ले लो! इनसे उनकी मरम्मत करो! अच्छी तरह मरम्मत कर देना!' लेकिन इस लड़ाई से वे खुद अपने को अलग रखते हैं। हा हमारे मित्र राष्ट्र इसी तरह व्यवहार कर रहे हैं। मुसाफिर ये सब भी इसी तरह के हैं "

मेरेस्येव मुड़ा और बूढे की तरफ उसने दिलचस्पी से देखा। भीड भरे डिब्बे में अन्य यात्री भी उन्ही की तरफ देख रहे थे, और हर तरफ से ये आवाजे आयी

"हा, वह ठीक कह रहा है! हम अकेले दम लड रहे हैं। दूसरा मोर्चा कहा है?"

"कोई परवाह नही! हम निपट लेगे और शत्रु को खुद ही मार भगायेंगे। इसमें शक नही, जब सब कुछ खत्म हो जायगा, तो वे लोग भी अपना दूसरा मोर्चा लेकर आ जायगे।"

ट्रेन उपनगर के स्टेशन पर रुकी। पायजामा पहने अनेक घायल व्यक्ति डिब्बे में चढ़ गये, जिनमें से कुछ लोग बैसाखियों के बल चल रहे थे और कुछ छड़ियों के बल, और सभी के हाथ में कागज के थैले थे जिनमें सूरजमुखी के बीज और बेर भरे थे। वे लोग किसी विश्रामालय से यहां के बाजार के लिए आये होंगे। बिना कमानी के चश्मे वाला बूढ़ा फौरन उछल पड़ा और एक लाल बालोंवाले लड़के को, जो बैसाखी के बल खड़ा था और जिसकी एक टांग पट्टी से बंधी थी, उसने लगभग जबर्दस्ती अपनी सीट पर धकेल दिया

"यहां बैठो, लड़के, यहां बैठो!" वह चिल्लाया। "मेरी फिक्र मत करो। मैं तो जल्दी ही उतर जाऊंगा।"

और यह सिद्ध करने के लिए कि वह ठीक कह रहा है, उसने अपने बागवानी के औजार उठाये और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। घायल आदमियों के लिए जगह करने के लिए दूधवालियां जरा सिकुड़ गयीं। अलेक्सेई ने अपने पीछे किसी नारी कण्ठ को शिकायत के स्वर में कहते सुना "उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिये, एक घायल आदमी तो उसके बगल में खड़ा है और इसने अपनी सीट उसके लिए खाली तक नहीं की! बेचारा लड़का कुचला जा रहा है, लेकिन वह जरा भी परवाह नहीं करता! यहां बैठा है, खुद तो हट्टा-कट्टा है, मानो इसे कभी गोली छुएगी नहीं। वायुसेना में कमांडर भी है!"

इस अनुचित फटकार पर अलेक्सेई क्रोध से लाल हो गया। उसके नथुने कांपने लगे लेकिन यकायक वह मुसकुराता हुआ उठ बैठा और बोला

"इस सीट पर बैठो, प्यारे।"

घायल व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ़ होकर चौंक गया और बोला

"नहीं। धन्यवाद, कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट। कष्ट न कीजिये। मैं खड़ा ही ठीक हूं। दूर नहीं जाना है। सिर्फ दो ही स्टेशन जाना है।"

"बैठ जाओ, मै कहता हू।" अलेक्सेई ने आनन्द-मौज का अनुभव करते हुए स्नेहपूर्वक सख्ती से कहा।

वह डिब्बे के बगल की तरफ बढ गया, दीवाल के सहारे झुक गया, छडी पर दोनो हाथ टेककर अपने को सहारा दिया और मुसकुराता खडा हो गया। स्पष्ट था कि चौखानेदार रूमाल ओढे जिस बूढी ने उसे फटकार बतायी थी, वह अपनी गलती समझ गयी थी, क्योकि उसकी फिर शिकायत भरी आवाज सुनाई दी

"ये लोग भी क्या आदमी है। ए उधर टोपवाली! बैठी ऐसे है, जैसे कोई राजकुमारी जी है! युद्ध आता, फिर भी लगता उसे सगी माता! छडीवाले कमाडर को सीट तो दे दो! यहा आ जाओ, कामरेड कमाडर, तुम मेरी सीट पर बैठ जाओ। भगवान के लिए, जरा रास्ता तो छोडो और कमाडर को इधर निकल आने दो!"

अलेक्सेई ने अनसुनी कर दी। जो मनोरजन उसने महसूस किया था, वह भी विलीन हो गया। इसी क्षण निर्देशिका ने उस स्टेशन का नाम पुकारा जिस पर अलेक्सेई को उतरना था और ट्रेन धीरे-धीरे खडी हो गयी। वह भीड चीरता हुआ दरवाजे की ओर बढ रहा था कि उसे वह बिना कमानी का चश्मा पहने बूढा मिल गया। बूढे ने सिर हिलाकर इस तरह अभिवादन किया मानो वे पुराने परिचित हो और फिर कानाफूसी के स्वर में पूछा

"कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है, शायद आखिरकार वे लोग दूसरा मोर्चा खोल ही देंगे?"

"अगर वे नही खोलते तब भी हम अपना काम खुद पूरा कर लेगे", अलेक्सेई ने लकडी के प्लेटफार्म पर पैर रखते हुए जवाब दिया।

पहिये धडधडाती और जोर से सीटी बजाती हुई, बारीक-सा गुबार छोडकर ट्रेन मोड पर गायब हो गयी। प्लेटफार्म जिस पर थोडे-से यात्री रह गये थे, शीघ्र ही सुहावनी साझ की शान्ति से आच्छादित

हो गया। युद्ध के पहले यह सुन्दर, आरामदेह स्थान रहा होगा। स्टेशन को घेरे सटे खडे हुए चीड के वन मे वृक्षो के शिखर शान्तिदायक ताल के साथ मर्मर ध्वनि कर रहे थे। निस्सदेह दो वर्ष पहले इसी प्रकार की सुन्दर सध्याओ में, लोगो की भीडे—ग्रीष्म-कालीन हल्की-सी ठाठदार फ्राके पहने महिलाए, शोर मचाते हुए आनन्द-विह्वल बच्चे, और सामान की पार्सले तथा शराब की बोतले दवाये हुए शहर से लौटते हुए मर्द—स्टेशन से उमड पडते होगे और, गलियो और पगडडियो के द्वारा छायादार जगलो को पार करते हुए अपने बगले लौट जाते होगे। आज की ट्रेन से जो थोडे-से यात्री उतरे थे, वे अपनी कुदालिया, तगलिया और खुरपिया तथा बागवानी का दूसरा सामान लिए हुए शीघ्र ही प्लेटफार्म से विदा हो गये और अपनी अपनी चिन्ताओ मे खोये हुए गम्भीरतापूर्वक वनप्रदेश में घुस गये। अकेला मेरेस्येव अपनी छडी लिये,—वह छुट्टिया काटनेवाले की भाति दिखाई दे रहा था—ग्रीष्म की साझ के सौदर्य की सराहना करने के लिए रुक गया, उसने सुगधित हवा से फेफडे भर लिए, और चेहरे पर चीड वृक्षो को चीरकर आनेवाली किरणो का उष्ण स्पर्श अनुभव कर आखे मीच ली।

मास्को में उसे बताया गया था कि स्वास्थ्य-गृह कैसे जाना चाहिए और उसे जो थोडे बहुत चिह्न बताये गये थे, उनके सहारे उसने शीघ्र ही, सच्चे सिपाही की भाति, उस जगह का रास्ता खोज लिया। स्टेशन से कोई दस मिनट का रास्ता था—छोटी-सी, शान्तिपूर्ण झील के किनारे तक। क्रान्ति से पहले कभी किसी रूसी करोडपति ने यहा बेजोड ग्रीष्म-भवन बनाने का निश्चय किया था। उसने अपने शिल्पकार से कहा था कि वह किसी बिल्कुल मौलिक चीज का निर्माण करे, पैसे की कोई परवाह न करे। और इसलिए, अपने प्रतिपालक की रुचि के अनुसार, शिल्पकार ने इस झील के किनारे ईंटो का विशाल भवन तैयार किया जिसमे बारीक जाली की खिडकिया कगूरे और मीनारे बनायी, ऊचे-ऊचे

स्तम्भ खड़े किये और भूल-भुलैयादार रास्तों का निर्माण किया। यह ऊलजलूल ढाचा विशिष्ट रूसी प्राकृतिक प्रदेश में, ठीक झील के ऊपर, एक भौंडा-सा धब्बा था, जहा दलदली झाड़-झखाड बेहद उग आये थे। वैसे यहा बड़ा सुन्दर दृश्य था। शान्त मौसम मे शीशे की तरह निर्मल रहनेवाले पानी के किनारे नये एस्प वृक्षो का झुण्ड खड़ा था जिनकी पत्तिया थिरक रही थी, यहा-वहा हरे कुजो से ऊपर सिर उठाये भोज वृक्षो के चितकबरे तने खड़े थे, और खुद झील भी प्राचीनतम वन की विस्तृत दातेदार, नीली-सी अगूठी मे जड़ी-सी दिखाई देती थी। और यह सारा दृश्य पानी की शीतल, शान्त नील सतह में उलटा प्रतिबिम्बित दिखाई देता था।

इस स्थाल पर, जिसका स्वामी सारे रूस मे अपने आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध था, अनेक विख्यात चित्रकार आकर दीर्घकाल तक रहते रहे, और यह दृश्यस्थली, रूसी प्राकृतिक दृश्य के प्रभावशाली और मार्मिक सौंदर्य के रूप में, अनेक चित्रपटो में, सर्वांग या आशिक रूप से, आगामी पीढ़ियो के लिए, अंकित की जाती रही है।

यही स्थान अब सोवियत सेनाओ की वायु सेना के लिए स्वास्थ्य-गृह की भाति उपयोग मे आ रहा था। शान्ति काल मे विमान-चालक यहा अपनी पत्नी और बच्चों तक को लेकर आते थे। युद्ध-काल मे घायल विमान-चालको को स्वास्थ्य लाभ के लिए अस्पताल से यहा भेजा जाता। अलेक्सेई यहा चमकदार, भोज वृक्ष की पातो से सुसज्जित, अलकतरे की चौड़ी सड़क से नही, जगल से गुजरनेवाली पगडंडी से आया था, जो स्टेशन से सीधी झील की तरफ जाती है। यानी वह पीछे से आया और अनदेखे ही भारी, कोलाहलपूर्ण भीड़ में मिल गया जो मुख्य द्वार पर खड़ी हुई दो ठसाठस मोटरबसो को घेरे जमा थी।

बातचीत, विदाई की दुआ-सलाम और शुभकामनाओ की चर्चा से अलेक्सेई समझ गया कि वे लोग विमान-चालको को विदा कर रहे

हैं जो स्वास्थ्य-गृह से सीधे मोर्चे पर जा रहे थे। जानेवाले विमान-चालक प्रफुल्ल और उत्तेजित थे मानो वे ऐसी जगह नही जा रहे है जहा हर बादल के पीछे मौत घात लगाये बैठी रहती है, बल्कि अपने शान्तिकालीन फौजी केन्द्रो को जा रहे हैं। जो लोग उन्हे बिदा कर रहे थे, उनके चेहरे उदासी और अधीरता का भाव अभिव्यक्त कर रहे थे। अलेक्सेई उनकी भावना को समझ गया। उसे जबर्दस्त सग्राम के आरम्भ से ही, जो दक्षिण मे छिडा हुआ था, अलेक्सेई स्वय भी उसी प्रकार का अदम्य आकर्षण अनुभव कर रहा था, और जैसे-जैसे मोर्चे पर स्थिति अधिकाधिक गम्भीर होती गयी तैसे ही वह आकर्षण और भी शक्तिशाली होता जा रहा था। और जब फौजी क्षेत्रो मे 'स्तालिनग्राद' के शब्द का उल्लेख– अभी चुपके-चुपके और सावधानी से–होने लगा तो इस भावना ने अनन्त आतुरता का रूप धारण कर लिया और अस्पताल की अनुशासित अकर्मण्यता उसे असह्य हो उठी थी।

चुस्त मोटरबसो की खिडकियो के बाहर धूप खाये हुए ताम्रवर्ण, उत्तेजित चेहरे ताक रहे थे। स्वास्थ्य-गृह मे आनेवाले हर दल मे जिस प्रकार विनोदी व्यक्ति और स्वेच्छित विदूषक साधारणतया होते है, उसी चाल-ढाल का, एक नाटा-सा, लगडा आर्मीनियाई, जो धारीदार पायजामा पहने था और जिसके सिर पर गजेपन का थिगडा-सा था, बसो के चारो ओर फुदक रहा था, अपनी छडी हिलाते हुए चिल्ल-पो मचा रहा था और अपनी ओर से बिदाई की शुभकामनाए देता फिर रहा था

"फेद्या! फासिस्टो को आसमान मे मेरी ओर से भी सलाम कर लेना! तुम्हे उन लोगो ने चादनी स्नान की चिकित्सा पूरी नही करने दी, इसके लिए उन्हे मजा चखा देना! फेद्या! फेद्या! उन्हे होश करा देना कि सोवियत विमान-चालको को चादनी स्नान से रोकना बडी बदतमीजी है!

ताम्रवर्ण और गोल सिर वाला लडका, फेद्या, जिसके ऊचे माथे पर एक तरफ से दूसरी तरफ तक घाव का लम्बा चिह्न था, खिडकी

नजदीक से जानने से पता चला कि उसका चेहरा गम्भीर तथा भावपूर्ण और आखें सुन्दर, बडी बडी और [illegible]। सभा में उसने सभा में अपने को चांद कमेटी का अध्यक्ष बताकर अपना परिचय दिया और सिद्ध करने लगा कि इस प्रकार के मामलों को सलटाने का सर्वोत्तम उपाय है चादनी-स्नान, जैसे कि चिकित्सा-विज्ञान ने सिद्ध कर दिया, और चादनी-स्नान के इलाज में वह सख्त नियम-पालन और अनुशासन पर जोर देता है तथा चादनी में टहलने की व्यवस्था वह व्यक्तिगत रूप से स्वयं करता है। वह बडे सहज भाव से मजाक करना पसन्द करता था, मगर मजाक करते समय उसकी आखो में गम्भीरता का भाव बना ही रहता था और वह बडी तीक्ष्ण दृष्टि से, जिज्ञासापूर्वक अपने श्रोता के चेहरे की ओर ताकता रहता था।

स्वागत-कक्ष में एक श्वेत वस्त्र धारी लडकी ने मेरेस्येव का स्वागत किया जिसके वाल इतने लाल थे कि उसका सिर लपटो से भरा प्रतीत होता था।

"मेरेस्येव ?" लडकी ने किताव अलग रखते हुए, जिसे वह पढ रही थी, सख्ती से पूछा। "मेरेस्येव अलेक्सेई पेत्रोविच ?" उसने रजिस्टर देखा और फिर विमान-चालक पर आलोचनात्मक दृष्टि डालकर कहा "मुझसे कोई चालवाजी चलने की कोशिश न करो। मेरे पास तुम्हारा परिचय यो लिखा है 'मेरेस्येव सीनियर लेफ्टीनेट, नवे अस्पताल से, पैर कटे हुए।' लेकिन तुम "

तभी अलेक्सेई को उसका गोल सफेद चेहरा, जैसा कि लाल केशोवाली लडकियो का होता है, दिखाई दे पाया, जो ज्वालाओ सदृश केशो के वीच छिपा हुआ था। उसकी कोमल त्वचा पर निर्मल लालिमा फैली हुई थी। उसने अपनी उज्ज्वल, गोल, धृष्ट आखो से अलेक्सेई की ओर विस्मय से देखा।

"फिर भी, मै ही अलेक्सेई मेरेस्येव हू। ये मेरे कागजात है तुम क्या ल्योल्या हो ?"

"नही। यह तुम्हे कहा से पता चला ? मै जीना हू।" उसने सदिग्ध दृष्टि से अलेक्सेई के पैरो की ओर देखा और आगे कहा "क्या तुम्हे इतने वढिया कृत्रिम पैर मिल गये है या और कोई वात है ?"

"हा, कृत्रिम पैर है। तो तुम वही जीनोच्का हो जिस पर फेद्या ने दिल निसार कर दिया था ?"

"अच्छा, मेजर वरनाजियन ने तुम्हे भी यह वता देने का मौका निकाल लिया। ओह, उससे मुझे कितनी नफरत है। वह हर व्यक्ति का मजाक वनाता है। मैने फेद्या को नाचना सिखाया। इसमे कोई खास वात नही थी, कि है ?"

"और अब तुम मुझे नाचना सिखाओगी, ठीक? वरन्नाजियन ने चादनी-स्नान के लिए मेरा नाम भी लिख लेने का वायदा किया है।"

लडकी ने अलेक्सेई की ओर देखा और आश्चर्य से पूछा

"क्या मतलब है, नाच? बिना पावों के? वाहियात बात! मेरा ख्याल है, तुम भी सब का मजाक बनाना पसन्द करते हो!"

तभी मेजर स्त्रुच्कोव कमरे मे दौडता हुआ आया और उसने अलेक्सेई को भुजाओ में भर लिया।

"जीनोच्का!" उसने लडकी से कहा। "तय रहा, क्या नही? सीनियर लेफ्टीनेंट मेरे कमरे मे रहेगा।"

अस्पताल मे जो लोग बहुत दिनो तक साथ रहते है, वे बाद में भाई की तरह मिलते हैं। मेजर को देखकर अलेक्सेई इतना आनन्दित था, कि कोई यह समझ बैठता कि वह वर्षो से उससे नहीं मिला है। स्त्रुच्कोव ने अपना सामान स्वास्थ्य-गृह में जमा लिया था और काफी चैन महसूस कर रहा था। वह सबको जानने लगा था और सब उसे जानने लगे थे। एक ही दिन में उसने किन्ही को दोस्त बना लिया था और किन्ही से झगड बैठा था।

जिस छोटे-से कमरे पर उन दोनो ने अधिकार जमाया, उसकी खिडकिया पार्क की तरफ थी, जिसमें से ऊचे-ऊचे, सीधे चीड वृक्ष, हरी-भरी बिलबेरी की झाडियो और एश का एक नाजुक पेड जिसमे कुछ खूबसूरत पत्तिया इस प्रकार लटकी थी, मानो ताड वृक्ष हो, और उसपर केवल एक, मगर भारी पीली बेरियो का गुच्छा लटका हुआ था। भोजन के बाद तत्काल अलेक्सेई बिस्तर पर ठडी चादरो के बीच पैर फैलाकर लेट गया और फौरन सो गया।

उस रात उसने विचित्र, चिन्तनीय स्वप्न देखे। नीली-सी बर्फ, चादनी रात। जगल ने उसे रोयेदार जाल की तरह घेर लिया। उसने इस जाल से मुक्त होने का प्रयत्न किया, मगर बर्फ मे उसके पाव धस

गये। वह, यह सोचकर कि कोई भयानक विपत्ति आनेवाली है, बहुत छटपटाया, मगर उसके पाव वर्फ मे जम गये थे और उन्हे निकाल पाने की शक्ति उसमे न रह गयी थी। वह कराहा, ऐंठा, और करवट बदलता और अब वह जंगल मे न रहा, वल्कि एक हवाई अड्डे पर पहुच गया। दुबला-पतला मेकैनिक यूरा, एक विचित्र, हल्के-से, पखहीन हवाई जहाज के कॉकपिट में बैठा था। उसने हाथ हिलाया, हस दिया और सीधा आसमान मे उठ गया। मिखाईल दादा ने अलेक्सेई को इस प्रकार भुजाओ मे उठा लिया मानो वह बच्चा हो और सान्त्वना देते हुए कहा · "कोई परवाह नही, उसे जाने दो! हम लोग भाप-स्नान करेगे। बडा मजा रहेगा, क्यो छोकरे?" लेकिन उसे उष्ण स्नान के लिए लेटाने के बजाय मिखाईल दादा ने उसे ठडी बर्फ पर लेटा दिया। अलेक्सेई ने उठने का प्रयत्न किया लेकिन बर्फ उसे बुरी तरह जकडे थी। नही, वह बर्फ नही थी, उसके ऊपर एक भालू का उष्ण शरीर पडा हुआ था—खुर्राटे भरता वोझ से चकनाचूर करता और उसका दम घोटता हुआ। वसो मे भरे हुए विमान-चालक वहा से गुजरे, वे आनन्दपूर्वक खिडकियो से झाक रहे थे, मगर उन्होंने उसे नही देखा। अलेक्सेई उन्हे अपनी सहायता के लिए बुलाना चाहता था, उनकी तरफ दौडना चाहता था, कम से कम हाथ उठाकर उनको इशारा करना चाहता था, मगर वह कुछ न कर सका। उसने मुह खोला, मगर उससे सिर्फ रुधी हुई फुसफुसाहट ही निकल सकी। उसका दम घुटने लगा और उसे लगा कि उसके दिल की धडकन बन्द हो रही है, उसने एक आखिरी प्रयत्न किया और न जाने क्यो उसके सामने, ज्वालाओ जैसे केशो के समूह के बीच जीनोच्का का हसता हुआ चेहरा और धृष्ट, जिज्ञासापूर्ण नेत्र कौंध गये।

अलेक्सेई अवर्णनीय घबराहट की भावनाओ से ओत-प्रोत होकर जाग उठा। खामोशी का राज्य था, मेजर सो रहा था, आहिस्ते से खुर्राटे भर रहा था। प्रेत की भाति चादनी की एक किरण कमरे मे घुस

आयी थी और फर्श पर आ टिकी थी। वे भयानक क्षण आज क्या फिर लौट आये? उनको तो वह याद भी भूल गया था, और जब कभी वह उन्हें याद करने की कोशिश भी करता था, तो वह कोई गपोल-कल्पित कहानी मालूम होती थी। रात के ठंडे और सुगन्धित पवन के साथ, एक हल्की-सी उनींदी तालमयी ध्वनि, उज्ज्वल चांदनी से आलोकित खुली हुई खिड़की से उमड़ी चली आ रही थी, कभी वह उत्तेजित ऊंची उठ जाती, कभी कहीं दूर पर हो जाती और कभी ऐसे ऊंचे स्वर पर स्थिर रह जाती मानो किसी खतरे के कारण रुकी रह गयी है। यह वन-प्रान्तर का स्वर था।

विमान-चालक विस्तर पर बैठ गया और बड़ी देर तक चीड़ वृक्षों की रहस्यात्मक मर्मर ध्वनि सुनता रहा। उसने जोर से सिर हिलाया मानो वह किसी जादू को दूर कर रहा हो, और पुन प्रफुल्ल शक्ति से भर गया। स्वास्थ्य-गृह में उसे अट्ठाइस दिन तक रहना था, और उसके बाद यह तै होना था कि उसे विमान चलाना, लड़ना, जिंदा रहना है, या हमेशा के लिए लोगों की हमदर्दी भरी नजरों का और बसों में एक सीट दिये जाने का मुहताज रहना है। इसलिए उसे इन लम्बे, मगर थोड़े से अट्ठाइस दिनों का एक एक क्षण, असली इंसान बनने के लिए संघर्ष में लगा देना होगा।

मेजर के खर्राटों के बीच नीलगू-सी चांदनी में विस्तर पर बैठे-बैठे, अलेक्सेई ने अपने दिमाग में कसरतों की योजना बनायी। इसमें सुबह-शाम जिमनास्टिक करना, टहलना, दौड़ना, पैरों की विशेष कुशलता विकसित करना शामिल था, और जिस बात ने उसे सबसे अधिक आकर्षित किया और जिसमें उसे अपने पैरों के सर्वतोमुखी विकास की सम्भावना दिखाई दी, वह विचार उसके दिमाग में उस समय आया जब वह जीनोच्का से बातें कर रहा था।

उसने नृत्य सीखने का निश्चय किया।

३

एक दिन अगस्त की निर्मल, शान्त दोपहर मे, जब प्रकृति की हर वस्तु दमक और चमक रही थी, मगर किसी कारणवश अभी से ही अपरिलक्षित, उष्ण पवन मे शरदागमन का दुखद स्पर्श अनुभव होने लगा था, कई विमान-चालक, झाडियो मे से टेढे-मेढे बहते और कल-कल करते हुए एक छोटे-से झरने के रेतीले किनारे पर लेटे हुए धूप खा रहे थे।

गर्मी के कारण अलसाये हुए वे ऊघ रहे थे और अथक वरनाज़ियन तक चुप था, वह अपनी टूटी हुई टाग को, जो बुरी तरह जुडी थी, उष्ण रेत में दबाये था। वे हेज़ेल झाडी की धूसरित पत्तियो के कारण आखो से ओझल थे, लेकिन उन्हे खुद वह पगडडी साफ दिखाई दे रही थी, जो जलधारा के ऊपरी किनारे पर हरी घास के रौंदे जाने से बन गयी थी। अपनी टाग मे उलझे हुए होने के साथ ही वरनाजियन की नजर ऊपर उठ गयी और उसकी आखो को एक विचित्र दृश्य देखने को मिला।

एक दिन पहले ही जो नया अतिथि आया था, वह धारीदार पायजामानुमा पतलून और बूट पहने हुए, मगर कमर से ऊपर नगे रूप में, जगल मे प्रगट हुआ। उसने चारो ओर देखा और आसपास किसी को न देखकर, दोनो बाजू कुहनिया दबाकर विचित्र गति से कूदफाद करता दौड़ने लगा। लगभग दो सौ मीटर दौडने के बाद, वह बुरी तरह हाफता और पसीने मे तर-बतर टहलने की चाल पर उतर आया। सास फिर जम जाने के बाद वह फिर दौडने लगा। उसका शरीर घोडे के पुट्ठो की भाति चमक रहा था। वरनाज़ियन ने खामोशी के साथ अपने साथियो का ध्यान दौड़नेवाले की तरफ आकृष्ट किया और वे सब उसे झाडी के पीछे से ताकने लगे। नवागत व्यक्ति इन साधारण-

सी कसरतो से भी हाफ रहा था, जब-तब वह दर्द से चिहुक उठता था, कभी-कभी कराह उठता था, मगर फिर वह दौडता ही रहा, दौडता ही रहा।

वरनाजियन अब अपने को और अधिक रोक न सका और आवाज लगा उठा

"ऐ, छोकरे! क्या तुम क्लामेन्स्की बन्धुओ को पछाडने के लिए अभ्यास कर रहे हो?"

नवागत व्यक्ति झटके के साथ रुक गया। उसके चेहरे से थकान और दर्द के भाव गायब हो गये। उसने शान्तिपूर्वक झाडी की दिशा मे देखा और बिना एक शब्द कहे, विचित्र लुढकती हुई चाल से जगल में चला गया।

"क्या है यह आदमी, सरकस का खिलाडी है या पागल है?" वरनाजियन ने आश्चर्य से पूछा।

मेजर स्त्रुक्कोव ने, जो इस समय तक अपनी ऊघ से जाग गया था, उन्हे समझाया·

"उसके पैर नही है। वह कृत्रिम पैरो से अभ्यास कर रहा है। वह फिर लडाकू कमान में वापिस जाना चाहता है।"

इन अलसाये हुए व्यक्तियो पर इन शब्दो ने ठडे पानी की फुहार जैसा काम किया। फौरन वे सब बाते करने लगे। सभी को आश्चर्य हो रहा था कि जिस लडके में उन्होने कभी कोई अनोखी बात नही देखी थी, सिवाय इसके कि वह कुछ विचित्र चाल से चलता था, उसके पाव ही नही है। और यद्यपि उसके पैर नही है, फिर भी उसका लडाकू विमान उडाने का इरादा, उन्हे निराधार, अविश्वसनीय और पाखण्ड तक मालूम हुआ। उन्होंने स्मरण किया कि बीसियों आदमी मामूली-सी बातों—दो अगुलिया कट जाने, स्नायुओं की कमजोरी होने और पैरो मे जडता तक के लक्षण प्रगट होने—पर वायुसेना से अलहदा किये जा

के क्लब मे नृत्य सीखते हैं, उसने इन सम्मानित नृत्यकारो से वालरूम नृत्य की सर्वोत्तम परम्पराओं को ग्रहण किया है और उसे नाचना सिखायेगी, यद्यपि उसको इसमे सदेह हे कि असली पैरों के विना कोई व्यक्ति नाच भी सकता है। जिन शर्तों पर उसने नृत्य सिखाना स्वीकार किया वे वडी सख्त थी, उसे आज्ञाकारी और परिश्रमी वनना होगा, उसके साथ प्रेम मे पडने की कोशिश न करनी होगी, क्योकि इससे सवक में वाधा पडती है, और मुख्य वात यह कि जब उसे दूसरे पार्टनर अपने साथ नृत्य करने के लिए आमन्त्रित करे, तो अलेक्सेई कोई ईर्ष्या न करे, क्योंकि अगर वह एक ही पार्टनर के साथ नाचती रहेगी तो उसकी नृत्य-कुशलता खत्म हो जायगी और इसके अलावा, एक ही पार्टनर के साथ नाचने में कोई मजा नही हैं।

मेरेस्येव ने निरपवाद सारी शर्तें स्वीकार कर ली। जीनोच्का ने अपने लपटों जैसे केश हिलाए और फिर उसी समय, उसी स्थान पर उसने कुशलतापूर्वक अपने सुन्दर पैरो की गति से प्रथम पद-निक्षेप का प्रदर्शन किया। एक जमाने मे मेरेस्येव नें 'रूस्काया' नृत्य में और कमीशिन के पार्क में फायर ब्रिगेड के बैंड के साथ चलनेवाले पुराने नृत्यो में वडी स्फूर्ति दिखाई दी। उसको ताल और गति का सहज बोध था और इस आनन्दपूर्ण कला को वह वडी जल्दी सीख गया था। अव उसके सामने जो कठिनाई थी, वह यह कि उसे सजीव, लोचदार, चपल पैरो से नही, पिण्डुरियो से फीतो के द्वारा वधे चमडे के जोडो से पद-निक्षेप की कला सीखनी थी। पिण्डुरियों के पुट्ठो के द्वारा भारी और स्थूल कृत्रिम पैरो में प्राण और गति पैदा करने के लिए अतिमानवीय प्रयत्न और इच्छा-शक्ति के तीव्रतम प्रयास की आवश्यकता थी।

मगर उसने उन्हें अपनी आज्ञा मानने के लिए विवश कर दिया। प्रत्येक नया चरण जो वह सीखता—प्रत्येक विमर्पण, पद-विक्षेप, लहर और सम—वालरूम नृत्य की जटिल कला, जिसे सम्मानित पाल

सुदाकोव्स्की ने सिद्धांत-बद्ध किया था और बडी रोबदार और रगं मधुर शब्दावली प्रदान की थी, वह उसे असीम आनन्द से विह्वल कर देता और बालक की भाति वह प्रफुल्ल हो उठता। अभ्यास के बाद, वह अपनी ही धुरी पर चक्कर लगा उठता या अपने ऊपर विजय प्राप्त करने के उल्लास मे विह्वल होकर अपनी शिक्षिका को उठाकर घुमाता और कोई भी नही, यहा तक कि उसकी शिक्षिका भी यह न भाप पाती कि इन विविध और जटिल पद-निक्षेपो मे उसे कितनी पीडा भोगनी पडती थी, इस कला को सीखने के लिए उसे कितनी कीमत अदा करनी पड रही थी। किसी ने नही देखा कि जब वह लापरवाही के साथ अपने मुसकुराते हुए चेहरे पर से पसीने की बूदें पोछता था तो वह अनायास उमडे आसुओ को भी पोछ लेता था।

एक दिन उसने थककर बिल्कुल चूर, मगर प्रसन्न भाव से अपने कमरे में लगडाते हुए प्रवेश किया

"मैं नाचना सीख रहा हू!" उसने विजय भाव से मेजर स्त्रुच्कोव के सामने घोषणा की जो चिन्तन में लीन खिडकी के पास खडा था। बाहर ग्रीष्म के दिन का शान्तिपूर्वक अन्त हो रहा था और डूबते हुए सूरज की अन्तिम किरणें पेडो के शिखरो के बीच सोने-सी दमकती दिखाई दे रही थी।

मेजर ने कोई उत्तर नही दिया।

"और मै सफल होऊगा!" मेरेस्येव ने दृढतापूर्वक आगे कहा और आराम के साथ कृत्रिम पैरो को फेंक दिया और सुन्न पडी टागो को उगलियो के नाखूनो से बुरी तरह खुरचने लगा।

स्त्रुच्कोव अपना मुह खिडकी की ही ओर किये रहा, उसके कधे उठने-गिरने लगे और वह ऐसी आवाज कर रहा था, मानो सुबुक रहा है। खामोशी के साथ अलेक्सेई कम्बल में घुस गया। मेजर के साथ कोई विचित्र बात घट रही थी। यह व्यक्ति जो अब युवा नही था,

और अभी कुछ दिनों पहले ही जिसने औरतो के प्रति तिरस्कार प्रगट कर और उनकी गप्प लेकर मनोविनोद किया था और सारे वार्ड को खुश किया था, वही अब स्कूली लडके की भाति सिर से पैर तक प्रेम में डूब गया था और ऐसा लगता था कि वह बुरी तरह प्रेम मे फस गया है। वह दिन में कई बार स्वागत-कक्ष में जाकर क्लावदिया मिखाइलोव्ना को मास्को फोन करता। हर जानेवाले मरीज के साथ वह उसके लिए फूल, फल, चाकलेट और लिखित सदेश भेजता। वह उसके नाम लम्बी चिट्ठिया लिखता और जब उसे सुपरिचित लिफाफे दिये जाते तो वह प्रसन्न होता और मजाक करने लगता।

मगर उसकी हर विनय को वह ठुकरा देती, उसे कोई प्रोत्साहन न देती, उसके लिए दुख तक न प्रगट करती। उसने लिखा कि वह किसी और से प्रेम करती थी, जिसके लिए आज भी वह शोक मना रही है और मैत्री भाव से मेजर स्त्रुच्कोव को सलाह देती कि वह उसका पीछा छोड दे, उसे भूल जाय, उसके लिए कोई कष्ट न उठाये और उस पर बेकार समय बरबाद न करे। यही मैत्रीपूर्ण और यथातथ्य भाव, जो प्रेमालाप में सबसे अधिक अपमानजनक होता है, मेजर को इतना व्यथित कर रहा था।

अलेक्सेई उस समय कूटनीतिक भाव से चुपचाप कम्बल मे पाव फैलाये पडा था, जब मेजर खिडकी से हटकर अलेक्सेई की चारपाई की तरफ झपटा, उसे कधो से पकडकर झकझोरने लगा और उसके ऊपर झुककर चिल्लाने लगा

"वह क्या चाहती है? बताओ तो, आखिर मै हू क्या? कोई घास-फूस हू? क्या मै कुरूप, बूढा, सिर्फ कूडाकरकट भर हू? उसकी जगह कोई दूसरी होती तो   लेकिन क्या फायदा है यह सब कहने से!"

उसने अपने को आराम-कुर्सी पर लुढका दिया, हाथो मे मस्तक थाम लिया और इतनी बुरी तरह आगे-पीछे हिलने-डुलने लगा कि आराम-कुर्सी कराह उठी।

"वह औरत नही है? उसे कम से कम मेरे बारे में जिज्ञासा तो होनी ही चाहिए थी। चुडैल कही की! मैं उससे प्रेम करता हू और किस तरह! एकदम! ल्योश्का, ल्योश्का! तुम जानते ही हो, उस व्यक्ति को बताओ, वह मुझसे किस बात में बेहतर था? उसमें उसे क्या खास बात दिखाई दी थी? क्या वह अधिक चतुर था? देखने-सुनने में अच्छा था? वह किस तरह का नायक था?"

अलेक्सेई को याद आ गया कमिसार वोरोब्योव, उसका भारी-भरकम सूजा शरीर, तकिये पर पडा हुआ मोम जैसा चेहरा, उसके सामने नारी-शोक की अनन्त प्रतीक-सी मूर्तिवत खडी हुई वह महिला, और रेगिस्तान के बीच मार्च करते हुए लाल फौज के सिपाहियो की वह आश्चर्यपूर्ण गाथा।

"वह असली इसान था, मेजर, एक वोल्शेविक था। भगवान करे, हम सब उसकी तरह हो।"

४

एक समाचार, जो वेवुनियाद लगता था, स्वास्थ्य-गृह भर में फैल गया पैरविहीन विमान-चालक नृत्य सीख रहा है।

जब स्वागत-कक्ष से जीनोच्का अपनी ड्यूटी खत्म करके निकलती तो उसे अपना शिष्य गलियारे में उसका इतजार करता मिलता। वह उसके लिए जगली स्ट्रावेरी का एक गुच्छा लाता था, या कोई चाकलेट, या नारगी लाता जिसे वह अपने भोजन में से बचा लेता था। जीनोच्का गम्भीरतापूर्वक उसकी वाह पकडती और वे दोनो मनोरजन-कक्ष की ओर चल पडते, जो ग्रीष्मकालीन दोपहर में खाली रहता था और जहा परिश्रमी शिष्य ने पहले से ही ताश की मेजें और पिग-पाग की मेज दीवार से सटाकर लगा दी होती। जीनोच्का सौंदर्यपूर्ण ढग से उसके सामने कोई नयी मुद्रा प्रदर्शित करती। भौहे सिकोडकर विमान-चालक

उन जटिल मुद्राम्रो को देखता जिन्हे वह अपने नन्हे-से सुकुमार चरणो से फर्श पर अकित कर देती थी। फिर चेहरे पर गम्भीर भाव धारण कर वह लडकी अपने हाथो से तालिया वजाती और गिनने लगती

"एक, दो, तीन—एक, दो, तीन, विसर्पण, जरा दायी तरफ एक, दो, तीन—एक, दो, तीन, विसर्पण, बायी तरफ घूमो! हा, ठीक! एक, दो, तीन—एक, दो, तीन अब लहरिया! आओ, अब हम दोनो एक साथ करे!"

शायद इसलिए कि यह एक पैरविहीन व्यक्ति को नृत्य सिखाने का काम था, ऐसा काम जिसे न तो वाव गोरोखोव ने और न स्वय पाल सुदाकोव्स्की ने कभी किया था, या शायद इसलिए कि इस ताम्रवर्ण, घुघराले वाल और हसती हुई आखोवाले शिष्य को वह पसन्द करने लगी थी, या शायद दोनो ही कारण होगे—कारण कुछ भी हो, वह इस काम में अपनी फुर्सत का सारा समय और अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी।

शाम को जब नदी के रेतीले किनारे, वालीवाल का मैदान और स्किटिल खेल का मैदान वीरान होते और नृत्य ही मरीजो का परमप्रिय मनोरजन वन जाता, तो अलेक्सेई आनन्द क्रीडाओ मे निरपवाद रूप से भाग लेता। वह भली भाति नाचता, एक भी नृत्य न छोडता, और अनेक वार उसकी शिक्षिका को खेद होता कि उसने व्यर्थ ही उसे इतनी सख्त शर्त्तो मे बाध दिया है। अकार्डियन की धुन के साथ जोडे कमरे का चक्कर लगाने लगते। लालिमा युक्त मुखडा और उत्तेजनावश चमकती आखो सहित, मेरेस्येव सारे विसर्पण, पद-निक्षेप, मोड और सम पर नृत्य करता, और अपनी लपटो जैसे वालोवाली मृदुल सगिनी को स्फूर्ति और विह्वल आलिगन के साथ, और प्रत्यक्षत अनायास भाव से, नृत्य मे अग्रसर करता। और जो लोग इस वीर नर्तक को देखते, वे यह तक न भाप पाते कि जव-तव वह कमरे से वाहर चला जाता है, तो क्या करता है।

अपने रक्ताभ मुखड़े पर मुसकान लिये वह कमरे से बाहर हो जाता—बड़ी लापरवाही के साथ अपने रूमाल से अपने ऊपर हवा करता हुआ, लेकिन जैसे ही वह दरवाजे से बाहर निकलता और उपवन मे पहुचता, चेहरे पर मुसकान के स्थान पर पीड़ा की लकीरें खिच जाती। पोर्च की सीढ़ियो पर उतरते समय वह रेलिंग थामकर, लड़खड़ा उठता, कराह बैठता और फिर ओस से भीगी घास पर लुढ़क जाता, अपने सारे शरीर को नम और अभी भी गर्म धरती से चिपकाकर, वह अपने कृत्रिम पैरो में सख्ती से बधे तस्मो के कारण पैदा हुए दर्द की वजह से पड़ता।

पैरो को राहत देने के लिए वह तस्मे खोल डालता। जब उसे आराम महसूस होने लगता, तो वह उन्हे फिर बाध लेता, उछलकर खड़ा हो जाता और फिर भवन को वापस लौट जाता। मनोरंजन-कक्ष मे वह किसी की नजर पड़े बिना ही फिर प्रवेश करता, जहा पसीने में तर-ब-तर अकार्डियन वादक अथक रूप मे सगीत उडेलता जाता; वह अरुण-केशिनी जीनोच्का के पास जा पहुचता जो उस भीड़ मे पहले से ही उसे अपनी आखो से खोज रही होती, अपने सफेद, सुव्यवस्थित, चीनी जैसे दातो को प्रगट करते हुए वह चौड़ी-सी मुसकान मुसकुरा देत और चचल, सौदर्यपूर्ण जोड़ा फिर नृत्य-चक्र मे शामिल हो जाता। उसे छोड़कर चले जाने की बात पर जीनोच्का उसको झिड़क देती, वह मजाक करके उसका जवाब दे देता, और वे जिस तरह नृत्य-चक्र मे नाचने लगते, वह शेष सभी नृत्यकारो से किसी भी तरह जरा भी भिन्न न होता।

शीघ्र ही इन कठिन नृत्य-अभ्यासो का सुपरिणाम प्रगट होने लगा। कृत्रिम पैरो में अलेक्सेई को अधिकाधिक कम बन्धन महसूस होने लगा, वे उसे अपने टागो में उग आये से लगने लगे।

अलेक्सेई प्रसन्न था। अब उसे एक ही बात से चिन्ता थी—ओल्या के पत्रो का अभाव। ग्वोज्देव को अपनी प्रेमिका के साथ जो दुर्भाग्यपूर्ण

अनुभव हुआ था, उस समय उसने जो घातक पत्र भेजा था—अब तो वह उसे घातक ही समझता हे, और नही तो नितान्त मूर्खतापूर्ण पत्र अवश्य था—उसे गये भी एक महीने से अधिक हो गया था, मगर कोई उत्तर नही आया। हर सुबह, जिमनास्टिक और दौड की कसरतो के बाद, जिनमे वह हर रोज सौ कदमो का इजाफा करता जा रहा था, वह स्वागत-कक्ष मे पत्र-पेटिका देखने जाता कि उसके लिए कोई पत्र आया या नही। सभी ताको से 'म' चिह्नित ताक मे सबसे अधिक चिट्ठिया होती, मगर उनको छाटकर देखना व्यर्थ जाता।

लेकिन एक दिन, नृत्य-अभ्यास के दौर मे, मनोरजन-कक्ष की खिडकी मे से बरनाजियन का काला सिर प्रगट हुआ। अपने हाथ मे वह एक छडी और एक पत्र पकडे था। इसके पहले कि वह एक शब्द कह पाता, अलेक्सेई ने लिफाफा छीन लिया, जिसपर बडे-बडे गोल-गोल, स्कूली लडकी जैसी लिखावट मे पता लिखा था, और चकित बरनाजियन को खिडकी पर तथा क्रुद्ध शिक्षिका को कमरे के बीच मे खडे छोडकर वह भाग गया।

"जीनोच्का, आजकल इन सभी का यही हाल है," बरनाजियन बातून चाचियो के स्वर मे बुदबुदाया। "ये सभी छली हैं। इनमे से किसी पर विश्वास न करना। उनसे उसी तरह दूर भागना जैसे पवित्र जल से शैतान दूर भागता है। बेहतर हो कि तुम मुझे अपना शिष्य बना लो।" इतना कहकर उसने छडी कमरे मे फेकी और बुरी तरह काखते हुए उस खिडकी मे से चढ आया जहा जीनोच्का दुखी और किंकर्तव्य-विमूढ खडी थी।

इधर अलेक्सेई भागकर झील पर पहुचा, वह चिट्ठी को इस तरह कसकर पकडे था, मानो उसे डर है कि कोई व्यक्ति उसका पीछा करने और उसका खजाना लूट ले जानेवाला है। यहा, सरकडे की खडखडाती हुई झाडियो को पार करता, वह एक काई खायी चट्टान पर बैठ गया

और ऊची आग में पूरी तरह [illegible] कर [illegible] लिफाफे की परीक्षा करने लगा जो उसके हाथ में काप रहा था। उसमें क्या होगा? उसमें क्या सजा घोषित की गयी होगी? लिफाफा मैला और मुड़ा हुआ था, अपने निश्चित स्थान पर पहुचने से पहले वह काफी भटकता फिरा होगा। अलेक्सेई ने सावधानी से लिफाफे की एक पट्टी फाडी और उसकी नजर पत्र की आखिरी पंक्ति पर पड़ी "प्यारे, मैं तुम्हे चुम्बन करती हू। ओल्या।" फौरन उसके अन्दर राहत की भावना छा गयी। उसने अब शान्ति से कापी से फाडे गये कागज को घुटने पर फैलाकर समतल किया—किसी कारण उसपर मिट्टी लगी थी और मोमबत्ती की ग्रीज लगी थी। ओल्या हमेशा बडी साफ-सुथरी रहती थी, अब उसे क्या हो गया है? और फिर उसने सदेशा पढा तो गर्व और चिन्ता दोनो ही से उसका हृदय भर गया। लगता था कि ओल्या ने कुछ महीने पहले लकडी चीरने का कारखाना छोड दिया था और कमीशिन की अन्य लडकियों और औरतो के साथ कही स्तेपी मे रह रही है और टैंक-विरोधी खाइया खोदने और जैसा कि उसने लिखा था, किसी ऐसे बडे नगर के चारो ओर, जिसका नाम हम सब के लिए पवित्र है, किलेबन्दी जमाने का काम कर रही थी। स्तालिनग्राद का नाम कही भी चिट्ठी में नही लिखा था, लेकिन जिस प्रेम, चिन्ता और आशा के साथ उसने इस "बडे नगर" के विषय में लिखा था, उससे स्पष्ट था कि उसका मतलब स्तालिनग्राद से है।

उसने लिखा था कि उस जैसे हजारो व्यक्ति, स्वयसेवक, स्तेपी में जमीन खोदते, हथगाडियो से मिट्टी ढोते, कक्रीट बिछाते और इमारतें बनाते, दिन रात काम कर रहे है। पत्र प्रसन्नता से पूर्ण था, मगर उसमें जहा-तहा किन्ही वाक्यखडो से यह स्पष्ट था कि स्तेपी मे पडी हुई महिलाओ और लडकियो को बडे कठिन दिन भोगना पड रहे है। स्पष्ट ही जिन कामो में वह पूरी तरह डूबी हुई थी, उनके बारे मे सब कुछ

लिख देने के बाद ही, उसने उस प्रश्न का उत्तर दिया था जो उसने पूछा था। रोपपूर्ण शब्दो में उसने लिखा था कि उसके अंतिम पत्र से उसे गहरी चोट लगी, जो उसे यहा, खाइयो के बीच प्राप्त हुआ था, और अगर उसे यह पता न होता कि वह मोर्चे पर है, जहा आदमी के स्नायुओ को बेहद तनाव का शिकार होना पड़ता है, तो वह इस पत्र के लिए कभी उसको माफ न करती।

"प्रियतम," उसने लिखा था, "वह कैसा प्रेम है जो कुर्बानिया न कर सके? ऐसा कोई प्रेम नही होता, प्यारे। अगर ऐसा होता है, तो मेरी राय मे वह प्रेम है ही नही। मै एक हफ्ते से नहा नही सकी, मैं पतलून पहन रही हू, और जूते है जिनका मुह खुल गया है। मेरा चेहरा धूप से इतना जल गया है कि खाल उधड़ने लगी है और उसके नीचे सारी त्वचा खुरदुरी और नीली पड़ गयी है। अगर मैं तुम्हारे पास इस समय आऊ—थकी हुई, गदी, दुबली-पतली, कुरूप—तो क्या तुम मुझे भगा दोगे या मेरे प्रति कोई अरुचि प्रगट करोगे? तुम भी क्या मूर्ख लड़के हो! तुम्हे कुछ भी हो जाय, मै तुम्हे यह जताना चाहती हू, कि मैं तुम्हारा इतजार कर रही हू, फिर तुम चाहे जैसे भी हो मुझे अक्सर तुम्हारी याद आती है और इन 'खाइयो' मे आने से पहले, जहा हम सोने के पटरो तक पहुचते ही सो जाते है और मुरदे की तरह सोते हैं, मुझे अक्सर तुम्हारे सपने आते थे। मैं तुम्हे जता देना चाहती हू कि जब तक मैं जिदा हू, तब तक तुम्हारे लिए एक ऐसी जगह रहेगी जहा कोई तुम्हारा इतजार कर रही होगी, हमेशा इतजार करेगी, तुम चाहे जैसे भी हो जाओ . तुम कहते हो कि तुम्हे मोर्चे पर कुछ भी हो सकता है, मगर यदि मुझे इन 'खाइयो' में कही कुछ हो जाय, अगर मैं किसी दुर्घटना की शिकार हो जाऊ और पगु हो जाऊ, तो क्या तुम मुझे ठुकरा दोगे? क्या तुम्हे याद है, जब हम प्रशिक्षण विद्यालय मे पढ़ते थे, तब हम बीजगणित के सवालो को किसी

की जगह कुछ सामान्य, प्रतिभाशाली [illegible] पत्नी में [illegible] है? सो अब, तुम अपनी जगह मुझे रख लो और सोचो। अगर यह करोगे, तो तुमने जो कुछ लिखा है, उसके लिए तुम्हें स्वयं शर्म आयेगी।"

मेरेस्येव इस पत्र के बारे में सोचता हुआ यहीं देर तक बैठा रहा। स्याह पानी में [illegible] के साथ प्रतिबिम्बित सूरज आग की तरह गर्म था, सरकंडे की झाड़ियां सरसरा रही थीं और नीले व्याध-पतंग [illegible] घास के एक गुच्छे से दूसरे गुच्छे पर मंडराते घूम रहे थे। अपनी लम्बी-लम्बी, पतली टांगों पर पानी की मक्खियों के झुण्ड जल की सतह पर इधर-उधर दौड़ लगा रहे थे और सपाट सतह पर फीते जैसी लकीर छोड़ जाते थे। नन्हीं-नन्हीं लहरें खामोशी से रेतीले किनारे को चूम रही थीं।

"यह सब क्या है?" अलेक्सेई सोचने लगा। "पूर्वाभास? भविष्य-वाणी की देन?" उसकी मां कहा करती थी कि "दिल स्वयं एक भविष्यवक्ता है।" या क्या लड़ाई की सख्त जिंदगी ने लड़की को ज्ञान प्रदान किया है और उस बात को वह अन्तर्ज्ञान के बल पर समझ गयी है, जिसे बताने का साहस वह स्वयं न जुटा सका था? उसने एक बार फिर पत्र पढ़ डाला। नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। यह कोई अन्तर्ज्ञान नहीं है। यह तो सीधा-सादा जवाब है उन्हीं बातों का, जो उसने लिखी थीं। और कितना उपयुक्त था यह उत्तर!

अलेक्सेई ने निःश्वास खींची, धीरे-धीरे कपड़े उतार डाले और पत्थर पर उनका ढेर लगा लिया। वह हमेशा इस छोटी-सी वीरान खाड़ी में नहाता था जिससे सिर्फ वह अकेला परिचित था और जो रेतीले किनारे से दूर, खड़खड़ाती हुई झाड़ियों की दीवार के पीछे छिपी थी। अपने कृत्रिम पैरों के तस्मे खोलकर वह आहिस्ते से चट्टान पर से खिसका और यद्यपि नंगी ठूंठों के बल बालू पर चलना बड़ा पीड़ाजनक था, तब भी उसने चारों हाथ-पैरों का सहारा नहीं लिया। दर्द से चिहुंकते हुए वह झील में उतरा और ठंडे, घने पानी में लुढ़क गया। वह किनारे से कुछ दूर तक तैरता हुआ गया और पीठ

के बल उलटा हो गया और चुपचाप पडा रहा। वही नीले, अनन्त आकाश को ताकता रहा। छोटे-छोटे, सुनहरे घेरे मे बधे बादल एक दूसरे से टकराते हुए तेजी से उमे पार करते जा रहे थे। वह फिर उलट गया और उसने देखा कि पानी की ठडी नीली, समतल सतह पर किनारे का सच्चा प्रतिबिम्ब उलटा दिखाई दे रहा है और सफेद तथा पीली कौमुदिया तैरती हुई गोल पत्तियो के बीच खडी है। यकायक उसने चट्टान पर बैठी हुई ओल्या का प्रतिबिम्ब देखा—उसी तरह की ओल्या, जैसी कि फूलदार फ्राक पहने वह उसे अपने सपनो मे दिखाई देती है। मगर उसके पैर सिमटे हुए नही थे, नीचे लटक रहे थे, हालाकि वे पानी तक नही पहुच रहे थे—दो कुरूप ठूठ सतह के ऊपर नजर आ रहे थे। इस दृश्य को छिन्न-भिन्न करने के लिए उसने पानी पर थपेडा मारा। नही, ओल्या ने जो प्रतिस्थापन पद्धति सुझायी है, उससे उसकी समस्या हल नही होती।

५

दक्षिण मे स्थिति अपूर्व गति से गम्भीर होती जा रही थी। समाचार-पत्रो ने दोन पर युद्ध के समाचारो को देना बहुत पहले बद कर दिया था। एक दिन सोवियत सूचना-विभाग की विज्ञप्ति मे दोन के दूसरी ओर के, वोल्गा की दिशा मे, स्तालिनग्राद की ओर, जानेवाले रास्ते के कज्जाक ग्रामो के नामो का उल्लेख हुआ। इस क्षेत्र से जो लोग अपरिचित है, उनके लिए इन नामो का चाहे कोई महत्व न हो, मगर अलेक्सेई, जिसका जन्म और पालन-पोषण वही हुआ था, समझ गया था कि दोन पर निर्मित रक्षा-पात बेध दी गयी है और युद्ध का तूफान स्तालिनग्राद की दीवारो तक पहुच गया है।

स्तालिनग्राद! उस नाम का विज्ञप्तियो मे उल्लेख होना अभी शुरू नही हुआ था, फिर भी वह हर जबान पर था। १९४२ के शरद काल

मे वह नाम बडी चिन्ता और पीडा के साथ लिया जाता था—वह नाम एक नगर के नाम की भाति नही, एक ऐसे घनिष्ठ और प्रियतम व्यक्ति के नाम की भाति लिया जाता था, जो प्राणघातक खतरे मे फस गया हो। यह आम दुश्चिन्ता मेरेस्येव के लिए इस कारण और भी घनी हो गयी थी कि ओल्गा उसी के आसपास कही, नगर के बाहर स्तेपी मैदान मे पडी हुई थी, और कौन कह सकता था कि उसे कैसी अग्नि-परीक्षा देनी पडेगी? वह अब उसे हर दिन चिट्ठी लिखने लगा, लेकिन किसी रण-क्षेत्रीय पोस्ट आफिस की मार्फत भेजी गयी इन चिट्ठियो का मूल्य ही क्या था? वोल्गा के स्तेपी मैदानो मे जो भयकर लडाइया हो रही थी, उनके नारकीय वातावरण मे, पीछे हटते जाने की गडबडियो के बीच, क्या वे चिट्ठिया उस तक पहुच पायेगी?

विमान-चालको का स्वास्थ्य-गृह मधुमक्खी के झकझोरे गये छत्ते की भाति भनभना उठा। दैनिक मनोरजन—चौपड, शतरज, वालीबाल, स्किटिल और डोमीनो के अवश्यम्भावी खेल तथा ताश के जूए का खेल जिसे रोमाच के शौकीन मरीज झील के किनारे की झाडियो के बीच छिपकर खेला करते थे—अब खत्म कर दिये गये। ऐसी बातो में अब किसी का दिल-दिमाग नही लगता था। हर व्यक्ति, जड आलसी लोग तक, सुबह समय से एक घटे पहले ही उठ बैठता था, ताकि रेडियो से सात बजे की पहली युद्ध-रिपोर्ट सुनी जा सके। जब विज्ञप्तियो मे हवाबाजो के करिश्मो की चर्चा होती, तो हर व्यक्ति चिडचिडा बना घूमता, नर्सो में मीन-मेख निकालता और भोजन तथा नियमो को कोसता, मानो इस बात के लिए स्वास्थ्य-गृह के कर्मचारी ही दोषी है कि ये लोग यहा धूप में, शान्त जगलो में और शीशे की तरह झील के किनारे चहलकदमी करते घूम रहे है और वहा, स्तालिनग्राद के नजदीक स्तेपी मैदानो में नही लड रहे है। आखिरकार स्वास्थ्य-गृह के वासियो ने घोषित कर दिया कि वे स्वास्थ्याकाक्षी रोगी के जीवन से ऊब गये है

ओर माग की कि उन्हें यहा से मुक्त कर दिया जाय ताकि वे अपनी-अपनी टुकडियों मे लौटकर जा सकें।

एक दिन दोपहर चढे, वायुसेना के नियुक्ति-विभाग का एक कमीशन आ पहुचा। धूल मे सनी कार से कई अफसर उतरे जो चिकित्सा सेवाओं के पदवी-चिह्न लगाये हुए थे। सामने की सीट से, सीट की पीठ पर बोझ डालकर झुकता हुआ, एक लम्बा और हृष्ट-पुष्ट अफसर उतरा। यह प्रथम कोटि के फौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की थे, जो विमान सेना मे सुविख्यात थे और जिस पितृ-भाव से वे विमान-चालको से सद्व्यवहार करते थे, उसके कारण विमान-चालक उन्हे बडा प्यार करते थे। रात के भोजन-काल मे यह घोषित किया गया कि कमीशन स्वास्थ्य-लाभ करनेवालो मे से ऐसे स्वयसेवको को चुनेगा जो अपनी बीमारी की छुट्टी कम कराना चाहते हो और फौरन अपनी-अपनी टुकडियो को जाना चाहते हो।

अगली सुबह मेरेस्येव दिन फूटते ही उठ बैठा और नित्य की कसरते किये बिना जगल की ओर रवाना हो गया और नाश्ते के समय तक वही रहा। नाश्ते मे उसने कुछ नही खाया, सारा खाना बिना छुए छोड देने पर जब परिचारिका ने झिडकी दी तो उसके साथ उसने उद्दड व्यवहार किया और जब स्त्रुच्कोव ने टीका की कि चूकि वह लडकी उसके प्रति दया का व्यवहार करना चाहती थी इसलिए उसके साथ उद्दडता से पेश आने का उसे कोई अधिकार नही है, तो वह उछल पडा और भोजन-कक्ष से बाहर चला गया। गलियारे मे जीना सोवियत सूचना-विभाग की विज्ञप्ति पढ रही थी, जो दीवाल पर लगा दी गयी थी। अलेक्सेई उसके पास से अभिवादन किये बिना ही निकल गया। जीना ने भी उसे न देख पाने का अभिनय किया और कटुतापूर्वक सिर्फ कधे उचका दिये। लेकिन जब अलेक्सेई उसके पास से, सचमुच ही बिना उसे देखे, गुजर गया, तो उसने ठेस महसूस की और

लगभग आसू भरकर, वह उसे पुकार उठी। अलेक्सेई अपने कधो के ऊपर से देखता हुआ क्रोधपूर्वक भडक उठा

"अच्छा, तो तुम क्या चाहती हो?"

"कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट, तुम क्यो . " लडकी ने आहिस्ते से जवाब दिया और इस बुरी तरह लजा उठी कि उसके कपोलो का रग उसके बालो से मेल खाने लगा।

अलेक्सेई ने फौरन अपना गुस्सा सभाला और यकायक उसे अपना सारा शरीर डूबता महसूस होने लगा।

"मेरे भाग्य का फैसला आज होनेवाला है," उसने मद स्वर मे कहा। "हाथ मिलाओ और मेरे लिए शुभकामनाए करो "

हमेशा से अधिक लगडाते हुए वह कमरे मे घुस गया और अपने को अन्दर से बद कर लिया।

कमीशन मनोरजन-कक्ष मे बैठा, जहा उसका सारा साज-सामान—श्वास-शक्ति मापक यत्र, हाथ की पकड-शक्ति मापक यत्र और आखो की ज्योति की परीक्षा करने के पट आदि—जमा दिया गया था। स्वास्थ्य-गृह के समस्त निवासी कमरे के बाहर जमा हो गये और जो लोग अपनी बीमारी की छुट्टी कटवाना चाहते थे, यानी लगभग सभी, वे एक लम्बी पात मे खडे हो गये। मगर जीनोच्का आयी और सभी को एक एक पुर्जी थमा गयी जिसमें प्रत्येक के लिए वह घटा और मिनट अकित था जब उन्हे बुलाया जायगा और वह उनसे चले जाने को कह गयी। शुरू के लोग जब कमीशन के सामने हो आये तो अफवाह फैल गयी कि कमीशन बहुत सख्त नही है। और जब भयकर युद्ध वोल्गा के किनारे छिडा हुआ हो और अधिकाधिक प्रयत्नो की आवश्यकता हो, तो कमीशन सख्त हो भी तो कैसे सकता है? अलेक्सेई पोर्च के सामने ईंट की नीची-सी दीवाल पर पैर लटकाये बैठा था और जब कोई आदमी अदर से बाहर आता तो बडी उदासीनतापूर्वक, मानो उसे कोई विशेष दिलचस्पी नही है, वह पूछता

"कहो, तुम्हारे साथ कैसी बीती?"

"मै पास हो गया हू!" वह व्यक्ति अपने कोट का बटन लगाते हुए या पेटी कसते हुए प्रसन्नतापूर्वक जवाब देता।

मेरेस्येव के पहले बरनाजियन गया। वह अपनी छडी बाहर, दरवाजे पर छोडता गया और अपने शरीर को लहराने और छोटी टाग के कारण लगडाने से रोकने का प्रयत्न करता कमरे में घुस गया। उसे बडी देर तक अदर रखा गया। अत मे, खुली खिडकियो से क्रोधपूर्ण आवाजे अलेक्सेई के कानो तक आयी, दरवाजा खुला और बरनाजियन बडा गरम दिखता बाहर झपटा। उसने अलेक्सेई पर क्रुद्ध दृष्टि डाली और फिर सामने देखता और यह चिल्लाता हुआ पार्क मे घुस गया

"नौकरशाह! मक्खन-रोटी उडानेवाले! ये क्या जाने विमान-कला को? क्या समझते है कि यह कोई बैले नृत्य है?. छोटी टाग है! नाश हो ये एनीमा और सुइया, उन्हे तो यही आता है!"

अलेक्सेई ने महसूस किया कि उसके पेट के अदर कही ठड घर कर गयी है। फिर भी वह कमरे मे तेजी से कदम रखता, प्रसन्न भाव से मुसकुराता हुआ घुसा। कमीशन एक लम्बी मेज पर बैठा था। बीच मे गोश्त के एक पहाड की भाति ऊचे से प्रथम कोटि के फौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की थे। बगल की मेज पर चिकित्सा सम्बन्धी कार्डों के ढेर के सामने जीनोच्का गुडिया की तरह सफेद, कलफदार पोशाक पहने बैठी थी। उसके सिर पर बधे जालीदार रूमाल से लाल केशो की एक लट बडे नाज से झाक रही थी। उसने अलेक्सेई को उसका कार्ड दिया और देने के साथ-साथ हल्के से उसका हाथ दबा दिया।

"हा, नौजवान, कमर तक कपडे उतार डालो," सर्जन ने अपनी आखें घुमाते हुए कहा।

मेरेस्येव ने अपनी कसरते व्यर्थ ही नही की थी। सर्जन उसके सुन्दर, सुविकसित शरीर की सराहना किये बिना न रह सका जिसका एक एक पुट्ठा ताम्रवर्ण त्वचा मे से उभर रहा था।

"तुम तो डेविड की मूर्ति बनाने के लिए माडल का काम दे सकते हो," कमीशन के एक सदस्य ने ज्ञान बघारते हुए कहा।

मेरेस्येव सभी परीक्षाओ में पास हो गया। उसके हाथो की पकड़ साधारण स्तर से पचास फीसदी अधिक थी, और श्वास-शक्ति की परीक्षा में उसने फूक मारकर यन्त्र को उच्चतम सीमा तक पहुचा दिया। उसके खून का दबाव स्वाभाविक था, उसके स्नायु ततुओं की अवस्था उत्तम थी। अत मे उसने शक्ति मापक यन्त्र की लोहे की मूठ इतने जोर मे दबायी कि उसकी स्प्रिंग ही टूट गयी।

"विमान-चालक है?" सर्जन ने प्रसन्नचित्त दिखाई देते हुए पूछा और अपनी सीट पर जरा आराम से बैठते हुए वह "सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव, अ०पी०" केस कार्ड के ऊपरी कोने पर अपना फैसला लिखने लगा।

"हा।"

"लडाकू विमान?"

"हा।"

"अच्छा, जाओ और लडो! उन्हें वहा तुम जैसे व्यक्तियो की जरूरत है, बुरी तरह जरूरत है! खैर, तुम्हे हो क्या गया था?"

अलेक्सेई का चेहरा उतर गया। उसे लगा कि अब सारा महल ढहनेवाला है। डाक्टर ने उसके केस कार्ड की परीक्षा की और उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव फैल गया।

"कटे हुए पैर यह क्या लिखा है? फिजूल बात! यह जरूर गलती है, एह? तुम जवाब क्यो नही देते?"

"नही, यह गलती नही है," अलेक्सेई ने आहिस्ते से कहा और बहुत ही धीरे-धीरे, मानो वह फासी के तख्ते पर चढ रहा हो।

डाक्टर तथा कमीशन के अन्य सदस्यो ने इस हृष्ट-पुष्ट, सुगठ और फुरतीले युवक की ओर सदेह की दृष्टि से घूरा और यह न समझ सके कि क्या मामला है।

"अपनी पतलून ऊपर उठाओ!" डाक्टर ने अधीर स्वर मे आदेश दिया।

अलेक्सेई पीला पड गया, जीनोच्का की ओर असहाय दृष्टि डाली, धीरे-धीरे पतलून के घेरे उलटने लगा और अपने चमडे के पैर प्रदर्शित करते हुए कमर पर हाथ रखकर हताश भाव से खडा हो गया।

"तुम हमारा मजाक बनाने का प्रयत्न कर रहे थे क्या? जरा देखो तुमने कितना वक्त बरबाद कर दिया! निश्चय ही, तुम्हारा यह ख्याल तो नही होगा कि पैरो के बिना तुम वायुसेना मे फिर वापस चले जाओगे, कि ऐसा ही ख्याल है?" डाक्टर ने आखिरकार पूछ ही लिया।

"मै समझता हू—मै जाऊगा!" अलेक्सेई ने मद स्वर मे उत्तर दिया, उसकी बडी-बडी आखे हठपूर्वक उद्दडता से कौध रही थी।

"बिना पैरो के? तुम पागल हो!"

"हा, मै बिना पैरो के उडने जा रहा हू," अलेक्सेई ने जवाब दिया, इस बार उद्दड भाव से नही, शान्तिपूर्वक। उसने विमान-चालको जैसे पुराने शैली के कोट की जेब मे हाथ डाला और उसमे से पत्रिका से काटी गई एक बढिया तहशुदा कतरन निकाल ली। "देखिए," उसने डाक्टर को वह कतरन दिखाते हुए कहा। "वह एक पैर होने के बावजूद उड लेता था। मै पैरो के बिना क्यो नही उड पाऊगा?"

डाक्टर ने कतरन पढी और फिर अलेक्सेई की तरफ आश्चर्य और आदर की दृष्टि से देखा।

"हा, मगर उसके लिए तुम्हे अभ्यास मे आकाश-पाताल एक करना होगा। इस व्यक्ति ने दस साल तक अभ्यास किया था। तुम्हे अपने कृत्रिम पैरो को इस तरह इस्तेमाल करना सीखना होगा, मानो वे असली हो," उसने नरम स्वर मे कहा।

इस स्थल पर अलेक्सेई को अप्रत्याशित सहायता प्राप्त हुई। जीनोच्का अपनी मेज पर से उठ पडी, हाथ बाधकर इस तरह खडी हो

गयी, मानो प्रार्थना कर रही हो, और [illegible] । [illegible] कि
उसकी [illegible] पर [illegible] ।

"[illegible] प्रोग्राम [illegible] , आप [illegible] देखें। दो पैरों वाले से भी बेहतर ! [illegible] ।"

"नृत्य ! यह कौनसा [illegible] ?" डाक्टर ने आश्चर्यपूर्वक कमीशन के बाकी सदस्यों पर नजर दौड़ाते [illegible] ।

अलेक्सेई ने प्रसन्नतापूर्वक डाक्टर द्वारा सुनायी गयी बात को पकड़ लिया।

"अभी फैसला न कीजिए" उसने कहा। "आज रात को आप हमारे नृत्य में आइए और देखिए कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए अलेक्सेई ने आँखों के [illegible] में कमीशन के सदस्यों को एक दूसरे से उत्साहपूर्ण बातचीत करते देखा।

भोजन के पहले ज़ीनोच्का ने अलेक्सेई को एक [illegible] अपेक्षित पार्क में बैठे पाया। उसने अलेक्सेई को बताया कि कमीशन ने उसके विषय में देर तक बातचीत जारी रखी, और डाक्टर ने कहा था कि मेरेस्येव विलक्षण लड़का है और कौन जानता है कि शायद यह सचमुच उड़ान कर सके। 'रूसी क्या नहीं कर सकता' इस पर कमीशन के एक सदस्य ने जवाब दिया था कि उड्डयन-कला के इतिहास में अब तक कोई ऐसा उदाहरण नहीं है, और डाक्टर ने इसके प्रत्युत्तर कहा था कि उड्डयन के इतिहास में बहुत-सी बातें कभी नहीं हुई थी और इस युद्ध में सोवियत विमान-चालकों ने बहुत-सी ऐसी देन दी है जो बिल्कुल नयी है।

स्वयसेवकों के—जिनकी सख्या लगभग दो सौ निकली—फौजी जीवन में पुन वापिस लौटने की खुशी में एक विदाई नृत्य-समारोह किया गया और वह बड़ा शानदार उत्सव था। मास्को से एक फौजी बैंड निमन्त्रित किया गया था और उसने जो सगीत गुजाया तो वह इस महल

के हॉलो और बरामदो मे बादलो की गरजना की तरह प्रतिध्वनित हो उठा और उससे जालीदार खिडकिया कापने लगी। पसीने से लथपथ विमान-चालक अनन्त गति से नाचते रहे और उनमे सबसे आनन्ददायक, चपलतम और फुरतीला था मेरेस्येव, जो अपनी रक्ताभ केशिनी नायिका के साथ नाच रहा था। बेजोड जोडा था!

प्रथम श्रेणी के फौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की अपने सामने ठडी वीयर का गिलास रखे खुली खिडकी के पास बैठे थे और वह मेरेस्येव तथा उसकी ज्वालाओ जैसे केशोवाली पार्टनर की तरफ से आखे हटा नही पा रहे थे। वह डाक्टर थे और वह भी फौजी डाक्टर, इसलिए कृत्रिम और असली पैरो का फर्क समझते थे।

और इस समय, ताम्रवर्ण, सुगठ विमान-चालक को अपने नन्हे-से सौदर्यपूर्ण पार्टनर के साथ नृत्य करते देखकर, वह अपने को इस विचार से मुक्त नही कर सके कि इसके पीछे कोई चाल अवश्य है। अतत सराहना करनेवाले प्रशसको के घेरे मे, उछलते और कूदते-फादते अपनी जाघो और कपोलो पर थप्पड जमाते हुए, जब अलेक्सेई ने 'वारिन्या' नृत्य भी समाप्त कर दिया तो पसीने से तर और उत्तेजित रूप मे मिरोवोल्स्की के पास पहुचा। मौन सराहना के भाव से डाक्टर ने उससे हाथ मिलाया। अलेक्सेई ने कुछ नही कहा, मगर उसकी आखे सीधे सर्जन की आखो मे झाक रही थी, प्रार्थना करती, उत्तर मागती।

"और तुम तो समझते ही हो," आखिरकार डाक्टर ने कहा, "मुझे कोई अधिकार नही है कि मै किसी यूनिट मे तुम्हे नियुक्त करू, मगर मै तुम्हे नियुक्ति-विभाग के लिए एक प्रमाण-पत्र दूगा। मै प्रमाणित करूगा कि उचित प्रशिक्षण के बाद तुम हवाई जहाज चलाने के योग्य हो जाओगे। हर सूरत में, तुम मेरे वोट का भरोसा कर सकते हो।"

स्वास्थ्य-गृह के प्रधान की बाह मे बाह डाले मिरोवोल्स्की कमरे से बाहर चले गये—स्वास्थ्य-गृह का प्रधान भी काफी अनुभवी सर्जन था। दोनो

ही आश्चर्य और सराहना कर रहे थे। सोने से पहले वे बडी देर तक बैठे रहे, धूम्रपान करते रहे और बात करते रहे कि सोवियत नागरिक जब सचमुच कमर कस लेते है तो क्या कर दिखाते है

इस बीच, जब सगीत अभी भी गूज रहा था और खुली खिडकियो से आनेवाली रोशनी में नर्तको की छायाए अभी भी धरती पर आ-जा रही थी, तब अलेक्सेई मेरेस्येव ऊपर की मजिल के स्नानागार में बद था, ठडे पानी में उसकी टागें डूबी हुई थी और वह होठ इतने ज़ोर से दबाये था कि उनसे खून बह उठा था। दर्द से लगभग बेहोश-सी हालत में वह नीली मास ग्रथियो को और कृत्रिम पैरो की भयकर रगड से उत्पन्न चौडे घावो को पानी से नहला रहा था।

एक घटे बाद, जब मेजर स्त्रुच्कोव ने कमरे में प्रवेश किया, तब मेरेस्येव नहा-धोकर तरो-ताजा शीशे के सामने बैठा था और अपने गीले, घुघराले बालो को काढ रहा था।

"जीनोच्का तुम्हे खोज रही है। तुम्हे उसे विदाई के पहले आखिरी बार टहलाने ले जाना चाहिए था। इस लडकी पर मुझे तो तरस आता है।"

"चलो, हम साथ चले!" मेरेस्येव ने उत्सुकतापूर्वक जवाब दिया। "जरूर चलो, पावेल इवानोविच, तुम्हारा इसमें क्या जायगा?" उसने विनती की।

उस भली नन्ही-सी लडकी के साथ, जिसने उसे नृत्य सिखाने मे इतना कष्ट उठाया था, अकेले रहने के विचार मात्र से उसे बेचैनी महसूस हो रही थी, ओल्या का पत्र आ जाने के बाद से उसकी उपस्थिति में उसे बडी व्यग्रता अनुभव होने लगती थी। इसलिए वह साथ चलने के लिए स्त्रुच्कोव से बराबर अनुरोध करता रहा कि आखिर में हारकर स्त्रुच्कोव ने बडबडाते हुए टोपी उठा ली।

फूलो के गुलदस्ते का अवशेष लिए हुए जीनोच्का बालकनी पर इतजार कर रही थी, उसके नन्हे-से पैरो के पास फर्श पर फूलो के

डठल और पखुरिया छिटकी पडी थी। अलेक्सेई की पदचाप सुनकर वह आतुरता से आगे बढी, मगर यह देखकर कि वह अकेला नही है, वह यकायक मुरझा गयी।

"चलो चले, हम लोग जगल से विदाई की अतिम बाते करने के लिए निकले," अलेक्सेई ने उदासीनता के स्वर मे प्रस्ताव रखा।

उन्होंने बाह मे बाह डाली और लाइम के वृक्षो से आच्छादित पुराने मार्ग पर खामोशी के साथ बढने लगे। उनके पैरो तले, चादनी से आलोकित धरती पर कोयले जैसी काली छायाए उनके पीछे-पीछे चलने लगी, और जहा तहा शरद की पहली पत्तिया बिखरे हुए सिक्को की भाति चमक रही थी। वे वृक्षो से आच्छादित मार्ग के अत तक गये, पार्क में से निकल गये और रुपहली, नम घास पर टहलते हुए झील की तरफ बढे। झील के शून्य के ऊपर रोएदार कुहरे का कम्बल पडा हुआ था जो भेड की सफेद खाल जैसा लग रहा था। कुहरा धरती से चिपका हुआ था, और उन लोगो की कमर छूता हुआ, सचरण कर रहा था और ठडी चादनी मे रहस्यपूर्ण ढग से चमक रहा था। हवा नम थी और शरद की सतोषप्रद सुगध से परिपूर्ण थी। वातावरण ठडा था और किसी क्षण बहुत सर्दी मालूम होती तो दूसरे क्षण कुछ उष्णता और सघनता महसूस होती, मानो इस कुहरे की झील मे अपनी ही उष्ण और शीत धाराए है।

"ऐसा लगता है मानो हम दैत्य हो और बादलो के ऊपर चल रहे हो, क्यो?" अलेक्सेई ने बेचैनी से लडकी की नन्ही-सी पुष्ट बाह को अपनी कुहनी के नीचे मजबूती से दबी महसूस कर व्यग्रता से कहा।

"दैत्य नही, मूर्ख। हम अपने पैर भिगो लेगे और यात्रा के लिए ठड पकड लेगे," स्त्रुच्कोव गुर्राया जो अपने ही शोकपूर्ण विचारो मे लीन जान पडता था।

"इस मामले मे मुझे तुम्हारे मुकाबले फायदा है। मेरे पैर ही नही

है, जो भीगें, और इसलिए मैं ठड नही पकड सकता," अलेक्सेई ने हसते हुए कहा।

"आओ, चले आओ! उधर इस समय बडा सुन्दर दृश्य होगा," जीनोच्का ने उन्हे कुहरे से आच्छादित झील की ओर खीचते हुए अनुरोध किया।

वे लोग भ्रमित होकर लगभग पानी में पहुच गये और जब ठीक अपने पैरो के नीचे उन्हे कुहरे के पार यकायक उसकी काली-सी झलक दिखाई दी तो आश्चर्यवश वह पीछे हट गये। पास मे एक छोटा-सा घाट था और उससे आगे एक डोगी की काली छायाकृति दिखाई दे रही थी। जीनोच्का कुहरे में विलीन हो गयी और पतवारो का जोडा लेकर लौटी। उन्होने डाडे का काटा लगाया, अलेक्सेई ने पतवारे सभाल ली और जीनोच्का तथा मेजर डोगी के पिछले हिस्से में बैठ गये। डोगी धीरे-धीरे निश्चल जल पर फिसलने लगी, कभी वह कुहरे में डूब जाती और खुले पानी में प्रगट हो जाती, जिसकी काली-सी पालिशदार सतह पर चादनी ने उदारतापूर्वक कलई कर दी थी। कोई नही बोला, सभी अपने-अपने विचारो में लीन थे। रात शान्त थी, पतवारो से पानी पारे की बूदो की तरह टपक रहा था और वैसा ही बोझिल मालूम होता था। पतवारो के काटे हल्के से खटक रहे थे, कही कोई पक्षी कर्कश स्वर मे गा रहा था और दूर से पानी के विस्तार को पार करते हुए उल्लू का वेदनापूर्ण स्वर आ रहा था, जो कठिनाई से ही कर्णगोचर था।

"यह मुश्किल से ही विश्वास किया जा सकता है कि कही पास ही में घमासान युद्ध छिडा हुआ है," जीनोच्का ने आहिस्ते से कहा। "क्यो, साथियो, तुम लोग मुझे चिट्ठिया लिखा करोगे, क्यो, अलेक्सेई पेत्रोविच, तुम लिखोगे या नही? छोटा-सा सदेशा ही सही। मै तुम्हे साथ ले जाने के लिए कुछ पते लिखे कार्ड दे दूगी, क्या दे दू? तुम लोग लिख देना 'जिदा और सकुशल हू। अभिवादन,' और डाक के किसी डिब्बे में डाल देना, ठीक? "

"मैं तुम्हें बता नही सकता कि जाते हुए मुझे कितना आनद हो रहा है। काफी झख मार ली। काम पर चलो ! काम पर चलो !" स्त्रुच्कोव चिल्ला उठा।

वे फिर खामोश पड गये। नन्ही-सी लहरे हल्के से और हौले से नाव के किनारे थपेडे मार रही थी, उसकी पेंदी का पानी उनीदा-सा गल-गल कर रहा था और नाव के पिछले हिस्से से टकराकर चमकदार कोण बनाता फैल जाता था। कुहरा छिन्न-भिन्न हो गया और एक उद्विग्न, नीली-सी चन्द्र-किरण किनारे से पानी के आर-पार फैल गयी और कुमुदिनी की पत्तियो के चकत्तो को आलोक से भर गयी।

"आओ, हम लोग गाये," जीनोच्का ने सुझाव दिया और जवाब का इतजार किये बिना उसने एश वृक्ष सम्बधी गीत शुरू कर दिया।

उसने पहला बद शोकार्त्त स्वर मे अकेले ही गाया, मगर अगली पक्ति को मेजर स्त्रुच्कोव ने मनहर, गहरे स्वर मे पकड लिया। इसके पहले उसने कभी न गाया था और अलेक्सेई ने कभी यह न सोचा था कि उसका स्वर इतना सुन्दर और मधुर है। इस गीत की वेदना और भावावेगपूर्ण लहरिया समतल जल के ऊपर घुमडने लगी, दो ताजे स्वर, एक नर और दूसरा नारी का, अपनी उत्कठाओ को व्यक्त करने मे एक दूसरे का साथ देने लगे। अलेक्सेई को अपने कमरे की खिडकी के बाहर खडे हुए, बेरी के एक मात्र गुच्छे समेत कृशकाय एश वृक्ष और भूमिगत ग्राम की बडी-बडी आखोवाली वार्या की याद आ गयी। फिर हर वस्तु विलीन हो गयी—झील, मनहर चादनी, नाव और गायक—और रुपहले कुहरे मे उसने कमीशिन की लडकी देखी, मगर वह ओल्या नही जो बाबूना पल्लवित मैदान मे फोटो मे बैठी थी, एक दूसरी ही अपरिचित लडकी देखी जो थकी हुई दिखाई दे रही थी, जिसके धूप मे तप्त कपोलो पर स्याह धब्बे थे, होठ फटे हुए थे, फौजी वर्दी पर

पसीने के दाग थे और स्तालिनग्राद के पास लोगों में वही कातूशा चल रही थी।

उसने पतवारें छोड़ दी और गीत का आखिरी बन्द उन लोगों से मिलकर गाया।

६

अगले दिन बड़े भोर ही स्वास्थ्य-गृह के द्वार से मोटर-बसों की एक लम्बी पांत गुजरने लगी। वे लोग जब पार्क में ही थे, तभी मेजर स्त्रुच्कोव ने, जो एक बस के फुटबोर्ड पर बैठा था, उस वृक्ष के विषय में अपने परमप्रिय गीत की लहरी छेड़ दी थी। अन्य बसों में बैठे लोगों ने गीत की कड़िया पकड़ ली थी और विदाई के समय के अभिवादन, मगल कामनाए, वरनाजियन के हंसी-मजाक, बस की खिड़की में से जीनोच्का अलेक्सेई को विदायी के समय जो सलाहें दे रही थी, वे सब बाते इस पुराने गीत के सीधे-सादे मगर अर्थपूर्ण शब्दों में डूब गयी। उसे बहुत दिनों पहले भुला दिया गया था, मगर अब फिर उसका पुनरुद्धार हो गया था और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के काल में वह लोकप्रिय हो गया था।

इस तरह बसे अपने साथ इस मधुर स्वर की गहरी, सुरीली लहरिया लेकर दरवाजे से गुजर गयी। जब गीत समाप्त हो गया तो गायक मौन हो गये और जब तक नगर के बाहरी क्षेत्र मे स्थित फैक्टरिया और श्रमिक बस्तिया खिड़कियो के बाहर न दिखाई देने लगी, तब तक कोई एक शब्द भी न बोला।

मेजर स्त्रुच्कोव, अभी भी अपनी बस के फुटबोर्ड पर अपने कोट के बटन खोले हुए बैठा था और मुसकुराता हुआ दृश्य को सराह रहा था। वह सबसे अधिक प्रसन्नचित्त था। यह चिरातन यायावर सिपाही फिर चल पड़ा था, एक जगह से दूसरी जगह सफर करते हुए, और उसे अपनी सजीवता का बोध होने लगा था। वह विमान-सेना की किसी

टुकड़ी मे भेजा जा रहा था, उसका अभी पता नही था कि किसमे, लेकिन कोई भी हो, उसके लिए वह घर की ही तरह होगा। मेरेस्येव मौन और उद्विग्न बैठा था। वह महसूस कर रहा था कि अभी आगे उसे और भी विकटतम कठिनाइयों का सामना करना होगा, और कौन कह सकता है कि वह उन बाधाओं को पार कर पायगा या नही?

वन से सीधे ही, कही और गये बिना, रात के रहने तक के लिए कोई ठिकाना बनाने का कष्ट किये बगैर, वह मिरोवोल्स्की से भेंट करने चला गया। यहा उसे अपने दुर्भाग्य की पहली चोट का सामना करना पडा। उसका शुभचिन्तक, जिसे वह इतनी कठिनाई से जीत सका था, कही बाहर गया हुआ था, वह किसी फौरी सरकारी कार्य मे विमान-यात्रा पर चला गया था और कुछ दिनो न आनेवाला था। जिस अफसर से अलेक्सेई की बातचीत हुई, उसने उससे बाजाब्ता दरखास्त देने को कहा। वह वही खिडकी की दहलीज के पास बैठ गया, एक दरखास्त लिख डाली और कृशकाय, नाटे-से, थकी आखोवाले अफसर के हाथ में थमा दी। अफसर ने वायदा किया कि वह जितना भी कर सकता है, उतना जरूर करेगा और अलेक्सेई को दो दिन के अन्दर फिर आने की सलाह दी। अलेक्सेई ने तर्क किया, प्रार्थना की, धमकी तक दी, मगर सब निष्फल हुआ। अफसर ने अपनी छोटी-सी हड्डीदार मुट्ठी अपने वक्ष से दबाते हुए कहा कि नियम ही ऐसे है और उनका उल्लघन करने का उसे कोई अधिकार नही है। बहुत सम्भव है कि इस मामले पर शीघ्र कार्रवाई करने का उसे कोई अधिकार न हो। मेरेस्येव असतोप प्रगट करता चला गया।

और इस प्रकार उसका एक सैनिक विभाग से दूसरे विभाग तक भटकना शुरू हुआ। उसकी कठिनाई इस बात से और भी बढ गयी कि जिस जल्दी में उसे अस्पताल लाया गया था, उसके कारण उसे वर्दी, खाना और भत्ते के प्रमाणपत्र नही दिलाये गये थे और इन्हे प्राप्त करने

के लिए अब तक उसने कोई कष्ट भी नहीं किया था। उसके पास छुट्टी तक का प्रमाणपत्र नहीं था यद्यपि उस विभाग के कृपालु और अनुग्रही अफसर ने उसके रेजीमेंट हेडक्वार्टर को फोन करने का और उनसे आवश्यक कागजात फौरन भेजने का अनुरोध करने का वायदा किया था, फिर भी मेरेस्येव जानता था कि इस बात में कितनी देर होती है और समझ गया कि कुछ समय उसे रुपये-पैसे बिना, निवास-स्थान बिना, और राशन बिना, इस युद्धग्रस्त राजधानी में रहना पड़ेगा जहां रोटी का हर किलोग्राम और शक्कर का हर ग्राम अत्यन्त बहुमूल्य था।

उसने अन्यूता को उस अस्पताल मे फोन किया जहा वह काम करती थी। उसके स्वर मे स्पष्ट था कि वह किसी बात से चिन्तित या व्यग्र थी, मगर वह बडी प्रसन्न थी कि वह आ गया है और जोर देने लगी कि इन चद दिनो तक अलेक्सेई उसी के यहा ठहरे, इसलिए और भी कि उसे अस्पताल में फौजी स्थिति पर होना पड़ता है और उसका मकान अलेक्सेई स्वय अपने उपयोग मे रख सकता है।

स्वास्थ्य-गृह मे जानेवाले प्रत्येक मरीज को यात्रा के लिए पाच दिन का सूखा राशन दिया गया था, और इसलिए दोबारा सोचे बिना, अलेक्सेई उस सुपरिचित टूटे-फूटे छोटे-से घर की ओर रवाना हो गया जो ऊची-ऊची नयी इमारतो के पिछवाडो के पीछे एक बाड़े के बीच में स्थित था। सिर पर छप्पर हो गया था और खाने को कुछ भोजन भी था, इसलिए अब वह प्रतीक्षा कर सकता था। वह सुपरिचित अधकारपूर्ण घुमावदार सीढियो पर चढ गया जहा अभी भी बिल्लियों, मिट्टी के तेल और कपडे धोने की नमी की गध आ रही थी, उसने अधेरे में दरवाजा टटोला और जोर से दस्तक दी।

दरवाजा खुला मगर दो मजबूत जजीरे पडी होने के कारण वे अधखुले रह गये। नाटी-सी बुढिया ने तग दरार में से कृशकाय चेहरा निकाला, अलेक्सेई की ओर सदेह की दृष्टि से, सूक्ष्म भाव से देखा और पूछा

कि वह कौन है, किसे चाहता है और उसका नाम क्या है। इतने होने के बाद कही जजीरे खडकी और दरवाजा पूरी तरह खुल गया।

"आन्ना दनीलोव्ना घर पर नही है, लेकिन उन्होने आपके बारे मे फोन कर दिया था। अन्दर आइये और मै आपको उनका कमरा बता दूगी," बुढिया ने उसका चेहरा, उसकी वर्दी और विशेषकर उसके सामान के बैग की अपनी मद और धुधली आखो से परीक्षा करते हुए कहा। "शायद आपको गर्म पानी की जरूरत होगी? रसोईघर मे आन्ना का मिट्टी के तेल वाला स्टोव रखा है, मै उबाले देती हू "

अलेक्सेई ने बिना किसी हिचक के इस सुपरिचित कमरे मे प्रवेश किया। स्पष्ट था कि कही भी घर जैसा आराम महसूस करने की सिपाहियाना क्षमता, जो मेजर स्त्रुच्कोव मे विशेप सीमा तक थी, उसमे भी प्रगट होने लगी थी। सुपरिचित-सी पुरानी लकडी, धूल और नेफथलीन की गध से, इन सभी चीजो की गध से जिन चीजो ने इधर दशाब्दियो तक बखूबी काम दिया था, उसमे भावावेग तक उत्पन्न हो गया, मानो कई वर्ष भटकने के बाद अब वह अपने ही घर लौट आया हो।

बुढिया उसके पीछे-पीछे घूमती रही और बराबर बतियाती रही, उसने नानबाई की दूकान पर लम्बी पातो की चर्चा की, जहा अगर किस्मत बुलद हो, तो राशन कार्ड पर राई की पावरोटी के बजाय सफेद रोल्स मिल जाती है, उसने एक बडे फौजी अफसर का जिक्र किया जिसको उसने ट्रामगाडी मे कहते सुना था कि जर्मनो को स्तालिनग्राद में लोहे के चने चबाने पड रहे है और इस पर हिटलर इतना पागल हो उठा कि उसे पागलखाने में रख देना पडा और आजकल तो उसका जुडवा है जो जर्मनी पर हुकूमत कर रहा है, उसने अपनी पडोसिन अलेक्सीना अरकादियेव्ना के बारे मे बताया जिसे दरअसल मजदूरो का राशन कार्ड पाने का अधिकार नही था, और उसने बढिया मीनाकारी किया हुआ दूधदान माग लिया था और आज तक नही लौटाया,

आन्ना दनीलोव्ना के माता-पिता के बारे मे भी उसने बताया, जो बडे सज्जन व्यक्ति थे और विस्थापितो के साथ चले गये थे, और स्वय आन्ना दनीलोव्ना की भी चर्चा की कि वह बडी सुशील, शान्त और सच्चरित्र लडकी है, दूसरी लडकियो की तरह नही है जो भगवान जाने, चाहे जिस-तिस के साथ मौज से डोलती-फिरती है, और वह किसी भी गैर आदमी को घर नही लाती। अत में उसने पूछा

"क्या तुम उसके वही नौजवान, टैंक-चालक हो, सोवियत सघ के वीर?"

"नही, मै तो साधारण हवाबाज हू," मेरेस्येव ने जवाब दिया और जब उसने बूढी के अभिव्यजनाशील चेहरे पर विस्मय, पीडा, अविश्वास और क्रोध के भाव आते-जाते देखे, जो एक साथ ही अभिव्यक्त हो उठे थे, तो वह अपनी मुसकान न दबा सका।

उसने होठ भीच लिये, क्रुद्ध गति से दरवाजा बद किया और बाहर गलियारे में जाकर कहा—पहले जिस तरह स्निग्ध स्वर मे बोली थी, अब यह स्वर नही था

"अच्छा, अगर आपको गर्म पानी की जरूरत हो तो मिट्टी के तेलवाले नीले स्टोव पर आप खुद उबाल लीजियेगा।"

अन्यूता सदर अस्पताल में बहुत व्यस्त रहा करती होगी। शरद के इस मनहूस दिन को मकान बिल्कुल उपेक्षित दिख रहा था। हर चीज पर धूल की मोटी तह थी और खिडकी की दहलीज पर और तिपाइयो पर रखे गमलो के फूल पीले पड गये थे और मुरझा गये थे, मानो उनमे बहुत दिनो से पानी दिया ही न गया हो। मेज पर रोटी के टुकडे पडे थे जो अभी सडे हरे दिखाई देते थे और केतली कभी हटायी ही न गयी थी। पियानो भी धूल की नर्म, रुपहली तह से ढका था और एक बडी-सी मक्खी मानो, दुर्गंधित हवा मे उसका दम घुट रहा हो, निराश स्वर मे भनभना रही थी और एक खिडकी के पीले से धुधले शीशे से अपने को बार बार टकरा रही थी।

मेरेस्येव ने खिडकिया खोल दी। जहा से एक छलवा वागीचा दिखाई देता था जिसे अब साग-सब्जी का खेत वना दिया गया था। कमरे मे ताजी हवा के झोके ने प्रवेश किया और एकत्र धूल को इतनी ज़ोर से उडा गया कि कुहरा-सा छा गया। इस समय अलेक्सेई के दिमाग में एक खुशनुमा ख्याल पैदा हुआ कमरे को साफ कर दिया जाय और अगर अन्यूता अस्पताल से किसी तरह छुट्टी पाकर शाम को उससे मिलने चली आये, तो उसे आनन्द और विस्मय से विभोर कर दिया जाय। उसने बूढी से वाल्टी, चिथडा और झाडू माग ली और वह काम में जुट गया जिसे आदमी सदियो से हिकारत की नजर से देखता रहा है। कोई डेढ घटे तक वह रगडता-खरोचता रहा और धूल साफ करता रहा मगर इस काम मे पूरी तरह आनन्द लेता रहा।

शाम को वह उस पुल तक गया, जहा इस घर की ओर आते समय उसने लडकियो को वडे-वडे, खिले हुए शरदकालीन गेदे के रग-विरगे फूल वेचते देखा था। उसने एक गुच्छा ख़रीदा और पियानो तथा मेज पर रखे गुलदानो मे उन्हे सजा दिया और हरी आरामकुर्सी मे आराम से बैठ गया, सारे शरीर में मीठी थकान की अनुभूतिवश, वह भोजन की गध को लालसापूर्वक सूघने लगा जिसे रसोईघर मे बुढिया उसके द्वारा लाये गये सामान से पका रही थी।

लेकिन अन्यूता इतनी थकी हुई आयी कि मुश्किल से नमस्कार भर करके वह कोच पर लुढक गयी और यह भी ध्यान नहीं दे सकी कि कमरा कितना वढिया और साफ-सुथरा है। जब वह [illegible] कर चुकी और कुछ पानी पी डाला, तब जाकर उसने [illegible] तरफ नजर डाली और समझ पायी कि [illegible]। [illegible] मुस्कान लाकर और कृतज्ञतापूर्वक मेरेस्येव की [illegible] दबाते हुए, [illegible]

"कोई ताज्जुब नही कि तभी [illegible] तुम्हे इतना [illegible] कि मुझे ईर्ष्या होने लगती है। क्या यह तुमने [illegible], [illegible], [illegible]

"वहाँ घमासान युद्ध चल रहा है।'

अलेक्सेई ने धीरे से [illegible] आह भरी। उसे उन सबसे ईर्ष्या थी, जो वहाँ, वोल्गा पर हैं, उन लोगों [illegible] इतिहास [illegible] किया हुआ है, जिसकी चर्चा हर कोई कर रहा है।

वे सारी शाम बातें करते रहे। [illegible] के [illegible] का उन्होंने पूरी तरह आनन्द लिया और [illegible] दूसरा [illegible] था, इसलिए वे साथियों की तरह एक ही कमरे में लेट कर — ग्वोज्देव चारपाई पर और अलेक्सेई कोच पर — और फौरन जवानी की गहरी नींद में सो गये।

जब अलेक्सेई जागा और उठ कर कोच पर बैठ गया तब तक कमरे में सूरज की धूल-भरी किरणें तिरछी पड़ने लगी थीं। अन्यूता चली गयी थी। उसने अपने कोच की पीठ पर एक पुर्जा लगा देखा "अस्पताल के लिए जल्दी ही रवाना हो रही हूँ। मेज पर चाय है और आलमारी में पावरोटी, मेरे पास शक्कर नहीं है। शनिवार से पहले छुट्टी न पा सकूँगी। अ०।"

इन दिनों अलेक्सेई घर से कभी ही बाहर निकलता होगा। काम कुछ न होने के कारण, उसने बुढ़िया का प्राइमस स्टोव, मिट्टी के तेल का स्टोव, कढ़ाई और बिजली की स्विचें ठीक कर दीं, और उसकी प्रार्थना पर उसने उस भयंकर अलेव्तीना अरकादियेव्ना का कॉफी पीसने का यन्त्र भी ठीक कर दिया, जिसने मीनाकारी का दूधदान अब

वह बड़ा भोलाभाला था। इस प्रकार वह उस बुढ़िया की नजरों में भला बन गया और उसके पति ने भी भला मान लिया जो इमारती ट्रस्ट में काम करता था, पर [illegible] में भी सक्रिय था और कई वर्ष तक और दिन भर में [illegible] करता था। बूढ़े पति-पत्नी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि [illegible] तो बढ़िया आदमी होते ही हैं, मगर इंजीनियर भी इतने बुरे नहीं होते और कहीं उनसे घनिष्टता बढ़ जाय तब मालूम होता है कि वे भी गम्भीर, परिवार प्रेमी जीव निकलते हैं, हालांकि उनका पेशा [illegible] होता है।

आखिर वह दिन आ गया जब अलेक्सेई को अपना फैसला लेने निर्माण-विभाग जाना था। उसकी पिछली रात उसने आंखें खोले हुए बिस्तर पर ही काट दी थी। सुबह वह उठा, दाढ़ी बनायी, हाथ-मुंह धो लिया, और वक्त पर दफ्तर पहुंच गया और जो उसके भाग्य का फैसला करनेवाला था, प्रशासन विभाग के उस मेजर के पास पहुंचनेवाला वह पहला व्यक्ति था। मेजर को देखते ही न जाने क्यों उसे घृणा हो गयी। अलेक्सेई की ओर आंखें उठाये बिना, मानो उसे आते उसने देखा ही न हो, वह मेज पर अपने काम में व्यस्त रहा—फाइलें निकालीं और लगायीं, विभिन्न लोगों को फोन किया, क्लर्कों को बड़ी देर तक समझाता रहा कि फाइलों पर नम्बर किस तरह लगाये जाते हैं, और फिर बाहर चला गया और बड़ी देर तक न आया। इस समय तक मरेस्येव उसके लम्बे चेहरे, लम्बी नाक, सफाचट गालों, दमकते हुए होंठों और ढलवा माथे से जो अदृश्य भाव से चमकती हुई गंजी खोपड़ी से जाकर मिल गया था, पूरी तरह नफरत करने लगा था। अंतत मेजर वापिस लौटा, बैठ गया, अपने कलेण्डर का पन्ना पलटा और तब जाकर अलेक्सेई की ओर ध्यान दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं, कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट?" उसने रोबदार, आत्मविश्वासी, भारी आवाज में पूछा।

मेरेस्येव ने उसे अपना काम बता दिया। मेजर ने क्लर्क से अलेक्सेई के कागजात लाने के लिए कहा और उनका इतजार करते हुए वह टागे फैलाकर बैठ गया और बडी ही तल्लीनता से अपने दातो को दात-खोदनी से कुरेदने लगा, जिसे शालीनतावश वह अपनी हथेली से ढके हुए था। जब कागजात आ गये तो वह मेरेस्येव के 'केस' पर गौर करने लगा। यकायक उसने हाथ हिलाया और एक कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए तशरीफ रखने का अनुरोध किया, स्पष्ट था कि वह उस हिस्से को पढ गया था जहा उसके पैर कटे होने की बात लिखी थी। उसने पढना जारी रखा और आखिरी पृष्ठ खत्म करने के बाद आखे ऊपर उठायी और पूछने लगा

"तो आप मुझसे क्या चाहते है ?"

"मै किसी लडाकू विमान रेजीमेंट के अदर नियुक्ति चाहता हू।"

मेजर बोझिल ढग से कुर्सी मे पीछे झुक गया और इस हवाबाज की ओर आश्चर्य से देखने लगा जो अभी भी उसके सामने खडा था, और फिर उसके लिए खुद अपने हाथ से एक कुर्सी खीच दी। उसकी घनी भौहे उसके चिकने और चमकदार माथे पर और ऊचे चढ गयी। उसने कहा

"लेकिन आप विमान नही चला सकते।"

"चला सकता हू और चलाऊगा! आप परीक्षा के लिए मुझे किसी प्रशिक्षण विद्यालय मे भेज दीजिए," मेरेस्येव ने लगभग चीखते हुए कहा और उसके स्वर से ऐसा अदम्य सकल्प व्यक्त हुआ कि कमरे में अन्य मेजो के अफसरो ने जिज्ञासापूर्वक ऊपर देखा, और हैरान रह गये कि यह ताम्रवर्ण, सुन्दर लेफ्टीनेंट किस बात को इतने हठपूर्वक पूछ रहा है।

मेजर को यकीन हो गया था कि सामने जो व्यक्ति खडा है, वह या तो हठधर्मी है या पागल। अलेक्सेई के क्रुद्ध चेहरे और कौधती हुई

'जंगली' आखो की ओर कनखियो से नजर डालकर उसने विनम्र स्वर मे बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा

"लेकिन देखिए! पैरो के बिना हवाई जहाज चलाना कैसे मुमकिन है? और आप ही सोचिये, आपको कौन इसकी इजाजत देगा? यह बिल्कुल हास्यास्पद बात है! पहले किसी ने ऐसा नही किया!"

"पहले किसी ने नही किया! खैर, तो अब कर दिखाया जायगा," मेरेस्येव ने हठधर्मी से जवाब दिया। उसने अपनी जेब से नोटबुक निकाली, उससे पत्रिका की कतरन निकाली, उसपर चढी हुई सेलाफोन उतारी और उसे मेजर के सामने मेज पर रख दिया।

अन्य मेजो पर बैठे हुए अफसरो ने अपना काम बद कर दिया और ध्यान से इस वार्त्तालाप को सुनने लगे। उनमे से एक अपनी जगह से उठा और मेजर के पास पहुचा, मानो वह किसी काम के बारे मे पूछने आया हो, उसने सिगरेट जलाने के लिए माचिस मागी और मेरेस्येव के चेहरे पर नजर डाली। मेजर ने कतरन पर आखे दौडायी और अत में कहा

"हम इसे नही मान सकते। यह कोई सरकारी दस्तावेज नही है। हमारे पास हिदायते है जिनमे वायुसेना के लिए शारीरिक क्षमता की भिन्न-भिन्न श्रेणियो की साफ-साफ व्याख्या दी गयी है। दो पैरो की कौन कहे, अगर दो उगलिया भी कम होती, तो मै आपको किसी हवाई जहाज का चार्ज लेने की इजाजत न देता। अपनी पत्रिका रख लो, यह कोई सबूत नही है। मै आपके साहस की सराहना करता हू, पर "

मेरेस्येव क्रोध से उबल रहा था और उसकी इच्छा हुई कि मेजर की मेज से कलमदान उठाये और उसकी गजी, चमकदार खोपडी पर दे मारे। रूखे हुए स्वर में वह बोला

"और इसके बारे मे आप क्या कहते है?"

इतना कहकर उसने अपना आखिरी पत्ता मेज पर रख दिया— यह था प्रथम श्रेणी के फौजी सर्जन मिरोवोल्स्की का प्रमाणपत्र। मेजर ने सदिग्ध भाव से उसे उठा लिया। वह बाजाब्ता था और उसपर फौजी चिकित्सा विभाग की मुहर भी लगी थी, और एक ऐसे सर्जन के दस्तखत थे जिसका वायुसेना मे बडा सम्मान था। मेजर ने प्रमाणपत्र पढा और उसका रुख और भी मैत्रीपूर्ण हो गया। सामने खडा व्यक्ति पागल नही था। यह असाधारण नवयुवक गम्भीरतापूर्वक विमान चलाना चाहता है, हालाकि उसके पैर नही है। उसने एक मजीदा फौजी सर्जन को, जो काफी अधिकारसम्पन्न है, यह विश्वास दिलाने मे सफलता प्राप्त कर ली कि वह उडान कर सकता है। मेजर ने निश्वास खीचकर मेरेस्येव के 'केस' को उठाकर बगल में रख दिया और कहा

"मै कितना ही क्यो न चाहू, मगर आपके लिए कुछ नही कर सकता। प्रथम श्रेणी के फौजी सर्जन महोदय जो जी चाहे, लिख सकते है, लेकिन हमारे पास स्पष्ट और निश्चित आदेश है, जिनका उल्लघन नही होना चाहिए अगर मै उनका उल्लघन करुगा, तो उसका जवाब कौन देगा? फौजी सर्जन?"

हृष्ट-पुष्ट, आत्मविश्वासी, शान्त और विनम्र अफसर की ओर, उसके चुस्त कोट के स्वच्छ कालर की ओर, उसके रोमिल हाथो की ओर, और गहराई से कटे हुए बडे-बडे भौडे नाखूनो की ओर, मेरेस्येव ने तीव्र घृणा से दृष्टि डाली। इसे कैसे बताया जाय? क्या वह समझ सकेगा? क्या वह जानता है कि आकाश-युद्ध क्या होता है? शायद उसने अपने जीवन में गोली दगने की आवाज भी न सुनी हो। पूरी शक्ति से अपने ऊपर काबू पाते हुए उसने मद स्वर मे पूछा

"तो फिर मैं क्या करू?"

मेजर ने कधे उचकाये और जवाब दिया

"अगर आप जोर देते है तो मैं आपको सगठन विभाग के कमीशन

के पास भेज गया है। लेकिन मैं पहले से ही चेताये देता हूं कि कोई फल न निकलेगा।"

"भाड़ में जाय यह भी, आप मुझे कमीशन के पास भेजिये।" मेरेस्येव ने कुर्सी से उछलकर हांफते हुए कहा।

इस तरह उसका एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर भटकना शुरू हुआ। सर्वत्र काम में डूबे हुए लोग ध्यानपूर्वक उसकी बाते सुनते, आश्चर्य और सहानुभूति प्रकट करते और असहाय भाव से कंधे झटका देते। सचमुच, वे क्या करे? उनके पास अपने लिए हिदायते थी, बढिया हिदायते, सर्वोच्च कमान से जारी हिदायतें और फिर इस काम की चिर-प्रतिष्ठित परम्पराएं भी—उनका उल्लंघन वे कैसे करते? और फिर ऐसे साफ मामलो में। इस अदम्य पंगु व्यक्ति के लिए, जो युद्ध मोर्चे की पांत में शामिल होने के लिए उत्सुक था, उन सबको हार्दिक अफसोस था, और किसी में इतना साहस न था कि उसे साफ मना कर देते, इसलिए वे उसे नियुक्ति विभाग से संगठन विभाग और एक मेज से दूसरी मेज तक भेजते और हर व्यक्ति दया करके उसे किसी कमीशन के सामने भेज देता।

मेरेस्येव अब न तो इनकारो या उपदेशो से और न अपमानजनक सहानुभूति और विनम्रता प्रदर्शनो से विचलित होता था, जिनके विरुद्ध उसकी स्वाभिमानी आत्मा विद्रोह कर रही थी। उसने अपने ऊपर सयम रखना सीख लिया था, वकीलो जैसा स्वर प्राप्त कर लिया था और यद्यपि कभी-कभी उसे एक एक दिन मे दो या तीन जगह से इनकार मिलता था, मगर वह आशा नही छोडता था। पत्रिका की कतरन, और फौजी सर्जन का प्रमाणपत्र बार-बार जेब से निकाले जाने के कारण इतने जर्जर हो गये थे कि तह की लकीरो पर वह फट गये थे और वह उन्हे तेल सनी कागज के फीते से चिपकाने के लिए मजबूर हो गया था।

भटकने की मुसीबत इस बात से और गहरी हो गयी थी कि

रेजीमेंट से जवाब का इंतजार करते हुए वह बिना किसी भत्ते के रह रहा था। स्वास्थ्य-गृह से जो कुछ सामग्री मिली थी, वह साफ हो गयी थी। यह ठीक है कि अन्यूता के पड़ोसी बूढ़े पति-पत्नी, जिनका वह घनिष्ट मित्र हो गया था, जब देखते कि उसने अपने लिए कोई भोजन नही पकाया है, तो वे बराबर उसे अपने यहा भोजन के लिए निमंत्रित कर लिया करते, मगर वह जानता था कि खिड़की के बाहर नन्हे-से साग-सब्जी के बागीचे मे ये बूढ़े किस तरह जी-तोड काम करते है, उनके लिए प्याज की हर पत्ती और हर गाजर कितनी बहुमूल्य है, और किस तरह हर सुबह वे बिरादराना, छोटे भाई-बहिन की भाति अपनी पावरोटी को आपस मे बाटते है। इसलिए वह बडी प्रसन्नतापूर्वक उनसे कह देता था कि पकाने की झल्लत से बचने के लिए अब वह कमाडरो के भोजनालय मे खाना खाने लगा है।

शनिवार आया, जिस दिन अन्यूता को ड्यूटी से छुट्टी मिलेगी— वैसे वह हर शाम उसको फोन कर बता देता था कि स्थिति असतोषजनक है। उसने आखिरी कदम उठाने का फैसला कर दिया। उसके सामान के बैग में अभी भी उसके पिता का पुराना, चादी का सिगरेट केस पड़ा था, जिसपर काले रग की मीनाकारी से तीन दौडते हुए घोडो द्वारा खीची जानेवाली स्लेज गाडी अकित थी, और अदर आलेख था. "तुम्हारे रजत-परिणय के अवसर पर तुम्हारे मित्रो की ओर से।" अलेक्सेई सिगरेट नही पीता था, फिर भी जब वह घर छोडकर मोर्चे पर जा रहा था, तब मा ने परिवार के इस अमूल्य स्मृति-चिह्न को अपने प्रिय पुत्र की जेब में सरका दिया था, और वह इस भारी, ऊटपटाग चीज को हमेशा अपने साथ लिये घूमता रहा और जब उड़ान पर जाता तो उसे 'कुशल-मगल' के लिए अपनी जेब में डाल लेता था। उसने अपने बैग से यह सिगरेट केस खोज निकाला और उसे कमीशन स्टोर ले गया।

एक दुबली-पतली स्त्री ने जिससे नेफ्थलीन की बू आ रही थी,

सिगरेट केस को हाथों में उलट पलटकर देखा और अपनी सूखी हुई उंगली से सरनामे की तरफ इशारा किया और बोली कि सरनामे वाली चीज़ें बेचने के लिए नहीं ली जातीं।

"लेकिन मैं उसके लिए बहुत ज्यादा नहीं माग रहा हू। तुम खुद बताओ क्या दे सकती हो।"

"नहीं, नहीं। इसके अलावा, कामरेड अफसर, जैसे कि मुझे लगा अभी तुम्हारी उमर इतनी बडी नहीं है कि तुम अपनी शादी की पचीसवी वर्षगांठ पर उपहार में लेने के लायक हो," नेफ्थलीन की बू मारती हुई स्त्री ने अलेक्सेई को सिर से पैर तक अमित्र बेरंग आखों से घूरते हुए तीखे स्वर में कहा।

अलेक्सेई का चेहरा लाल हो गया। उसने कौन्टर से सिगरेट केस झपट लिया और दरवाज़े की ओर चल दिया। किसी ने उसका हाथ पकडकर उसे रोक लिया और उसके कान के पास शराब में बसी हुई भारी-भारी सास की गरमी महसूस हुई।

"बड़ी खूबसूरत-सी चीज़ है यह। महंगी तो नहीं?" एक मोटे चेहरेवाले आदमी ने पूछा। उसकी दाढी और मूछें बढ़ी हुई थीं। उसकी नाक नीली थी। उसने अपना थरथराता हुआ नसदार हाथ सिगरेट केस की तरफ बढाया। "ज़ोरदार। चूकि तुम देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर हो इसलिए मैं इसके लिए पाच कागज़ दे दूगा।"

अलेक्सेई ने सौदा नहीं किया। उसने पाच सौ रूबल के नोट लिये और कबाड की इस बदबूदार दुनिया से निकलकर बाहर साफ हवा में आ गया और निकटतम बाज़ार का रास्ता ले लिया। इस पैसे से उसने कुछ गोश्त, बैकफैट, एक पावरोटी, कुछ आलू और प्याज़ खरीदा और अजमोद की कुछ जड़ें खरीदना भी न भूला। इस तरह लदकर, रास्ते में बैकफैट का एक टुकड़ा चूसते हुए वह 'घर' लौटा—उसे वह 'घर' कहने लगा था।

जब वह घर वापिस आया तो उसने अपनी खरीद का सामान रसोईघर की मेज पर रख दिया और बात बनाकर बुढिया से कहने लगा

"मैंने अपना राशन ले डालने का और अपना भोजन खुद पकाने का फैसला कर लिया है। मेस में जैसा खाना मिलता है, वह तो भयकर होता है।"

उस दिन दोपहर में अन्यूता के लिए शानदार भोजन इतजार कर रहा था। गोश्त के साथ पकाये गये आलुओं का शोरबा जिसकी भूरी-सी सतह पर अजमोद के टुकडे तैर रहे थे, प्याज के साथ भूजा गया गोश्त और क्रैनबेरी की जेली तक, जिसे बुढिया ने आलुओ के माड से बनाया था। लडकी थकी हुई और पीली-सी घर लौटी। उसने अपने को नहाने के लिए मजबूर किया और बडा जोर लगाकर कपडे बदले। पहली परोस को और फिर दूसरी परोस को जल्दी से खाकर, वह पुरानी जादुई कुर्सी पर पाव फैलाकर लेट गयी, जिसने उसे अपनी गुदगुदी भुजाओ में पुराने मित्र की तरह भर लिया और उसके कानो में मधुर स्वप्न फूकने लगी, और इस तरह वह जेली का इतजार किये बिना, जो पाकशास्त्र के नियमो के अनुसार एक कटोरदान में बद, नल के बहते पानी के नीचे ठडी की जा रही थी, वह ऊघ गयी।

थोडी-सी नीद के बाद, जब उसने आखें खोली, तो उस नन्हे-से, अब साफ-सुथरे कमरे में, जिसमें आरामदेह और पुराना फर्नीचर तमाम भरा पडा था, साझ की धूमिल छायाए उतर आयी थी। भोजन की मेज पर पुराने लैम्प के साये मे अलेक्सेई अपने हाथो के बीच सिर दबाये बैठा था, और उसे इतने जोर से दबा रहा था, मानो वह उसका कचूमर ही निकाल डालना चाहता हो। वह उसका चेहरा न देख सकी, मगर जिस तरह वह बैठा था, उससे यह स्पष्ट था कि वह निराशा की गहराई मे तडप रहा है, उसके हृदय में इस शक्तिशाली और हठी व्यक्ति के लिए दया का भाव उमड पडा। वह आहिस्ते से उठ बैठी, उसकी

ओर बढी, उसका भारी-भरकम सिर अपने हाथो मे लिया और उसके मस्त वालो मे अपनी उगलिया फेरती हुई, सिर थपथपाने लगी। उसने उसका हाथ पकडा, उसकी हथेली चूमी, प्रसन्नचित्त मुसकुराते हुए उछल पडा और बोला

"क्रेनवेरी जेली का क्या हाल है? तुम भी क्या वढिया हो। मै तो उसे ठीक ताप पर लाने के लिए नल के नीचे ठडा करने मे जुटा हुआ था, और तुम हो कि गयी और सो गयी। रसोइया यह कैसे बरदाश्त करेगा?"

दोनो ने उस "सर्वश्रेष्ठ" जेली की एक एक प्लेट खायी जो सिरके जैसी खट्टी हो गयी थी, वे लोग आनन्दपूर्वक इधर-उधर की बाते करते रहे, सिर्फ दो विषयो – ग्वोज्देव और मेरेस्येव – को छोडकर, मानो इनपर बात न करने का आपसी समझौता कर लिया हो, और फिर अपने-अपने सोने का प्रबंध करने लग गये। अन्यूता गलियारे मे चली गयी और जब फर्श पर अलेक्सेई द्वारा कृत्रिम पैरो के रखने की टाप सुनाई दी, तब वह अन्दर आयी, लैम्प बुझा दिया और कपडे उतारकर लेट गयी। कमरे में अधेरा था, वे दोनो मौन थे, मगर चादरो की सर्राहट और चारपाई की स्प्रिगो की चू-चू सुनकर वह समझ गयी कि वह जाग रहा है। आखिरकार अन्यूता ने पूछा.

"नीद नही आ रही, अल्योशा?"

"नही।"

"सोच-विचार कर रहे हो?"

"हा। और तुम?"

"मै भी ऐसे ही सोच रही हू।"

वे फिर चुप हो गये। सडक पर कोई ट्राम-गाडी मोड पर घूमते वक्त खिच् बोली। एक क्षण उसकी ट्राली से बिजली की चिनगारी कौंच गयी और उस क्षण उन्होने एक दूसरे का चेहरा देखा। दोनो आखें फाडे पडे थे।

अलेक्सेई ने अपने निष्फल भटकाव के बारे में अन्यूता से एक शब्द भी नही कहा था, लेकिन वह भाप गयी थी कि उसका काम बन नही रहा है और शायद उसकी अदम्य आत्मा निराशा से जर्जर हो गयी है। उनके नारी-सुलभ अन्तर्बोध ने उसे बता दिया कि यह आदमी कितनी यातना सह रहा है, लेकिन उसी सहज बोध ने उसे यह भी जता दिया कि इस क्षण यातना कितनी ही कठिन क्यो न हो, सहानुभूति के दो शब्दो से उसकी पीडा और बढ जायगी और करुणा दिखाने से उसे ठेस लगेगी।

उधर वह अपने हाथो पर सिर टिकाये पीठ के बल लेटा हुआ था और उस सुन्दर लडकी के बारे में सोच रहा था, जो उसकी अपनी शैय्या से कुछ ही कदम दूर लेटी हुई थी—उसके मित्र की प्रेयसी और एक बढिया साथिन। उस तक पहुचने के लिए उसे अधेरे कमरे मे सिर्फ चद कदम ही बढाने पड़ेंगे, लेकिन दुनिया में कोई शक्ति उसे ये चद कदम उठाने का प्रलोभन नही दे सकती, मानो वह लडकी, जिसे वह बहुत थोडा जानता था, मगर जिसने उसे शरण दे रखी थी, उसकी अपनी बहन हो। मेजर स्त्रुच्कोव शायद उसका मजाक बनाये, और अगर उसे यह बात बतायी जाय तो शायद विश्वास भी न करे। लेकिन कौन कह सकता है? शायद, अब, वह उसे सबसे अधिक अच्छी तरह समझ सकेगा   और अन्यूता कितनी बढिया लडकी है! बेचारी, कितनी थक जाती है, और फिर भी उस सदर अस्पताल में अपने काम के प्रति उसमें कितना अधिक उत्साह रहता है।

"अल्योशा! " अन्यूता ने धीमे से पुकारा।

मेरेस्येव की कोच से नियमित सास लेने की ध्वनि आने लगी। विमान-चालक सो गया था। लडकी चारपाई से उठी, आहिस्ते से कदम बढाती हुई उसकी चारपाई तक पहुची, उसका तकिया सीधा किया, और उस प्रकार उसके चारो तरफ कम्बल ठीक से लपेट दिया मानो वह बच्चा हो।

७

मेरेस्येव को कमीशन ने सबसे पहले अन्दर बुलाया। भारी-भरकम, स्थूलकाय प्रथम श्रेणी के फौजी सर्जन महोदय, जो अपने कार्य से वापिस लौट आये थे, फिर अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होने अलेक्सेई को फौरन पहचान लिया और उसका स्वागत करने के लिए वे कुर्सी छोडकर उठ तक बैठे।

"वे लोग तुम्हे स्वीकार नही करते, एह?" उन्होने उदार और सहानुभूतिपूर्ण स्वर मे कहा। "हा, तुम्हारा मामला भी कठिन है। तुम्हे कानून की सीमाए पार करना है और यह कर सकना आसान नही होता।"

कमीशन ने अलेक्सेई की परीक्षा करने का कष्ट नही किया। उसकी दरखास्त पर फौजी सर्जन ने लाल पेन्सिल से लिख दिया "नियुक्ति-विभाग। प्रार्थी को परीक्षार्थ प्रशिक्षण वायुसेना रेजीमेंट भेजने की व्यवस्था कीजिये।" इस कागज को लेकर अलेक्सेई सीधा नियुक्ति-विभाग के प्रधान के पास पहुचा। इस जनरल से उसे मिलने की इजाजत नही दी गयी। अलेक्सेई क्रोध से भडक उठनेवाला ही था, मगर जनरल के एजीटाट, एक साफ-सुथरे नौजवान कप्तान का चेहरा, जिसपर छोटी-सी काली मूछे थी, इतना प्रसन्नचित्त, उदार और मैत्रीपूर्ण था कि वह उसके ही पास बैठ गया और उसको अपनी कहानी की एक एक बात जिस तरह बता डाली, उससे वह स्वय ही चकित रह गया। कहानी मे बीच-बीच मे फोन से व्यवधान पडता था, जब तब कप्तान को उठकर अपने प्रधान के दफ्तर तक जाना पडता था, मगर हर बार लौटकर वह फिर अलेक्सेई के सामने बैठ जाता और अपनी नादान, बचकानी आखो से, जिनसे कौतुक और सराहना, दोनो ही तथा अविश्वास भी, अभिव्यक्त हो उठता था, वह अलेक्सेई की ओर निहारता शीघ्रतापूर्वक कह बैठता·

"हा, जारी रखिए, उसके बाद क्या हुआ?" या यकायक वह

किया और उसका दिल इतनी तेजी और पीडा से धडकने लगा, मानो वह किसी तीव्रगामी विमान मे गोता लगा रहा हो।

कप्तान दफ्तर मे मुसकुराता और प्रसन्नचित्त निकला।

"हा," उसने कहा। "वास्तव मे जनरल तो आपके उड़ाकुओ मे शामिल किये जाने की बात सुनने के लिए भी तैयार न थे, लेकिन उन्होंने यह लिख दिया है 'प्रार्थी को तनख्वा या राशन मे कटौती बिना ए० एस० बी० विभाग मे सेवा करने के लिए नियुक्त किया जाय।' समझ गये? बिना कटौती . "

आनन्द के बजाय, कप्तान ने अलेक्सेई के चेहरे पर रोष उमडते देखा।

"ए० एस० बी०! कभी नही!" वह चिल्लाया। "क्या आप इतना भी नही समझते? मुझे अपने लिए राशन और तनखा की चिन्ता नही है! मै विमान-चालक हू! मै उडान करना चाहता हू, लडना चाहता हू!.. आप लोग यह बात क्यो नही समझते? इससे सीधी बात क्या हो सकती है?.."

कप्तान उलझन मे फस गया। सचमुच ही यह बडा विचित्र प्रार्थी था। उसकी जगह कोई दूसरा आदमी होता तो खुशी से नाच उठता . लेकिन यह व्यक्ति! बिल्कुल सनकी है! लेकिन इस सनकी व्यक्ति को कप्तान अधिकाधिक पसद करने लगा था। वह हृदय से उसके प्रति सहानुभूति अनुभव कर रहा था और इस विचित्र स्थिति मे उसकी सहायता करना चाहता था। यकायक उसके दिमाग मे कोई नया विचार आया। उसने मेरेस्येव को आख मारी, उगली से उसको सकेत किया और अपने प्रधान के दरवाजे की ओर ताकते हुए फुसफुसाया

"जनरल जितना कर सकते थे, उतना उन्होंने कर दिया है। इससे अधिक करने का उन्हे अधिकार नही। सच मेरी सौगध पर मानो। अगर वह आपको उडाकुओ मे नियुक्त कर देंगे तो लोग समझेंगे कि वह स्वय

पागल है। मैं वताता हू कि क्या करना है। सीधे वडे प्रधान के पास जाओ। सिर्फ वही आपकी सहायता कर सकते है।"

अलेक्सेई के नये मित्र ने उसको एक पास लाकर दे दिया और आध घटे बाद वडे प्रधान के दफ्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में कालीन से ढके फर्श पर वह परेशान हाल चहलकदमी कर रहा था। इस बात को उसने पहले ही क्यो न सोचा ? सचमुच! इतना वक्त बरबाद करने के बजाय, उसे यही आना चाहिए था! अब वारा-न्यारा होकर ही रहेगा कहा जाता है कि वडे प्रधान खुद अपने जमाने में अव्वल दरजे के विमान-चालक थे। उन्हे तो सद्भावना दिखानी ही चाहिए! वह एक लड़ाकू हवाबाज को ए० एस० वी० मे नही भेजेंगे!

कई जनरल और कर्नल प्रतीक्षा-कक्ष मे बैठे हुए थे और मद स्वरों मे बाते कर रहे थे। कुछ लोग बुरी तरह सिगरेट पी रहे थे—स्पष्ट था कि वे उद्विग्न थे। सिर्फ सीनियर लेफ्टीनेंट ही अपनी विचित्र, स्प्रिंगदार चाल से कालीन पर इधर से उधर चहलकदमी कर रहा था। जब सब मुलाकाती चले गये और मेरेस्येव की बारी आयी, तो वह एक मेज की तरफ बढा जिस पर एक गोल, स्पष्ट भापी जैसे चेहरेवाला जवान मेजर बैठा था।

"क्या आप स्वय प्रधान जी से ही मिलना चाहते है, कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट?" मेजर ने पूछा।

"हा। मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्तिगत मामला उनके सामने पेश करना है।"

"शायद, उसके बारे मे आप पहले मुझे बता सकेंगे? कुर्सी लीजिये, तशरीफ रखिये और बता दीजिये! आप सिगरेट पीते है?" और उसने मेरेस्येव के सामने अपना खुला सिगरेट केस पेश कर दिया।

अलेक्सेई ने सिगरेट नही पी, फिर भी पता नही क्यो, उसने एक सिगरेट ले ली, उसे अपनी उगलियो के बीच मसल दिया, डेस्क पर रख

दिया और फौरन, जैसे उसने कप्तान को बताया था, उसी तरह यहा भी अपने दुस्साहस कार्य की गाथा उगल दी। मेजर ने उसकी कहानी सुनी, मगर उतनी विनम्रता के साथ नही, जितनी शान्ति, सहानुभूति और ध्यान से। उसने पत्रिका की कतरन और फौजी सर्जन की राय भी पढ ली। मेजर ने जो सहानुभूति प्रदर्शित की उससे प्रोत्साहित होकर, मेरेस्येव ने यह भूलकर कि वह कहा है, एक बार फिर अपनी नृत्य की योग्यता प्रदर्शित करना चाहा और लगभग सारा खेल ही बिगाड दिया, क्योंकि उसी समय दफ्तर का दरवाजा बड़े जोर के धक्के से खुल गया और एक लम्बे कद का, दुबला-पतला अफसर प्रगट हुआ जिसके कौए जैसे काले बाल थे। अलेक्सेई ने उसके जो फोटोग्राफ देखे थे, उनसे मिलाकर वह उसे फौरन पहचान गया। वह डग भरता हुआ अपने कोट के बटन लगाता, एक जनरल से कुछ कह रहा था जो उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह बडा चिन्तित दिखाई दे रहा था और उसने मेरेस्येव की ओर ध्यान तक नही दिया।

"मै क्रेमलिन जा रहा हू," उसने अपनी घडी की ओर नजर डालकर मेजर से कहा। "स्तालिनग्राद के लिए एक हवाई जहाज छै बजे तैयार रखने का हुक्म दे दो। वेर्खन्याया पोग्रोमनाया पर उतरूंगा।" इतना कहकर वह उतनी ही शीघ्र विलीन हो गया, जैसे प्रगट हुआ था।

मेजर ने फौरन हवाई जहाज के लिए हुक्म भेज दिया और फिर याद करके कि मेरेस्येव उसके कमरे मे बैठा था, वह उसे क्षमा-याचना के भाव से बोला

"आपकी किस्मत ही खराब है। हम जा रहे है। आपको फिर आना पड़ेगा। कही रहने का ठिकाना है?"

इस असाधारण अभ्यागत के ताम्रवर्ण मुखडे पर, जो अभी कुछ क्षण पहले ही इतना दृढ सकल्पी और इच्छा-शक्ति से सम्पन्न दिखाई

प्रफुल्लित, नाना थारो उठाकर इस पत्र ओर चला

"अच्छा तो तुम यहां भी आ पहुंचे? यही बात है, मैं समझा! तुम ही हो वह, जो नाराज हो गये, क्योंकि मैंने तुम्हें ए० एम० बी० में भेज दिया था! हा-हा-हा! बढ़िया लड़के हो! मैं समझ गया कि तुम पक्के हवाबाज हो। ए० एम० बी० में नहीं जाना चाहते। बुरा मान गये, क्यों? क्या मजाक है! लेकिन मैं तुम्हें, ए नौजवान नर्तक, तुम्हें लेकर क्या करता? तुम अपनी गर्दन तोड़ बैठोगे, और फिर वे लोग तुम्हारी गर्दन के एवज में मेरे सिर की मरम्मत करेंगे, यह कहकर कि मैं बूढ़ा बेवकूफ था जिसने तुम्हें नियुक्त किया था। लेकिन यह कौन कहे कि तुम क्या कर सकते हो? इस लड़ाई में हमारे जवानों ने उससे भी बड़ी चीजें कर दिखाकर दुनिया को हैरत में डाल दिया लाओ, यह पुर्जा मुझे दो।"

इतना कहकर जनरल ने नीली पेंसिल से लापरवाही के साथ गिचपिच लिखावट में, शब्दों को मुश्किल से पूरा लिखते हुए, लिख डाला, "प्रार्थी को प्रशिक्षण विद्यालय भेजा जाय।" मेरेस्येव ने कांपते हुए हाथों से कागज जल्दी से लिया; उस टिप्पणी को वहीं मेज के पास पढ डाला, फिर उतरते समय सीढियों पर पढा, इसके बाद जहां सन्तरी ने पास देखा, वहां पढा, ट्राम-गाडी में बैठकर पढा और अंत में बारिश के बीच फुटपाथ पर खडे होकर पढा। और दुनिया के समस्त निवासियों में से सिर्फ वही एक व्यक्ति था जो लापरवाही से घसीटे गये उन शब्दों का अर्थ और मूल्य समझता था।

उस दिन अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपनी घडी बेच डाली, जो डिवीजनल कमांडर ने उपहारस्वरूप दी थी, और उसके पैसे लेकर बाजार गया और तमाम तरह की खाद्य-सामग्री और शराब खरीदी और अन्यूता को टेलीफोन करके उससे अनुरोध किया कि वह अपने अस्पताल से चंद घंटों की छुट्टी ले ले, उसने बूढे दम्पत्ति को भी अन्यूता के कमरे में निमंत्रित किया और अपनी महान विजय के उत्सवस्वरूप दावत का प्रबंध किया।

८

मास्को के पास स्थित प्रशिक्षण विद्यालय में जो छोटे-से हवाई अड्डे के निकट था, उन चिन्ताग्रस्त दिनों में बडा व्यस्त कार्यक्रम होता था।

स्तालिनग्राद के युद्ध में वायुसेना को बडे पैमाने पर काम करना था। वोल्गा पर स्थित इस दुर्ग के ऊपर का आसमान, जो सदा कांपता रहता था और आग की लपटों और विस्फोटों के धुएं से भरा रहता था, बराबर आकाशीय मुठभेड़ों का क्षेत्र बना रहता था और प्राय ये मुठभेड़ें नियमित आकाश-युद्ध का रूप धारण कर लेती थीं। दोनों पक्षों को भारी क्षति उठानी पड़ी। युद्धरत स्तालिनग्राद बराबर विमान-चालकों और

"तुम्हारे पास कपडे हासिल करने के कागजात है? राशन के कागजात? नही? सब लोगो की यही बात है। परन्तु मै कारण जानता— अस्पताल, जल्दी-जेजी तो मै तुम्हे कैसे खिलाऊगा? फौरन दरखास्त दो उनके लिए। भत्ते के कागजात पाये बिना मै तुम्हे नही रखूगा।"

"बहुत अच्छा, लेफ्टीनेंट-कर्नल! मै फौरन किये देता हू!" मेरेस्येव ने फुर्ती से अटेंशन खडे होकर, सेल्यूट झाडते हुए खुशी से कहा। "क्या मै जा सकता हू?"

"जा सकते हो," लेफ्टीनेंट-कर्नल ने उदासीन भाव से अपना हाथ हिलाते हुए जवाब दिया। यकायक वह चिल्लाया "रुको! यह क्या है?" उसने भारी छडी की ओर इशारा किया जिस पर स्वर्णाक्षरो मे मुहर थी—वसीली वसील्येविच का उपहार। दफ्तर छोडते समय, उत्तेजनावश, मेरेस्येव उसे कोने मे ही छोडे जा रहा था। "कैसे छैला हो? फेक दो इसे। कोई समझेगा कि यह बजारो का खेमा है, फौजी यूनिट नही। या पार्क है छडिया, बेत, चाबुक! अभी ही तुम अपने गले मे ताबीज लटकाना चाहोगे और हवाई जहाज मे अपनी सीट पर काली बिल्ली रखोगे। यह मरगिल्ली चीज तुम अब मेरे सामने न आने देना। वाह रे बाके।"

"बहुत अच्छा, कामरेड लेफ्टीनेंट-कर्नल!"

अलेक्सेई जानता था कि आगे बहुत-सी कठिनाइया और बाधाए आयेंगी उसे भत्ते के कागज मगाने के लिए दरखास्त देनी थी, और कुपित लेफ्टीनेंट-कर्नल को यह विवरण भी देना था कि वह अपने कागज कैसे खो बैठा, स्कूल मे आने-जानेवालो का ताता लगा रहने के कारण, यहा मिलनेवाला भोजन नाकाफी होता था, और शिक्षार्थी जहा अपना दोपहर का भोजन खत्म करते थे तहा शाम के भोजन के लिए व्यग्र हो उठते थे। स्कूल की भीड से भरी इमारत में, जो तीसरी यूनिट के रहने की अस्थायी जगह की तरह काम दे रही थी, भाप के पाइप फट गये

थे, और बड़ी गर्मी थी, अलेक्सेई [illegible] इन सारी [illegible] अपने [illegible] और चमड़े के कोट के नीचे पसीना [illegible] हो गया [illegible]. इन सारी गड़बड़ियों और तकलीफों के बीच, उसको ऐसा महसूस हो रहा था जैसे शायद, रेतीले किनारे पर पड़े रहने के बाद जब किसी मछली को कोई लहर वापिस समुद्र में ले जाए तो उसे महसूस होता होगा। उसे यहां हर चीज पसन्द आयी, [illegible] ऐसी [illegible] से उसे यह स्मरण हो आता था कि उसकी शक्ति [illegible] है।

जिसका वह आदी था, वही सरगर्म वातावरण, वही चमड़े के कोट पहने—जो अब जर्जर और फीके पड़ गये थे—और [illegible] जबरे बूट चढ़ाये प्रसन्नचित्त लोग, उनके [illegible] और फटी आवाजें, विमानों के ईंधन की मीठी-सी तीखी गंध से सुरभित और गरमाते हुए इंजिनों की गड़गड़ाहट की गूंज से प्रतिध्वनित तथा उड़ते हुए विमानों के एकरस, हल्के गूंजन से प्रच्छादित वही सुपरिचित वायुमण्डल, ग्रीस से सने लबादे पहने हुए मेकेनिकों के वही संजीदे चेहरे जो थकान से इतने चूर कि गिर ही पड़ेंगे, वही [illegible] शिक्षक, जिनके चेहरे धूप में तपकर ताम्रवर्ण हो गये थे, मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की वही गुलाबी कपोलोंवाली लड़कियां, निर्देश केन्द्र के स्टोव से उठता हुआ वर्तुलाकार नीला धुआं, विभिन्न यन्त्रों की वही मंद गुनगुनाहट और चौंका देनेवाली टेलीफोनों की घंटियां, भोजन-कक्ष में चम्मचों की उसी तरह कमी, विविध रंगों की पेंसिलों से हाथ से लिखा गया दीवार-पत्र, जिसमें ऐसे युवक विमान-चालक के बारे में अवश्यम्भावी कार्टून होते जो हवाई जहाज में उड़ान करते समय लड़कियों के सपने देखते; हवाई अड्डे के मैदान की नर्म, पीली मिट्टी जिस पर हवाई जहाज के पहियों और उनको रोकनेवाली टेकों की लकीरें बन गयी थीं और हंसी-खुशी से बातचीत, जिसमें कामातुर इशारों और विमान-कला की अपनी शब्दावली का मिर्च-मसाला मिला हुआ होता है—अलेक्सेई के लिए ये सभी सुपरिचित था।

मेरेस्येव फौरन खिल उठा। लडाकू विमान-सेना की कमान के लोगो मे जैसा खुश मिजाज और अक्खडपन होता है—जो अलेक्सेई मे स्थायी रूप से खत्म हो गया मालूम होता था—वह सब उसके अदर फिर वापिस लौट आये। उसमे फुर्ती जाग गयी, वह खुशी और तेजी से अपने से छोटे ओहदेवालो के सेल्यूट का जवाब देता, ऊचे ओहदेवालो से भेट होने पर चुस्ती से नियमपूर्वक कदम मारता और, नयी वर्दी मिलने पर, उसने ए० एस० बी०, के उस बूढे क्वार्टर मास्टर सार्जेन्ट से उसे "उलटवाकर फिट" करा लिया, जो नागरिक जीवन मे दर्जी था और फालतू वक्त मे चुस्त और तुनकमिजाज लेफ्टीनेटो की "हड्डियो तक फिट बैठाने" के लिए उनकी फौजी नियमानुसार बनी वर्दियो को ठीक करता था।

पहले ही दिन मेरेस्येव तीसरी यूनिट के शिक्षक लेफ्टीनेट नौमोव को खोजने के लिए हवाई अड्डे के मैदान में गया, जिसके चार्ज मे उसे रखा गया था। नौमोव—नाटा-सा, अत्यन्त फुर्तीला, बडे सिर और लम्बी बाहोवाला व्यक्ति—'टी' क्षेत्र मे भाग-दौड कर रहा था और आसमान की तरफ देख रहा था जहा उस विशेष क्षेत्र मे नन्हा हवाई जहाज उड रहा था। जो चालक हवाई जहाज चला रहा था, उसपर बरसते हुए शिक्षक चिल्ला रहा था

"भयकर कूढ मगज! चादी का बोरा! कहता है वह लडाकू—कमान में रहा था! वह मुझे बेवकूफ नही बना सकता!"

अपने भावी शिक्षक को अपना परिचय देने के लिए मेरेस्येव बढा और फौजी तरीके से सलाम किया, मगर उसने सिर्फ हाथ हिलाया, आसमान की तरफ इशारा किया और चीख उठा·

"उधर देखा? 'विध्वसक'! 'आकाशी आतक'! और फड-फडा रहा है जैसे जैसे बर्फ के छेद मे गुलबहार का फूल "

अलेक्सेई को यह शिक्षक फौरन भा गया। उसे इस तरह के थोडे सनकी

आदमी पसन्द थे जो अपने काम के प्रेम मे पैर से सिर तक डूबे रहते है और जिनसे योग्य और उत्साही विमान-चालको की फौरन पट जाती है। आसमान मे चालक जिस तरह उड रहा था, उसके विषय में उसने कुछ व्यावहारिक टीका की। नाटे लेफ्टीनेंट ने उसकी ओर आलोचनात्मक दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देखा और पूछा

"मेरी यूनिट मे आये हो? क्या नाम है तुम्हारा? कैसे हवाई जहाज उडाये है तुमने? कभी लडाई मे रहे हो? उडान किये कितने दिन हो गये?"

अलेक्सेई यह न समझ सका कि लेफ्टीनेंट ने उसके सब जवाब सुने भी है या नही, क्योकि वह फिर आसमान की ओर देखने लगा और धूप से बचने के लिए अपनी आखो पर एक हाथ से छाया कर, वह दूसरे हाथ की मुट्ठी हवा मे झुलाने लगा और चिल्ला उठा

"दुधमुहा बच्चा! देखा कैसे मोड ले रहा है! जैसे दीवानखाने में हिप्पोपोटेमस!"

उसने अलेक्सेई को हुक्म दिया कि वह अगले दिन सुबह आ जाये और वायदा किया कि उसे फौरन 'ट्रायल' दिया जायगा।

"जाओ और अभी आराम करो," उसने कहा। "सफर के बाद तुम्हे इसकी जरूरत होगी। कुछ दाना-पानी मिला? यहा जो भीड-भडक्का है, उसमें वे तुम्हे खिलाना भी भूल सकते है, समझे ए जड मूर्ख! ठहरो, तुम्हे अभी उतारता हू, तब तुम्हारे 'विध्वसक' का सब मजा निकाल दूगा!"

मेरेस्येव आराम करने न गया, इसलिए और भी कि सोने के लिए उसे जो क्वार्टर दिया गया था—कक्षा '६ अ'—उसके मुकाबले हवाई अड्डा कुछ गर्म था, हवा सूखी और चुभीली थी। बटालियन में उसे एक चर्मकार भी मिल गया जिसे उसने अफसरोवाली पुरानी पेटी से फदे और बकसुएदार दो तस्मे बनाने के लिए तम्बाकू का पूरे सप्ताह

का अपना राशन दे डाला—इन तस्मो से वह उस हवाई जहाज के पैडल से अपने कृत्रिम पैरो को बाधने का इरादा कर रहा था जो उसे उडाने के लिए मिलेगा। काम फौरी और असाधारण किस्म का होने के कारण चर्मकार ने तम्बाकू के अलावा आधी लिटर वोदका भी मागी और वायदा किया कि वह बहुत बढिया काम तैयार करेगा। मेरेस्येव हवाई अड्डे पर लौट आया और उडानो को उस समय तक देखता रहा जब तक आखिरी हवाई जहाज उतरकर पात मे खडा न हो गया और सब इस तरह यथास्थान खूटे से न बाध दिये गये जैसे कि वह साधारण उडाने नही, श्रेष्ठतम विमान-चालको के बीच होड करके आये हो। उसका मन उड़ानो मे इतना नही लगा जितना उसे हवाई अड्डे के वायुमण्डल मे सास लेने, चहल-पहल, इजिनो की अनवरत घडघडाहट, राकेटो की मद थप की आवाजो और पेट्रोल तथा तेल की गध को आत्मसात करने मे आनन्द आया। उसका रोम-रोम पुलक रहा था, और यह विचार कि कल उसका विमान उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर सकता है, उसके वस से वाहर हो सकता है, और भयकर विपत्ति के मुह मे धकेल सकता है, उसके दिमाग में कभी आया ही नही।

अगले दिन सुवह जब वह मैदान में पहुचा तो वह अभी वीरान ही था। दूर लाइन पर गर्म किये जाते हुए इजिन घडघडा रहे थे, गर्मानेवाले स्टोवो से वडी ऊची लपटें उठ रही थी और जो मेकेनिक हवाई जहाज के पखो को चला रहे थे, वे उनसे इस तरह छिटककर दूर भाग जाते थे मानो वे साप हो। सुपरिचित प्रातकालीन पुकारे और उनके जवाव सुनाई दे रहे थे

"स्टार्ट के लिए तैयार!"

"कटेक्ट!"

"कटेक्ट कर लिया!"

किसी ने अलेक्सेई को कोसा कि इतने सवेरे वह हवाई जहाजों

और धम से सीट पर गिर गया। तस्मों की सहायता से उसने फौरन अपने पैर पैडल से बाध लिये। वे बडे सुगढ साबित हुए, और फदे उसके पैरो पर इतनी मजबूती से और आरामदेह ढग से फिट बैठे कि जसे बचपन मे उसने बर्फ पर फिसलने के बढिया जूते पहने थे।

शिक्षक ने कॉकपिट मे अपना सिर घुसेडा और पूछा

"क्यो, तुम पिये तो नही हो, बताओ तो? मुझे अपना मुह सूघने दो।"

अलेक्सेई ने मुह से मास छोडी। शराब की सुपरिचित गध नही है, इससे सतुष्ट होकर शिक्षक ने मेकेनिक की ओर धमकी की मुद्रा में अपना घूसा हिलाया।

"स्टार्ट के लिए तैयार!"

"कटेक्ट!"

"कटेक्ट कर लिया!"

इजिन ने कई बार खर्राटे भरे और फिर उसके पिस्टनो की तालपूर्ण धड़कन निश्चित रूप से सुनाई देने लगी। मेरेस्येव आनन्द से उछल पडा और गैस खोलने के लिए अपने आप लीवर खीच बैठा, मगर उसने चोगे मे शिक्षक को गुर्राते हुए सुना

"अब दरवाजे पर बैल की तरह झपट्टा मत मारो!"

शिक्षक ने गैस स्वय खोली। इजिन गरजा और कराहा और हवाई जहाज ने फुदकते और उछलते हुए दौड लगायी। शिक्षक ने स्वयं-स्फूर्त्त गति से स्टिक गिरा दी, और छोटा-सा जहाज जो व्याध-पतग जैसा लगता था, जो उत्तरी मोर्चे पर 'वन-रक्षक,' केन्द्रीय मोर्चे पर 'बन्दगोभी उत्पादक' और दक्षिणी मोर्चे पर 'मकई उत्पादक' नाम धारण किये था, जो हर जगह पुरमजाक सिपाहियो के लिए मादक वस्तु था और जिसका हर जगह बूढे-पुराने, चटखदार, मगर साथ ही तपे-तपाये और वफादार साथी की भाति सम्मान किया जाता था—जिस जहाज़

नौमोव सोच-विचार करता रहा। लेकिन उत्तेजनापूर्ण मुखड़े की भाव-भंगिमा में, जिसे शिक्षक चौकोने शीशे में प्रतिबिम्बित देख रहा था, उसे कुछ ऐसी बात दिखाई दी जिसने उसका मन मोह लिया। उसे खुद आश्चर्य हुआ कि उसका गला रुंध रहा था और सामने के औजार धुंधले पड़ रहे थे।

"मैं अब पूरी तरह तुम्हारे हवाले कर रहा हूं," उसने चोगे में से कहा, मगर उसने ऐसा किया नहीं, उसने सिर्फ डंडों और पैडलों पर से अपना नियन्त्रण ढीला कर दिया और विचित्र शिक्षार्थी अगर कमजोरी दिखाये तो फौरन खुद संभाल लेने के लिए तैयार रहा। दुहरे गीयर के जरिए वह महसूस कर रहा था कि हवाई जहाज को नये शिक्षार्थी के आत्मविश्वासी और अनुभवी हाथ चला रहे हैं, और जैसा कि स्कूल के मुख्याधिकारी, जो आकाश के पुराने शिकारी थे और गृह-युद्ध के काल के पुराने विमान-चालक थे, कहा करते थे, यह शिक्षार्थी "भगवान की दया से बढ़िया हवाबाज था"।

पहले चक्कर के बाद नौमोव को नये शिक्षार्थी के विषय में कोई भय न रहा। हवाई जहाज "सभी नियमों का पालन करता हुआ" दृढ़तापूर्वक उड़ रहा था। विचित्र बात सिर्फ इतनी थी कि जब-तब बार-बार शिक्षार्थी कभी दाहिने और कभी बायें, कभी ऊंचे, कभी नीचे थोड़ा-सा मुड़ता था, वह अपनी कुशलता की परीक्षा लेता मालूम होता था। नौमोव ने तय किया कि अगले दिन उसे अकेले ही उड़ने जाने दिया जायगा और दो या तीन उड़ानों के बाद उसे 'उत-२' नामक प्रशिक्षण विमान दे देगा, जो लड़ाकू विमान का लघु आकार, लकड़ी की अनुकृति था।

सर्दी थी। पंख पर लगे थर्मामीटर में तापमान शून्य से १२° से० नीचे था। कॉकपिट में हवा का तीर-सा झोंका आया जिसने शिक्षक के रोएदार उड़ान-जूतों को बेध दिया और पैरों को बर्फ बना दिया। उतरने का वक्त हो रहा था।

[illegible]
[illegible]
हुई, [illegible]
नहीं [illegible]
न हुआ। दस मिनट [illegible]

[illegible] फड़फड़ाती, [illegible] शिक्षार्थी कुछ [illegible] धीरे से उतर— [illegible] जमीन पर पैर रखते ही, [illegible] मुसकान लेकर [illegible] उत्तेजना से लाल हो गए थे।

"ठंड है, क्या?" शिक्षक ने पूछा। "ऐसे तूफान [illegible] को चीरकर उसने [illegible] लिया, मगर तुम तो साधारण जूते पहने हो। तुम्हारे पैर नहीं जमे?"

"मेरे पैर है ही नहीं," शिक्षार्थी ने जवाब दिया और अपने विचारों में लीन मुसकुराता रहा।

"क्या!" नौमोव हकलाया और उसके जबड़े विस्मय से लटकते गये।

"मेरे पैर नहीं है," मेरेस्येव ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"क्या मतलब है तुम्हारा, 'तुम्हारे पैर नहीं है'? क्या मतलब है कि उनमें कुछ खराबी है?"

"नहीं! मेरे पैर बिल्कुल ही नदारद है। ये कृत्रिम पैर है!"

एक क्षण नौमोव आश्चर्य से जमीन में गड़ा रह गया। उस विचित्र व्यक्ति ने जो बात कही थी, वह बिल्कुल अविश्वसनीय थी। पैर ही नहीं! लेकिन अभी तो वह उड़ान कर रहा था और बड़ी खूबी से

"मुझे दिखाओ तो," उसने कहा और उसके स्वर में शका की ध्वनि थी।

इस जिज्ञासा से अलेक्सेई न तो परेशान हुआ और न उसने ठेस महसूस की। इसके विपरीत वह इस विचित्र, प्रसन्नचित्त व्यक्ति के विस्मय को अंतिम रूप से सम्पन्न करना चाहता था, उसने इस भाव-भंगिमा से, जैसे जादूगर कोई जादू दिखानेवाला हो, अपने पतलून के पायचे उठा दिये।

शिक्षार्थी चमड़े और अलुमीनम से बने पैरों पर खड़ा था और शिक्षक, मैकेनिक तथा उन विमान-चालकों की ओर आनन्दपूर्वक ताक रहा था जो अपनी बारी आने पर उड़ान के लिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक कौंध में नौमोव को इस व्यक्ति की उत्तेजना का, उसके चेहरे की असाधारण भाव-भंगिमा का, उसकी काली आंखों में आंसू भर आने का और उस आतुरता का कारण समझ में आ गया जिससे वह अपनी उड़ान के आनन्द की घड़ियों को लम्बा करने का अनुरोध कर रहा था। निश्चय ही इस शिक्षार्थी ने उसे विस्मय में डाल दिया। वह उसकी तरफ दौड़ पड़ा और पागलों की भांति उससे हाथ मिलाते हुए बोला

"अरे छोकरे, कैसे किया वह सब? तुम नहीं जानते, तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो!"

मुख्य सफलता मिल गयी थी। अलेक्सेई ने शिक्षक का हृदय जीत लिया था। वे शाम को फिर मिले और उन्होंने प्रशिक्षण का कार्यक्रम तैयार किया। वे सहमत थे कि अलेक्सेई की स्थिति कठिन है। अगर वह थोड़ी-सी भी भूल करेगा तो उसके लिए उड़ान पर सदा को पाबन्दी लग जाने का खतरा है और यद्यपि लड़ाकू विमान में प्रवेश कर पाने और उस जगह उड़ जाने की आकांक्षा पहले से भी अधिक प्रबल रूप में प्रज्ज्वलित हो उठी थी जहां–वोल्गा पर स्थित प्रसिद्ध नगर में–देश के सर्वोत्तम योद्धा उमड़े चले आ रहे थे, फिर भी उसने धैर्यपूर्वक

सर्वतोमुखी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सहमति प्रगट की। वह समझता था कि आज उसकी जो स्थिति है, उसमे उसे पहले दर्जे का निशानेबाज होना चाहिये।

६

मेरेस्येव प्रशिक्षण विद्यालय मे कोई पाच महीने से अधिक रहा। हवाई अड्डा बर्फ से ढका हुआ था और हवाई जहाजो को स्कीइसो पर रख दिया गया था। ऊपर 'क्षेत्र' से अलेक्सेई को अब शरद के विविध निर्मल रग नही, सिर्फ दो रग दिखाई देते थे सफेद और काला। स्तालिनग्राद मे जर्मनो के सफाये, जर्मन छठवी फौज के पतन और पाउलस के बदी बनाये जाने की सनसनीखेज खबरे अब अतीत की बाते हो गयी थी। दक्षिण में अब अभूतपूर्व और अप्रतिषेधशील प्रत्याक्रमण विकसित हो रहा था। जनरल रोतमिस्त्रोव के टैंक-चालक जर्मन मोर्चा वेध चुके थे और पृष्ठप्रदेश में मृत्यु-वर्षा कर रहे थे। ऐसे समय में, जब मोर्चे पर इस तरह की घटनायें हो रही थी, और जब मोर्चे के ऊपर आसमान मे ऐसा भयकर सग्राम छिडा हुआ था, अलेक्सेई को अस्पताल के गलियारे मे एक छोर से दूसरे छोर तक दिन-प्रति-दिन अनगिनत बार चहलकदमी करते घूमते, या अपनी सूजी हुई, दर्द की पीडा से फटती-सी टागो से मजूरका और फाक्सट्रोट नृत्य की अपेक्षा इन नन्हे-से प्रशिक्षण हवाई जहाजो मे साधनापूर्वक "चरचराहट" करते उडना बडा दुखदायी मालूम होता था।

लेकिन जब वह अस्पताल मे था, तब उसने प्रण किया था कि लडाकू कमान में सक्रिय युद्ध के मोर्चे पर लौट कर रहेगा। उसने अपने लिए एक लक्ष्य बना लिया था और वह तमाम दुख, दर्द, थकान और निराशाओ के बावजूद उस लक्ष्य की ओर बढने का प्रयत्न कर रहा था। एक दिन उसके नये पते पर एक मोटा-सा लिफाफा आया, जिसे

क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने यहा भेजा था। इसके अन्दर कुछ पत्र और एक पत्र स्वय क्लावदिया मिखाइलोव्ना का था जिसमे पूछा गया था कि उसका हाल-चाल क्या है, उसे कहा तक सफलता मिली है और उसका सपना सच हो गया या नही।

"हो गया?" उसने अपने से पूछा, लेकिन उसका उत्तर दिये बिना वह चिट्ठिया छाटने लगा। कई पत्र थे एक मा का, दूसरा ओल्या का, तीसरा ग्वोज्देव का और चौथे पत्र को देखकर उसे बडा आश्चर्य हुआ। उसपर पता 'मौसमी सार्जेन्ट' की लिखावट मे लिखा हुआ था और उसके नीचे आलेख था "प्रेषक कप्तान क० कुकूश्किन"। इसे उसने पहले पढा।

कुकूश्किन ने लिखा था कि वह फिर धराशायी हो गया है उसका हवाई जहाज गोली का शिकार हुआ और आग पकड गया, जलते हुए हवाई जहाज से वह कूदा और अपनी पातो के अन्दर उतरने मे कामयाब हो गया, लेकिन इसमे उसकी बाह उतर गयी और अब वह अपने हवाई अड्डे के दवादारू केन्द्र मे पडा था जहा वह, उसके अपने शब्दो में, "एनीमा देनेवाले बहादुरो के बीच ऊब का शिकार होकर मरा जा रहा है।" फिर भी उसे कोई चिन्ता नही थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि वह शीघ्र ही युद्ध-पात मे फिर शामिल हो जायगा। उसने आगे लिखा था कि वह यह पत्र उसकी—अलेक्सेई की—पत्र-व्यवहारिका वेरा गव्रीलोवा से लिखा रहा है, जो उसकी ही बदौलत आज भी रेजीमेंट में 'मौसमी सार्जेन्ट' कहलाती है। पत्र मे यह भी लिखा था कि वेरा बहुत बढिया कामरेड है और इस दुर्भाग्यपूर्ण क्षण मे वही मुख्य सहारा है। इसपर वेरा ने अपनी ओर से कोष्ठक मे टीका कर दी थी कि वास्तव में यह कोस्त्या की अतिशयोक्ति है। इस पत्र से अलेक्सेई को पता चला कि रेजीमेंट में अभी भी लोग उसे याद करते है, और भोजन-कक्ष मे रेजीमेंट के जिन वीरो के चित्र टगे हुए है, उनमे अलेक्सेई का चित्र

जोड दिया गया है और गार्ड्स-मैनों ने यह आशा नही छोडी है कि वह एक दिन फिर उनके बीच लौट आयगा। गार्ड्स! मेरेस्येव हंसा और सिर हिला उठा। कुकूश्किन और उसकी स्वयंसेविका सेक्रेटरी दोनो ही, अगर रेजीमेंट को गार्ड्स का सम्मान प्रदान किये जाने जैसी महत्वपूर्ण घटना की सूचना देना भूल गये है, तो उनके दिमाग किन्ही महत्वपूर्ण बातो मे लीन है।

फिर अलेक्सेई ने मा का पत्र खोला। वह उसी तरह का बकवादी ढग का पत्र था जैसा कि बूढी माए लिखा करती है—काम-काज कैसा चल रहा है, उसे ठड तो नही लग गयी, क्या भोजन काफी मिल रहा है, क्या उसे शीतकालीन कपडे प्राप्त हुए है और क्या उसके लिए वह दस्तानो का जोडा बुनकर भेज दे? वह पाच जोडे पहले ही बुन चुकी थी और उन्हे लाल सेना के सिपाहियो को उपहारस्वरूप भेज चुकी थी। और हर जोडे के अगूठे मे उसने एक पक्ति मे लिख दिया था "इन्हे पहनने के लिए मै तुम्हारी लम्बी उम्र की कामना करती हू।" उसने लिखा था कि उसे यह जानकर खुशी होगी कि उन्ही मे से एक जोडा अलेक्सेई को मिल गया है! वे बहुत सुन्दर, खूब गर्म दस्ताने थे, जिन्हे उसने अपने खरहो का ऊन काटकर बुना था। हा, वह पहले यह बताना तो भूल ही गयी कि वह अब खरहो के एक पूरे परिवार की—एक नर, एक मादा और सात बच्चो को—पाल रही है। इतनी सब प्यार-भरी, बूढी माओ जैसी बातो के बाद कही जाकर उसने सबसे महत्वपूर्ण बात लिखी थी स्तालिनग्राद मे जर्मन भगा दिये गये है, वहा वे भारी, बडी भारी तादाद मे मारे गये थे, और लोग कहते है कि उनके बडे सेनापतियो में से कोई एक बदी भी बना लिया गया है। और जब वे पूरी तरह भगा दिये गये थे, तब ओल्या पाच दिन की छुट्टी पर कमीशिन आयी थी। वह उसी के घर ठहरी थी, क्योकि ओल्या का मकान एक बम से गिर गया है। ओल्या अब सैपर्स की बटालियन मे

है और लेफ्टीनेंट हो गयी है। उसे कंधे में घाव लगा था, मगर अब वह अच्छी हो गयी है और उसे कोई पदक देकर सम्मानित किया गया है—यह पदक क्या था, उसके विषय में, सचमुच, बुढ़िया लिखना ही भूल गयी थी। उसने आगे लिखा था कि उसके घर में रहते समय ओल्या सारे समय रोती रहती थी और जब जागती तो अलेक्सेई की ही बातें करती, और वे लोग ताश खेलकर किस्मत बताते थे तो हर बार चिड़ी के बादशाह के ऊपर पान की बेगम आती थी। इसका क्या मतलब है अलेक्सेई जानता था। जहां तक मां का सम्बन्ध है, उसने लिखा था, कि वह उस पान की बेगम से बेहतर बहू की कामना नहीं कर सकती।

अलेक्सेई बूढ़ी मां की निश्छल कूटनीति पर मुसकुराया और सावधानी से वह रुपहला लिफाफा खोला जिसमें 'पान की बेगम' का पत्र था। वह कोई लम्बा पत्र नहीं था। ओल्या ने लिखा था कि 'खाइयां' खोदने के बाद उस श्रम-बटालियन के सर्वोत्तम सदस्यों को नियमित फौज की सैपर्स यूनिट में ले लिया गया। उसका पद अब लेफ्टीनेंट-टेक्नीशियन है। उसकी ही यूनिट थी जिसने शत्रु की गोलीबारी के वक्त ममायेव कुरगान की किलेबन्दी बनायी थी, जो अब इतनी प्रसिद्ध हो गयी है, और ट्रैक्टर कारखाने के चारों ओर भी किलेबन्दी खड़ी की थी, इसके लिए उस यूनिट को 'लाल झण्डे का पदक' प्राप्त हुआ है। ओल्या ने लिखा था कि उन्हें बड़े कठिन काल का सामना करना पड़ रहा था, और हर चीज—डिब्बाबन्द गोश्त से लेकर फावड़े तक वोल्गा की दूसरी ओर से लाना पड़ता था, जहां मशीनगनों की बौछार बराबर होती रहती थी। उसने यह भी लिखा था कि नगर में एक भी इमारत सही-सलामत नहीं बची और धरती में गड्ढे पड़ गये हैं और वे चांद के विशालाकार फोटोग्राफ जैसे दिखाई देते हैं।

ओल्या ने लिखा था कि जब उसने अस्पताल छोड़ा और उसे अन्य लोगों के साथ एक कार में स्तालिनग्राद के बीच से ले जाया गया तो

उसने फासिस्टो की लाशो के अम्बार लगे देखे, जिन्हे गाड़ने के लिए जमा किया गया था। और अभी कितनी और लाशे गड्ढो पर पड़ी है।
"और मैं कितनी चाह करने लगी कि काश, तुम्हारा वह टैंक-चालक दोस्त—उसका मैं नाम भूल गयी हू वही जिसका सारा परिवार मारा जा चुका है—यहा आ पाता और यह सब अपनी आखो देखता। अपनी सौगध, मेरा ख्याल है कि इस सबकी फिल्म बनायी जानी चाहिए और उस जैसे लोगो को दिखाई जानी चाहिए। वे लोग देखें कि शत्रु से हमने कैसा बदला लिया है।" अत मे उसने लिखा था—अलेक्सेई ने इस दुर्बोध्य वाक्य को कई बार पढा—कि अब, स्तालिनग्राद के युद्ध के बाद, वह महसूस करने लगी है कि वह अलेक्सेई के—वीरो के वीर के—योग्य हो गयी है। यह पत्र जल्दी में रेलवे स्टेशन पर लिखा गया था, जहा उसकी ट्रेन रुकी थी। ओल्या को पता नही था कि वे लोग कहा ले जाये जा रहे है और इसलिए वह यह सूचित न कर सकी थी कि उसके पोस्ट आफिस का नम्बर क्या है। फलत जब तक उसका दूसरा पत्र नही आया, तब तक अलेक्सेई उसे पत्र नही लिख सका और यह नही कह सका कि वह नन्ही-सी, दुबली-पतली लडकी, जो घनघोर युद्ध के बीच इतनी लगन से मेहनत करती रही, वही—वह ओल्या स्वय ही—असली वीरो की वीर है। उसने लिफाफा फिर उलटा और प्रेषक मे यह नाम स्पष्ट रूप से पढा गार्ड्स जूनियर लेफ्टीनेंट-टेक्नीशियन, आदि आदि।

हर बार, जब अलेक्सेई को हवाई अड्डे पर कोई अवकाश का क्षण मिल जाता तो वह पत्र निकाल लेता और उसे फिर पढता और मैदान की बेधती हुई सर्द हवा के बीच और कक्षा '६ अ' के हिम-शीतल कमरे में, जो अभी भी उसका निवास-स्थान था, वह पत्र बहुत दिनो तक उसे उष्णता प्रदान करता प्रतीत होता रहा।

अत में शिक्षक नौमोव ने उसकी परीक्षा-उडान के लिए एक दिन निश्चित किया। उसे एक 'उत्योनोक' विमान उडाना था और उडान

का निरीक्षण शिक्षा को नहीं, स्कूल के मुख्याधिकारी द्वारा किया जाना था—उसी वरिष्ठ,[1] स्नायु, बजाग लेफ्टीनेंट-कर्नल द्वारा, जिसने अलेक्सेई के आगमन के दिन उसका उतनी उदासीनता से स्वागत किया था।

यह बात ध्यान मे रखकर कि भूमि मे उसको सूक्ष्म दृष्टि से ताका जा रहा है और उसकी क़िस्मत का फैसला होने जा रहा है, अलेक्सेई ने उस दिन खुद अपने को मात कर दिया। उस छोटे-से हल्के विमान को लेकर उसने ऐसी कलाबाजिया दिखायी कि लेफ्टीनेंट-कर्नल अपने प्रशसात्मक उद्गारो को सयमित न रख सका। जब मेरेस्येव हवाई जहाज से उतरा और मुख्याधिकारी के सामने उसने अपने को पेश किया, तो नौमोव के चेहरे की हर झुर्री मे जैसा आनन्द और उत्तेजना का भाव टपकता दिखाई दिया, उसको देखकर वह बता सकता था कि उसने मैदान मार लिया है।

"तुम्हारी शैली बड़ी शानदार है! हा . तुम हो वह व्यक्ति जिसे मैं भगवान की कृपा से हवाबाज बना मानता हू," लेफ्टीनेंट-कर्नल ने रोब मे कहा। "सुनिये, श्रीमान, आप यहा शिक्षक के रूप मे रहना पसद करेंगे? हमें तुम जैसे आदमियो की जरूरत है।"

मेरेस्येव ने साफ साफ मना कर दिया।

"ख़ैर, तुम मूर्ख हो। लड तो कोई भी सकता है, लेकिन यहा तुम लोगो को विमान चलाना सिखाओगे!"

यकायक लेफ्टीनेंट-कर्नल की नजर उस छडी पर पड गयी जिस पर मेरेस्येव झुका खडा था और उसका चेहरा नीला-पीला पड गया।

"यह चीज तुमने फिर हाथ में ली।" वह गरज उठा। "इधर दो! तुम क्या समझते हो कि छडी लेकर पिकनिक पर जा रहे हो? तुम हो कहा, किसी कुज-मार्ग मे? . हुक्म-उदूली के अपराध में अडतालीस घटे की तनहाई! ये शूर है! अपने लिए ताबीज लाते है। यही

रहा तो कल तुम हवाई जहाज के ढाचे पर ईंट का इक्का पोत दोगे। अडतालीस घटे। सुनते हो, मै क्या कह रहा हू।"

लेफ्टीनेंट-कर्नल ने मेरेस्येव के हाथ से छडी झपट ली और किसी चीज पर पटककर उसे तोड डालने के लिए चारो तरफ नजर दौडायी।

"कामरेड लेफ्टीनेंट-कर्नल, आज्ञा हो तो कहू कि इसके पैर नही है," शिक्षक नौमोव ने अपने मित्र के पक्ष मे हस्तक्षेप किया।

मुख्याधिकारी का चेहरा और भी स्याह पड गया, उसकी आखें निकल आयी और वह भारी सासे लेने लगा।

"क्या मतलब है तुम्हारा? तुम मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो, क्यो? यह सच है?"

मेरेस्येव ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया और कनखियो से अपनी अमूल्य छडी पर नजर डाली, जिसपर खतरा मडरा रहा था। सचमुच, उन दिनो वह वसीली वसील्येविच के उपहार से कभी भी वचित नही रहता।

लेफ्टीनेंट-कर्नल ने मित्रो की ओर सदिग्ध दृष्टि से देखा और भुनभुनाया·

"खैर अगर बात ऐसी है तो, ठीक है अपने पैर दिखाओ हू!"

अलेक्सेई प्रथम श्रेणी का सर्टिफिकेट प्राप्त कर प्रशिक्षण विद्यालय से मुक्त हुआ। वह चिडचिडा लेफ्टीनेंट-कर्नल, वह पुराना 'आकाशी भेडिया', उसकी महान सिद्धि की जितनी सराहना कर पाया, उतनी और कोई नही, और प्रशसा मे भी उसने शब्दो की किफायत नही की। उसने प्रमाणित किया कि मेरेस्येव "कुशल, अनुभवी और सुदृढ इच्छा-शक्ति का विमान-चालक है और विमान-सेवा की किसी भी शाखा के लिए उपयुक्त है।"

१०

मेरेस्येव ने शेष शीतकाल और वसत का प्रारम्भिक काल एक सुधार विद्यालय मे विताया। यह एक बहुत पुराना फौजी उड्डयन विद्यालय था, जिसका हवाई अड्डा बहुत बढिया है, रहने के क्वार्टर सुन्दर है और थियेटर-समेत एक शानदार क्लब-भवन है जहा मास्को की थियेट्रिकल कम्पनिया कभी-कभी अपने खेल करती थी। इस स्कूल मे भी बडी भीड थी, मगर युद्ध-पूर्व के नियमो का सख्ती से पालन होता था और शिक्षार्थियो को अपनी पोशाक की सूक्ष्म बातो तक के लिए सावधान रहना पडता था, क्योकि अगर बूट पर पालिश नही है, अगर कोट का एक भी बटन गायब है, या अगर जल्दी मे नक्शे का केस पेटी के ऊपर ही पहन लिया गया, तो अभियुक्त को कमाडेंट के हुक्म से दो घंटे की ड्रिल करनी पडती थी।

विमान-चालको का एक बडा दल, जिसमे अलेक्सेई मेरेस्येव भी था, एक नये प्रकार के सोवियत लडाकू विमान 'ला-५' को चलाना सीख रहा था। शिक्षण सर्वांग-सम्पन्न था और, उसमे विमान के इजिन तथा अन्य भागो का अध्ययन भी शामिल था। इस छोटे-से अर्से मे, जिसमे अलेक्सेई फौज से गैरहाजिर रहा, सोवियत उड्डयन कला ने जो प्रगति कर ली, उसके बारे मे जब व्याख्यानो से उसे पता चला तो वह अवाक् रह गया। युद्ध के प्रारम्भिक काल मे जो बडा साहसपूर्ण परिवर्तन प्रतीत होता था, वही अब बुरी तरह पुराना पड़ चुका था। वे तीव्रगामी 'अबाबील' और हल्के, ऊचे उड़नेवाले 'पतगे' जो युद्धारम्भ में श्रेष्ठ वैज्ञानिक कृतित्व प्रतीत होते थे, अब उपयोग से अलग किये जा रहे थे और उनकी जगह पर नयी डिज़ाइन के हवाई जहाज भेजे जा रहे थे, जिनके निर्माण की पद्धति सोवियत फैक्टरियो ने कल्पनातीत अल्प काल मे सीख ली थी ताजे से ताजे नमूने के 'याक' विमान, 'ला-५'

के हवाई जहाज, जिनका अब फैशन चल गया था और दो सीटोवाले 'इल'–उडन टैंक, जो धरती को भूजकर रख देते थे और शत्रु के सिर पर बमो, गोलो और गोलियो की बौछार करते थे–जर्मन फौजो ने घबराकर इनका नाम 'काली मौत' रख दिया था। इन नये हवाई जहाजो के कारण, जिनको युद्धरत लोगो की प्रतिभा ने जन्म दिया था, आकाश-युद्ध की कला अत्यन्त जटिल हो गयी थी और उसके लिए न सिर्फ उस मशीन के ज्ञान की आवश्यकता थी जिसे विमान-चालक चला रहा हो और न सिर्फ अदम्य साहस दरकार था, बल्कि युद्ध-क्षेत्र मे अपनी स्थिति का सही अनुमान कर पाने, आकाश-युद्ध को उसके अगभूत भागो मे विभाजित करने, और आदेशो की प्रतीक्षा किये बिना, स्वतन्त्रतापूर्वक युद्ध-सम्बन्धी फैसले करने और उनपर अमल करने की क्षमता की भी आवश्यकता थी।

यह सब अत्यन्त दिलचस्प था। लेकिन मोर्चे पर भयकर और अविश्रात प्रत्याक्रमण युद्ध चल रहा था, और उस साफ-सुथरे, ऊचे कक्षा-कक्ष में आरामदेह, काली सतहवाली मेजो के सामने बैठे व्याख्यान सुनते हुए, अलेक्सेई मेरेस्येव को बडी टीस होती और वह मोर्चे पर पहुच जाने के लिए आतुर हो उठता, युद्ध की घात के वातावरण के लिए तडप उठता। शारीरिक पीडा पर हावी होना वह सीख गया था, जो बाते असम्भव मालूम होती थी, उन्हे कर डालने के लिए अपने को विवश करने की क्षमता उसने प्राप्त कर ली थी, मगर इस जबर्दस्ती की निष्क्रियता की ऊब से पार पाने की इच्छा-शक्ति का उसमे अभाव था, और कभी-कभी हफ्तो तक वह खिन्न चित्त खोया हुआ-सा और चिडचिडे स्वभाव से विद्यालय में टहलता रहता था।

अलेक्सेई के सौभाग्य से, जिस समय वह विद्यालय में था, उसी समय मेजर स्त्रुच्कोव भी वहा था। वे पुराने मित्रो की भाति मिले। स्त्रुच्कोव वहा अलेक्सेई के आने के दो हफ्तो के बाद आया था, मगर

वह विद्यालय की विचित्र अपनी जिंदगी में फौरन डूब गया और अपने को उसके अलग-अलग नये नियमों के अनुकूल बना लिया जो युद्ध-काल में बिलकुल निरर्थक मालूम होते थे और हर एक के साथ घुल-मिल गया। अलेक्सेई की मानसिक स्थिति का कारण वह फौरन समझ गया, और रात में अपने-अपने क्वार्टरों में सोने के लिए जाने के पहले स्नानागर से निकलकर वह सीधा अलेक्सेई के पास जाता और पुरमजाक ढग से उसे छेड़ता और कहता

"फिक्र न कर, यार! अपने लिए भी बहुत लडाई बाकी रहेगी! देखो तो अभी हम लोग बर्लिन से कितनी दूर हैं! अभी मीलों, मीलों जाना है। फिक्र न करो, हमें भी अपना हिस्सा मिलेगा। हम भी लडाई में अपना जी भर सकेंगे।"

पिछले दो तीन महीनों में, जिनमे वे एक दूसरे को न देख सके थे, मेजर दुबला हो गया था और ढल गया था—वह "चूर-चूर" मालूम होता था, जैसा कि फौज में कहा जाता है।

जाड़े के मध्य में उस दल ने जिसमे मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव रखे गये थे, उडान का अभ्यास शुरू किया। इस समय तक अलेक्सेई छोटे-से, नन्हे पखोवाले 'ला-५' विमान से पूरी तरह परिचित हो गया था, जिसकी शकल देखकर उसे उडन-मछली की याद हो जाती थी। अक्सर, मध्यान्तर काल मे वह हवाई अड्डे जाता और इन विमानो को थोड़ी-सी दौड के बाद सीधे आसमान मे उठ जाते देखता और जब वे मोड लेते तो उनके नीले-से बाजुओ के नीचे के हिस्से को धूप मे चमकते निहारता रहता। किसी विमान के पास वह आ जाता, उसकी परीक्षा करता, उसके पंखो को ठोक-बजाता, मानो वह कोई मशीन नही, सुन्दर, बढ़िया नस्ल का, भली भाति खिलाया-पिलाया गया घोडा हो। आखिरकार सारे दल को स्टार्ट की रेखा पर पातबन्द कर दिया गया। हर व्यक्ति अपनी कुशलता को परखने के लिए उत्सुक था और उनमे सयमित कलह शुरू -

हो गया कि पहले कौन जायगा। शिक्षक ने पहले जिसका नाम पुकारा वह स्मुच्कोव था। मेजर की आँखें चमक उठीं, वह जानबूझकर मुसकराया और अपना पैराशूट बाँधते समय वह उत्तेजनापूर्वक एक धुन गुनगुनाने लगा और कॉकपिट का ढक्कन बन्द कर लिया।

इंजिन गरज उठा, हवाई जहाज छूटा और मैदान में दौड़ पड़ा, वह अपने पीछे बर्फ के चूरे की लकीर छोड़ गया जो धूप में इन्द्रधनुष की भाँति चमक उठी और क्षण भर में ही वह आसमान में पहुँच गया, उसके पर धूप में दमकने लगे। स्मुच्कोव ने हवाई अड्डे के ऊपर अपने जहाज से पतली-सी वक्र रेखा खींच दी, कई बार सुन्दर चक्कर लगाये, होशियारी और खूबसूरती से परों के बल लुढ़का, निश्चित किये गये करतब दिखाये और आँखों से ओझल हो गया, यकायक स्कूल की छत के ऊपर फिर प्रगट हो गया और इंजिन घड़घड़ाते हुए हवाई अड्डे को इस तरह पूरे वेग से पार कर गया कि उन शिक्षार्थियों के सिर से टोपियाँ लगभग उड़ गयीं जो अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, और फिर गायब हो गया। लेकिन वह शीघ्र ही वापिस लौट आया और अब गम्भीरतापूर्वक नीचे आते हुए उसने अपने हवाई जहाज को होशियारी से तीनों पहियों के बल उतार दिया। वह उत्तेजित, गर्वित और आनन्द से उन्मत्त भाव से कॉकपिट से कूद आया, ऐसे लड़के की भाँति, जो कोई विनोदपूर्ण चाल खेलने में सफल हो गया हो।

"यह मशीन नहीं है यह तो वायलिन है, भगवान की कसम!" शिक्षक की बात काटकर, जो उसे इतनी असावधानी से उड़ान करने पर झिड़क रहा था, वह हाँफता हुआ बोला। "इसपर तो तुम चैकोव्स्की की धुनें निकाल सकते हो, कहे देता हूँ!" मेरेस्येव के चारों ओर अपनी बलिष्ठ भुजाएं लपेटते हुए वह बोला "हम लोग जिन्दा हैं, अलेक्सेई!"

सचमुच मशीन अच्छी थी। इसपर हर आदमी सहमत था। मेरेस्येव की बारी आयी। पेडलों से अपने पाँव बाँधने के बाद वह आसमान में

उठा और यकायक उसने महसूस किया कि उस जैसे पैरविहीन सवार के लिए उसका घोड़ा काफी जबर्दस्त है और सभालने के लिए कुछ विशेष सावधानी की आवश्यकता पड़ेगी। फुरफुर उड़ते समय वह मशीन का वैसा सम्पूर्ण सम्पर्क न अनुभव कर सका जो उड़ान मे आनन्द पैदा कर देता है। यह बड़े बढ़िया ढग से बनी मशीन थी। वह न सिर्फ प्रत्येक निर्देश का पालन करती थी, बल्कि स्टीयरिंग गीयर पर रखे हाथो की हर कपकपी तक का इशारा मानती थी और फौरन उसके अनुकूल करतब दिखाने लगती थी। निर्देश-पालन मे वह सचमुच स्वरबद्ध वायलिन की भाति थी। यही अलेक्सेई को अपनी अगाध्य क्षति, अपने पैरो की असवेदनशीलता का सबसे जबर्दस्त अहसास हुआ और वह समझ गया कि इस तरह के हवाई जहाज मे सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम पैर भी, श्रेष्ठतम प्रशिक्षण के बावजूद, सजीव, सवेदनशील लचीले पैरो का वैकल्पिक काम नही दे सकते।

हवाई जहाज बड़े सहज भाव से और लचीली गति से हवा को चीरता बढ रहा था और स्टीयरिंग गीयर के प्रत्येक इशारे का पालन कर रहा था, लेकिन अलेक्सेई को उससे डर लग रहा था। उसने गौर किया कि एकदम मोड़ लेते समय उसके पैर देर कर देते थे, और वह तारतम्य स्थापित नही कर पाते थे जो हर विमान-चालक विचार जैसी गति की भाति साध लेता है। इस देरी से हवाई जहाज चक्कर खा सकता है और घातक सिद्ध हो सकता है। अलेक्सेई ने उस घोड़े जैसा महसूस किया, जिसके पैर बधे हुए थे। वह कोई कायर नही था, वह मारे जाने से भी नही डरता था, वह तो यह देखे बिना ही कि उसका पैराशूट ठीक है या नही, उड़ान पर चल दिया था, मगर उसे डर था कि जरा-सी गलती से वह लड़ाकू कमान से बहिष्कृत किया जा सकता है और उसके परमप्रिय पेशे के दरवाजे हमेशा के लिए बद हो सकते है। वह और भी सावधान था और बिल्कुल परेशान हालत में उसने हवाई जहाज उतारा।

थे, वे उसे कोरा गैर-फौजी मानते थे, जो इत्तफाक से वायुयान सेना में आ गया है और उड्डयन कला के विषय में कुछ नही जानता है। मेरेस्येव की ओर कोई ध्यान न देकर, कपूस्तिन ने कमरे मे चारो तरफ देखा, हवा सूघी और यकायक क्रोध से चिल्ला उठा·

"कौन मूर्ख यहा सिगरेट पी रहा था? सिगरेट पीने के लिए अलग धूम्रपान कक्ष है, या नही? कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट, इसका क्या मतलब है?"

"मै सिगरेट नही पीता," अलेक्सेई ने चारपाई पर लेटे-लेटे ही उपेक्षा से जवाब दिया।

"तुम यहा क्यो पडे हो? तुम्हे नियम नही मालूम? और जब तुमसे बड़े पद का अफसर प्रवेश करता है, तो तुम उठते क्यो नही? उठ बैठो।"

यह कोई आदेश नही था। इसके विपरीत गैर-फौजी रीति से बडी विनम्रता के साथ वे शब्द बोले गये थे, लेकिन मेरेस्येव ने आज्ञा पालन की, शायद उदासीनता के साथ, और चारपाई के बगल मे अटेंशन खडा हो गया।

"ठीक है, कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट," कपूस्तिन ने प्रोत्साहित करते हुए कहा। "और अब बैठ जाओ। आओ कुछ सलाह-मशविरा करें।"

"किसके बारे मे?"

"तुम्हारे बारे में क्या किया जाना चाहिए। चलो, बाहर चलें। मै सिगरेट पीना चाहता हू और उसकी यहा इजाजत नही है।"

वे धुधले प्रकाश से आलोकित गलियारे मे बाहर चले गये—ब्लैक आउट के लिए बिजली के बल्ब नीले रग दिये गये थे—और खिडकी के पास खडे हो गये। कपूस्तिन ने पाइप से धुआ छोडना शुरू कर दिया और हर कश से उसका चौडा, चिन्तनलीन मुखडा एक चमक से आलोकित हो उठता था।

"मैं तुम्हारे शिक्षक को आज डांट पिलाना चाहता था।" उसने कहा।

"किस वास्ते?"

"कि उसने अपने ऊंचे अफसरों से इजाजत लिये बिना तुम्हें आकाश क्षेत्र में क्यों जाने दिया तुम इस तरह मेरी तरफ क्यों घूर रहे हो? दरअसल, डांट का हकदार तो मैं खुद भी हूं कि मैंने तुमसे पहले बात क्यों न कर ली। लेकिन मुझे कभी वक्त ही नहीं मिलता, हमेशा व्यस्त रहना पड़ता है। मैं चाहता हूं, लेकिन खैर, उसे जाने दो। देखो, मेरेस्येव, उड़ान करना तुम्हारे लिए उतना आसान नहीं है, और यही वजह है कि मैं तुम्हारे शिक्षक की खबर लेना चाहता हूं।"

अलेक्सेई ने कुछ न कहा। वह हैरान था कि उसके सामने खड़ा हुआ जो आदमी कश पर कश लगाये चला जा रहा है, वह कैसा व्यक्ति है। क्या नौकरशाह है, जो इसलिए खफा है कि किसी ने विद्यालय के जीवन में एक असाधारण घटना के घटने की खबर उसको न देकर उसकी सत्ता की उपेक्षा की है? कोई तंगदिल अफसर है जिसे उड़ान-कर्ताओं के बारे में कोई ऐसा नियम हाथ लग गया है जिसमें शारीरिक रूप से पंगु व्यक्तियों को उड़ान पर भेजने के बारे में पाबन्दी लगायी गयी है? या झक्की आदमी है जो मौका लगते ही अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहता है? यह क्या चाहता है? यह आया ही क्यों, जबकि उसके बिना भी मेरेस्येव के दिल में मतली भर गयी और फांसी लगा लेने को जी हो रहा था।

मेरेस्येव का सारा अस्तित्व आग में जैसे पड़ा। बड़ी कठिनाई से ही वह अपने पर काबू रख पाया। महीनों की यंत्रणा ने उसे जल्दबाजी में कोई नतीजा न निकालना सिखा दिया था और इस भद्दे कपूस्तिन में भी कोई ऐसी बात थी जो उसे कमिसार वोरोब्योव की हल्की-सी याद दिला जाती थी जिसे मन में अलेक्सेई असली इन्सान पुकारा

करता था। कपूस्तिन के पाइप की आग दमक उठती और बुझ जाती और उसकी चौडी, मासल नाक और चतुर तथा पैनी आखें नीले अधेरे मे कभी उभर उठती और कभी गायब हो जाती। कपूस्तिन आगे कहता गया

"सुनो, मेरेस्येव, मैं तुम्हारी तारीफ नही करना चाहता, मगर कहो तुम कुछ भी, दुनिया में एक तुम्ही पैरहीन आदमी हो जो लडाकू विमान को संभाल रहे हो। एक मात्र।" उसने अपने पाइप की नली खोल डाली और उलझन के भाव मे सिर हिलाया "युद्धरत सेनाओ मे वापिस लौट जाने की तुम्हारी आकाक्षा के बारे में कुछ नही कहता। वह सचमुच प्रशसनीय है, लेकिन उसमें कोई खास बात भी नही है। ऐसे जमाने मे जीत हासिल करने के लिए हर आदमी अपनी शक्ति भर काम करना चाहता है . इस सडियल पाइप को हो क्या गया है?"

वह नली को साफ करने मे फिर लग गया और उस काम मे बिल्कुल लीन-सा लगने लगा, लेकिन एक अस्पष्ट आशका से घबराया हुआ अलेक्सेई अब तनाव महसूस कर रहा था—यह सुनने को उत्सुक था कि वह क्या कहने जा रहा है। अपने पाइप से उलझना जारी रखते हुए कपूस्तिन बोलता ही चला गया—ऊपर से यही मालूम होता था कि उसके शब्दो का क्या प्रभाव पड रहा है, इसकी उसे परवाह नही थी

"यह सिर्फ सीनियर लेफ्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव का व्यक्तिगत मामला नही है। मूल बात यह है कि तुम जैसे पैरहीन व्यक्ति ने एक ऐसी कला हासिल कर ली जिसके विषय मे अब तक सारी दुनिया यह मानती थी कि सिर्फ शारीरिक रूप से सर्वांग सम्पूर्ण व्यक्ति द्वारा ही वह सिद्ध हो सकती है और वह भी सौ में एक आदमी द्वारा। तुम सिर्फ नागरिक मेरेस्येव नही हो, तुम महान प्रयोगकर्त्ता हो आह! मैंने इसे ठीक कर ही लिया आखिर! इसमे कोई चीज अड गयी होगी और इसलिए मैं कहता हू, हम तुम्हारे साथ साधारण विमान-चालक जैसा व्यवहार नही कर सकते, हमें कोई हक नही है—समझते हो, कोई

और आदत के द्वारा प्राप्त कर लिया था, उसे अब उसने बौद्धिक रूप से प्राप्त किया। विमान-संचालन की क्रिया को उसके आंगिक भागो मे विभाजित करके, उसने प्रत्येक अग की विशेष कुशलता सीखी और पैरो की सारी क्रियाशीलता सम्बन्धी सवेदनाओ को अपनी पिण्डुरियो मे पैदा किया।

यह बडा सख्त और परिश्रम का काम था, और परिणाम इतना कम होता था कि वह कठिनाई ही से दिखाई देता था। फिर भी, हर बार जब अलेक्सेई आसमान मे उड जाता, तो वह महसूस करता कि वायुयान अधिकाधिक उसके शरीर का अग बनता जा रहा है और वह अधिकाधिक उसकी आज्ञा का पालन करने लगा है।

"कहिये, श्रीमान, कैसा चल रहा है?" जब कभी कपूस्तिन मिल जाता, वह पूछ बैठता।

जवाब मे मेरेस्येव कहता 'शाबाश'। वह अतिशयोक्ति नही कर रहा था। वह प्रगति कर रहा था, शायद धीमी, मगर सुनिश्चित, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि हवाई जहाज मे उसे यह महसूस होना बन्द हो गया कि वह किसी द्रुतगामी, तेजस्वी घोडे पर सवार है। अपनी कुशलता मे उसका आत्मविश्वास फिर लौट आया और यह चीज वायुयान मे भी सचरित हो उठी और वह सजीव वस्तु की भाति—जैसे घोडा महसूस करता है कि उसकी पीठ पर कुशल सवार बैठा है—अधिक आज्ञाकारी बन गया और धीरे-धीरे अलेक्सेई के सामने अपनी उडान सम्बन्धी सारी कुशलता प्रदर्शित करने लगा।

११

बहुत दिनो पहले, बचपन मे, अलेक्सेई शुरू-शुरू की चिकनी, पारदर्शक बर्फ पर, जो वोल्गा मे उस जगह जहा वह रहता था, छोटी-सी खाडी मे जम जाती थी, स्केटिंग की कला सीखने निकला था। वास्तव

से, स्केटिंग के विशेष जूते उसके पास न थे, उसकी मा उनको खरीदने की हैसियत मे न थी। लुहार ने, जिसके यहा मा कपडे धोया करती थी, उसकी प्रार्थना पर, लकडी के छोटे-से लट्टे बना दिये थे जिनमें तार की पटरिया थी और बगल मे छेद थे।

डोरो और लकडी के छोटे-छोटे टुकडो की मदद से मेरेस्येव ने इन लट्ठो को अपने पुराने, थिगडेदार फेल्ट जूतों में लगा दिया था। इनके बल पर वह नदी की पतली-सी, लचकदार, सुरीले स्वर में चरमरानेवाली बर्फ पर दुस्साहस करने चल पडा था। कमीशिन के अडोस-पडोस के सभी छोकरे, आनन्द से चीखते-चिल्लाते, नन्हे शैतानो की भाति झपट्टा मारते, एक दूसरे के पीछे दौडते और अपने बर्फ के जूतो के बल फुदकते और नाचते इधर-उधर फिसल रहे थे। उनकी चुहल मजेदार लग रही थी, मगर जैसे ही अलेक्सेई ने बर्फ पर पैर रखा, वह उसके पैरो तले से खिसकती जान पडी और वह पीठ के बल बुरी तरह गिर पडा।

वह फौरन उछलकर खडा हो गया, इस भय से कि कही उसके साथी यह न समझ ले कि उसने अपने को चोट पहुचा ली है। उसने फिर चलने का प्रयत्न किया और पीठ के बल गिरने से बचने के लिए अपने शरीर को आगे झुकाया, मगर इस बार वह नाक के बल गिर पडा। वह फिर उछलकर खडा हो गया और अपने कापते हुए पैरो पर क्षण भर खडे रहकर यह समझने का प्रयत्न करने लगा कि उसे क्या हो गया है और दूसरे लडको को देखने लगा कि वे कैसे फिसल रहे है। वह समझ गया कि उसे अपना शरीर न तो बहुत आगे झुकाना चाहिए और न बहुत पीछे। अपने शरीर को सीधे ताने रखने का प्रयत्न करते हुए उसने अगल-बगल कई कदम रखे और फिर बगल की तरफ लुढक गया, और इस प्रकार वह गिरा और उठा और फिर गिरा और फिर उठा— यहा तक कि साझ हो गयी। मा परेशानी में पड गयी जब वह ऊपर से नीचे तक बर्फ से सना हुआ लौटा और थकान के कारण उसके पैर काप रहे थे।

लेकिन अगले दिन वह फिर बर्फ पर पहुच गया। वह अब पहले से अधिक विश्वास के साथ चल रहा था, इतने जल्दी-जल्दी गिरता नही था और दौड़ लगाकर कई मीटर तक स्केटिंग भी कर लेता था, लेकिन लाख कोशिश करने पर वह और अधिक प्रगति न कर सका—हालाकि वह बर्फ पर शाम तक जमा रहा।

लेकिन एक दिन—और अलेक्सेई उस ठडे तूफानी दिन को कभी नही भूल सका, जब पालिशदार बर्फ पर हवा हिम-पात का चूरा उडाती फिर रही थी—उसने किस्मत पलट दी। वह स्वय चकित रह गया कि वह अधिकाधिक तेजी के साथ, और हर चक्कर के बाद और अधिक विश्वास के साथ बराबर फिसलता रहा। हर बार गिरने और चोट खाने और बार-बार फिर प्रयत्न करने के साथ उसने अलक्षित रूप मे जो अनुभव प्राप्त किया था, जो थोडी-थोडी तरकीबे और आदते हासिल की थी, वे यकायक घुल-मिलकर एक रूप मे ढल गयी, और अब जब वह अपनी टागो और पैरो को गतिशील करता, तो यह महसूस करता कि उसका सारा शरीर, उसका सम्पूर्ण बाल-सुलभ, विनोदप्रिय, हठी व्यक्तित्व प्रफुल्लित और आनन्ददायक आत्म-विश्वास की भावना से पूरित हो रहा है।

वही बात अब उसके साथ हो रही थी। वह वायुयान से अपने अस्तित्व को फिर एकात्मक करने का प्रयत्न करते हुए और अपने कृत्रिम पैरो के चमडे और धातु के माध्यम से उसका स्पन्दन अनुभव करते हुए, बडे उद्यम के साथ अनेक बार उडा। कई बार उसे लगा कि वह सफल हो रहा है और इससे उसका उत्साह अत्यधिक बढा। उसने एक कलाबाजी खाने की कोशिश की, मगर फौरन महसूस कर लिया कि उसकी चेष्टाओ मे विश्वास का अभाव है, हवाई जहाज हिचकता और हाथ से निकलने के लिए तडपता-सा मालूम होता है। अपनी आशाओ को विलीन होते देखकर उसने अपना नीरस प्रशिक्षण कार्यक्रम फिर चालू कर दिया।

लगाया और उसे मुश्किल से पूरा ही किया था कि विमान को चक्राकार घुमाने लगा। सीटी के स्वर के साथ धरती घूमने लगी, और हवाई अड्डा, विद्यालय भवन, अपने धारीदार फूले हुए थैलों समेत मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की मीनारें, सभी अटूट वृत्त मे लीन हो गयी। बडे विश्वास से उसने वायुयान को वृत्त से निकाला और सहजगति से फिर चक्कर खाया। अब जाकर उस सुप्रसिद्ध 'ला-५' विमान ने अपने सारे विदित और अविदित गुणो का उसके सामने उद्घाटन किया। अनुभवी हाथो में यह विमान कैसे करिश्मे दिखाता है! स्टीयरिंग गीयर के हर इशारे का वह संवेदनशीलता के साथ पालन करता है, सबसे बारीक कलाबाजी को भी वह बडे सहज भाव से कर दिखाता है, और राकेट की भांति, ठोस, लचीले और तीव्र रूप में ऊपर उठ जाता है।

मेरेस्येव कॉकपिट मे से उतरा तो लडखडाता हुआ, मानो वह नशे में धुत्त हो। उसके चेहरे पर मूर्खतापूर्ण मुसकान फैली हुई थी। उसने क्रुद्ध शिक्षक को नही देखा, न उसकी कुपित झिडकिया सुनी। बकने-झकने दो उसे! गार्डरूम? ठीक है, वह गार्डरूम की सजा भुगतने के लिए भी तैयार है। अब उससे क्या फर्क पडता है? एक बात साफ थी: वह एक विमान-चालक है, अच्छा विमान-चालक। अमूल्य पेट्रोल की जो अतिरिक्त मात्रा उसके प्रशिक्षण मे व्यय हुई है, वह बरबाद नही हुई। वह इस खर्चे को सौ गुने रूप में वापिस कर देगा, अगर वे उसे शीघ्र ही मोर्चे पर जाने दें और युद्ध मे जूझ जाने दे।

उसके क्वार्टर में एक और विस्मय उसकी प्रतीक्षा कर रहा था उसके तकिये पर ग्वोज्देव का पत्र पड़ा था। अपनी मंजिल पर पहुचने के पहले यह पत्र कहा-कहा, कितने दिनो और किसकी जेब में भटकता रहा था, यह कहना कठिन था, क्योकि लिफाफे पर तहे पड़ी थी, गदगी लिपटी थी और तेल के धब्बे पडे थे। वह एक साफ लिफाफे में बद था जिस पर अन्यूता की लिखावट में पता लिखा था।

प्रत्यागमन पर, [illegible] गावों और [illegible] पर [illegible] किया और उनपर इस तरह टूट पड़े जैसे आसमान से बिजली। टैंकों ने शत्रु पर हमला बोल दिया और रास्ते में जो भी [illegible], उसे मारते व उजाड़ते और कुचलते हुए तहलका मचा दिया और जब जर्मन [illegible] सेना के शेष लोग भी भाग गये तो टैंक-चालकों ने और पैदल सेना के लोगों ने, जिन्हें वे अपने साथ लिये फिरते थे, शस्त्र-भण्डारों और पुलों को उड़ा दिया, रेलवे पटरियों और इंजिन घुमाने के पाटों को उखाड़ दिया और इस प्रकार वे पीछे हटते हुए जर्मनों की ट्रेनों का रास्ता बन्द कर देते थे। कब्जे मे आये शत्रु के भण्डारों मे से वे टैंकों के लिए पेट्रोल और रसद आदि हासिल कर लेते, और इसके पहले कि जर्मन अपने होश दुरुस्त कर सके और प्रतिरोध करने के लिए सेना जुटा सके या कम से कम यह पता लगा सके कि ये टैंक अब किस दिशा मे जायेंगे, ये टैंक रफूचक्कर हो जाते।

"हमने, अल्योशा, बुद्योन्नी के घुड़सवारों की भाति स्तेपी के आर-पार हमले किये। और हमने जर्मनों को हवा कर दिया। तुम विश्वास न करोगे, मगर कभी-कभी हम सिर्फ तीन टैंकों और एक बख्तरबन्द गाड़ी लेकर पूरे गांव और भण्डार केन्द्रों पर अधिकार कर लेते थे। युद्ध

ने [illegible] बताना शुरू किया कि एक गश्ती-विमान ने यह सदेश भिजवाया है कि फलां-फलां जगह पर बड़ा भारी हवाई अड्डा है लगभग तीन सौ जहाज और ट्रांसपोर्ट, टैंक आदि हैं। उसने अपनी नुकीली लाल मूछें सहलाते हुए कहा 'ग्रोजेव, उस हवाई अड्डे पर आज रात मे ही धावा मारो। एक भी गोली चलाये बिना वहा इस खामोशी के साथ बस्तियो से हो कर जाओ, मानो तुम जर्मन हो, और जब काफी नजदीक पहुच जाओ तो उन पर हल्ला बोल दो, अपनी सारी तोपो के मुह खोल दो, और उससे पहले कि वे यह समझ पाये कि कहा फस गये है, सारी चीज का नक्शा उलट दो, और यह ध्यान रखना कि एक भी हरामजादा बचने न पाये।' यह काम मेरे लोगो को और एक दूसरे बटालियन को सौंपा गया जिसे मेरी कमान में रख दिया गया। बाकी सेना ने अपना अभियान रोस्तोव की तरफ जारी रखा।

"और हम लोग उस हवाई अड्डे मे इस तरह घुस गये जैसे मुर्गी के दरबे मे लोमड़ी। तुम विश्वास न करोगे, अल्योशा, लेकिन हम खुली सड़क पर गश्ते हुए जर्मन यातायात नियामक तक पहुच गये। हमें किसी ने न रोका—वह धुध भरी सुबह थी और वे लोग कुछ नही देख पाये, वे सिर्फ इजिनो की आवाज और रास्ते की खड़खड़ाहट ही सुन पाये।

करने को गर्दन निकाली, तभी [illegible] से [illegible]
गया। उसी [illegible] टकरा [illegible] सिर से टकरा गया। [illegible]
टोप ने चोट हल्की कर दी, वरना मैं तो गया ही था। [illegible] गम्भीर
चोट नहीं है और मैं जल्दी ही लगातार [illegible] और [illegible] दिन बाद
ही फिर अपने टैंकों के [illegible] में [illegible] जाऊँगा। [illegible] मुसीबत
यह है कि अस्पताल में उन्होंने मेरी दाढ़ी मूँड़ दी। उसे बढ़ाने में मैंने
कितनी तकलीफ उठायी थी—और वह बड़ी बढ़िया, घनी [illegible] दाढ़ी
थी—और उन लोगों ने बेरहमी से उसपर उस्तरा चला दिया। खैर,
चूल्हे में जाय दाढ़ी। हम अब बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी भी,
मेरा ख्याल है, युद्ध खत्म होने से पहले मैं फिर दाढ़ी बढ़ा लूंगा और तुम्हें चेहरे
को छिपा लूंगा। फिर भी मैं तुमसे कहूंगा, अल्योशा, किसी कारण अन्यूता को
मेरी दाढ़ी नापसंद है और हर पत्र में वह इसके लिए मुझे झिड़कती है।"

पत्र लम्बा था। स्पष्ट था कि म्योत्देव अस्पताली जिंदगी की ऊब
मिटाने के लिए लिखता ही चला जा रहा था। इत्तफाक से, पत्र के अंत
में उसने लिखा था कि स्तालिनग्राद के पास, जब वह और उसके आदमी

पैदल लड रहे थे,—वे अपने टैंक खो बैठे थे और नये टैंको का इतजार कर रहे थे—तब प्रसिद्ध ममायेव कुर्गान क्षेत्र मे उसकी भेंट स्तेपान इवानोविच से हो गयी थी। बूढे ने ट्रेनिंग पास कर ली थी और अब वह अधिकारी था—सार्जेन्ट मेजर, और उसके हाथ मे टैंक-विरोधी टुकडी की कमान थी। लेकिन उसने स्नाइपरो जैसी छिपकर घात करने की आदत नही छोडी थी। और जैसा स्वय उसने ग्वोज्देव को बताया, फर्क इतना था कि अब वह बडे शिकार की खोज मे रहता था—माद से निकलकर धूप खाते हुए लापरवाह जर्मनो की नही, जर्मन टैंको जैसे मजबूत और होशियार जानवरो की तलाश मे रहता था। लेकिन इस शिकार मे भी बूढा अपना पुराना साइबेरियाई शिकारियो का हुनर दिखा रहा था—पत्थर जैसा धीरज, सहनशीलता और अचूक निशाना। जब वे दोनो मिले तो उन्होने शत्रु से छीनी हुई शराब की बोतल मे साझा किया जिसे स्तेपान इवानोविच ने सावधानी से बचा रखा था, और फिर सब मित्रो का स्मरण किया। स्तेपान ने मेरेस्येव को अपनी याद दिलाने के लिए कहा था और निमत्रण दिया कि युद्ध के खात्मे के बाद वे दोनो उसके सामूहिक फार्म पर आये और तब गिलहरियो के शिकार पर या वत्तख मारने निकलेगे।

इस पत्र ने अलेक्सेई को राहत दी, मगर फिर भी कुछ खिन्न बना दिया। वार्ड बयालीस के लगभग सभी मित्र मोर्चे पर पहुच गये थे। ग्रीशा ग्वोज्देव और स्तेपान इवानोविच अब कहा है? वे अब कैसे है? युद्ध की आधी अब उन्हे कहा उडा ले गयी होगी? क्या वे जीवित है? ओल्या कहा है?

उसे फिर याद आया कि कमिसार वोरोब्योव ने सिपाहियो के पत्रो के बारे मे कहा था कि वे बुझे हुए सितारो की रोशनी की तरह होते है, जो हम तक पहुचने मे बडा वक्त लेते है, इतना कि वह सितारा चाहे बहुत पहले बुझ गया होगा, मगर उसका उज्ज्वल, आनन्ददायक प्रकाश शून्य को वेधना जारी रखता है और अतत हमारे पास उस अस्तित्वहीन प्रकाश-पुज की निर्मल आभा लेकर आ पहुचता है।

चतुर्थ खण्ड

१

१९४३ के तप्त ग्रीष्म काल में एक दिन, एक छोटा-सा पुराना मोटर-ट्रक उस सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था जो लाल-सी घास-पात से ढके हुए उपेक्षित खेतो के बीच, लाल फौज की आगे बढ़ती हुई डिवीजनो के सामान की गाड़ियो द्वारा रौंदे जाने के कारण बन गयी थी। गड्ढो पर उछलता हुआ, अपने ऊबड-खाबड अगप्रत्यगो को खड़खड़ाता हुआ, वह मोर्चे की पात की तरफ बढ़ता जा रहा था। उसके टूटे-फूटे और धूल से सने प्रत्येक बाजू पर एक सफेद रग से रगी पट्टी मुश्किल से ही दिखाई देती थी जिस पर लिखा था 'रणक्षेत्रीय डाक सेवा'। मोटर-ट्रक दौड़ता जाता और अपने पीछे धूल की बड़ी भारी लकीर छोड़ता जाता जो शान्त, निश्चल हवा मे धीरे-धीरे घुल जाती थी।

ट्रक पर डाक के थैले और ताजे समाचारपत्रो के बण्डल लदे थे, और विमान-चालको की वर्दी तथा नीली पट्टियोवाली छज्जेदार टोपिया पहने दो सिपाही बैठे थे जो ट्रक की चाल के अनुसार उछल या झूल पड़ते थे। इन दो में से जो जवान था, उसके कधे के बिल्कुल नये फीतो को देखने से पता चल जाता कि वह विमान सेना मे सार्जेन्ट-मेजर था—छरहरा, सुगठ और सुकेशी। उसके मुखड़े पर कौमार्य की ऐसी कोमलता थी कि ऐसा लगता था मानो सुन्दर त्वचा से रक्त दमक रहा है। वह

लगभग १६ वर्ष का लगता था। वह मजे हुए सैनिक की भाति व्यवहार करने का प्रयत्न कर रहा था–कभी दातो के बीच से थूक देता, कर्कश स्वर मे कोस बैठता, उगली जैसी मोटी सिगरेट बनाता, और हर चीज की तरफ लापरवाही का भाव दिखाता। लेकिन इस सबके बावजूद, यह स्पष्ट था कि वह युद्ध मोर्चे की घातो की ओर पहली बार जा रहा था और अधीर था। चारो ओर हर वस्तु–सड़क के किनारे पटी हुई क्षत तोप, जिसकी थूथनी जमीन की तरफ थी, एक टूटा पडा हुआ सोवियत टैंक, जिसके चारो तरफ उसकी मीनार तक घास उग आयी थी, एक जर्मन टैंक के इधर-उधर बिखरे हुए टुकड़े जो स्पष्ट ही हवाई जहाज के बम की सीधी चोट का शिकार हुआ था, गोलो के गड्ढे जिन पर घास खूब उग आयी थी, सैपर सिपाहियों द्वारा हटायी गयी टैंक-विरोधी सुरगो के गोल ढक्कन, जो नये उतारे थे पास सडक के किनारे ढेरो ढेर लगाये गये थे, और जर्मन सिपाहियो के कब्रिस्तान मे लगे हुए भोज वृक्ष के क्रास जो दूर से ही दिखाई देते थे–ये सभी उस युद्ध के चिह्न थे जो यहा छिड़ा हुआ था और जिसकी ओर युद्ध मे मजे हुए सिपाही कोई ध्यान नही देते, मगर ये दृश्य उस लडके को चकित और विस्मित कर रहे थे, उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण और अतीव दिलचस्प प्रतीत होते थे।

दूसरी ओर यह स्पष्ट देखा जा सकता था कि उसका साथी–एक सीनियर लेफ्टीनेंट–सचमुच मजा हुआ सिपाही था। पहली नजर मे आप कहेंगे कि वह तेईस या चौबीस वर्ष का होगा। मगर उसका धूप तथा मौसम खाया चेहरा और उसकी आखो और मुह के चारो ओर तथा माथे पर बारीक झुर्रियां देखकर, और उसकी काली-काली, चिन्तनपूर्ण, थकित आखो मे झाककर शायद आप उसकी उम्र मे दस वर्ष और जोड देंगे। प्रादेशिक दृश्य ने उसपर कोई प्रभाव नही डाला। युद्ध यन्त्रो के जग खाये ध्वसावशेषो को देखकर, जो विस्फोटो से टेढे-मेढे हो गये थे और इधर-उधर पड़े थे, या जले हुए गावो की वीरान सडको को देखकर,

जिनसे ट्रक गुजर रहा था, उसे कोई आश्चर्य नही हुआ, यहा तक कि एक चकनाचूर सोवियत हवाई जहाज का दृश्य देखकर, जो टेढे-मेढे अलुमीनम के ढेर की भाति पड़ा था, और उससे थोडी दूर पर उसका चकनाचूर इजिन तथा नम्बर और लाल सितारे से अकित पूछ पडी थी—जिस पर नजर पडते ही वह कम उम्र सिपाही सुर्ख पड गया था और कापने लगा था—वह तनिक भी विचलित न हुआ।

अखबारो के बडलो से अपने लिए आरामकुर्सी बनाकर, वह अफसर आबनूस की विचित्र-सी भारी छडी पर,—जिस पर कोई सुनहरा आलेख अकित था—अपनी ठुड्ढी टिकाये ऊघ रहा था। कभी ही कभी वह चौककर अपनी आखे खोल लेता और मुसकुराकर इस भाति चारो ओर देखता, मानो अपनी ऊघ भगा रहा हो, और उष्ण तथा सुगधित वायु से गहरी सास भर लेता। सडक से दूर, लाल-सी घास के लहराये हुए सागर के ऊपर उसने दो बिंदु देखे, जिनकी सावधानी से परीक्षा करने के बाद वह समझ गया कि वे दो हवाई जहाज है, जो एक के पीछे दूसरे, पात बनाकर आराम से आसमान में फिसलते घूम रहे है। तत्क्षण उसकी ऊघ गायब हो गयी, उसकी आखें रोशन हो उठी, नथुने फडकने लगे और कठिनाई से दृष्टिगोचर होनेवाले उन दो बिंदुओ पर नजर गडाये हुए उसने ड्राइवर की केबिन की छत को थपथपाया और जोर से चिल्लाया

"आड लो! सडक से अलग मुड जाओ!"

वह खडा हो गया, उसने अनुभवी आखो से सारा प्रदेश छान डाला, और छोटी-सी नदी की धारा के निकट एक खोह ड्राइवर को दिखायी जिसके किनारे पर मटमैली घास और सुनहरी झाडिया घनी उगी हुई थी।

कम उम्र सिपाही मजा लेकर मुसकुराया। हवाई जहाज कही दूर पर मजे में मडरा रहे थे और ऐसा लगता था कि जो एक मात्र ट्रक

वीरान और मनहूस मैदान मे धूल का भारी गुबार उडाता चला जा रहा था, उसकी तरफ उनका जरा भी ध्यान न था। लेकिन इसके पहले कि वह कोई विरोध प्रगट कर पाता, ड्राइवर ने सडक छोड दी और अपना पजर खटकाता हुआ ट्रक उस गोह की तरफ दौड पडा।

ज्यो ही वे गोह के पास पहुचे, सीनियर लेफ्टीनेंट उतर आया और घास पर बैठकर जागरूकता के साथ सडक को ताकने लगा।

"तुम यह सब क्यो कर रहे हो " कम उम्र सिपाही ने शुरू किया और व्यग्यपूर्वक बडे सिपाही की ओर देखा, लेकिन इसके पहले कि वह अपना वाक्य खत्म कर पाता, बडा सिपाही जमीन पर लुढक गया और चिल्लाया

"लेट जाओ!"

उसी क्षण हवाई जहाजो के इजिनो की बर्बर घडघडाहट सुनाई दी और दो विशालकाय छायाए विचित्र खट-खट आवाज करती हुई उनके ऊपर घुमडती गुजर गयी और हवा मे कम्पन भर गया। नवयुवक सिपाही इससे भी नही घबराया साधारण हवाई जहाज, निस्सदेह अपने ही है। उसने चारो तरफ नजर दौडायी और यकायक उसने देखा कि सडक के किनारे उलटे पडे हुए और बहुत दिनो से ध्वस्त पडे ट्रक से धुआ उठने लगा और लपटे फूट पडी।

"आह! वे लोग दाहक पदार्थ छोड रहे है," डाक ट्रक के ड्राइवर ने मुसकुराकर कहा और ट्रक के चकनाचूर और जलते हिस्से की ओर ताकने लगा। "वे लोग ट्रको की खोज मे है।"

"शिकारी," सीनियर लेफ्टीनेंट ने घास पर और आराम से बैठते हुए शान्तिपूर्वक जवाब दिया। "हमें इतजार करना पडेगा, वे फिर लौटेंगे। वे लोग सडक का निरीक्षण कर रहे है। अच्छा हो कि तुम अपनी ट्रक जरा और पीछे ले जाओ, उधर भोज वृक्ष के नीचे।

उसने इस प्रकार शान्तिपूर्वक और विश्वास के साथ कहा मानो जर्मन

विमान-चालकों ने अभी ही उसे अपनी योजना बता दी हो। डाक के साथ एक महिला डाकिया थी—युवती, जो ड्राइवर के बगल में बैठी थी। वह अब घास पर लेटी थी—पीली-सी, होंठों पर हल्की-सी उलझन-भरी मुसकान लिये हुए, आसमान की ओर उत्तेजनापूर्वक निहार रही थी, जहा पर ग्रीष्म के तरंगित बादल लुढकते चले जा रहे थे। उसी को ध्यान मे रखकर सार्जेन्ट-मेजर ने उदासीनता के साथ कहा, हालांकि उसने स्वय बडी उलझन महसूस की

"अच्छा हो, हम लोग आगे चल दें। वक्त क्यो बरबाद किया जाय? जिसे फासी लगना होती है, वह कभी डूबता नही है।"

सीनियर लेफ्टीनेंट ने शान्त भाव से घास की पत्ती चूसते हुए अपनी सख्त काली आखो मे अदृश्य-सी विनोदपूर्ण चमक भरकर उस युवक की ओर देखा और प्रत्युत्तर दिया

"सुनो भाई! इसके पहले कि वक्त हाथ से निकल जाय, वह बेवकूफी की कहावत भूल जाओ। और एक बात और समझ लो, कामरेड सार्जेन्ट-मेजर, मोर्चे पर तुमसे बडो की आज्ञा मानने की आशा की जाती है। अगर हुक्म है 'लेट जाओ!' तो तुम्हे लेटना ही पडेगा।"

उसे घास में अम्लबेंत का डठल पडा मिल गया, उसने नाखूनो से उसका रेशेदार छिलका उतारा और कुरकुरे डठल को बडे स्वाद से चूसने लगा। हवाई जहाज के इजिनो की घडघडाहट फिर सुनाई दी और वही दो हवाई जहाज सडक पर नीचे उडते नजर आये, वे बहुत धीरे-धीरे उड रहे थे—और वे इतने पास से गुजर गये कि उनके पखो का गहरा पीला रग, सफेद-काले क्रास और उनमे से निकटतर विमान के ढाचे पर अकित हुक्म के इक्के तक बडे साफ दिखाई दे रहे थे। सीनियर लेफ्टीनेंट ने अलसभाव से कुछ और डठल लिए घडी की ओर देखा और हुक्म दिया

"सब साफ! चलो, रवाना हो! जल्दी करो, प्यारे! इस जगह से जितनी जल्दी दूर खिसक जाये उतना ही बेहतर होगा।"

ड्राइवर ने अपना भोंपू बजाया और युवती डाकिया खोह से दौड़ी हुई आयी। वह जंगली स्ट्रावेरी के फलों के अनेक गुच्छे लिये हुए थी। ये गुच्छे उसने सीनियर लेफ्टीनेंट को दिये।

"ये पकने लगे हैं . हमने गौर नहीं किया कि ग्रीष्म आ रहा है," वह उन्हें सूंघते हुए बोला और अपनी वर्दी की जेब के बटन-छेद में सुगंधित पुष्प-गुच्छ की भांति उन्हें खोंस लिया।

"आप यह कैसे जान गये कि वे लोग वापिस नहीं आयेंगे और अब रवाना होने में कोई खतरा नहीं है?" युवक ने सीनियर लेफ्टीनेंट से पूछा, जो अब फिर खामोश हो गया था और गड्ढों के ऊपर उछलते हुए ट्रक के साथ-साथ झूलता हुआ बैठ गया था।

"यह समझना बड़ा आसान है। वे 'मेसर्स', 'मे-१०९' हवाई जहाज थे। उनमें सिर्फ ४५ मिनट उड़ने लायक ही पेट्रोल आता है। वे अपना भण्डार खत्म कर चुके हैं और फिर पेट्रोल भरने गये हैं।"

सीनियर लेफ्टीनेंट ने यह व्याख्या इस भाव से की कि जैसे वह यह नहीं समझ पा रहा है कि इतनी सीधी-सी बात को लोग क्यों नहीं जानते। युवक ने अब पहले से भी अधिक जागरूकता के साथ आसमान की छान-बीन शुरू कर दी। 'मेसर्स' के वापिस लौटने का इशारा सबसे पहले वह खुद देना चाहता था। लेकिन वायुमण्डल साफ रहा और वह हरी-भरी घास, धूल और तप्त धरती की गंध से इतना परिपूरित था, टिड्डे इतने विनोदपूर्वक और आनन्द-विह्वल होकर चहचहा रहे थे और घास-पात से आच्छादित भूमि के ऊपर लवा पक्षी इतने उच्च स्वर से गा रहा था कि वह जर्मन हवाई जहाजों और खतरे की बात भूल ही गया और साफ, आनन्दप्रिय स्वर में वह गीत गाने लगा जो उन दिनों युद्ध के मोर्चे पर लोकप्रिय था—एक खोह में अपनी प्रेमिका के लिए तरसते हुए युवक सिपाही का गीत।

"तुम्हें 'एश वृक्ष' नाम का गीत याद है?" उसके साथी ने टोकते हुए पूछा।

युवक ने स्वीकृतिसूचक गर्दन हिलायी और फौरन वह पुराना गीत शुरू कर दिया। सीनियर लेफ्टीनेंट के थके, धूल ढके चेहरे पर उदासी का भाव छा गया।

"तुम इसे ठीक तरह से नही गा रहे हो, दोस्त," उसने कहा। "यह कोई मजाकिया गाना नही है। इसमें अपना दिल उडेलना पडता है," और उसने कोमल, अत्यन्त मद, मगर सच स्वर मे उसकी धुन पकड ली।

ड्राइवर ने एक क्षण ब्रेक लगाया और युवती डाकिया केबिन से उतर पडी। वह पीछे से तख्ते पकडकर और हल्की-सी छलाग मारकर ट्रक के पिछले भाग मे कूद गयी जहा उसे सशक्त, मैत्रीपूर्ण बाह ने सभाल लिया।

"मैने तुम्हे गाते सुना, इसलिए तुम्हारा साथ देने की इच्छा हुई "

और इस प्रकार ट्रक की खडखड़ाहट और घास पर फुदकनेवाले टिड्डो की उत्साहपूर्ण चहक के साज पर वे तीनो गाने लगे।

युवक आत्म-विभोर हो उठा। उसने अपने सामान के थैले से मुह का बाजा निकाला, और कभी उसे बजाने लगता, और कभी उसे डडे की तरह पकडकर हवा में झुलाता उन लोगो के साथ स्वर मिलाकर गाने लगता, वह सगीत-सचालक की भाति कार्य करने लगा। और इस उदासीजनक और आजकल वीरान सडक पर, धूल से आच्छादित, सर्वजयी घास-पात के बीच कोडे की फटकार की भाति, उस गीत के शक्तिशाली और वेदनापूर्ण स्वर गूज उठे जो इतना ही पुराना और इतना ही नया था जितना कि ग्रीष्म के ताप से तडपते हुए ये मैदान, उष्ण और सुगधित घास के बीच टिड्डो की जीवन्त चहक, स्वच्छ ग्रीष्म आकाश में लवा पक्षी का सगीत और जैसे कि स्वय यह उच्च और अनन्त आकाश है।

वे अपने सगीत मे इतने डूब गये थे कि जब ड्राइवर ने यकायक ब्रेक लगा दिये तो धक्का खाकर वे लोग करीब-करीब ट्रक से बाहर ही फेंक दिये गये। ट्रक बीच सडक मे रुक गया। सडक के बगल की खाई मे एक तीन टनवाला ट्रक उलटा पडा था जिसके धूल से ढके पहिये भर दिखाई दे रहे थे। युवक पीला पड गया, मगर उसका साथी बाजू से उतर पड़ा और खाई की तरफ भागा। वह विचित्र स्प्रिंगदार, डगमगाते कदमो से जा रहा था। एक क्षण बाद डाक ट्रक का ड्राइवर उलटे हुए ट्रक के केबिन से एक क्वार्टर मास्टर कप्तान के खून-सने शरीर को निकाल रहा था। उसका चेहरा कटा हुआ था और खरोचे पडी हुई थीं, जो स्पष्ट ही टूटे काच के गडने से पड गयी थी और चेहरे का रग स्याह पड गया था। सीनियर लेफ्टीनेंट ने उसकी पलके उठायी।

"यह खत्म हो गया," उसने अपनी टोपी उतारते हुए कहा। "कोई और तो नही है?"

"हा, ड्राइवर है," डाक ट्रक के ड्राइवर ने जवाब दिया।

"तुम उधर खड़े क्या कर रहे हो? आओ, मदद करो।" सीनियर लेफ्टीनेंट ने किंकर्त्तव्यविमूढ युवक से कहा। "क्या तुमने इससे पहले खून कभी नही देखा? इसके आदी हो जाओ, अब बहुत देखने को मिलेगा। देखो, यह है उन शिकारियो का शिकार।"

ड्राइवर जीवित था। वह हल्के से कराह उठा, मगर आखे बन्द किये रहा। चोट का कोई चिह्न नही था, मगर स्पष्ट था कि जब बम की चोट के बाद ट्रक खाई में गिरा होगा तो उसका वक्ष बुरी तरह स्टीयरिंग पहिये से टकरा गया होगा और फिर चकनाचूर केबिन के बोझ से वह दब गया होगा। सीनियर लेफ्टीनेंट ने उसे डाक ट्रक मे लादने का हुक्म दिया। लेफ्टीनेंट के पास एक सूती कपडे मे सावधानी से लिपटा हुआ, बढिया, बिल्कुल नया ग्रेटकोट था, जो एक बार भी नही पहना गया था। चोट खाये व्यक्ति को लेटाने के लिए उसने ट्रक के

फर्श पर उस रोज़ ने [illegible] सिर [illegible]
घुटनों पर रख लिया।

“तुम से जितनी नाराज़ हो, उतनी [illegible] !” [illegible]

आहत व्यक्ति ने सिर को [illegible] ही किसी दूरागत स्मृति मे मुसकुरा पड़ा।

जब ट्रक एक छोटे-से गाव की सड़क पर दौड़ने लगा, [illegible] अनुभवी आदम फोमिच [illegible] कि इस स्थान पर किसी छोटे-से विमान [illegible] की [illegible], [illegible] सामने के बगीचों मे [illegible] और [illegible] वृक्षों की [illegible] से आच्छादित शाखाओं मे, कुओं की ‘बेना’ मे, [illegible] मे, [illegible] लटकी हुई थी। मकानों के पास घास-फूस के दालानों मे, [illegible] किसान अपनी गाड़िया और खेती के औज़ार रखा करते थे, [illegible] ‘[illegible]’ और जीपें रखी दिखाई दे रही थी। यहा वहा छोटी-छोटी झोपड़ियों की खिडकियों के धुधले शीशों के पार नीली पट्टीवाली टोपिया पहने सिपाही दिखाई दे जाते थे और टाइपराइटरों की खटखट सुनाई दे जाती थी, और एक घर मे, जिस पर तारों का जाल आकर गिर गया था, तार भेजने का यंत्र खटखटाता सुनाई दिया।

यही गाव, जो मुख्य और छोटी सड़कों से दूर बसा था, ऐसा लगता था कि वह इस वीरान और घास-पात से आच्छादित स्थान मे एक ऐसे अवशेष की भाति बच गया है, जो यह प्रदर्शित करता है कि फासिस्ट आक्रमण से पहले इस क्षेत्र मे रहना कितना भला था। छोटा-सा पोखर भी, जिसमे पीली-सी सेवार घनी उग आयी थी, पानी से भरा था। पुराने वृक्षों की छाया मे वह एक शीतल और उज्ज्वल स्थल था, और उसमे सेवार को चीरकर अपनी राह बनाते हुए, चोंच मे अपने पख साफ करते और पानी उछालते हुए, लाल चोंचवाले हिम से श्वेत हस का एक जोड़ा तैर रहा था।

आहत व्यक्ति को एक झोंपडी तक ले जाया गया, जिसपर रेड क्रास का झण्डा फहरा रहा था। फिर ट्रक गाव को पार कर, ग्रामीण स्कूल की स्वच्छ, छोटी-सी इमारत के सामने जाकर रुका। टूटी हुई खिडकी में जिस प्रकार अनगिनत तार प्रवेश कर रहे थे और टामीगन लिए एक सतरी उसकी दहलीज पर खडा था, उससे यह समझा जा सकता था कि यही सदर दफ्तर है।

"मै रेजीमेंटल कमाडर से मिलना चाहता हू," सीनियर लेफ्टीनेंट ने अर्दली से कहा जो खुली खिडकी पर बैठा हुआ 'लाल सिपाही' पत्रिका की एक वर्ग पहेली हल कर रहा था।

सीनियर लेफ्टीनेंट के पीछे-पीछे जो युवक चला आ रहा था, उसने देखा कि इमारत मे प्रवेश करते समय लेफ्टीनेंट ने यान्त्रिक ढग से अपने कोट के सामनेवाले हिस्से को झटक दिया, अपने अगूठों से पेटी के नीचे पडी हुई सलवटों को ठीक किया और कालर के बटन लगा लिये। उसने भी ऐसा ही किया। वह अपने इस अल्पभाषी साथी को बहुत चाहने लगा था और अब हर बात में उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करता था।

"कर्नल काम मे लगे है," अर्दली ने जवाब दिया।

"उन्हे जाकर बताओ कि मै विमान सेना के स्टाफ हेडक्वार्टर के नियुक्ति-विभाग से एक फौरी सदेशा लेकर आया हू।"

"ठहर जाइये। वह गश्ती दस्ते की रिपोर्ट सुन रहे है। उन्होने कहा था कि बाधा न डाली जाय। बाहर जाइये और थोडी देर बगीचे में बैठिये।"

अर्दली फिर वर्ग पहेली में व्यस्त हो गया। नवागत व्यक्ति बाग में चले गये और फूलो की एक क्यारी की बगल मे एक पुरानी बेच पर बैठ गये—क्यारी के चारो ओर बडी सावधानी से ईंटो की दीवार बनायी गयी थी, लेकिन अब उपेक्षित थी और उसपर घनी घास-पात उग आयी थी। युद्ध के पहले इसी प्रकार की शान्त, ग्रीष्मकालीन शामो को स्कूल

कमांडर का दफ्तर एक काफी बडी कक्षा में था। नंगे लट्ठों की दीवारों से बने उस कमरे में फर्नीचर के नाम पर सिर्फ एक मेज थी जिस पर मैदानी टेलीफोनों के चमड़े के खोल रखे थे, एक बड़ा-सा विमान-सैनिक नक्शे का खोल था जिसमें नक्शा रखा हुआ था और एक लाल पेन्सिल थी। नाटा-सा, स्फूर्तिवान, सुगठित व्यक्ति, वह कर्नल, पीठ के पीछे हाथ बांधे कमरे में चहलकदमी कर रहा था। अपने विचारों में लीन, वह एक दो बार उन विमान-चालकों के पास से निकला, जो अटेंशन खड़े हुए थे। यकायक वह उनके सामने रुका और उनकी ओर जिज्ञासापूर्वक देखने लगा।

"सीनियर लेफ्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव। आपकी कमान में नियुक्त," ताम्रवर्ण अफसर ने एड़िया बजाते हुए और सेल्यूट करते हुए रिपोर्ट दी।

"सार्जेन्ट-मेजर अलेक्सान्द्र पेत्रोव," युवक ने अपने फौजी बूटों को जरा जोर से मारते हुए और जरा ज्यादा फुर्ती से सेल्यूट करते हुए रिपोर्ट दी।

"रेजीमेंटल कमाडर, कर्नल इवानोव," प्रधान महोदय ने जवाब में कहा। "कोई संदेश?"

बड़ी नपी-तुली भाव-भंगिमा से मेरेस्येव ने अपने नक्शे के खोल से एक पत्र निकाला और कर्नल को दे दिया। कर्नल ने शीघ्रता से उस संदेश की परीक्षा की, नवागतों पर शीघ्रतापूर्वक अन्वेषी दृष्टि डाली और कहा

"बहुत अच्छा! आप लोग ठीक वक्त पर आये हैं। लेकिन इतने कम लोग उन्होंने क्यों भेजे हैं?" यकायक उसके चेहरे पर विस्मय का भाव दौड़ गया, मानो उसे कोई बात याद आ गयी हो। "क्यों," उसने पूछा, "तुम मेरेस्येव हो? विमान सेना के अध्यक्ष ने तुम्हारे बारे में मुझे फोन किया था। उन्होंने मुझे चेतावनी दी थी कि तुम "

"वह कोई महत्व की बात नहीं है, कामरेड कर्नल," अलेक्सेई ने टोका, बहुत नम्रता से नहीं। "मुझे अपनी ड्यूटी पर जाने की आज्ञा दीजिये।"

कर्नल ने कौतुकपूर्वक अलेक्सेई की ओर देखा और सिर हिलाते हुए, स्वीकृतिसूचक मुसकान के साथ कहा

"ठीक। अर्दली! इन व्यक्तियों को कार्याध्यक्ष के पास ले जाओ और मेरा यह हुक्म दे दो कि इनके भोजन और निवास का प्रबंध किया जाय। कहो कि इन्हें गार्ड्स कप्तान चेमलोव के जत्थे में भरती किया जाय।"

पेत्रोव ने सोचा कि रेजीमेंटल कमांडर जरा ज्यादा बातूनी है। मेरेस्येव ने उसे पसंद किया। इस तरह के व्यक्ति—जो तेज होते हैं, हर मामले की पकड़ फौरन कर लेते हैं, साफ चिन्तन की क्षमता रखते हैं और दृढ़तापूर्वक फैसले ले सकते हैं—वे उसको दिल से प्यारे होते हैं। बागीचे में बैठे-बैठे उसने हवाई गश्त की जो रिपोर्ट सुनी थी, वह उसके दिमाग में समा गयी थी। अनेक ऐसे चिह्नों से जिन्हें सिपाही पढ़ लिया करते हैं फौजी हेडक्वार्टर छोड़ने के बाद वे जिन सड़कों से उछलते-कूदते आये थे, उनपर भारी भीड़ का होना, यह तथ्य कि सड़क के संतरी सख्त ब्लैक आउट पर जोर देते थे और आज्ञा का उल्लंघन करनेवालों के टायरों पर गोली चलाने की धमकी देते थे, मुख्य सड़क से अलग भोज वृक्षों के जंगलों में टैंकों, ट्रकों और तोपों के केन्द्रित होने के कारण भीड़-भाड़ और शोरगुल, और यह तथ्य कि उस दिन वीरान सड़क पर उनके ऊपर जर्मन 'शिकारियों' ने हमला किया था—मेरेस्येव भांप गया कि मोर्चे की शान्ति भंग होनेवाली है, जर्मन इस क्षेत्र में नयी चोट करनेवाले हैं और यह चोट शीघ्र ही होगी, सोवियत फौज की कमान इससे सुपरिचित है और उसका यथायोग्य जवाब देने के लिए तैयार है।

२

बेचैन सीनियर लेफ्टीनेंट ने भोजन के समय पेत्रोव को तीसरे दौर का इतजार ही नही करने दिया और उसे अपने साथ एक पेट्रोल ट्रक पर चढ जाने के लिए विवश किया जो गाव के बाहर एक मैदान मे स्थित हवाई अड्डे की ओर जा रहा था। यहा इन नये व्यक्तियो ने विमान टुकडी के कमाडर, गार्ड्स कप्तान चेसलोव को अपना परिचय दिया जो जरा भौहे चढानेवाला और अल्पभाषी तो था, मगर वैसे अत्यन्त सुहृदय स्वभाव का व्यक्ति था। अधिक कहा-सुनी बिना, वह उन्हे घास से ढके मिट्टी के बने विमान-गृह मे ले गया, जिनमे दो बिल्कुल नये, उज्ज्वल वार्निश किये हुए नीले 'ला-५' रखे थे, जिनकी तिरछी पतवारो पर '११' और '१२' नम्बर अकित थे। ये विमान थे जिन्हे नवागतो को उडान पर ले जाना था। उन्होने शेष दोपहरी सुगधित भोज-कुज में—जहा इजिनो की घडघडाहट मे भी पक्षियो की चहक डूब नही पा रही थी—मशीनो की परीक्षा करते, मेकेनिको से गप लगाते, और रेजीमेंट के जीवन का परिचय प्राप्त करते हुए काट दी।

अपने दिलचस्प धधे मे वे इतने डूब गये थे कि जब वे आखिरी ट्रक मे गाव लौटे तो काफी अधेरा हो चुका था और उनको रात का भोजन न मिल सका। लेकिन इससे वे चिन्तित न हुए। उनके थैलो में अभी सूखे राशन का कुछ हिस्सा बकाया था जो उन्हे रास्ते के लिए दिया गया था। सोने के स्थान की कठिनाई और भी गम्भीर थी। इस निर्जन, घास-पात से पूर्ण वीराने मे, इस छोटे-से नखलिस्तान की आबादी दो विमान रेजीमेंटो के चालको और कर्मचारियो के कारण हद से अधिक बढ गयी थी। भीड-भाड से भरे हुए एक मकान से दूसरे मकान भटकते हुए और वहा रहनेवालो से—जो नवागतो के लिए जगह देने से इनकार कर देते थे—क्रोधपूर्वक कहा-सुनी करते और इस खेदपूर्वक

तथ्य पर दार्शनिक चिन्तन करते हुए कि मकान [illegible] नहीं ?
और उन्हें फैसला नहीं किया जा सका, [illegible] वे लोग जिस
मकान पर पहुंचे, वहाँ क्वार्टर मास्टर ने उन्हें सुपुर्द किया और कहा

"आज की रात यहीं सो जाओ। सुबह तुम लोगों के लिए मैं
दूसरा बन्दोबस्त कर दूंगा।"

उस छोटी-सी झोंपड़ी में नौ लोग पहले से [illegible] से और
वे सब लौट आये थे। [illegible] अंगीठी
गयी, धुआं उगलती, मिट्टी के तेल की ढिबरी की रोशनी में—जिसे
युद्ध के शुरू के दिनों में '[illegible]' कहा जाता था और स्तालिनग्राद के
युद्ध के बाद 'स्तालिनग्रादका' कहा जाने लगा था—सोनेवालों की
छायाकृतियों पर धुंधला प्रकाश पड़ रहा था। कुछ लोग चारपाइयों और
तख्तों पर लेटे थे और कुछ लोग फर्श पर पुआल बिछाकर गद्दों पर लेटे थे।
इन नौ निवासियों के अलावा झोंपड़ी में उसकी मालकिन—एक बुढ़िया
और उसकी जवान बेटी—भी थीं, जो जगह की तंगी के कारण बड़े
भारी मिट्टी के बने रूसी चूल्हे पर सोती थीं।

नवागत दहलीज पर ही रुक गये और हैरान रह गये कि सोते
हुए लोगों को पार कर कैसे अन्दर जायें। बुढ़िया चूल्हे पर से उन पर
क्रोधपूर्वक चिल्लायी

"यहां जगह नहीं है, जगह नहीं है! दिखाई नहीं देता कि यहां
बड़ी भीड़ है? तुम्हें हम लोग कहां सुलायेंगे, क्या छप्पर पर?"

पेत्रोव ने इतनी परेशानी महसूस की कि वह पीछे हटने ही वाला
था, लेकिन मेरेस्येव सोनेवालों पर पैर पड़ने से बचाता हुआ मेज की
तरफ बढ़ रहा था।

"हमें सिर्फ एक कोना चाहिए जहां बैठकर हम लोग अपना भोजन
कर सकें, दादी जान। हमने दिन भर से कुछ नहीं खाया है," उसने कहा।
"क्या तुम हमें एक तश्तरी और दो प्याले दे सकोगी? यहां सोकर हम

तुम्हे तकलीफ नही देगे। रात काफी गर्म है, और हम बागीचे मे सो रहेगे।"

चूल्हे के पटरे के छोर मे, चिडचिडी बुढिया के पीछे से दो नन्हे-नन्हे नगे पैर प्रगट हुए एक छरहरी आकृति खामोशी से चूल्हे पर से उतर आयी और सोनेवालो के बीच बड़ी होशियारी से सतुलन करते हुए दरवाजे के पीछे गायब हो गयी और शीघ्र ही कुछ तश्तरिया और भिन्न रगो की प्यालिया अपनी नाजुक उगलियो मे लटकाकर वापिस लौट आयी। पहले तो पेत्रोव ने सोचा कि वह बच्चा है, मगर जब वह मेज़ के पास पहुच गयी और धुधली पीली रोशनी ने अधकार से उसके मुखडे को उबार लिया, तो उसने देखा कि वह युवती है और सुन्दर भी, सिर्फ यह कि भूरे ब्लाउज और बोरे के स्कर्ट और जर्जर शाल ने, जिसे वह अपने वक्ष पर ओढे थी और बुढिया की तरह पीठ पर बाधे थी, उसके सौन्दर्य को मार दिया था।

"मरीना! मरीना! इधर आ फूहड।" चूल्हे से बुढिया ने फुफकारा।

लेकिन युवती ने झपकी भी न मारी। कुशलतापूर्वक उसने मेज पर एक अखबार बिछा दिया और उसपर तश्तरिया, प्याले और काटे-छुरिया रख दी और साथ ही कनखियो से पेत्रोव पर नजर डाली।

"हा, करिये अपना भोजन। आशा है, आपको मजा आयेगा," उसने कहा। "शायद आप कुछ काटना या गरम करना चाहेगे? मै एक सेकड मे कर दूगी। क्वार्टर मास्टर ने सिर्फ यही कहा है कि हम बाहर आग न जलाये।"

"मरीना, इधर आ!" बुढिया ने पुकारा।

"उसकी बातो पर ध्यान न दीजिये, वह जरा होश खो बैठी है। जर्मनो ने उसे बुरी तरह डरा दिया है," युवती ने कहा। "ज्योही वह रात को सिपाहियो की शक्ले देखती है, उसे मेरे बारे मे फिक्र होने

लगती है। उसपर क्रोध न कीजिये, वह रात को ही ऐसी हो जाती है। दिन मे वह भली-चगी रहती है।"

अपने थैले मे मेरेस्येव को कुछ सौसेज, गोश्त का एक टिन, दो सूखी मछलिया जिन पर लगा हुआ नमक चमक रहा था और एक फौजी पावरोटी मिल गयी। पेत्रोव की किस्मत कमजोर निकली, उसके पास सिर्फ थोडा-सा गोश्त और दोबारा पकायी गयी पावरोटी रस्क के टुकडे निकले। मरीना ने इस सब को अपने नन्हे-से कुशल हाथों से काट दिया और तश्तरियो पर इस तरह लगा दिया कि भूख बढ गयी। लम्बी बरौनियो मे छिपी हुई उसकी आखे पेत्रोव के चेहरे की अधिकाधिक परीक्षा करने लगी और उधर पेत्रोव उसकी ओर लालसापूर्ण दृष्टि डाल रहा था। जब उनकी आखें मिली तो दोनो लाल हो गये, दोनो ने भौहे सिकोडी और दूसरी ओर मुह फेर लिया, और उन दोनो ने एक दूसरे के सीधे सम्बोधित किये बिना मेरेस्येव के द्वारा बातचीत की। उन्हे देखकर अलेक्सेई को बडा मजा आया, मजा भी और दुख भी, क्योकि दोनो ही बडे कम उम्र थे। उनकी तुलना में वह अपने को बूढा, थका हुआ, और जीवन का एक बहुत बडा भाग पीछे छोड आनेवाला महसूस करने लगा।

"अच्छा, मरीना, तुम्हारे पास, सम्भव है, खीरा तो होगा?" उसने पूछा।

"हा, संभव है तो," युवती ने शैतानी मुसकान के साथ जवाब दिया।

"और शायद तुम्हारे पास दो एक उबले आलू निकल आयें?"

"हा—अगर प्रार्थना करें तो शायद मिलेगा।"

वह फिर कमरे से बाहर चली गयी, सोनेवालो के शरीरो से बचती हुई, आहिस्ते से और बिना आहट के, पतिंगे की तरह।

"कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट," पेत्रोव ने विरोध प्रकट किया।

"जिस लड़की को आप नहीं जानते, उससे आप इतने बेतकल्लुफ कैसे हो सकते हैं? उससे पीरा माग रहे हैं . "

मेरेस्येव विनोदपूर्ण हसी में फूट पड़ा।

"वाह रे भोले, क्या समझते हो, तुम कहा हो? हम मोर्चे पर नहीं हैं क्या? . ऐ, दादी! बड़बड़ाना बंद कर। उतर आ और हम लोगों के साथ दो कौर तो खा ले।"

अपने आप बड़बड़ाती और कांपती हुई बुढ़िया चूल्हे पर से उतर आयी, मेज के पास आ पहुची और फौरन सौसेज पर टूट पड़ी,—जैसे कि पता चला युद्ध से पहले वह इसकी बड़ी शौकीन रही थी।

वे चारों मेज के इर्दगिर्द बैठ गये और खर्राटों तथा कुछ लोगों की उनींदा बड़बड़ाहट के बीच, बड़े स्वाद से खाने लगे। अलेक्सेई सारे समय बातें मारता रहा, बुढ़िया को चिढ़ाता रहा और मरीना को हसाता रहा। आखिरकार, अपने स्वभाव के अनुकूल डेरों की जिंदगी पाकर, वह पूरी तरह आनन्द उपभोग कर रहा था, मानो विदेशों में भटकने के बाद वह बहुत दिनों के उपरान्त अपने घर लौट आया हो।

भोजन के अंत में जाकर मित्रों को मालूम हुआ कि यह गाव इसलिए बच गया कि वह एक जर्मन सेना का हेडक्वार्टर रहा था। जब सोवियत सेना ने अपना प्रत्याक्रमण प्रारम्भ किया तो जर्मन इतनी जल्दी में भागे कि वे इस गाव को ध्वस्त नहीं कर पाये। जब फासिस्टों ने बुढ़िया की मौजूदगी में उसकी बड़ी लड़की के साथ बलात्कार किया—जो बाद में उस पोखर में डूब मरी—तो बुढ़िया पागल हो गयी। आठ महीने तक, जब तक फासिस्ट इस जिले में रहे, मरीना पीछे आगन में बने खाली भूसा घर में छिपी रही जिसके दरवाजे को भूसे और लगड़-खगड़ के ढेर लगाकर छिपा दिया गया था। इन दिनों उसने सूरज नहीं देखा। रात को उसकी मा खाना-पीना लाती और छोटी-सी खिड़की से अन्दर पहुचाती। अलेक्सेई जितना ही अधिक उस लड़की से बातें

करता जाता, उतने ही बार-बार वह पेत्रोव पर नजर डाल लेती, और उसकी आखें जो हठी थी फिर भी लजीली थीं, छिपाने का प्रयत्न करने पर भी सराहना का भाव अभिव्यक्त कर रही थी।

और इस प्रकार गप-शप करते और हसते हुए उन्होंने भोजन समाप्त किया। मरीना ने बचे हुए खाद्य पदार्थों को मेरेस्येव के थैले में रख दिया यह सोचकर कि सिपाही के साथ जो कुछ भी रहे वह काम आ जाता है। उसके बाद उसने अपनी मा से कुछ कानाफूसी की और फिर मुडकर जोर देती हुई बोली

"सुनिये। चूकि क्वार्टर मास्टर आपको यहा रख गये हैं, इसलिए यही ठहरिये। चूल्हे पर चढ जाइये, और मा और मैं तलघर चले जायेंगे। सफर के बाद आप लोगों को आराम भी तो चाहिए। कल आपके लिए हम लोग जगह तलाश कर देंगे।"

वह सोते हुए लोगों को पार करते हुए सावधानी से कदम धरती फिर बाहर चली गयी और भूसे का एक गट्ठर लेकर लौटी जिसे उसने उदारता के साथ चूल्हे पर बिछा दिया और कुछ कपडो को तकिये की तरह गोल कर दिया, और यह सब उसने बडी तेजी से, होशियारी से, बिना आहट किये, बिल्लियो जैसी कोमलता के साथ कर दिया।

"बढिया लडकी है, क्यो बच्चू?" मेरेस्येव ने भूसे पर लेटकर आनन्दपूर्वक कहा और हाथ-पाव फैलाकर अगडाई ली कि जोड तडक उठे।

"बुरी नही है," पेत्रोव ने बनावटी उपेक्षा से जवाब दिया।

"और तुम्हारी तरफ वह कैसे बराबर घूर रही थी! . "

"नही तो! वह तो सारे वक्त तुम्ही से बाते करती रही।"

क्षण भर बाद उसकी सासो की नियमित आहट सुनाई देने लगी। लेकिन मेरेस्येव को नीद नही आयी। शीतल, सुगधित भूसे पर लेटे हुए उसने देखा कि मरीना कमरे में आयी, कोई चीज खोजने लगी, वह

बार-बार चूल्हे की तरफ चोरी-चोरी निगाह डाल लेती। उसने मेज के लैम्प को ठीक तरह से टिकाया, एक बार फिर चूल्हे की ओर निगाह डाली और फिर सोनेवालों के बीच राह बनाती हुई आहिस्ते से दरवाजे की ओर चली गयी। किसी कारण, चिथड़े पहनी हुई इस सुन्दर, मनमोहक लड़की को देखकर अलेक्सेई की आत्मा वेदना से भर गयी। इस प्रकार सोने का प्रबंध तो हो गया था। सुबह ही उसे पहली युद्ध सम्बन्धी उड़ान करनी थी। पेत्रोव के साथ उसका जोड़ा होगा—वह, मेरेस्येव, नेता होगा। कैसी बीतेगी? वह बड़ा बढ़िया लड़का मालूम होता है, मरीना पहली ही नजर में उसे चाहने लगी है। खैर, मुझे कुछ सो लेना चाहिए।

उसने करवट बदली, भूसे को थोड़ा ठीक-ठाक किया और गहरी नींद में सो गया।

वह जागा तो ऐसी घबराहट में मानो कोई भयंकर घटना हो गयी है। फौरन तो वह नहीं समझ पाया कि क्या हो गया है, मगर सिपाही के सहज स्वभाववश वह उछल पड़ा और अपनी पिस्तौल थाम ली। वह कह नहीं सकता था कि वह कहां है। तीखे धुएं के बादल से, जिससे लहसुन जैसी गंध आ रही थी, हर चीज ढक गयी थी, और जब हवा उस बादल को वहां ले गयी तो उसे अपने सिर के ऊपर बड़े-बड़े विचित्र तारे चमकते नजर आने लगे। चारों तरफ की चीजें इतनी साफ दिखाई देने लगी थीं, जैसे दिन के निर्मल प्रकाश में दिखाई देती हैं और माचिस की तीलियों की तरह बिखरे हुए झोपड़ी के लट्ठे, अलग हो गया छप्पर, आड़े-तिरछे शहतीर और कुछ आकारहीन चीजें उसे थोड़ी दूर पर जलती हुई दिखाई दीं। उसने कराहें, हवाई जहाजों के इंजिनों की कंपा देनेवाली घड़घड़ाहट और बम गिरने का भयानक चीत्कार सुना।

"लेट जाओ!" वह पेत्रोव पर चिल्लाया, जो विध्वंस के बीच बच रहे चूल्हे के पटरे पर घुटने के बल बैठकर पागल की भांति चारों तरफ देख रहा था।

वे लोग ईंटों पर सीधे लेट गये और उनसे सटकर [illegible] रहे। उसी क्षण बम का एक धमाका [illegible] खिड़कियों में [illegible] और धूल और सूखे चूने का एक फव्वारा उन पर बरस पड़ा।

"हिलो-डुलो मत! चुपचाप लेटे रहो!" मेरेस्येव ने आदेश दिया और फ़ौरन भाग जाने की भावना—किसी भी तरह, इस तरह पार भाग के, दौड़ जाने की अभिलाषा, जो आक्रमण के दौरान में हर आदमी महसूस करता है—उसने दबा दिया था।

बममार दिखाई न दे रहे थे। उन्होंने जो जगमगाते गोले लटकाया था, उनकी रोशनी के ऊपर अँधेरे में वे गायब हो गये थे। लेकिन उस काँपती हुई, चकाचौंध रोशनी में बम कभी-कभी प्रकाश के क्षेत्र में काले बिन्दुओं की भाँति तुरंत दिखाई दे जाते थे और धीरे-धीरे आकार में बड़ा रूप धारण करते हुए जमीन की तरफ गोता लगाते थे और ग्रीष्म की रात के अंधकार में लाल-लाल लपटें छोड़ देते थे। ऐसा लगता था कि धरती फटी जा रही है और "रं-रं-गिरा! रं-रं-गिरा!" करती गरज रही है।

विमान-चालक चूल्हे के पटरे पर समतल पड़े रहे जो हर विस्फोट के धमाके से डोल जाता था। वे अपना समूचा शरीर, कपोल और पाव पटरे से चिपकाये हुए थे और अपने को समतल करने, ईंटों से चिपकने का प्रयत्न कर रहे थे। इंजिनों की घड़घड़ाहट खत्म हो गयी और तभी पैराशूट पर नीचे उतरे रोशनदान राकेटों की चटचट और सड़क के दूसरी ओर जलते हुए खण्डहरों की गरजना सुनाई देने लगी।

"चलो, उन्होंने हमें पहला सबक दे दिया," मेरेस्येव ने अपने कपड़ों से भूसे और चूने को झाड़ते हुए कृत्रिम भाव से कहा।

"सोनेवालों का क्या हुआ?" पेत्रोव ने अपने जबड़े के तनाव को और हिचकियों को, जो गले तक उमड़ आयी थी, रोकने का प्रयत्न करते हुए चिन्ता भाव से पूछा। "और मरीना?"

वे चूल्हे से उतर आये। मेरेस्येव के पास बिजली की टार्च थी। उसके सहारे उसने फर्श पर बिखरे हुए तख्तो और लट्ठो के बीच तलाश शुरू की। वहा कोई नही था। बाद मे उन्हे पता चला कि विमान-चालको ने 'अलर्ट' सुन लिया था और वे खाई तक भागकर पहुचने में कामयाब हो गये थे। पेत्रोव और मेरेस्येव ने सारे खडहर को खोज डाला, मगर उन्हे मरीना या उसकी मा का पता न चला। उन्होंने आवाज लगायी, मगर कोई जवाब न मिला। उनको क्या हो गया? क्या वे लोग भाग निकलने मे सफल हो गये?

गश्ती दस्ते व्यवस्था फिर स्थापित करते हुए सडको पर घूम रहे थे। सैपर्स आग बुझा रहे थे, खडहरो को साफ कर रहे थे, मृतको और घायलो को खोदकर निकाल रहे थे। विमान-चालको के नाम पुकारते हुए अर्दली लोग सडक पर भाग-दौड कर रहे थे। रेजीमेंट को शीघ्र ही दूसरी जगह ले जाया जा रहा था। हवाई अड्डे पर विमान-चालक जमा किये जा रहे थे ताकि सुबह होते ही वे अपने हवाई जहाज लेकर निकल जाय। प्रारम्भिक गिनती से पता चला कि मृतको की सख्या अधिक नही थी। एक विमान-चालक घायल हो गया था, और दो मेकेनिक और कई सन्तरी, जो हवाई हमले के समय भी ड्यूटी पर रहे थे, मारे गये थे। विश्वास किया जाता था कि कई ग्राम-निवासी भी मारे गये थे, लेकिन कितने, यह जानना कठिन था अधेरे और गडबडी की वजह से।

सुबह से पहले ही, हवाई अड्डे की तरफ बढते हुए मेरेस्येव और पेत्रोव उस मकान के निकट रुके बिना न रह सके, जहां रात में सोये थे। लट्ठो और तख्तो के ऊबड-खाबड के बीच दो सैपर सिपाही एक स्ट्रेचर लिये जा रहे थे जिस पर खून से सनी चादर से ढका हुआ कोई ले जाया जा रहा था।

"कौन है वह?" पेत्रोव ने पूछा—कुणकाओ से उसका चेहरा पीला और दिल भारी हो गया।

स्ट्रेचरवाहकों में से एक मूछोंवाले बुजुर्ग सैपर ने, जिसे देखकर मेरेस्येव को स्तेपान इवानोविच की याद आ गयी, विस्तार से बताया

"एक बुढ़िया और एक लड़की। हमने उन्हें एक तलघर से निकाला है। ये लोग गिरती हुई ईंटों के शिकार हो गये। दम ही निकल गया। पता नहीं कि छोटी-सी लड़की युवती है या औरत—वह इस कदर छोटी है। देखने से लगता है कि वह सुन्दर रही होगी। एक ईंट उसके सीने पर लगी। वह ऐसी सुन्दर है जैसे छोटा बच्चा।"

उस रात जर्मन सेनाओं ने अपना आखिरी बड़ा प्रत्याक्रमण प्रारम्भ किया, और सोवियत किलेबन्दी पर उनके हमले से कूर्स्क सेलियन्त का संग्राम आरम्भ हुआ जो उनके लिए घातक सिद्ध हुआ।

३

सूर्य अभी उदय नहीं हुआ था, संक्षिप्त ग्रीष्म रात्रि का यह सबसे अंधेरा प्रहर था, किन्तु हवाई अड्डे के मैदान में गर्म किये जानेवाले इंजिन अभी से धड़धड़ाने लगे थे। ओस से भीगी घास पर फैले हुए नक्शे पर, कप्तान चेसलोव अपनी टुकड़ी के हवाबाजों को नया अड्डा और उसतक का मार्ग दिखा रहा था

"आंखें खुली रखना," वह कह रहा था। एक दूसरे को ओझल न कर बैठना। हवाई अड्डा ठीक आगे की घातों में है।"

नया अड्डा, सचमुच, युद्ध-घात में था, नक्शे पर उस जगह नीली पेंसिल की रेखा खिंची थी, एक ऐसी जगह पर जिसकी नोक जर्मन सेनाओं के मोर्चे की ओर इशारा कर रही थी। वहां जाने के लिए उन्होंने पीछे नहीं, आगे उड़ान की थी। विमान-चालक प्रसन्न थे। इसके बावजूद कि शत्रु ने फिर पहल की थी, सोवियत सेना पीछे हटने की नहीं, हमला करने की तैयारी कर रही थी।

के नीचे दब गया था। अभी अंधेरा ही था कि वे सारी तोप सेना लेकर, जिसे वे रातभर यहां एकत्र करते रहे थे, सोवियत सेनाओं की किलेबन्दी पर गोलाबारी करने लगे। लाल-लाल, कांपती हुई लौ किलेबद क्षेत्र के ऊपर आसमान में ऊंची उठ गयी। विस्फोटों से हर चीज इस तरह चंचल हो जाती मानो हर क्षण काले वृक्षों का घना जंगल उभर उठता हो। यहां तक कि जब सूरज उग आया, तब भी अंधेरा बना रहा। उस भनभनाहट, गर्जन और अंधेरे में किसी चीज को पहचानना कठिन था, और सूर्य आसमान में धुंधली-सी मटमैली लाल पूरी की तरह लटक रहा था।

सोवियत हवाई जहाजों ने एक महीने पहले जर्मन स्थितियों पर जो उड़ानें की थीं, वे बेकार नहीं गयी थीं। जर्मन कमान के इरादे

स्पष्ट हो गये थे, नक्शे पर उसकी स्थितियो और केन्द्रीयकरण के स्थानो को अंकित कर लिया गया था और एक एक वर्गाकार क्षेत्र का अध्ययन किया गया था। अपनी आदत के अनुसार फासिस्ट यह सोचते थे कि वे अपने प्रसुप्त और आशकाहीन शत्रु की पीठ मे अपनी पूरी शक्ति से कटार भोक सकेगे, लेकिन शत्रु तो सोने का बहाना मात्र कर रहा था। उसने आक्रमणकारी की बाह पकड ली और अपने इस्पाती, दानवी पजे मे जकडकर उसे चकनाचूर कर दिया। इसके पहले कि उनकी तोपो की गोलाबारी, जो दसियो किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर घमासान छेडे हुए थी, शान्त हो पाती, अपनी तोपो की गरजना से बहरे और अपनी स्थितियो पर छाये हुए बारूदी धुए से अधे जर्मनो को स्वय अपनी ही खाइयो में विस्फोटो का प्रभाव महसूस होने लगा। सोवियत तोपो का निशाना अचूक था, और उनका निशाना सिर्फ वर्ग-क्षेत्र पर ही नही होता था, जैसा कि जर्मनो ने बनाया था, बल्कि वे निश्चित लक्ष्यो, बैटरियो, टैको और पैदल सेना के जमावो को जो आक्रमण पात तक आ गये थे, पुलो को, भूमिगत शस्त्र-भण्डारो को, फौजी ओटो को और निर्देश-केन्द्रो को निशाना बना रहे थे।

जर्मन तोप सेना की तैयारिया भयानक तोप-द्वद्व के रूप मे फूट पडी, जिसमें दोनो ओर से अत्यन्त भिन्न कोटि की हजारो-लाखो तोपो ने हिस्सा लिया। जब कप्तान चेसलोव की टुकडी के हवाई जहाज नये हवाई अड्डे पर उतरे तो जमीन काप रही थी और विस्फोटो के धडाके इतने लगातार हो रहे थे कि उसने एक अनवरत शक्तिशाली भडभडाहट का रूप ले लिया, मानो कोई अनन्त रेलगाडी, सीटी देती, खडखडाती और धडधडाती हुई रेलवे पुल पर से जा रही हो और कभी उसे पार न कर रही हो। अपार, घुमडते हुए धुए से सारा क्षितिज ओझल हो गया था। छोटे-से रेजीमेंटल हवाई अड्डे पर बमबारो की लहरो पर लहरे चली आ रही थी, कभी कलहसो की पात मे, कभी सारसो की पात मे,

ग्रौर कभी खुली पात में ग्रौर तोपों की ग्रनवरत गरजना के बीच उनके वमों के गिरने की मनहूस धड्-सी ग्रावाज ग्रलग सुनाई दे रही थी।

टुकड़ियों को 'तैयारी न० २' की स्थिति में रहने का ग्रादेश मिला था। उसका ग्रर्थ था कि विमान-चालकों को कॉकपिट में ग्रपनी गद्दियों पर बैठे रहना था, ताकि ग्रासमान में पहले राकेट के छूटते ही वे उडान कर सकें। हवाई जहाजों को भोज वृक्षों के कुंज के किनारे ले जाया गया था ग्रौर पेडों की शाखाग्रों की नकाब ग्रोढा दी गयी थी। कुंज की ठंडी, ग्रधकच्ची हवा में कुछ सौंधी सी गंध थी, ग्रौर मच्छडों ने, जिनकी भनभन युद्ध की गरजना में डूब गयी थी, विमान-चालकों के चेहरों, गर्दनों ग्रौर हाथों पर बुरी तरह से हमला कर दिया था।

मेरेस्येव ने ग्रपना शिरस्त्राण उतारा ग्रौर ग्रलस भाव से मच्छड भगाते हुए, जंगल की प्रातःकालीन तीखी गंध का उपभोग करता हुग्रा गहरे विचारों में लीन बैठा रहा। ग्रगले विमान-गृह में उसके साथी का वायुयान खडा था। जब-तब, बार-बार, पेत्रोव ग्रपने कॉकपिट की गद्दी से उठ बैठता, कभी उसपर खडा तक हो जाता ग्रौर उस दिशा में देखने लगता जिस तरफ युद्ध छिडा हुग्रा था या गुजरनेवाले बमभारों के पीछे नजरें दौडाने लगता। वह ग्रपने जीवन में पहली बार ग्रसली शत्रु से मुठभेड करने के वास्ते उडान करने के लिए तडप रहा था, वह किसी 'र-५' द्वारा लटकाये हुए जीन के फूले थैलों पर नहीं, वास्तविक, सजीव, स्फूर्त शत्रु के हवाई जहाज पर गोली चलाने के लिए ग्रातुर था, जिसमें शायद खोल के ग्रंदर बैठे घोंघे की तरह वही व्यक्ति बैठा हुग्रा हो, जिसके बम ने उस छरहरी, सुन्दर लडकी को मार डाला था, जिसके विषय में उसे ग्रब ऐसा लगता था मानो उसे किसी सुन्दर स्वप्न में देखा था।

मेरेस्येव ने ग्रपने बेचैन ग्रनुगामी को निहारा ग्रौर ग्रपने मन में सोचा "हम लगभग एक ही उम्र के हैं। वह उन्नीस वर्ष का है ग्रौर

मैं तेईस। आदमी के लिए तीन-चार वर्ष का फर्क होना ही क्या है?"
लेकिन फिर भी अपने अनुगामी की अपेक्षा वह अपने को अनुभवी, गम्भीर और थकित वयोवृद्ध व्यक्ति अनुभव कर रहा था। अभी-अभी पेत्रोव अपने कॉकपिट में उछल रहा था, खिलखिला रहा था, हथेलियां मल रहा था, गुजरनेवाले सोवियत हवाई जहाजों की ओर कुछ चिल्ला रहा था, मगर वह, अलेक्सेई, अपनी सीट पर टांग फैलाये आराम से बैठा था। वह शान्त था। उसके पैर नहीं थे, और उसके लिए उड़ान करना दुनिया के किसी भी विमान-चालक की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन था, मगर इससे भी वह विचलित नहीं हुआ। उसे अपने हुनर पर पूरा विश्वास था और अपनी पंगु टांगों पर पूरा भरोसा।

'तैयारी नम्बर २' की अवस्था में वह रेजीमेंट शाम तक रही। किसी कारण उसे सुरक्षित रखा गया था। शायद वे उसकी स्थिति को समय से पहले प्रगट नहीं करना चाहते थे।

रेजीमेंट को सोने के लिए वे खोहें मिली थीं, जिन्हें जर्मनों ने इस स्थल पर अपने अधिकार काल में बनाया था। उन्हें और आरामदेह बनाने के लिए उन्होंने उनकी दीवारों को अंदर से दफ्ती और सामान बांधने के कागज से ढक दिया था। अभी भी दीवारों पर कामातुर चेहरोंवाली सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों के पोस्टकार्ड और जर्मन शहरों के भौंडे दृश्य लटक रहे थे।

तोपों का युद्ध जारी रहा। धरती कांप रही थी। दीवारों पर लगे कागज के ऊपर सूखी रेत बरस पड़ती थी और रेंगने जैसी खड़खड़ करती थी मानो खोह में कीड़ों का जोर हो।

मेरेस्येव और पेत्रोव ने फैसला किया कि वे बाहर लबादे बिछाकर खुले में सोयेंगे। हुक्म था कि वर्दी में ही सोया जाय। मेरेस्येव ने सिर्फ अपने पैर के तस्मे ढीले कर लिये और पीठ के बल लेटकर आसमान

की तरफ ताकने लगा, जो विस्फोटो की लाल कौंध से कापता-सा लगता था। पेत्रोव फौरन सो गया और नीद मे खर्राटे भरने, बडबडाने, जबडे चलाने, ओठ चाटने लगा और सोते हुए बच्चो की तरह लुढकने लगा। मेरेस्येव ने उसे अपने ग्रेट कोट से ढक दिया। यह देखकर कि उसे नीद आनेवाली नही है, वह उठ बैठा, सर्दी से कापने लगा और अपने को गर्म करने के लिए तेजी से कुछ शारीरिक व्यायाम करने लगा और एक पेड के ठूठ पर बैठ गया।

तोपो का तूफान शान्त हो गया। यहा वहा, इक्के-दुक्के, कोई तोप अकस्मात गोला उगल देती थी। कई भटके हुए गोले उडकर हवाई अड्डे के पास ही कही फट पडे। परेशान करने के लिए की जानेवाली इस गोलाबारी से अक्सर कोई चिन्तित नही होता। विस्फोट का धमाका सुनकर अलेक्सेई अपनी गर्दन तक न मोडता था, उसकी टकटकी बधी थी युद्ध पात की ओर। अधेरे मे वह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर थी। अभी भी, इतनी रात गये, गहरी, अनवरत, भारी लडाई चल रही थी, जो सोती हुई धरती पर विस्तृत ज्वालाओ की लाल दमक के रूप मे दिखाई दे रही थी जिनसे सारा क्षितिज दहक रहा था। उसके ऊपर राकेटो की कापती हुई ज्योति कौंध जाती थी—फास्फोरस की नीली-सी जर्मन राकेटो की और पीली-सी हमारे। यहा-वहा किसी लपट की लम्बी-सी जीभ निकल आती थी जो एक क्षण के लिए धरती पर से अधेरे का फर्श हटा देती थी, और उसके बाद विस्फोटो की भारी कराह छूट पडती थी।

रात्रिकालीन बममारो की भनभनाहट सुनाई दी और सारा मोर्चा उनकी लक्ष्यबेधी बहुरगी गोलियो के मोतियो से दमक उठा। तेजी से चलनेवाली विमान-भजक तोपो के गोले लहू की बूदो की भाति ऊपर उछलने लगे। धरती फिर कापी, कराही और चीत्कार कर उठी। भोज वृक्षो के शिखरो पर जो भौरे मडरा रहे थे, वे फिर भी इससे विचलित नही हुए, जगल मे दूर कही कोई उल्लू आदमियो जैसी आवाज

में बोल रहा था और अमगल की भविष्यवाणी कर रहा था, किसी झाडी मे कही खोखले स्थल पर, अपने दिवसकालीन भय से मुक्त होकर कोई बुलबुल, पहले तो कुछ हिचक के साथ, जैसे अपने कण्ठ को परख रही हो, और फिर पूरे कण्ठ से चहकने-गाने लगी मानो उसका हृदय अपने सगीत के स्वरो से फूट ही पडेगा। उसके गीत को अन्य स्वरो ने पकड लिया और शीघ्र ही यह सारा जगल जो अब युद्ध पात मे आ गया था, सभी दिशाओ से आनेवाले मधुर सगीत से भर गया। कोई आश्चर्य नही, कूर्स्क की बुलबुले सारी दुनिया में प्रसिद्ध है।

और अब वे अपने गीत से सारे आसमान को गुजाने लगी। अलेक्सेई—जिसे अगले दिन निरीक्षण के लिए उडान करना था, किसी व्यक्ति विशेष के आदेश से नही, स्वय मौत के आदेश से—बुलबुलो के इस समवेत गान के कारण सो नही सका। और उसके विचार न तो कल की बातो मे, न भावी युद्धो में, न मारे जाने की सम्भावनाओ मे डूबे थे, बल्कि उस दूरवासी बुलबुल की ओर लगे हुए थे जिसने कमीशिन के उपनगर मे उनके लिए गीत गाया था, उनकी "अपनी" बुलबुल की ओर, ओल्या की ओर, अपने जन्म के कसबे की ओर।

पूर्वी आकाश पीला पड चला। धीरे-धीरे बुलबुलो का सगीत तोपो की गरजना में डूब गया। रण-क्षेत्र के ऊपर सूर्य उदय हुआ—बडा भारी, लाल अरुण—जो गोलाबारी और विस्फोट के धुए को मुश्किल से वेध पा रहा था।

४

कूर्स्क सेलियन्त का युद्ध निर्बाध रूप से छिड गया। जर्मनो की असली योजना यह थी कि टैंक सेनाओ के तीव्र और शक्तिशाली आघात के द्वारा कूर्स्क के उत्तर और दक्षिण में हमारी किलेबन्दियो को चकनाचूर कर दें, और कैंची की कार्रवाई के द्वारा सोवियत सेना के सारे कूर्स्क

दल को घेर ले और वहा "जर्मन स्तालिनग्राद" सगठित कर ले। लेकिन रक्षा-पात की सुदृढता के कारण यह मसूबा असफल रहा। कुछ दिनो बाद जर्मन कमान यह समझ गयी कि इस रक्षा-पात को वे न तोड पायेगे, और अगर इसमे सफल भी हो गये, तो इस प्रयत्न मे उन्हे इतनी भारी क्षति उठानी पडेगी कि दुतरफी कार्रवाई मे घिराई के काम के लिए उनके पास काफी शक्ति न बची रहेगी, मगर सारी कार्रवाई को रोकने का अब समय नही रहा था। हिटलर ने इस युद्ध पर बडी आशाये—रणनीतिक, कार्यनीतिक और राजनीतिक आशाये—लगा रखी थी। पहाड पर से बर्फ की चट्टान छोड दी गयी। वह ढलान पर अधिकाधिक वेग से लुढकी और राह में जो कुछ भी मिला उसे अपने साथ लेती और कुचलती चली गयी, जिन लोगो ने उसे छोडा था, अब उनमे उसे रोकने की शक्ति न थी। जर्मन अपनी प्रगति किलोमीटरो मे नापते थे और उन्हे अपनी क्षति कई डिवीजनो, कोरो, सैकडो टैंको तथा तोपो और हजारो ट्रको के रूप मे गिननी पडती थी। बढती हुई सेनाये लहू-लुहान हो रही थी और ताकत खोती जा रही थी, जर्मन हेडक्वार्टर के अधिकारी इससे परिचित थे, लेकिन घटनाओ को रोकना उनके बस की बात नही थी और इसलिए वे युद्ध की नाटकीय ज्वालाओ में अधिकाधिक अपनी सुरक्षित सेनाओ को झोकने के लिए विवश हो रहे थे।

सोवियत कमान इस जर्मन आक्रमण को उन सेनाओ से रोक रही थी जो यहा रक्षा-पात संभाले हुए थी। फासिस्टो के बढते हुए प्रकोप पर नजर रखते हुए, उसने अपनी सुरक्षित सेनाओ को सुदूर पृष्ठ-प्रदेश में उस समय तक रखा जब तक कि शत्रु के आक्रमण का वेग समाप्त न हो गया। जैसा कि मेरेस्येव को बाद मे पता लगा, उसकी रेजीमेंट का काम उन फौजो को आड देना था जो प्रतिरक्षा के लिए नही, प्रत्याघात के लिए केन्द्रीभूत की गयी थी। इसी से यह स्पष्ट होता है कि जिन टैंक दलो और उनसे सम्बन्ध स्थापित हुई लडाकू विमानो की टुकड़ियो को

कार्यवाही करता था, ये महान युद्ध के पहले दौर में महज दर्शक बने रहे। जब शत्रु की सारी सेनाओं का गढ़ में खात्मा कर दिया गया, तो हवाई अड्डे पर 'तैयारी नम्बर २' रद्द कर दी गयी। विमान कर्मचारियों को खोहों में और दूसरी तरह उतारकर, सोने की आज्ञा दे दी गयी। मेरेस्येव और पेत्रोव ने अपने निवास-स्थान को पुनर्संगठित किया। उन्होंने सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों और विदेशी नगरों के दृश्यों को उतार फेंका और दीवारों पर से दरी और कागज उखाड़कर उनको देवदार और भोज वृक्ष की टहनियों से सजा दिया, उसके बाद खिसकती हुई रेत की रेंगती सरसराहट द्वारा खोह की शान्ति का भंग होना बंद हो गया।

एक सुबह, जब खोह के खुले प्रवेश-द्वार से उमड़कर सूर्य की उज्ज्वल किरणें, फर्श पर बिछी हुई देवदार की नुकीली पत्तियों पर पड़ने लगीं, और जब कि मित्र लोग अभी भी उन तख्तों पर पांव फैलाये लेटे हुए थे जिन्हें उन्होंने दीवार में लगा दिया था, तब ऊपर के रास्ते पर तेजी से चलनेवाले कदमों की आहट सुनाई दी और कोई व्यक्ति वह शब्द चिल्ला उठा जो मोर्चे पर जादुई शब्द होता है: "डाकिया!"

दोनो ने एक साथ अपने कम्बल फेंक दिये, मगर उधर मेरेस्येव अपने पैरों के तस्मे कसता ही रह गया और पेत्रोव भागकर निकल गया, उसने डाकिये को पकड़ लिया और विजयी भाव से अलेक्सेई के लिए दो पत्र लेकर लौट आया—एक उसकी मां का था और दूसरा ओल्या का। अलेक्सेई ने अपने मित्र के हाथ से पत्र छीन लिये, लेकिन उसी क्षण रेल पटरी पर तेजी से चोटें पड़ती सुनाई दीं, जो हवाई अड्डे से आ रही थीं और विमान-चालकों को उनके वायुयानों पर उपस्थित होने के लिए बुला रही थीं।

मेरेस्येव ने दोनों पत्रों को अपने कोट में सरका दिया और फौरन उनकी सुधि भूलकर, जंगल की उस पगडंडी पर पेत्रोव के पीछे-पीछे दौड़ गया,

जो उस स्थल की ओर जाती थी जहा विमान खडे थे। छडी टेकते हुए वह काफी तेज दौडा और बहुत थोडा लगडाता जान पडा। जब वह विमान के पास पहुचा तो इजिन का ढक्कन हटाया जा चुका था और एक चेचक-रू मजाक-पसद लडका-सा मेकेनिक उसके लिए अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

एक इजिन गरज उठा। मेरेस्येव 'छ' को देखने लगा जिसे टुकडी का कमाडर स्वय उडानेवाला था। कप्तान चेसलोव अपने विमान को चलाता हुआ खुले मैदान मे ले गया। उसने अपनी भुजा उठायी – उसका अर्थ था "तैयार!" अन्य इजिन भी गरज उठे। चक्रवात घास को जमीन तक नवाने लगा और रोते हुए भोज वृक्षो के हरे गुच्छो को हवा में इस तरह झकझोरने लगा कि ऐसा लगता था मानो वे टूटकर पेडो से अलग होने के लिए तडप रहे है।

अलेक्सेई जब अपने विमान की ओर दौडा जा रहा था, तब एक अन्य विमान-चालक उसके पास से गुजरा, जो चिल्लाकर उसे बताता गया कि टैक प्रत्याक्रमण करने जा रहे है। इसका अर्थ था कि लडाकू विमानो का काम यह था कि वे शत्रु की चकनाचूर किलेबदी पार करके बढनेवाले टैको को आड दे और आक्रमणकारी सेनाओ के लिए वायुक्षेत्र साफ रखें और उसकी सुरक्षा करे। वायुक्षेत्र की रक्षा करे? इसमे क्या था? इस प्रकार के भीषण युद्ध मे, इसका अर्थ शान्तिपूर्ण उडान नही हो सकता। उसे विश्वास था कि देर-सबेर आसमान मे शत्रु से मुठभेड अवश्य होगी। अब परीक्षा थी। अब वह सिद्ध कर देगा कि वह किसी विमान-चालक से कम नही है और उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

अलेक्सेई का दिल बेचैन हो रहा था, मगर इसलिए नही कि वह मरने से डरता था; खतरे की उस भावना से भी नही, जो वीरतम और वीरतम पुरुष तक को प्रभावित करती है। उसे कुछ और ही चिन्ता थी: क्या शस्त्र-निरीक्षको ने मशीनगनो और तोपो की परीक्षा कर ली

है? क्या उसके नये शिरस्त्राण के कर्णयत्र ठीक है उसने जिन्हे अभी तक युद्ध मे नही पहना था? अगर शत्रु से मुठभेड हो गयी तो पेत्रोव पीछे तो नही रह जायगा या वह बहुत जल्दबाजी से कार्यवाही तो न करेगा? छडी कहा है? वह वसीली वसील्येविच की भेंट को खोना नही चाहता और उसे यहा तक चिन्ता हुई कि खोह मे वह जो पुस्तक छोड आया है—एक उपन्यास, जिसे उसने पिछले दिन अत्यन्त मर्मस्पर्शी स्थल तक पढ लिया था और जिसे जल्दी मे मेज पर छोड आया था—उसपर कोई हाथ न मार दे। उसे याद पडा कि उसने पेत्रोव से विदाई भी नही की है, इसलिए उसकी तरफ उसने अपने कॉकपिट मे हाथ हिलाया। मगर पेत्रोव ने उसे देखा भी नही। चमडे के शिरस्त्राण से घिरे हुए उसके चेहरे पर दागो-सी लालिमा बिखरी हुई थी। वह कमाडर की उठी हुई भुजा को अधीरता से ताक रहा था। भुजा गिर गयी। कॉकपिट के ढक्कन बद कर दिये गये।

रेखा पर तीन विमानो का दल खर्राटे भरता चल पडा और उड गया, और उसके पीछे एक और, तथा तीसरा दल भी उड गया। अभी पहला दल आकाश में फिसल गया। मेरेस्येव का दल भी फुदककर उड गया और उनके पीछे चल पडा—अपने नीचे समतल धरती को झूलती छोडते हुए। प्रथम विमानत्रयी को दृष्टि में रखते हुए मेरेस्येव ने उसके पीछे अपना दल लगा दिया और उसके पीछे तीसरा आ रहा था।

वे आगे की पात तक पहुच गये। गोलो से छिद्रित और ध्वस्त धरती आसमान से ऐसी दिखाई दे रही थी मानो पहली मूसलाधार वर्षा के बाद की कच्ची रेतभरी सड़क हो। ध्वस्त खाइया, फुसियो जैसी दिखाई देनेवाली ओटें और गोलाबारी के स्थल जो लट्ठो और ईंटो के ढेर मात्र रह गये थे। सारी ऊबड-खाबड घाटी मे पीली चिनगारिया उछल पड़ती थी और बुझ जाती थी। वे उस घनघोर युद्ध के अग्निकाण्डो से

आ रही थी, जो नीचे छिड़ा हुआ था। ऊपर से सब कुछ कितने नन्हे, खिलौने जैसे और विचित्र जान पडते थे! शायद ही कोई विश्वास कर पाता कि नीचे हर चीज जल रही है, दहाड रही है, उथल-पुथल मचा रही है और विकृताग धरती पर धुए और कालिख के बीच स्वय मौत रेंग रही है और जबर्दस्त फसल काट रही है।

वे अगली पात के ऊपर उडे, शत्रु के पृष्ठ-प्रदेश पर उन्होंने अर्धवृत्ताकार चक्कर लगाया और फिर युद्ध-मान पार कर लौट आये। किसी ने उनपर गोला न चलाया। नीचे के लोग अपने ही भयकर लौकिक सघर्ष मे इतने व्यस्त थे कि उन नौ छोटे-से वायुयानो की तरफ कौन ध्यान देता जो ऊपर चक्कर काट रहे थे। लेकिन टैंक-चालक कहा है? आहा! वे है! मेरेस्येव ने उन्हे जगल से प्रगट होकर रेंगते देखा, एक के पीछे एक, जो आसमान से मटमैले, भौंडे गुबरैले जैसे लगते थे। शीघ्र ही उनकी बडी तादाद प्रगट हो गयी, लेकिन और भी अधिक टैंक झाडियो के पीछे से निकल आये और सडको तथा घाटियो को पार करते बढने लगे। उनमे से पहले टैंक पहाडी पर चढ गये और गोलो से फटी धरती पर पहुच गये। उनके छोटे धडो से लाल चिनगारिया छूटने लगी। इस भयकर टैंक-आक्रमण को, जर्मन किलेबन्दी के अवशेषो के विरुद्ध सैकडो मशीनो के इस तीव्रतम धावे को, अगर कोई बच्चा या हौलदिल औरत तक, उस सुविधाजनक स्थान से देखती, जहा से मेरेस्येव देख रहा था, तो उसे तनिक भी डर न लगता। इसी क्षण अपने शिरस्त्राण के कर्णयन्त्र की खट्-खट् और भन्-भन् के बीच उसने कप्तान चेसलोव की फटी आवाज सुनी जो इस समय भी मद-सी थी

"तैयार! मैं हू चीता नम्बर तीन। मैं हू चीता नम्बर तीन। 'जकर', 'जकर' आ रहे है, दाहिनी ओर घुमाओ!"

अलेक्सेई ने कही अपने सामने छोटी-सी आडी रेखा देखी। वह कमाडर का विमान था। वह विमान हिल-डुल रहा था। इसका अर्थ था "जैसा मैं करू, वैसा करो!"

मेरेस्येव ने अपने दल के लिए उस आदेश को दुहराया। उसने चारो ओर देखा उसका अनुयायी बगल मे ही लटका था, लगभग उसके समानान्तर। बढ़िया छोकरा है।

"कसकर सभालना, बुढ़ऊ!" उसने चिल्लाकर उससे कहा।

"समझा हू," ऊबड-खाबड कड-कड और भन्-भन् के बीच उत्तर मिला।

उसने फिर पुकार सुनी

"मै हू चीता नम्बर तीन, चीता नम्बर तीन!" और फिर हुक्म मिला "मेरा पीछा करो!"

शत्रु पास ही था। उनके नीचे दोहरी कलहस जैसी पात मे जिसे जर्मन पसन्द करते थे, 'जू-८७' नाम के एक इजिनवाले गोताखोर बममारो की एक टुकडी थी। उनके पहिये छिपाये नही थे और उडते समय पेट के नीचे ऐसे लटके रहे जो फैलाये हुए पैरो की तरह लगते थे। इन कुख्यात गोताखोर बममारो ने पोलैड, फ्रास, हालैड, डेनमार्क, बेल्जियम, और युगोस्लाविया के युद्धो में डाकुओ जैसी कुप्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी; इस नये फासिस्ट अस्त्र के बारे मे युद्ध के आरम्भ में सारे ससार के समाचारपत्र भयानक कथाओ का वर्णन किया करते, मगर सोवियत सघ में शीघ्र ही ये पुराने पड गये। असख्य मुठभेडो मे सोवियत विमान-चालको ने उनकी कमजोरिया खोज ली थी और हमारे सोवियत हवाबाज इन जकरो को छोटे दर्जे का शिकार समझने लगे मानो वे जगली मुर्ग पक्षी या खरगोश हो जिनके शिकार में शिकारी के असली हुनर की आवश्यकता नही होती।

कप्तान चेसलोव ने अपनी टुकडी को दुश्मन से सीधा न भिडाया, बल्कि एक चक्कर खिलाया। मेरेस्येव ने सोचा कि सचेत कप्तान "सूरज को पीठ पीछे" कर देना चाहता है और फिर सूरज की चकाचौध किरणो की नकाब ओढकर, अदृश्य भाव से शत्रु के पास पहुच जाना चाहता है

श्रौर हमला कर देना चाहता है। अलेक्सेई मन ही मन मुसकुराया श्रौर सोचने लगा "यह उलझी हुई चाल चलकर वह इन जकरो को बडी इज्जत बख्श रहा है। फिर भी, सावधान रहने मे कोई हानि नही होगी।" उसने फिर चारो श्रोर देखा। पेत्रोव उसके पीछे था। वह उसे एक सफेद बादल की पृष्ठभूमि मे स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

अब जर्मन टुकडी उनकी दायी श्रोर थी। वे बडी सुन्दर पात मे, पूर्ण सामजस्य के साथ उड रहे थे, मानो किसी अदृश्य डोरे से बधे हो। उनके ऊपर जो सूर्य-रश्मिया गिर रही थी, उनसे उनके पख चकाचौध हो रहे थे।

अलेक्सेई ने कमाडर के हुक्म के श्राखिरी शब्द सुने

" . चीता नम्बर तीन! हमला करो!"

उसने देखा, चेसलोव श्रौर उसके अनुगामी बाज की तरह शत्रु की पात पर टूट पडे। अन्वेषक गोलियो की एक डोरी-सी निकटतम जकर से जा टकरायी, जकर गिर गया श्रौर चेसलोव, उसका अनुगामी श्रौर उसके दल का तीसरा विमान, जर्मन पात की दरार मे घुस गये। जर्मनो ने फिर अपनी पात बाध ली श्रौर पूर्णतया पातबद्ध जकर अपनी राह चलते रहे।

अलेक्सेई ने अपनी पुकार का सिगनल कर दिया श्रौर चिल्लाना चाहता था "हमला कर दो!" लेकिन वह इतना उत्तेजित था कि सिर्फ कह सका: "श्रा-श्रा-श्रा!" लेकिन उसने जर्मनो की साफ-सुथरी उडान-पात के अलावा श्रौर कुछ न देखते हुए स्वय ही धावा बोल दिया था। उसने अपना निशाना उस हवाई जहाज को चुना था जिसने चेसलोव द्वारा गिराये गये विमान का स्थान ले लिया था। उसने अपने कान मे एक गूज सुनी श्रौर उसका हृदय इतने उग्र रूप से धडकने लगा कि उसकी सास रुकने-सी लगी। जो निशाना उसने चुना था, उसपर उसने नजर बाध ली श्रौर दोनो अगूठे घोड़ो पर जमाये हुए वह उसकी

[illegible] ने अनुभव किया कि [illegible] पूरी तरह [illegible] हो गया है। [illegible] इस तरह अनुभव करने लगा मानो [illegible] आगे और पीछे [illegible] अनुभव कर रहा था, और उसे ऐसा लगा मानो [illegible], [illegible] में संवेदनशीलता पैदा हो गयी है और [illegible] हुए विमान से अपने को एकाकार करने में बाधक नहीं बन रहे हैं। फासिस्ट विमान का ऐश्वर्यपूर्ण, नक्काशीदार ढाँचा उसकी नजर से ओझल हो गया, मगर उसने उसे फिर पकड़ लिया। वह सीधा उभार दबाया और पोरा दबा दिया। उसने गोली दगने की आवाज नहीं सुनी, अग्नेय गोलियों के तार तक भी वह नहीं देख सका, लेकिन वह जान गया था कि उसका निशाना बैठ गया है और इस विश्वास के साथ कि उसका शिकार गिर गया है और उसका विमान अब उसमें नहीं टकरा सकता, वह अपना विमान सीधी दिशा में उड़ाये चला गया। अपनी दिशा में नजरें हटाकर देखने पर उसे, पहले बममार के करीब ही, दूसरा बममार भी गिरता नजर आया। क्या उसने दो बममारों को शिकार बनाया है? नहीं। यह पेत्रोव की कारगुजारी थी। वह दाहिनी तरफ था। नये लड़ाके के लिए यह शानदार कामयाबी है! उसे अपने युवक मित्र की सफलता पर अपनी सफलता से अधिक आनन्द मिला।

जर्मन पातवन्दी की दरार के वीच से दूसरा दल भी गुजर गया। और तभी मजेदार घटना घटी। जर्मन विमानो की दूसरी लहर ने, स्पष्ट ही जिसे कम अनुभवी विमान-चालक चला रहे थे, अपनी पात तोड दी। चेसलोव दल के विमान इन विखरे हुए जकरो के वीच घुस गये, उनका पीछा करने लगे और उन्हे इस वात के लिए विवश कर दिया कि वे अपनी ही पातो पर अपने वम छोड दे। अपनी चाल निर्धारित करते समय कप्तान चेसलोव ने यही हिसाव-किताव लगाया था कि शत्रु को अपनी ही किलेवन्दी पर वम गिराने के लिए मजबूर किया जाय। सूरज को पीठ पीछे करना ही उसका मुख्य उद्देश्य नही था।

फिर भी जर्मन विमानो की पहली पात ने अपनी पातवदी फिर कर ली और जकर उस स्थल की तरफ वढते गये जहा टैंको ने मोर्चा वेव दिया था। तीसरे दल का हमला असफल रहा। जर्मनो ने एक भी विमान नही खोया, उलटे एक लडाकू विमान गायव हो गया जो जर्मन तोपची द्वारा निशाना वना लिया गया था। वे लोग इस स्थान के निकट पहुचते जा रहे थे जहा टैंको को अपना हमला करना था, और अपने विमानो को ऊचाई पर ले जाने का समय नही था। चेसलोव ने नीचे ही से हमला करके खतरा मोल लेने का फैसला किया। अलेक्सेई ने मन ही मन इसका समर्थन किया। वह स्वय इस वात के लिए उत्सुक था कि शत्रु के पेट में "चोट" करने के लिए खडी गति से हमला कर सकने की जो क्षमता 'ला-५' विमानो में है, उसका लाभ उठाया जाय। पहला दल ऊपर की तरफ धावा कर रहा था और फव्वारे की भाति गोलिया छोड रहा था। फौरन दो जर्मन विमान पात मे गिर गये। उनमे से एक के दो खण्ड अवश्य हो गये होगे, क्योकि वह यकायक फट गया और उसकी पूछ मेरेस्येव के इजिन से टकराते वाल-वाल वची।

"पीछे आओ!" मेरेस्येव चिल्लाया और पेत्रोव के विमान की छायाकृति पर कनखियो से नजर डालकर, उसने अपने विमान के डडे अपनी ओर खीच लिये।

धरती उलट गयी। अलेक्सेई अपने आसन पर इस तरह गिर पड़ा मानो उसपर भारी चोट की गयी हो। उसने अपने मुह और होठो पर खून का स्वाद महसूस किया, उसकी आखो के सामने लाल धुध छा गयी। उसका विमान लगभग सीधे खडी दिशा में तेजी से झपटा। अपने आसन पर पीठ से टिके बैठे बैठे उसकी आखो के सामने एक जकर का धारीदार पेट, उसके मोटे-मोटे पहियो के विचित्र-से ढक्कन और उनपर चिपके हुए हवाई अड्डे की मिट्टी के लौंदे तक कौंध गये।

उसने घोडे दबा दिये। उसने शत्रु के विमान मे कहा निशाना मारा—पेट्रोल की टकी में, इजिन मे या बम रखने के स्थल पर—यह वह न जान सका, मगर शत्रु का हवाई जहाज विस्फोट के भूरे धुए मे तत्क्षण विलीन हो गया।

विस्फोट के झोके से मेरेस्येव का विमान एक तरफ फेका गया और वह एक अग्नि-पुज के पास से गुजर गया। वह अपने विमान को सतह पर ले आया और आसमान की छानबीन करने लगा। उसका अनुगामी दायी तरफ था—अनन्त नीलिमा में सफेद बादलो के सागर पर तैरता हुआ, और ये बादल साबुन के बुलबुलो-बगूलो जैसे लग रहे थे। आसमान वीरान था, सिर्फ क्षितिज पर, सुदूर बादलो की पृष्ठभूमि मे, छोटे-छोटे बिदु दृष्टिगोचर हो रहे थे—वे जकर विमान थे जो विभिन्न दिशाओ में बिखर गये थे। अलेक्सेई ने घडी देखी और चकित रह गया। उसे ऐसा लग रहा था कि युद्ध कम से कम आधे घटे चला होगा और उसका पेट्रोल कम हो गया होगा, लेकिन घडी से पता चला कि वह सिर्फ साढे तीन मिनट चला था।

"जिंदा हो?" उसने अपने अनुगामी की ओर देखकर पूछा, जो "रेगकर" आगे निकल आया था और अब उसके समानान्तर चल रहा था।

अपने कर्णयन्त्र में अनेक ऊबड़-खाबड स्वरो के बीच उसने दूरागत, हर्षित स्वर सुना

"जिदा हू   नीचे   नीचे देखो "

नीचे एक ध्वस्त, कटी-फटी, पहाडी घाटी मे कई स्थानो पर पेट्रोल की टकिया जल रही थी और शान्त हवा मे घने धुए के बादल खम्भो की भाति ऊचे उठ रहे थे। लेकिन अलेक्सेई ने शत्रु के विमानो के अवशेषो को जलते हुए न देखा। उसकी आखे मटमैले हरे गुवरैलो पर जमी हुई थी जो वडी तादाद मे मैदान पार करते भागे चले जा रहे थे। वे दो घाटियो के किनारे-किनारे रेगते शत्रु की स्थितियो तक पहुच गये थे और उनमे से आगे के टैक अव खाइया पार करने लगे थे। अपने छोटे छोटे सूडो से लाल चिनगारिया उगलते हुए वे शत्रु की किलेवन्दी की पात को तोडकर घुस गये और अधिकाधिक आगे वढते गये – हालाकि उनके पीछे के क्षेत्र मे अभी भी गोले कौध जाते थे और जर्मन तोपो से निकलता हुआ धुआ दिखाई दे रहा था।

मेरेस्येव जानता था कि शत्रु की चकनाचूर स्थितियो की गहराई मे इन सैकडो गुवरैलो के पहुच जाने का क्या मतलव है।

. वह ऐसा दृश्य देख रहा था जिसके बारे मे अगले दिन सोवियत जनता ने और सभी स्वतन्त्रता-प्रेमी देशो की जनता ने वडे आनन्द और गर्व से पढा। कूर्स्क सेलियन्त के एक भाग मे सेना ने दो घटे के भयकर तोप-युद्ध के वाद शत्रु की प्रतिरक्षा-पात को वेध दिया था, और अपनी सारी फौजे लेकर उस दरार से घुस पडी थी, और उन सोवियत सेनाओ के लिए मार्ग साफ कर दिया था जो अव प्रत्याक्रमण कर रही थी।

कप्तान चेसलोव के नौ विमानो की टुकडी मे से दो अपने अड्डे नही लौट सके। नौ जकर मार गिराये गये। जहा तक विमान गिनने का सवाल है, नौ के मुकावले दो का अनुपात निश्चय ही वहुत वढिया जीत है। किन्तु दो साथियो की क्षति से विजय का आनन्द मारा गया। अपने विमानो से उतरने के वाद विमान-चालको ने कोई हर्ष नही प्रगट

किया और न युद्ध की घटनाओं पर सहज विचार करते हुए, जिनसे था शोर-गुल किया, और उन खतरों के साक्षात अनुभव से फिर नहीं ओतप्रोत हुए जिनसे वे गुजरे थे—जैसा कि हर सफल मुठभेड़ के बाद वे किया करते थे। उदास भाव से वे प्रधान के सामने पहुंचे, सूखे, संक्षिप्त वाक्यों में परिणामों का ब्यौरा दिया और एक दूसरे की तरफ देखे बिना ही विदा हो गये।

अलेक्सेई रेजीमेंट में नया व्यक्ति था। जो दो व्यक्ति मारे गये उन्हे वह नही जानता था। मगर वह भी विद्यमान वातावरण से प्रभावित हो गया। उसके जीवन की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण घटना घट चुकी थी—वह घटना, जिसके लिए वह अपने शरीर और मस्तिष्क की पूरी शक्ति से प्रयत्न कर रहा था और जिस पर उसके जीवन का भविष्य, स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों की पांत में उसका लौटना, निर्भर करता था। इसके बारे में वह कितनी बार स्वप्न देख चुका था—अस्पताल की शैय्या पर, और बाद मे चलना-फिरना और नृत्य करना सीखने के दौर में, और घोर प्रशिक्षण के द्वारा विमान-चालक के रूप में अपना हुनर पुन प्राप्त करने के काल में! और जब चिरप्रत्याशित दिन आ गया था, जब वह दो जर्मन विमानो को मार गिरा चुका था और जब विमान-चालकों के परिवार में वह एक समान सदस्य का स्थान पा चुका था, तब वह भी अन्य सब की तरह प्रधान के सामने खडा हो गया, अपनी कार्यवाही का ब्यौरा दिया, परिस्थितियो का विवरण दिया और अपने अनुगामी की प्रशसा की, और फिर एक भोज वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया तथा उन लोगो के विषय मे सोचने लगा जो उस दिन वापिस नही लौटे थे।

सिर्फ पेत्रोव ही ऐसा व्यक्ति था जो नगे सिर, हवा के झोको मे अपने सुन्दर केश लहराते हुए सारे हवाई अड्डे पर दौड लगाता घूम रहा था, और जो भी मिल जाते, उनकी आस्तीन पकडकर उन्हे सुनाने लगता

" ठीक मेरी ही बगल मे वे थे, बस एक हाथ की दूरी होगी . तो, सुनो मैंने सीनियर लेफ्टीनेंट को उस नेता पर निशाना साधते देखा। उसके बगलवाले पर मेरी नजर पडी। बस, बैंग!"

वह दौडकर मेरेस्येव के पास पहुचा, उसके पैरो के पास नर्म, मखमली घास पर लुढक गया और लेट गया, लेकिन इस आरामदेह स्थिति मे भी वह पडा न रह सका, वह उछल पडा और बोला.

"तुमने तो आज कमाल की कलाबाजिया दिखायी! शानदार! मेरा तो दम रुक गया था पता है, मैंने उस आदमी को कैसे मार गिराया था? सुनो तो मै तुम्हारे पीछे-पीछे चलता गया और उसे ठीक अपनी बगल मे देखा, इतने ही पास जैसे कि अभी तुम बैठे हो "

"एक मिनट ठहरो, बुढऊ," अलेक्सेई ने टोका और जेबे टटोली। "वह चिट्ठिया! उन चिट्ठियो का मैंने क्या किया?"

उसे उन पत्रो की याद हो आयी जो उसी दिन प्राप्त हुए थे और जिन्हे पढने का समय न मिला था। जब उन पत्रो को वह जेबो मे भी न पा सका तो उसका सारा शरीर ठडे पसीने से नहा गया। उसने अपना हाथ कोट के अन्दर डाला, लिफ़ाफो के खडखडाने की ध्वनि सुनी और चैन की सास ली। उसने ओल्या का पत्र निकाला और अपने उत्साही युवक मित्र की कथा की उपेक्षा करके उसने लिफाफे को एक तरफ से फाड डाला।

तभी एक राकेट उछला। आसमान में लाल ज्वाला का साप लहराने लगा, हवाई अड्डे पर उसने चक्कर लगाया और एक स्याह, धीरे-धीरे घुलती हुई रेखा छोडकर गायब हो गया। विमान-चालक कमर कसकर खडे हो गये। अलेक्सेई ने पत्र का एक शब्द भी पढे बिना उसे अपने कोट में खिसका दिया लिफाफा खोलते समय उसने कागज के अलावा कोई सख्त चीज भी रखी महसूस की थी। अब सुपरिचित दिशा में अपने दल के आगे-आगे उडते हुए, उसने कई बार लिफाफे को छुआ और कल्पना करने लगा कि वह क्या है।

जिस दिन टैंक सेना ने शत्रु की पातों को तोड़ा, उस दिन से गार्ड्स लड़ाकू विमान रेजीमेंट के लिए—जिसमें अलेक्सेई काम कर रहा था—अत्यन्त व्यस्त काल प्रारम्भ हुआ। दरार के क्षेत्र के ऊपर टुकड़ी के बाद टुकड़ी जाती थी। युद्ध से लौटने के बाद एक उतरी कि दूसरी आसमान में पहुंच गयी, और पेट्रोल के ट्रक उन विमानों की तरफ दौड़ पड़ते थे, जो अभी ही लौटे थे। खाली टंकियों में पेट्रोल बड़ी उदारता से उड़ेला जाता था। गर्म इंजिनों के ऊपर ऐसी कांपती हुई भाप नजर आती थी जैसे तप्त ग्रीष्म की वर्षा के बाद खेतों से उठती है। विमान-चालक भोजन तक के लिए अपने कॉकपिट से बाहर नहीं आते थे। अलुमीनम के कटोरदानों में भोजन वहीं ले आया जाता था। लेकिन खाने में किसी को रुचि न थी, खाना उनके गले में अटकने लगता था।

जब कप्तान चेसलोव की टुकड़ी फिर उतरी और जंगल तक ले जाये जाने के बाद विमानों में फिर पेट्रोल भरा जाने लगा तो मेरेस्येव एक आनन्ददायक, टीस-सी पैदा करनेवाली थकान को अनुभव करता, अपने कॉकपिट में मुसकुराता हुआ बैठा रहा, वह अधीरता से आसमान की ओर देखता जाता और पेट्रोल भरनेवालों को जल्दी करने के लिए कहता जाता। वह फिर आसमान में पहुंच जाने और अपनी परीक्षा करने के लिए व्याकुल था। वह बार-बार अपना हाथ कोट के अन्दर डाल लेता और खड़खड़ाते लिफाफों को टटोल लेता, मगर इस स्थिति में उसका पढ़ने को जी न हुआ।

शाम से पहले तक, जब तक दिन ढलने न लगा, तब तक विमान-चालकों को अवकाश न दिया गया। मेरेस्येव अपने निवास-स्थल तक जंगल की उस छोटी-सी पगडंडी से न रवाना हुआ, जिससे वह अक्सर जाता था, बल्कि उसने घास-पात से ढके मैदान में होकर लम्बा रास्ता पकड़ा। अनन्त प्रतीत होनेवाले दिन के क्षण-क्षण परिवर्तित इतने अनुभवों

के बाद, इतने कोलाहल और खीचतान के बाद, अब वह अपने विचारो को सजोना चाहता था।

बडी स्वच्छ शाम थी—सौरभपूर्ण और इतनी शान्त कि सुदूर गोलाबारी की गडगडाहट अब किसी युद्ध की आवाज नही, किसी तूफान के गुजरने की गरजना जैसी लग रही थी। यह रास्ता एक ऐसे मैदान से जाता था जो पहले राई का खेत रहा होगा। उदास-सी घास-पात जो साधारण मानवीय ससार मे किसी अहाते के कोने मे या खेत के किनारे पत्थरो के ढेर पर चोरी-चोरी अपने नाजुक डठलो को ऊचा उठाती है—ऐसी जगहो पर जहा उसके स्वामी की नजरे मुश्किल से पहुच पाती है—वही एक ठोस दीवार की भाति, भारी-भरकम, उद्दड और शक्तिशाली रूप मे यहा खडी थी और उस धरती पर हावी हो गयी थी जिसे मेहनतकशो की पीढियो ने अपना खून पसीना एक कर उर्वरा बनाया था। सिर्फ यहा-वहा, जगली राई की पतली-सी बाले, दूब की कमजोर पत्तियो की भाति, इस समूह के विरुद्ध सघर्ष कर रही थी। घास-पात ने मिट्टी का सारा तत्व पचा लिया था, सूर्य की सारी किरणो को सोख लिया था, राई को प्रकाश और जीवन-शक्ति से वचित कर दिया था और इसलिए राई की चद बाले भी फूलने से पहले ही मुरझा गयी थी और उनमे अनाज कभी नही आया।

और मेरेस्येव सोचने लगा फासिस्ट भी इसी तरह हमारे खेतो मे जडे जमाना चाहते थे, हमारी मिट्टी का सारा तत्व पचा जाना चाहते थे, हमारी समृद्धि को लूट लेना चाहते थे और इसी भयकर तथा उद्दड भाव से सूरज की रोशनी से हमे वचित कर देना चाहते थे और हमारी महान, श्रम-प्रिय, शक्तिशाली जनता को उसके खेतो और बागीचो से भगा देना चाहते थे, उन्हे सर्वस्व से वचित कर देना चाहते थे और उनपर इसी तरह छा जाना और कुचल देना चाहते थे जिस तरह घास-पात ने इन नन्ही बालो को कुचल दिया है जिनमे शक्तिदायक और सुन्दर

अनाज की बाहरी समानता भी शेष नहीं रह गयी है। बाल-सुलभ उत्साह से प्रेरित होकर, उसने अपनी आबनूसी छड़ी घुमायी और लाल-लाल, परों जैसी घास-पात पर फटकार दी और जब उसकी अहंकारी शीशों की पात की पात नीचे झुक गयी तो उसमें उल्लास भर गया। उसके चेहरे से पसीना चूने लगा, लेकिन वह उस घास-पात पर छड़ी फटकारता ही रहा जिसने राई का गला रौंद दिया था। और उसके थकित शरीर में सघर्ष और क्रियाशीलता की जो संवेदना पैदा हो गयी, उससे वह आनन्दित हो उठा।

नितान्त अप्रत्याशित रूप से एक जीप उसके पीछे आकर घर्र-घर्र करने लगी और ची बोलते हुए ब्रेकों के बल सड़क पर रुक गयी। मुड़कर देखे बिना मेरेस्येव भाप गया कि रेजीमेंटल कमाण्डर उस तक पहुच गया है और उसको यह बचकाना काम करते पकड़ लिया है। उसके कानों तक लज्जा की लालिमा दौड़ गयी और यह बहाना करते हुए कि उसने कार के आगमन की आवाज सुनी ही नहीं है, वह अपनी छड़ी से जमीन खोदने लगा। लेकिन उसने कर्नल को कहते सुना

"इन्हे काट रहे हो? वाह क्या बढ़िया काम है सुनिये, जनाब, मै तुम्हारे लिए कोना-कोना छानता घूम रहा हू। हर आदमी से पूछ रहा हू हमारा वीर-नायक कहा गया? और वह है कि यहा घास-पात से लड़ रहा है।"

कर्नल जीप से उछलकर उतर आया। मोटर चलाना उसे पसन्द था, फुर्सत के वक्त वह अपनी कार लिये उसी तरह घूमता-फिरता था जैसे वह कठिन अभ्यासों में अपनी रेजीमेंट का नेतृत्व करना पसद करता था, और शाम को मेकेनिकों के साथ तेल सने इंजिनों से खिलवाड़ करता था। वह आम तौर पर नीली पोशाक पहनता था और सिर्फ उसकी छरहरी, रोबदार आकृति और उसकी चुस्त, नयी वायुसेना की टोपी से ही उसमें और उन काम-काजी अशुद्ध मिस्त्रियों में भेद किया जा सकता था।

मेरेस्येव अभी भी छडी से जमीन कुरेदता किंकर्त्तव्यविमूढ खडा था। कर्नल ने उसके कधे पर हाथ रखा और कहा

"जरा देखे तो तुम्हारा चेहरा। हुह लानत है शैतान पर! कोई खास बात नही! मै अब इकबाल करता हू। जब तुम हमारे यहा आये थे, तब तुम्हारे बारे में सेना के हेडक्वार्टर पर जो कुछ कहा-सुना जा रहा था, उस सबके बावजूद मैने यकीन नही किया था कि तुम लडाई के काबिल भी हो। फिर भी तुम खूब निकले! और कैसे! यह है हमारी माता रूस! बधाई! मै तुम्हे बधाई देता हू और सराहना करता हू। 'बावीपुरी' की तरफ जा रहे हो? चढ चलो, मै तुम्हे पहुचा दूगा।"

जीप लपकी और मैदान की सडक पर पूरी रफ्तार से चल पडी—मोड पर पागलो की तरह लडखडाती हुई।

"मुझे बताना, शायद तुम्हे किसी चीज की जरूरत हो या किसी तरह की तकलीफ हो? मदद लेने मे न हिचकना, तुम इसके हकदार हो," कर्नल ने मार्ग-विहीन झाडियो के बीच और 'बाबियो' के बीच—अपने क्वार्टरो को विमान-चालको ने यही नाम दे रखा था—होशियारी से कार चलाते हुए कहा।

"मुझे किसी चीज की जरूरत नही है, कामरेड कर्नल। मै दूसरो से किसी भाति भिन्न नही हू। अच्छा हो, अगर लोग यह भूल जाय कि मेरे पैर नही है," मेरेस्येव ने जवाब दिया।

"हा, तुम ठीक कहते हो। तुम कहा रहते हो? इसमे?"

कर्नल ने खोह के द्वार पर यकायक गाडी रोक दी और मेरेस्येव उतर ही पाया था कि जीप भोज और बलूत वृक्षो के बीच सर्पाकार चाल से जगल पार करती उड गयी।

अलेक्सेई खोह में न गया, बल्कि एक भोज वृक्ष के तने मखमली, कुकुरमुत्ते की गध से सुवासित काई पर बैठ गया और सावधानी से

लिफाफे के अन्दर से ओल्या का पत्र निकला। एक फोटो-चित्र उससे खिसककर घास पर गिर पड़ा। अलेक्सेई ने उसे शीघ्रतापूर्वक उठा लिया, उसका दिल तेजी से और टीस के साथ धड़कने लगा।

फोटो-चित्र में एक सुपरिचित और फिर भी लगभग अनपहचाना मुखड़ा उसकी ओर झांक उठा। यह ओल्या थी फौजी वर्दी में कोट, पेटी, परतला, लाल झण्डे का पदक और गार्ड्स का बैज — और यह सब उसपर कितना फब रहा था। वह अफसरों की पोशाक में एक दुबले-पतले, सुन्दर लड़के की भांति दिखाई दे रही थी। सिर्फ यह कि इस लड़के का चेहरा थका हुआ था और उसकी बड़ी-बड़ी गोल, चमकदार आखों में यौवनहीन मर्मवेधक भाव था।

अलेक्सेई उन आखों की ओर बड़ी देर तक, टकटकी बाधे देखता रहा। उसके हृदय में वही अवर्णनीय मधुर वेदना भर गयी थी जो मात्र को किसी परमप्रिय गीत की दूरागत स्वर-लहरी सुनकर उत्पन्न हो जाती है। अपनी जेब में उसे ओल्या का पुराना फोटो भी मिल गया जो सफेद, तारों जैसे बाबूनो के बीच पुष्पाच्छादित कुंज की पृष्ठ-भूमि में सूती छींट की फ्राक पहने हुए लिया गया था। यह बात विचित्र ही है कि यह वर्दी, धारी-थकी हुई लड़की, जिसे उसने कभी नहीं देखा था, उसको उस लड़की से अधिक प्रिय प्रतीत हुई जिससे वह परिचित था। नये फोटो के पीछे यह आलेख था "भुलाना नहीं।"

पत्र संक्षिप्त और उल्लासपूर्ण था। यह लड़की अब सेपर सैनिकों की प्लैटून की कमांडर थी — सिर्फ यह कि यह प्लैटून युद्ध में नहीं, शान्तिपूर्ण कार्य में लगी हुई थी, वह स्तालिनग्राद के पुनर्निर्माण में सहायता कर रही थी। उसने स्वयं अपने विषय में बहुत कम लिखा था, लेकिन उस महान नगर के विषय में, उसके पुनर्निर्मित खंडहरों के विषय में, उस नगर का निर्माण करने के लिए देश के विभिन्न भागों से जो महिलाएं, युवतियां और युवक आये थे और तहखानों में, लड़ाई के बाद

वीरान पड़े हुए गोलाबारी के स्थलों पर, गाँवों और रास्तों पर तथा रेलवे के डिब्बों, मकानों की फूस की झोपड़ियों और गोदामों में रह रहे थे, उनके बारे मे लिखते हुए वह कभी नही थका रही थी। उसने लिखा था, लोग कह रहे हैं कि जो भी निर्माण-कार्य अच्छा करेगा, उसे उस पुनर्निर्मित नगर मे रहने के लिए स्थान दिया जायगा। अगर यह सच निकला तो अलेक्सेई यह विश्वास करे कि युद्ध के बाद उसे एक विश्राम-स्थल अवश्य प्राप्त होगा।

रात की रोशनी थोड़ी ही देर रही, जैसा कि ग्रीष्म काल मे होता है। अलेक्सेई ने पत्र की आखिरी पंक्तियां अपनी टार्च की रोशनी में पढ़ी। जब वह पढ़ चुका तो उसने रोशनी की एक किरण उस फोटो पर डाली। सिपाही लड़की की दृष्टि मे निष्कपटता और गम्भीरता थी। "प्रिये, तुम्हे कितने कठिन दिन देखने पड रहे है युद्ध ने तुम्हे भी नही छोडा, लेकिन उसने तुम्हे टूक-टूक नही किया। क्या तुम इतजार कर रही हो? इतजार करना, इतजार करती रहना, मैं आऊगा। तुम मुझे प्यार करती हो। तुम प्यार किये जाना प्रिये!" और यकायक अलेक्सेई को बडी शर्मिन्दगी महसूस हुई कि उसने पूरे अठारह महीने तक उससे, एक स्तालिनग्रादी वीरागना से, उस विपत्ति को छिपाया जो उसपर टूट पडी थी। उसने यह प्रेरणा अनुभव की कि वह तुरत खोह में जाये और फौरन बडी ईमानदारी से और दिल खोलकर सब बातें लिख दे—ताकि वह शीघ्र ही दो टूक फैसला कर ले, जितना जल्दी हो, उतना ही अच्छा। यदि हर बात निश्चित हो जाय, तो दोनो को ही राहत मिलेगी।

उस दिन की सफलता के बाद वह उससे समानता के स्तर पर बात कर सकता था। वह अब न सिर्फ उडान कर रहा था, बल्कि लड रहा था। क्या उसने यही सकल्प नही किया था कि वह उसे सब बाते तभी बतायेगा जब या तो उसकी आशाए धूल मे मिल जायेगी या

वह युद्ध-क्षेत्र में सबके समान स्थान प्राप्त कर लेगा? अब उसका प्रण पूरा हो गया है। जिन दो वायुयानों को उसने मार गिराया था, वे झाड़ियों में गिरे थे और सबकी आँखों के सामने जलते रहे थे। अर्दली अफसर ने उसे रेजीमेंट के रोजनामचे में दर्ज कर लिया था और उसकी रिपोर्ट डिवीजन के और फौजी हेडक्वार्टर के कार्यालयों तथा मास्को को भेजी गयी थी।

यह सब सच था। उसका प्रण पूरा हो गया था और अब वह इसके बारे में लिख सकता है। लेकिन सोचो तो, लड़ाकू विमान से मोर्चा लेने में जंकर जैसे विमान क्या बराबरी कर सकते हैं? असली बढ़िया शिकारी क्या इसी को अपने हुनर का सबूत मानेगा कि उसने एक खरगोश मार लिया है?

नम रात जंगल में और भी अंधेरी हो गयी। अब चूंकि युद्ध की गरजना दक्षिण की ओर हट गयी थी, वृक्षों की शाखाओं में से दूर के अग्निकाण्ड अब मुश्किल से ही दृष्टिगोचर होते थे, इसलिए ग्रीष्म के सुगन्धित, शानदार जंगल के समस्त निशा स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगे थे वन के किनारे झींगुरों की तीव्र झनकार, पास के दलदल में सैकड़ों मेढकों की आकण्ठ टर्र-टर्र, किसी पक्षी की तीखी चीख और इन सबके ऊपर किसी बुलबुल का संगीत जो नम अर्ध-अंधकार के ऊपर छा गया था।

अलेक्सेई अभी भोज वृक्ष के तले नर्म और अब ओस से भीग आयी काई पर बैठा हुआ था और काली छायाओं के बीच बिखरी हुई चांदनी घास पर सरककर उसके पांवों के पास आ गयी थी। उसने फिर अपनी जेब से फोटोग्राफ निकाला, उसे अपने घुटनों पर रखा और चांद के प्रकाश में उसे निहारते हुए विचारों में खो गया। एक के बाद एक रात्रिकालीन बमबारों के छोटे-छोटे काले छायाचित्र, साफ, गहरे नीले आसमान में सिर के ऊपर से गुजरकर दक्षिण की तरफ जाते

दिखाई दिये। उनके इंजिन मंद, मद्धिम स्वर में भनभना रहे थे, मगर नाद का यह स्वर भी चांदनी से रोशन जंगल में, जहां [illegible] गीत गा रहे थे, गुबरैलों के शान्तिपूर्ण गुंजार की भांति लगता था। [illegible] ने सांस खीची, कोट की जेब में वह फ़ोटो रख लिया और उठकर खड़े होते हुए उसने उस रात के जादू को दूर करने के लिए अपने को झकझोर डाला। धरती पर पड़ी सूखी टहनियों को चटचटाता, वह मांद में घुस गया जहां तख्ते की सिपाहियाना मेज पर, [illegible] पांव फैलाये हुए पेत्रोव गहरी नींद में सो रहा था और तेजी से खर्राटे भर रहा था।

५

विमान-चालकों को सुबह से पहले ही उठा दिया गया। फौजी हेडक्वार्टर को यह सूचना मिली थी कि पिछले दिन जर्मन विमान सेनाओं की एक बड़ी टुकड़ी उस क्षेत्र में आ पहुची थी जहा सोवियत टैंक घुस गए थे। भूमिवर्ती पर्यवेक्षणों और खुफिया रिपोर्टों से उस अनुमान की पुष्टि होती थी कि कूर्स्क सेलियन्त के केन्द्र पर ही सोवियत टैंकों की घुस-पैठ के खतरे को जर्मन कमान ने पूरी तरह समझ लिया था और उन्होंने 'रिख्तगोफेन' विमान डिवीजन बुला ली थी जिसका सचालन जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ विमान-चालक कर रहे थे। इस डिवीजन का सफाया इससे पहले स्तालिनग्राद के पास किया जा चुका था, मगर जर्मन पृष्ठ-प्रदेश में कही पर इसे पुनर्गठित कर लिया गया था। रेजीमेंट को चेतावनी दे दी गयी थी कि सम्भावित शत्रु सख्या में बलशाली है, अत्यन्त आधुनिकतम विमानों—'फोक्के-वोल्फ-१९०'—से लैस है और युद्ध में अत्यन्त अनुभवी है। सतर्क रहने का और उन गतिमान सेनाओं के दूसरे दस्तों को सुदृढ छत्रछाया देने का आदेश मिला था जिन्होंने उस रात दरार में होकर टैंकों के पीछे बढ़ना शुरू कर दिया था।

'रिक्तगोफेन !' अनुभवी विमान-चालक इस नाम से भली भांति परिचित थे और जानते थे कि उन्हें इस्मान गोयरिंग का विशेष संरक्षण प्राप्त था। जहां कहीं भी जर्मनों की सेनाएं दबने लगती थीं, वे इन विमानों को ले आते थे। इन ट्विंजन के चालक, जिनमें से कुछ ने गणतंत्रीय स्पेन में डावेजनी जैसी कार्रवाइयों का सञ्चालन किया था, बड़े भयङ्कर और होशियार लड़ाकू माने जाते थे और रातरनाक मनु के रूप में विख्यात थे।

"लोग कह रहे हैं कि हमारे खिलाफ कोई 'रिक्तगोफेन' भेजे जा रहे हैं। सी-सी! उम्मीद है, उनसे जल्दी मुठभेड़ होगी! हम उनको, 'रिक्तगोफेन', को मजा चखा देंगे।" पेत्रोव ने भोजन-कक्ष में जल्दी-जल्दी भोजन निगलते हुए कहा और खुली खिड़की की तरफ नजर डालता रहा, जहां परिचारिका राया मैदानी फूलों के गुच्छे जमा कर रही थी और उन्हें गोलों के ढांचों में सजा रही थी, जिन पर खड़िया से इतनी पालिश की गयी थी कि वे चमकने लगे थे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि 'रिक्तगोफेनों' के खिलाफ यह तिरस्कार का भाव अलेक्सेई के लाभ के लिए नहीं प्रगट किया गया था, जो इस समय कॉफी खत्म कर रहा था, बल्कि इसका निशाना थी वह लड़की जो फूलों में व्यस्त थी और जब तब इस खूबसूरत, गुलाबी गालोंवाले पेत्रोव की ओर कनखियों से ताकती जा रही थी। मेरेस्येव उन्हें दयाभाव से मुसकुराता हुआ देखता रहा, लेकिन जब कोई गम्भीर बात हो तो उसके विषय में हंसी-मजाक की बातें उसे पसन्द नहीं थीं।

"'रिक्तगोफेन', 'कोई' नहीं," वह बोला। "और 'रिक्तगोफेन' का अर्थ है अगर तुम आज घास-पात के बीच जलते पड़े रहने से बचना चाहते हो तो आंख खुली रखो। उसका अर्थ है अपने कान साफ खुले रखो और सम्पर्क बनाये रखो। मेरे लाडले, 'रिक्तगोफेन' जंगली जानवर हैं जो इसके पहले, तुम जान पाओ कि तुम कहां हो, तुम्हारे मांस में दांत गड़ा देंगे।"

भोर होते ही पहला दस्ता स्वय कर्नल के नेतृत्व मे उडा। वह अभी व्यस्त ही था कि इधर बाहर लडाकू विमानो का एक दूसरा दल तैयार हो गया। इसकी कमान 'सोवियत सघ के वीर' का सम्मानित पद प्राप्त गार्ड्स मेजर फेदोतोव सभालनेवाले थे। विमान तैयार थे, चालक अपने कॉकपिटो मे पहुच चुके थे, इजिन नीचे गीयर पर शान्तिपूर्वक चल रहे थे, और जगल के किनारे पर इस तरह हवा के झोके उडा रहे थे जैसे उस समय, जब प्यासी धरती पर वर्षा की पहली-पहली, बडी-बडी बूदे आसमान से टपकने लगती है, तब तूफान के पहले हवाए जमीन को बुहार देती है और पेडो को झकझोर देती है।

अपने कॉकपिट से अलेक्सेई ने पहले दल के विमानो को इस प्रकार सीधे उतरते देखा मानो वे आसमान से टपक रहे हो। बिना किसी इरादे के उसने उन्हे गिन डाला और जब दो विमानो के उतरने मे कुछ देर लगी तो उसका दिल चिता से धडकने लगा। अत मे आखिरी विमान भी उतर आया। सभी वापिस लौट आये थे। अलेक्सेई ने चैन की सास ली।

आखिरी विमान उतरकर मुश्किल से अपनी जगह की तरफ दौडा ही था कि मेजर फेदोतोव का 'नम्बर १' धरती छोडकर उड़ा और उसके पीछे जोडो मे अन्य लडाकू विमान रवाना हो गये। जगल पार कर वे पातबद्ध हो गये। अपने विमान को थरथराते हुए फेदोतोव ने अपनी दिशा प्रगट की। वह नीची सतह पर उड रहे थे और अपने को इस क्षेत्र में रख रहे थे जहा पिछले दिन सेनाओ ने दरार डाली थी। अब अलेक्सेई को अपने नीचे जमीन दौडती नजर आयी—बहुत ऊचाई से नही, दूर के दृश्यावलोकन के रूप मे नही, कि जिससे हर चीज खिलौने जैसी दिखाई देने लगती है, बल्कि पास से उसने देखा। पिछले दिन उसे ऊपर से जो चीज एक खेल जैसी लग रही थी, वह अब उसके सामने सुविस्तृत और अनन्त युद्ध-क्षेत्र के रूप मे प्रगट हो गयी

सहसा [illegible] उस पानीवाली सीमा के ऊपर [illegible] सवार थे। इस [illegible], धुंधले क्षितिज [illegible] दृष्टिगोचर होने लगे थे। [illegible] पड़ा। उसी क्षण [illegible] और फिर टिड्डी दल की भांति [illegible] जर्मन! वे भी जमीन का [illegible] उद्देश्य था कि लाल-से, घास-[illegible] पर हमला करना। अलेक्सेई ने [illegible] दृष्टिपात किया। उनका अनुगामी पीछे था और [illegible] नजदीक [illegible] रहा था जितना कि उसका साहस हो सका।

उसने [illegible] पर जोर लगाया और दूरागत स्वर सुना

"मैं हूं [illegible] फेदोतोव, मैं हूं [illegible] दो, फेदोतोव। सावधान! मेरे पीछे आओ!"

आकाश में, जहां विमान-चालक के स्नायु-मण्डल पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, अक्सर ऐसा होता है कि कभी-कभी इसके पहले कि कमाण्डर अपना आदेश पूरा कर पाये, वह उसके इरादे को पूरा कर देता है। घर्र-घर्र और भन्-भन् के बीच दूसरा आदेश सुनाई देने के पहले, सारा दल जोड़ों में बटकर, मगर घनिष्ट रूप से पात-बन्द रहकर, जर्मनों को राह में रोकने के लिए मुड़ पड़ा। दृष्टि, श्रवण-शक्ति और मस्तिष्क को अधिकतम सचेत किया गया। अलेक्सेई को शत्रुओं के विमानों के अलावा, जो बड़ी तेजी से उसकी आंखों के सामने बड़ा रूप धारण करते जा रहे थे, और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, अपने कर्णयंत्रों की कड़-कड़ और भन्-भन् के अलावा, जिनसे उसे अगला आदेश सुनना था, उसे और कुछ नहीं सुनाई दे रहा था। लेकिन उस आदेश

दल के अधिक ऊंचाई पर होने का लाभ उठाते हुए फेदोतोव ने हमले में अपने दल का नेतृत्व किया। अन्देयगेर्ड ने अपना निशाना पहले ही चुन लिया था और शेष विमानों पर भी दृष्टि रखते हुए उसने अपने निशाने पर नजर रखकर उसपर हमला कर दिया। लेकिन कोई इस मामले में फेदोतोव के पहले आया। दूसरी ओर से 'याक' विमानों का एक दल आ झपटा और उसने ऊपर से जर्मनों पर हमला कर दिया, और वह भी इतनी सफलता से कि उसमें जर्मनों की पात फौरन टूट गयी। वायु-युद्ध मे अराजकता फैल गयी। दोनों पक्ष दो दो और चार चार के दल में भिड गये। लडाकू विमानों ने शत्रु को अन्वेषक गोलियो की धाराओ से रोकने, उसके पीछे की ओर और अगल-बगल पहुच जाने का प्रयत्न किया।

जोड़े चक्कर काटने लगे, एक दूसरे का पीछा करने लगे और आकाश मे वृत्त-नृत्य जैसा क्रम आरम्भ हो गया।

सिर्फ अनुभवी आखे ही यह बता सकती थी कि इस गडबडी की स्थिति में क्या हो रहा है, जिस तरह अनुभवी कान ही उन तमाम तरह की आवाजों का अर्थ समझ सकते हैं जो विमान-चालक को अपने कर्णयंत्र में सुनाई देती है। उस क्षण आकाश-मण्डल मे कौनसी ध्वनि सुनाई नही देती – आक्रमणकारियो की कर्कश और भोंडी गालिया, शिकार हुए लोगों की भयानक चीखे, विजयी लोगो का उन्मत्त सिंहनाद, घायलो की कराहे, तेजी से मोड लेते समय विमान-चालक का दात पीसना और भारी सासों की आहट। कोई व्यक्ति युद्धोन्माद मे विदेशी भाषा में गीत गा रहा था, कोई आह भर रहा था और चिल्ला रहा था "ओ मा!", कोई व्यक्ति, स्पष्टतया, विमान-तोप का घोडा दबाते हुए कह रहा था "यह लो! यह लो!"

मेरेस्येव ने जो निशाना चुना था, वह दृष्टि से ओझल हो गया। उसकी जगह उसने ऊपर एक 'याक' विमान देखा, जिसकी पूछ की

तरफ सिगार जैसी शक्ल का, सीधे पखोवाला 'फांके' लटक रहा था और अपने पखो से 'याक' के ऊपर गोलियों की दो समानान्तर धाराए छोड रहा था। ये धाराए 'याक' की पूछ तक पहुच रही थी। मेरेस्येव फौरन उसे बचाने दौडा। एक सेकड के भी अग मात्र तक में एक छाया उसके ऊपर कौध गयी और इस छाया मे उसने अपने सभी विमान-हथियार से लम्बी धारा मार कर दी। उस 'फोक्के' को क्या हुआ, यह वह नही देख सका—उसे सिर्फ यही दिखाई दिया कि क्षत-विक्षत पूछ लिये वही 'याक' विमान अब अकेला उड रहा है। मेरेस्येव ने मुडकर देखा कि इस गडबडी मे कही उसने अपना अनुगामी तो नहीं खो दिया। नही! वह लगभग उसके समानान्तर उड रहा था।

"पीछे न रह जाना, बुढऊ," अलेक्सेई ने दात मीजे हुए कहा।

उसके कान भनभनाहट और कडकडाहट से, गाने से, दो भाषाओं में विजय और भयभीत अवस्था की चीखो-चिल्लाहटो से, धडधडाते गलो की आवाज, दात पीसने, कोसने और भारी सास लेने के स्वरो से गूजने लगे। इन आवाजो से तो ऐसा लगता था कि धरती से बहुत ऊचाई पर कोई लडाकू विमान एक दूसरे से टक्कर नही ले रहे है, बल्कि शत्रु है, जो धरती पर घातक गुत्थमगुत्थी में एक दूसरे को पकडे हुए है, लुढक रहे है, हाथापाई कर रहे है, और हर स्नायु और मासपेशी का जोर लगा रहे है।

मेरेस्येव ने कोई और निशाना पाने के लिए चारो तरफ दृष्टि डाली और यकायक उसकी रीढ मे एक ठडी कपकपी दौड गयी और उसे लगा कि उसके रोए खडे हो गये है। ठीक अपने नीचे उसने देखा कि एक 'फोक्के' 'ला-५' विमान पर हमला कर रहा है। वह सोवियत विमान का नम्बर तो नही देख सका, लेकिन अन्तर्बोध वश वह भाप गया कि वह पेत्रोव का विमान है। 'फोक्के-वोल्फ' उस पर अपनी तमाम तोपो से गोलिया उगलता हमला कर रहा था। पेत्रोव एक सेकड

के अन्दाज का ही मेहमान था। योद्धा एक दूसरे से इतने निकट थे कि वायु-आक्रमण की आम चालों के जरिए अपने मित्र की सहायता के लिए पहुंचने के वास्ते अलेक्सेई के पास न तो समय था और न उन चालों को इस्तेमाल करने की गुंजाइश थी। लेकिन उसके साथी का जीवन दाव पर लगा था और उसने एक असाधारण चाल का खतरा मोल लेने का फैसला किया। उसने अपने विमान को सीधे खड़े करके नीचे फेका और गैस बढ़ा दी। अपने ही भार से नीचे खिचते हुए, जो विमान की निश्चलता और उसके इंजिन की पूरी ताकत के कारण कई गुना बढ़ गया था, और असाधारण रूप से थरथराते हुए वह विमान एक पत्थर की भांति—नहीं, नहीं, एक गोले की भांति—'फोक्के' के छोटे पखोंवाले ढाचे के ऊपर गिर पड़ा और उसे गोलियों के जाल में लपेट दिया। यह अनुभव करते हुए कि उस भयंकर वेग और तीव्र उतार से वह चेतनता खो रहा है, मेरेस्येव नीचे की तरफ झपटा और अपनी धुंधली हुई आंखों से बड़ी मुश्किल से यह देख पाया कि ठीक उसके आगे के पखे के सामने 'फोक्के' विमान एक विस्फोट के धुए मे लिपट गया। लेकिन पेत्रोव कहा है? वह विलीन हो गया था। वह कहा गया? उसका विमान क्या गिर गया? क्या वह कूद गया? क्या बच निकला?

आसमान वीरान हो गया था। अब अगोचर विमान से एक दूरागत स्वर शान्त आकाश को चीरता आया

"मैं हूं सी गल सख्या दो, फेदोतोव। मैं हू सी गल सख्या दो, फेदोतोव। मेरे पीछे पात बनाओ, पात बनाओ। घर लौटो। मैं हू सी गल सख्या दो "

स्पष्ट था कि फेदोतोव अपने दल को वापिस ले जा रहा है।

'फोक्के-वोल्फ' से निपटने के बाद अपना विमान सीधा करके अलेक्सेई हांफता हुआ बैठा उस शान्ति का आनन्द लूट रहा था, जो कायम हो गयी थी। वह खतरा गुजर जाने के, विजय प्राप्त करने के

उल्लास को अनुभव कर रहा था। वापिस लौटने की दिशा देखने के लिए उसने अपने कम्पास पर नज़र डाली और फिर पेट्रोल मापक सुई पर दृष्टि डाली। उसकी भौंहें तन गयीं जब उसने देखा कि पेट्रोल कम रह गया है और यहां तक वापिस लौटने के लिए वह मुश्किल ही से काफी होगा। लेकिन अगले क्षण उसने पेट्रोल की गिरी सुई पर देखने की अपेक्षा और भी भयानक दृश्य देखा—एक रुई जैसे बादल के पीछे से, भगवान जाने कहा से, एक 'फोके-वोल्फ-१९०' विमान सीधा उसकी ओर हमला करता हुआ आ रहा था। उसके पास सोच-विचार का समय नही था, बच निकलने का भी अवसर न था।

शत्रुओं ने एक दूसरे पर भयानक वेग से आक्रमण कर दिया।

६

जिस सडक से आक्रमणकारी सेना के पदल अग्रगामी दस्ते आगे बढी जा रही थी, उसके ऊपर जो आकाश-युद्ध लडा जा रहा था, उसका शोर सिर्फ युद्धरत विमानो के कॉकपिटो में बैठे हुए विमान-चालकों ने ही नही सुना।

वह हवाई अड्डे के शक्तिशाली रेडियो यत्र पर गार्ड्स लडाकू विमान रेजीमेंट के कमाडर कर्नल इवानोव ने भी सुना। वह स्वय श्रेष्ठ विमान-चालक थे, इसलिए, जो आवाजें आ रही थी, उन्हे सुनकर वह बता सकते थे कि युद्ध घनघोर है और शत्रु शक्तिशाली तथा हठी है और आत्मसमर्पण करना उसे स्वीकार नही। यह समाचार कि फेदोतोव सडको के ऊपर असमान-युद्ध में जूझा हुआ है, शीघ्र ही सारे हवाई अड्डे में फैल गया। वे सभी जो फारिग हो सकते थे, जगल से मैदान में निकल आये और चिन्ता से दक्षिण की ओर देखने लगे, जहा से विमानो के लौटने की आशा थी।

सफेद पोशाकें पहने हुए सर्जन भोजन-कक्ष से बाहर दौड़े—दौड़ते जाते थे और कौर चबाते जाते थे। एम्बुलेंस कारें, जिनकी छतों पर बड़े-बड़े रेडक्रास चिह्न बने थे, गाड़ियों से बाहर निकल आयीं और इंजिन चालू किये कार्रवाई के लिए तैयार खड़ी थीं।

वृक्ष के शिखरों के ऊपर से उड़ता हुआ पहला जोड़ा आ पहुंचा और हवाई अड्डे पर चक्कर लगाये बिना सीधा उतर गया और लम्बे-चौड़े मैदान में दौड़ने लगा। इनमें 'नम्बर १' था जिसके चालक थे सोवियत वीर फ़ेदोतोव और 'नम्बर २' था जिसका चालक उनका अनुगामी था। और ठीक उनके पीछे दूसरा जोड़ा भी आ पहुंचा। लौटते हुए विमानों की घड़घड़ाहट से जंगल के ऊपर वायुमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा।

"सातवां, आठवां, नौवां, दसवां," हवाई अड्डे के दर्शकों ने आकाश को अधिकाधिक सूक्ष्मता से जांचते हुए गिनना शुरू किया।

जो विमान उतरे, वे मैदान छोड़कर चले गये और अपने विश्राम-स्थलों में घुस गये, शान्ति छा गयी। लेकिन दो विमान अभी भी गायब थे।

प्रतीक्षातुर भीड़ में आशापूर्ण शान्ति छा गयी। कई मिनट बड़ी पीड़ाजनक मंद गति से गुजर गये।

"मेरेस्येव और पेत्रोव," किसी ने धीमे से कहा।

यकायक आनन्द विह्वल एक नारी-स्वर मैदान में गूंज उठा

"लो एक यह आ गया!"

एक विमान के इंजिन की घड़घड़ाहट सुनाई दी। भोज वृक्षों के शिखरों के ऊपर से, उनपर अपने फैले हुए पंजे मारता 'नम्बर १२' भी आ पहुंचा। विमान क्षति-ग्रस्त था, उसकी पूंछ का एक टुकड़ा गायब था, उसके बायें पंख की नोक कट गयी थी और वह टुकड़ा किसी तार से लटका था। उतरने पर विमान विचित्र गति से फुदका, वह

ऊंचे उछला, फिर नीचे गिरा और फिर उछला और फिर गिरा और इस तरह फुदकता हुआ वह हवाई अड्डे के छोर तक पहुंच गया और पूंछ उठाकर खड़ा हो गया। सर्जनों को लिये एम्बुलेंस कारें, कई जीपें और सारी भीड़ उस विमान की ओर दौड़ पड़ी। कॉकपिट से कोई बाहर न निकला।

उन्होंने उसका ढक्कन उठाया। खून में डूबा हुआ पेत्रोव सीट में लटका पड़ा था। उसका सिर वक्ष पर असहाय-सा लटका था। गीले, सुन्दर केशों की लटें चेहरे पर घिर आयी थी। सर्जनों और नर्सों ने तस्मे खोले, पैराशूट का खून सना थैला हटाया जिसमें एक गोले के टुकड़े ने छेद कर दिया था, सावधानी से गतिहीन शरीर को उठाया और धरती पर लेटा दिया। विमान-चालक की टांगों और भुजा में घाव लगा था। उसकी नीली वर्दी पर शीघ्र ही काले धब्बे फैल गये।

पेत्रोव की प्राथमिक चिकित्सा की गयी और स्ट्रेचर पर लादा गया। जब उसे उठाकर एम्बुलेंस कार पर लादा जा रहा था तब उसने आंखें खोलीं। वह कुछ बुदबुदाया, लेकिन इतने धीमे से कि जो कुछ कहा, वह सुना नहीं जा सका। कर्नल उसपर झुक आया।

"मेरेस्येव कहां है?" घायल ने पूछा।

"अभी उतरा नहीं।"

स्ट्रेचर फिर उठाया गया, लेकिन घायल ने बड़े जोर से अपना सिर हिलाया-डुलाया और उतर भागने तक की कोशिश की।

"ठहरो!" उसने कहा। "मुझे यहां से ले जाने की जुर्रत न करना। मैं नहीं जाना चाहता। मैं मेरेस्येव का इंतजार करूंगा। उसने मेरे प्राण बचाये हैं।"

विमान-चालक ने इतने जोर से विरोध किया था, अपनी पट्टियां फाड़ डालने की धमकी दी थी, कि कर्नल ने अपना हाथ हिलाया और गुस्सा से सिर झटककर दांत भींचकर बोला

"अच्छा! छोड़ दो उसे अकेला। वह मरेगा नही। मेरेस्येव के पास सिर्फ एक मिनट के लायक और पेट्रोल होगा।"

कर्नल ने अपनी आखे घड़ी पर टिका ली और उसकी लाल-लाल सेकंड-सूचक सुई को अपना चक्कर पूरा करते देखा। अन्य सभी लोग मटमैले जगल के ऊपर ताक रहे थे जिस पर से अतिम विमान के लौट आने की आशा थी। कानो पर अत्यधिक जोर लगाया गया, मगर तोपो की दूरागत गर्जन और निकट ही कठफोड़वे की गूजती हुई ठक्-ठक् के अलावा और कोई स्वर नही सुन पड़ा।

एक मिनट कभी-कभी कितना लम्बा खिंच जाता है!

७

शत्रुओं ने एक दूसरे पर पूरी रफ्तार से हमला किया।

'लावोचकिन-५' और 'फोक्के-वोल्फ १६०' तीव्रगामी विमान होते है। शत्रुओ ने एक दूसरे पर भयकर वेग से धावा किया।

अलेक्सेई मेरेस्येव और प्रसिद्ध 'रिख्तगोफेन' डिवीजन के अज्ञात जर्मन विमान-चालक एक दूसरे से सीधे भिड गये। विमानो की सीधी मुठभेड क्षण भर की होती है। लेकिन वह क्षण इतना स्नायुविक तनाव पैदा करता है, विमान-चालक के सारे मानसिक सतुलन की ऐसी परीक्षा लेता है, जैसी कि भूमि-युद्ध मे सारे दिन के सग्राम में भी नहीं होती।

इन दो अतिम विमानो मे से, जो एक दूसरे पर पूरी रफ्तार से हमला कर रहे थे, किसी एक में बैठे होने की कल्पना कीजिये। शत्रु का विमान आपकी आखो के सामने आकार मे बड़ा हो रहा है। यकायक उसका अग-प्रत्यग आपके मुकाबले आ जाता है पख, चक्कर खाते हुए पखे का चमकदार चक्र, काले विदु जो उसकी तोपे है। दूसरे ही क्षण हवाई जहाज टकरा जायेंगे और इस तरह खण्ड-खण्ड होकर चकनाचूर हो, जायेंगे

कि मशीन के ध्वसावशेष में विमान-चालक के अवशेष खोज पाना कठिन हो जायगा। न सिर्फ विमान-चालक की इच्छा-शक्ति बल्कि उसके नैतिक तन्तुओ की भी उस क्षण परीक्षा हो जाती है। कमजोर स्नायुविक प्रकृति का व्यक्ति वह तनाव सहन नही कर सकेगा। विजय-प्राप्ति के लिए जो प्राणो की बाजी लगाने के लिए तैयार नही है, वह महज वृत्तिवश वायुयान का रुख ऊपर को कर देगा, ताकि इस घातक तूफान से बचने के लिए, जो उसकी ओर बढा आ रहा है, वह कूद जाय, और अगले क्षण उसका विमान पेट में दरार पाकर या टूटे हुए पख लेकर जमीन पर आ रहेगा। अनुभवी विमान-चालक इसे भली भाति समझते है और केवल वीरतम योद्धा ही इस सीधी भिडन्त का खतरा मोल लेते है।

शत्रुओ ने एक दूसरे पर भयकर रफ्तार से हमला किया।

अलेक्सेई जानता था कि उसके खिलाफ जो व्यक्ति आ रहा है, वह गोर्यरिंग की तथाकथित भरती का कोई नौसिखुआ नही है जिसे पूर्वी मोर्चे पर हुई भारी क्षति की पूर्ति के लिए जल्दबाजी से प्रशिक्षित कर भेज दिया गया हो। वह 'रिख्तगोफेन' डिवीजन का श्रेष्ठ विमान-चालक है, ऐसे वायुयान में जिसके दोनो बाजुओ पर अनेक विमानो की छायाकृतिया बनी हुई थी जो निस्सदेह ही उसकी अनेक विजयो को अकित कर रही थी। वह डिगेगा नही, हिचकिचायेगा नही, युद्ध को टालेगा नही।

"सभलो, रिख्तगोफेन!" अलेक्सेई दात भीचे हुए बुदबुदाया। होठ काटते हुए इस तरह कि उनसे खून बह उठा और अपनी मासपेशियो को तानते हुए उसने अपने निशाने पर आखें गडा दी और शत्रु के विमान के मुकाबले, जो उसपर झपट रहा था, अपनी आखें बन्द होने से रोकने के लिए उसने अपनी सारी इच्छा शक्ति समेट ली।

उसने अपनी आखो पर इतना जोर डाला कि उसने अनुभव किया कि चक्कर काटते हुए पखे की धुध मे से वह शत्रु के कॉकपिट के पारदर्शी परदे को देख रहा है और उसके पार दो मानवीय आखें उसकी ओर

टकटकी बांधे देख रही हैं, और वे आंखें उन्मत्त घृणा से जल रही हैं। यह दृश्य-बोध स्नायुविक तनाव के कारण ही हो रहा था, मगर अलेक्सेई को विश्वास हो रहा था कि वह सचमुच उसे देख रहा है। "अंत आ गया," उसने सोचा और उसकी सभी मांसपेशियां तन गयीं। "अंत आ ही गया।" उसने आगे देखा और तेजी से आकाश में बढता हुआ विमान उसे अपनी ओर वातचक्र की भांति लपकता दिखाई दिया। नहीं, वह जर्मन भी मुंह नहीं मोडेगा। बस, अंत आ गया।

वह तत्काल मृत्यु के लिए तैयार हो गया। यकायक, जब उसे लगा कि वह जर्मन विमान से हाथ भर ही दूर रह गया है, तब जर्मन चालक का साहस टूट गया और वह ऊपर की ओर उछला, जर्मन विमान का नीला-सा सूर्यालोकित निचला भाग उसकी आंखों के सामने बिजली की तरह कौंध गया। उसी क्षण अलेक्सेई ने अपने सारे घोडे दबा दिये, जर्मन को गोलियों की तीन डोरों से सिल दिया और फौरन चक्कर घुमा दिया, और जमीन जब उसको अपने सिर के ऊपर घूमती दिखाई दी तभी उसकी स्याह पृष्ठभूमि में उसे एक विमान असहाय-सा फडफडाता हुआ दिखाई दिया।

"ओल्या!" वह उन्मत्त विजय भाव से चीखा और सब कुछ भूलकर वह छोटे-छोटे से घेरों चक्कर लगाते हुए, जर्मन विमान की आखिरी यात्रा में उसका साथ देते हुए, लाल-लाल घास-पात से ढकी धरती के ठीक ऊपर तक पहुंच गया। शत्रु का विमान धरती से जा टकराया और काले धुए का सीधा खम्भा खडा हो गया।

तभी उसके तने हुए स्नायु और कसी हुई मांसपेशियां ढीली पड गयीं और उसके ऊपर गहनतम थकान का भाव हो गया। उसने पेट्रोल मापक सूई की ओर देखा। सूई लगभग शून्य पर कांप रही थी।

पेट्रोल सिर्फ तीन मिनट या बहुत हुआ तो चार मिनट की उडान लायक ही बाकी रह गया था। हवाई अड्डे तक वापिस लौटने के लिए

कम से कम दस मिनट लगेंगे, और वह भी तब कि उसे ऊचाई बढाने में समय न लगे। काश वह क्षतिग्रस्त 'फोक्के' के साथ नीचे न उतरता। "तुम भी बच्चे ही हो!" उसने अपने आपको झिडकते हुए कहा।

खतरे के क्षणो मे, जैसा कि वीर और धीर व्यक्तियों के साथ होता है, उसका दिमाग साफ था और घडी की तरह काम कर रहा था। पहली चीज जो करनी थी, वह थी ऊचाई पर पहुचना, लेकिन घुमावदार ढग से नही, हवाई अड्डे की दिशा मे तिरछे उडकर। ठीक!

उसने अपने विमान को उचित दिशा में लगाया और अपने नीचे धरती को दूर जाते तथा क्षितिज में एक धुध-सा छा जाते देखता हुआ, वह धैर्यपूर्वक अपना हिसाब-किताब लगाता रहा। पेट्रोल पर भरोसा करने से कोई लाभ न था। अगर मापक यत्र थोडा खराब भी हो, तब भी वह काफी न होगा। क्या अड्डे पर पहुचने से पहले कही विमान उतार दे? लेकिन कहा? मानसिक रूप से उसने छोटे-से मार्ग पर पूरी तरह नजर डाल ली। स्थायी किलेबन्दी के क्षेत्र में जगल, झाड़ियों भरा दलदल और ऊबड-खाबड मैदान थे, जिन पर आडे-तिरछे गड्ढो की रेखाए थी, बम और गोलो से गड्ढे बन गये थे और कटीले तारो की भरमार थी।

"नही! उतरने का मतलब है मौत!"

कूद पडा जाय। यह किया जा सकता है। बस अभी। ढक्कन खोल दो, थोडा मोडो, डडे खीच दो, जरा उछलो—और बस सब काम हो जायगा। लेकिन विमान का—इस शानदार, तीव्रगामी, स्फूर्त पछी का—क्या होगा? उसके लडाकू गुणो ने उस दिन तीन बार उसकी जान बचायी थी! इसे त्याग दिया जाय, चकनाचूर होने दिया जाय, टेढी-मेढी धातु का ढेर बन जाने दिया जाय? यह बात नही कि उसे इसकी जवाबदेही करनी पडेगी। इससे वह नही डरता। वास्तव में इस तरह की स्थिति में उसे कूद पड़ने का अधिकार भी था। उस क्षण वह विमान उसे एक शक्तिशाली, वफादार और सजीव वस्तु जान पडने लगा, उसे

छोड़ना सरासर गद्दारी होगा। और फिर—पहली ही मुठभेड के बाद बिना विमान के लौटना, दूसरा प्राप्त होने तक सुरक्षित सैनिको मे शामिल होकर खाली मडराते फिरना, और एक ऐसे समय मे जब मोर्चे पर हमारी महान विजय आरम्भ हो रही है, तब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, ऐसे मौके पर बिना काम-धधा निठल्ले घूमते फिरना।

"नही, नही, मैं कभी ऐसा न होने दूगा!" अलेक्सेई ने जोर से कहा मानो किसी ने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा था।

उस समय तक उडो जब तक इजिन बद न हो जाय। और फिर? तब देख लेगे। और वह उड चला, पहले तीन हजार मीटर की और फिर चार हजार मीटर की ऊचाई से, कोई छोटा-सा समतल मैदान पाने के लिए वह स्थानीय क्षेत्र की सूक्ष्म दृष्टि से परीक्षा करता जा रहा था। जिस जगल के पीछे हवाई अड्डा था, वह क्षितिज पर दिखाई देने लगा था, वह लगभग पद्रह किलोमीटर दूर था। पेट्रोल मापक सूई अब काप नही रही थी, वह सीमान्त बटन पर दृढतापूर्वक स्थिर हो गयी थी। लेकिन इजिन अभी भी काम कर रहा था! क्या चीज उसे बल दे रही है? ऊचे, और अधिक ऊचे . ठीक!

यकायक उस निर्बाध गुजार का स्वर दूसरा हो गया जिस पर विमान-चालक उसी तरह ध्यान नही देते जिस प्रकार स्वस्थ व्यक्ति अपने दिल की धडकन पर ध्यान नही देते। अलेक्सेई ने यह परिवर्तन फौरन पकड लिया। जगल स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था, वह लगभग सात किलोमीटर दूर था, और लगभग तीन या चार किलोमीटर चौडा था। कोई अधिक नही था। मगर इजिन की धडकन में यह मनहूस परिवर्तन हो गया था। विमान-चालक इस परिवर्तन को अपने रोम-रोम से अनुभव कर लेता है, मानो वह इजिन नही, वह स्वय है जो सांस लेने के लिए तडप रहा है। यकायक वही अशुभ 'चक, चक, चक' शुरू हो गयी, जो भयानक पीडाजनक रूप से उसके सारे शरीर में फैल गयी।

"नही! सब ठीक है। वह फिर दृढ़तापूर्वक चलने लगा है। वह चल रहा है। हुर्रा! लो, जगल भी आ गया।" चीड़ वृक्षों की चोटियां उसे हरे सागर की भाति धूप में लहराती दिखाई दे रही थी। अब हवाई अड्डे के सिवाय और कही विमान उतारना असम्भव था। अब तो सिर्फ एक ही काम था बढ़े चलो, बढ़े चलो!

चक, चक, चक!

इजिन फिर भनभनाने लगा। कितनी देर के लिए? वह जगल के ऊपर था। उसके बीच दौड़ता हुआ रेतीला मार्ग उसे इस तरह दिखाई दे रहा था जैसे रेजीमेंटल कमाडर के सिर पर बालों के बीच माग। हवाई अड्डा अब तीन किलोमीटर दूर था। वह उस दांतेदार हद के उस पार था और अलेक्सेई को यह मालूम हो रहा था मानो अब उसे वह दिखाई देने लगा है।

चक, चक, चक! यकायक ऐसी शान्ति छा गयी कि उसे हवा में विमान के हिस्सो की गुजार सुनाई देने लगी। क्या अन्त आ गया? मेरेस्येव की रीढ में एक कपकपी दौड गयी। कूद पडे क्या? नही। थोडा आगे और बढा जाय। उसने वायुयान को ढलवा उतार की तरह मोड दिया और फिसल पडा, जितना सम्भव हो सकता था उतना वह विमान को समतल रखने का प्रयत्न करने लगा और साथ ही चक्कर खाने से बचाने की कोशिश करने लगा।

आकाश में यह पूर्ण शान्ति कितनी भयकर थी! वह इतनी तीव्र थी कि ठडे होते हुए इजिन का तडकना, और तेज उतार के कारण अपनी कनपटियो का धडकना और कानो में शोर मचना, उसे साफ सुनाई दे रहा था। और धरती उससे मिलने के लिए इतनी तेजी से बढ रही थी, मानो कोई भारी चुम्बक उसे हवाई जहाज की तरफ खीच रहा हो।

जगल का किनारा और उसके पार हवाई अड्डे का पत्ते जैसा हरा चकत्ता उसे दिखाई दे रहा था। क्या वक्त हाथ से गया? पता आधा

चक्कर खाकर अटक गया। उसे आकाश मे गतिहीन देखना कितना भयानक था। जगल विल्कुल पास आ गया था। क्या यही अत होगा? क्या वह कभी नही जान सकेगी कि उसके साथ क्या बीती, पिछले अठारह महीनो मे उसने कैसे अतिमानवीय प्रयत्न किये और इस सबके बाद जब उसने अपनी मजिल प्राप्त कर ली और एक असली, हा, असली इसान बन गया, तो प्राप्त करते ही वह इतने बेहूदे ढग से मर गया?

कूद पडे क्या? उसका मौका भी गया। उसके नीचे से जगल तेजी से गुज़र रहा था और इस तूफ़ानी दौड मे वृक्षो के शिखर घुल-मिलकर एक अनवरत हरी पट्टी जैसे जान पड रहे थे। इस तरह का दृश्य वह पहले भी देख चुका है। कब? क्यो, ठीक तो है! उस वसत-काल मे, उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के समय। तब हरी-हरी पट्टी इसी तरह उसके नीचे से गुजर गयी थी। आखिरी कोशिश, खीच लो डडे को

८

खून अधिक निकल जाने के कारण पेत्रोव को अपने कानो मे घटिया-सी बजती जान पडने लगी। हर वस्तु – हवाई अड्डा, सुपरिचित चेहरे और तीसरे पहर के सुनहरे बादल यकायक झूमने लगे, धीरे-धीरे चक्कर खाने लगे और फिर धूमिल होकर विलीन हो गये। उसने अपनी आहत टाग हिलायी और उससे जो तीव्र पीडा उत्पन्न हुई, उससे चेतना कुछ वापिस आ गयी।

"वह अभी आया नही?" उसने पूछा।

"अभी नही। बाते मत करो," जवाब दिया गया।

क्या यह सम्भव है कि मेरेस्येव, जो उस दिन पखधारी देवता की भाति न जाने कहा से जर्मन विमान के सामने ठीक उसी समय प्रगट हो

गया था जब [illegible] फिर [illegible] आ गया है, और अब, बमबारी से [illegible] और [illegible] पर [illegible] जले हुए घास की [illegible] निशान बाकी नही बचेगा? और [illegible] की [illegible] सी, किंचित दयालु [illegible] आगे अब [illegible] देखने को नही मिलेगी? कभी नहीं?

रेजीमेंटल कमांडर ने अपनी [illegible] पर उसे अपनी घड़ी की आवश्यकता न रही थी। [illegible] भांति सवारे गये वाक्यों [illegible] में बोला,

"सब खत्म हुआ।"

"क्या अब कोई उम्मीद नहीं?" [illegible] ने पूछा।

"बस, सब खत्म हुआ। पेट्रोल खत्म हो गया। शायद वह कहीं उतर गया होगा या कूद पड़ा होगा [illegible] यह स्ट्रेचर उठा ले जाओ!"

कमांडर मुंह फेरकर चल दिया और किसी धुन पर सीटी बजाने लगा — सब बिल्कुल बेसुरा। पेत्रोव को फिर अपने गले में कांटा-सा उठता महसूस हुआ, इतना गर्म-सा और कड़ा-सा कि उसका गला लगभग घुटने लगा। खासने जैसी विचित्र आवाज सुनाई दी। हवाई अड्डे के बीच खामोश खड़े हुए लोगों ने मुड़कर देखा और फौरन मुंह फेर लिया। स्ट्रेचर पर पड़ा घायल विमान-चालक सुबक रहा था।

"इसे ले जाओ। क्या मुसीबत है!" कमांडर ने रुंधे हुए स्वर में कहा और भीड़ की तरफ से मुंह फेरकर और आंखें इस तरह मिचमिचाकर मानो उन्हें हवा से बचा रहा हो, वह जल्दी से चल दिया।

लोग मैदान से छटने लगे, लेकिन उसी क्षण एक हवाई जहाज जंगल के किनारे से इस प्रकार खामोशी से फिसलता आया जैसे किसी की छाया हो, उसके पहिए वृक्ष-शिखरों को छूते जा रहे थे। प्रेत-छाया की भांति वह लोगों के सिरों के ऊपर से निकल गया और तीन पहियों

से घास पर आ गया। एक हल्का-सा धमाका, ककडो की कड-कड़ और घास की मरसराहट सुनाई दी, जो असामान्य था, क्योंकि विमान जब उतरते है तो उनके इजिनो की घडघडाहट के कारण विमान-चालको को ये स्वर कभी नही सुनाई देते। वह सब इतना यकायक हुआ कि कोई यह नही समझ सका कि क्या हो गया, हालाकि यह अत्यन्त साधारण बात थी एक हवाई जहाज उतरा था और वह 'नम्बर ११' था—वही जिसकी, वे सब लोग, इतनी आतुरता मे प्रतीक्षा कर रहे थे।

"यह तो वह है!" कोई व्यक्ति उन्मादपूर्ण और अस्वाभाविक स्वर में चिल्ला उठा और फौरन सब लोग जडता से उबर आये।

हवाई जहाज ने अपनी दौड खत्म की और हवाई अड्डे के छोर पर ही, तरुण, घुघराले, सफेद छालवाले भोज वृक्षो के झुड के सामने रुक गया, जो अस्ताचलगामी सूर्य की नारगी किरणो से आलोकित था।

इस बार फिर कॉकपिट से कोई न उठा। लोग अपनी पूरी शक्ति से विमान की ओर दौड पडे, हाफते हुए, अपशकुन की भावनाओ से चिन्तित। उन सबके आगे रेजीमेटल कमाण्डर था, वह उसके पख पर उछलकर चढ गया, उसके ढक्कन को हटाकर उसने कॉकपिट मे देखा। मेरेस्येव नगे सिर बैठा था, उसका चेहरा ग्रीष्मकालीन बादल की भाति सफेद था और रक्तहीन, हरे-से होठो पर मुसकान खेल रही थी। उसकी ठोडी पर रक्त की दो धाराए थी, जो कटे हुए होठो से बहकर आयी थी।

"जिन्दा हो? तुम्हे कोई चोट लगी है?"

मेरेस्येव निर्बलतापूर्वक मुसकुराया और बुरी तरह थकी हुई आखो से कर्नल की ओर देखकर उसने जवाब दिया

"मै ठीक हू। मै सिर्फ घबरा गया था कोई छै किलोमीटर तक मेरे पास पेट्रोल की एक बूद भी नही थी।"

विमान-चालक उसके विमान के चारो ओर एकत्र हो गये और कोलाहलपूर्वक अलेक्सेई को बधाई देने लगे और उससे हाथ मिलाने लगे।

"धीरज धरो दोस्तो, तुम लोग तो उसका पख तोडे डाल रहे हो। यह मत करो! मुझे निकलने तो दो।" अलेक्सेई ने मुसकुराकर उन्हे झिडका।

उसके ऊपर मडरानेवाले सिरो की भीड के नीचे से, उसी क्षण उसे एक परिचित स्वर सुनाई दिया, लेकिन वह इतना क्षीण था कि दूर से आता मालूम होता था

"अल्योशा, अल्योशा!"

मेरेस्येव मे उसी क्षण शक्ति वापिस आ गयी। वह उछला और बाहो के सहारे अपने को ऊपर खीचते हुए उसने कॉकपिट के बाहर अपनी वजनी टागें फेक दी, इस क्रिया में किसी को उसकी लात लग गयी, और वह जमीन पर कूद पडा।

पेत्रोव का चेहरा उस तकिये से बिल्कुल घुल-मिल गया मालूम हो रहा था, जिस पर वह सिर रखे हुए था। उसकी आखो के गहरे, स्याह गह्वरो मे दो बडे-बडे आसू थे।

"कहो बुड्ढे! तुम जिदा हो? तुम   अरे पुराने पापी शैतान!" उसके स्ट्रेचर के बगल मे घुटनो के बल गिरते हुए अलेक्सेई चीख उठा। उसने अपने साथी के असहाय से पडे हुए सिर को अपने हाथो में उठाया और उसकी वेदनापूर्ण परतु आनन्दपूर्वक चमकती हुई आखो में देखकर कहा

"तुम जिदा हो?"

"धन्यवाद, अल्योशा, तुमने मुझे बचा लिया। तुम हो   अल्योशा, तुम हो   "

"धिक्कार है तुम लोगो को! इस घायल को यहा से ले जाओ! यहा मूर्खो की तरह मुह फाडे खडे हुए है।" कर्नल की गरजती हुई आवाज आयी।

रेजीमेंटल कमाडर पास ही खडा था, नाटा-सा, फुरतीला, अपनी हृष्ट-पुष्ट टागो पर झूलता-सा, और उसकी नीली वर्दी की पतलून के नीचे से उसके कसे हुए, अत्यधिक पालिशदार बूट झाक रहे थे।

"सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव, अपनी उडान की रिपोर्ट दो। क्या तुमने कोई मार गिराया?" उसने अफसरी स्वर मे पूछा।

"हा, कामरेड कर्नल। दो 'फोक्के-वोल्फो' को।"

"किन परिस्थितियो मे?"

"एक को सीधे खडे होकर हमला करके। वह पेत्रोव की दुम के पीछे पडा हुआ था। दूसरे को आम युद्ध के क्षेत्र से उत्तर की ओर तीन किलोमीटर दूर पर, सीधी टक्कर से।"

"मुझे मालूम है। भूमिवर्ती पर्यवेक्षक ने अभी ही रिपोर्ट दी थी धन्यवाद।"

"मै सेवा कर रहा हू " अलेक्सेई ने फौजी कायदे के अनुसार उत्तर देना शुरू किया, मगर कर्नल ने, जो वैसे कायदो के बारे मे बडा सख्त था, उसे बीच मे ही रोक दिया, और बेतकल्लुफी से कहा:

"बहुत अच्छा। कल तुम कमान सभालना तीन नम्बर की टुकडी का कमाडर अड्डे पर वापिस नही आया।"

वे कमान केन्द्र तक साथ-साथ आये। चूकि आज की उडान का कार्यक्रम खत्म हो गया था, इसलिए सारी भीड उनके पीछे-पीछे चल पडी। वे लोग कमान केन्द्र के हरिताचल के निकट पहुच ही रहे थे, तभी अर्दली अफसर उनकी ओर भागा-भागा आया। वह कमाडर के सामने आकर यकायक खडा हो गया, नगे सिर और बहुत आनन्दित और उत्तेजित दिखाई पड रहा था, उसने कुछ कहने के लिए मुह खोला, मगर कर्नल ने उसे सूखी और सख्त आवाज मे टोक दिया

"तुम नगे सिर क्यो हो? क्या हो तुम, छुट्टी के वक्त स्कूली लडके?"

"कामरेड कर्नल, मुझे निवेदन करने की आज्ञा दीजिये," उत्तेजित लेफ्टीनेंट ने अटेंशन खडे होते हुए और कठिनाई से सास भरते हुए बडबडा दिया।

"कहो!"

"हमारे पड़ोसी, 'याक' के कमांडर आपसे टेलीफोन पर बात करना चाहते हैं।"

"हमारे पड़ोसी? वह क्या चाहते हैं? "

कर्नल तेजी से अपनी खोह में घुस गये।

"यह तुम्हारे बारे में है " अर्दली अफसर ने अलेक्सेई को बताना शुरू किया, मगर तभी नीचे से कर्नल की आवाज आयी

"मेरेस्येव को मेरे पास भेजो!"

जब मेरेस्येव दायें-बायें बाजू चिपकाकर उसके सामने सीधा तनकर चुपचाप खड़ा हो गया, तो कर्नल ने टेलीफोन रिसीवर पर हथेली रख ली और उसकी तरफ क्रोधपूर्वक गुर्राया

"तुम मुझे गलत सूचना क्यों देते हो? हमारे पड़ोसी ने अभी फोन किया था और वह जानना चाहता था कि 'नम्बर ११' कौन उड़ा रहा था। मैंने जवाब दिया 'मेरेस्येव, सीनियर लेफ्टीनेंट।' तो उसने पूछा 'उसके नाम पर तुमने कितने विमान लिखे हैं?' मैंने जवाब दिया 'दो।' वह बोला 'एक और उसके नाम के आगे लिख लो। उसने मेरे विमान की पूंछ पर लपकनेवाले 'फोक्के-वोल्फ' को मार गिराया था। मैंने अपनी आंखों से उसे गिरते देखा।' खैर, तो तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है?" कर्नल ने अलेक्सेई की ओर भौंहें चढ़ाकर देखा और यह कहना कठिन था कि वह मजाक कर रहा था या गम्भीर था। "क्या यह सच है? लो, अब तुम्हीं बात कर लो उससे हल्लो। तुम हो अभी? सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव है फोन पर। मैं उसे रिसीवर दे रहा हूं।"

एक अपरिचित, कर्कश, मंद स्वर फोन पर सुनाई दिया

"धन्यवाद सीनियर लेफ्टीनेंट! वह तो कमाल का हाथ था आपका! मैं सराहना करता हूं। आपने मुझे बचा लिया। हां। मैंने उसका जमीन तक पीछा किया और उसे चकनाचूर होते देखा. तुम पीते हो? कभी

मेरे कमान केन्द्र पर आओ, मैं तो एक लिटर का देनदार रहूगा। अच्छा, फिर धन्यवाद। जब हमारी भेंट होगी, तब हाथ मिलायेंगे। बढे चलो।"

मेरेस्येव ने रिसीवर रख दिया। उसपर जो कुछ बीता था, उसके बाद वह इतना थक गया था कि उसके लिए खडे रहना भी कठिन हो रहा था। उसको एक ही धुन थी कि किसी भाति जितनी जल्दी सम्भव हो सके, अपनी 'बावीपुरी' पहुच जाय अपनी खोह मे घुस जाय, ये कृत्रिम पैर उतार फेंके और तख्ते पर पाव फैलाकर लेटे रहे। एक क्षण भौंडे ढग से टेलीफोन के पास चहलकदमी करके, वह धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढा।

"तुम कहा चले?" रेजीमेंटल कमाडर ने उसे रोकते हुए कहा। उसने मेरेस्येव का हाथ पकडा और अपने नन्हे-से पुष्ट हाथो से इतने जोर से दबा दिया कि वह दुखने लगा। "खैर, मैं तुमसे क्या कहू? बहुत अच्छे लडके हो। अपनी रेजीमेंट में तुम जैसे आदमी होने पर मुझे गर्व है खैर, और क्या? धन्यवाद हा, और वह तुम्हारा मित्र, पेत्रोव से मेरा मतलब है। वह क्या भला लडका नही है? और दूसरे लोग भी मैं बताता हू कि इस तरह के आदमियो के होते हुए हम युद्ध कभी नही हार सकते।"

और फिर उसने मेरेस्येव का हाथ इतना दबाया कि वह दुखने लगा।

खोह तक पहुचते-पहुचते रात हो गयी थी, लेकिन वह सो नही सका। उसने करवट बदली, एक हजार तक गिनती गिनी और उलटी गिनती शुरू की, उसने 'अ' से शुरू होनेवाले अपने सभी परिचितो के नाम गिन डाले, और फिर 'ब' से गिने और इसी तरह बराबर गिनता रहा, फिर मिट्टी के तेल के लैम्प की हल्की रोशनी की तरफ अपलक देखता रहा—मगर नीद बुलाने के ये सभी परीक्षित उपाय इस बार काम के न साबित हुए। वह ज्योही आखें बद करता, त्योंही उसके सामने

परिचित चित्र उभरने लगते अंधकार में कभी साफ दिखाई देने लगते तो कभी मुश्किल से पहचाने जाते, रुपहली लटों के नीचे से उसकी ओर ताकती हुई मिखाईल नाना की चिन्ताग्रस्त आंखें, 'गाय जैसी पलकें' झपकाता हुआ अन्द्रेई देगत्यरेन्को, अपने खिचड़ी बाल हिलाते हुए और किसी को डांटते हुए वसीली वसील्येविच, वह बूढ़ा स्नाइपर जिसके सिपाहियाना चेहरे पर मुसकुराहट की झुर्री पड़ी रहती थी, तकिये की सफेद पृष्ठभूमि में उसे कमिसार वोरोब्योव का मोम जैसा चेहरा दिखाई दिया जो अपनी चतुर, मर्मवेधी, विहंसती और सर्वज्ञ आंखों से उसकी ओर देखने लगता था, जीनोच्का के ज्वालाओं सदृश केश हवा में लहराते हुए उसके सामने कौंध गये, छोटा-सा, फुर्तीला शिक्षक नोसोव उसकी ओर सहानुभूति और सद्भावना से मुसकुरा उठा। अंधकार में से कितने गौरवशाली, मैत्रीपूर्ण चेहरे उसकी ओर देखने और मुसकुराने लगे, पुरानी स्मृतियां जगाने लगे तथा उसके लबालब हृदय में और अधिक हार्दिकता उंडेलने लगे। लेकिन इन सभी मैत्रीपूर्ण चेहरों के बीच से और फौरन उन सबको हटाते हुए, ओल्या का मुखड़ा उभर उठा—अफसर की वर्दी पहने हुए एक लड़के का दुबला-पतला चेहरा और बड़ी-बड़ी, थकी हुई आंखें। उसने उसे इतने स्पष्ट रूप में और इतने साफ रूप में देखा मानो वह साक्षात उसके सामने खड़ी हो और इस रूप में, जिसमें उसने वास्तविक जीवन में उसे कभी नहीं देखा। यह आभास इतना स्पष्ट था कि वह बिस्तर पर सचमुच चौंक पड़ा।

सोने की कोशिश करने से लाभ ही क्या था। हर्षातिरेक से सचेत होकर वह अपने तख्ते पर उठकर बैठ गया, 'स्तालिनग्रादका' का गुल झाड़कर उसकी ज्योति बढ़ायी, कापी से एक पन्ना फाड़ लिया, पेंसिल की नोक तेज की और लिखने बैठ गया

"मेरी प्रियतमे," अस्पष्ट लिखावट में उसने लिखा और जो विचार उसके दिमाग में दौड़ रहे थे, उनका साथ वह मुश्किल से दे

पा रहा था। "आज मैंने तीन जर्मनों को मार गिराया। लेकिन मुख्य बात यह नहीं है। मेरे कुछ साथी तो रोज ही यह कर दिखाते हैं। इसके बारे में मैं तुमसे शेखी न बघारूंगा। मेरी प्रियतमे, मेरी दूरवासिनी प्रेमिके! मैं आज तुमसे कहना चाहता हूं, और मुझे तुमसे यह कहने का अधिकार है कि आज से अठारह महीने पहले मेरे साथ क्या दुर्घटना घटी थी और जिस बात को मैं तुमसे बराबर छिपाता रहा—माफ कर देना, कृपा कर, माफ कर देना। लेकिन, आखिरकार आज मैंने तय कर लिया है कि ”

अलेक्सेई विचारों में खो गया। खोह में जो तख्ते जड़े हुए थे, उनके पीछे चूहे चीं-चीं करने लगे और सूखी रेत के झरने की आवाज सुनाई दी। भोज वृक्षों और पुष्पाच्छादित घास की ताजी और नम सुगंध के साथ, जो खुले हुए दरवाजे से हवा पर तैरती चली आ रही थी, बुलबुल की किंचित दबी हुई, किन्तु अनवरत, स्वर-लहरी आ गयी। कहीं दूर पर, नाले के पार, शायद अफसरों के भोजन-कक्ष के बाहर, कुछ नर-नारी बड़े सामंजस्यपूर्ण और वेदनापूर्ण स्वरों में 'एश' वृक्ष विषयक गीत गा रहे थे। दूरी से नर्म पड़ जाने के कारण रात में इस धुन ने और भी अधिक सुकोमल सौंदर्य धारण कर लिया और हृदय को मधुर वेदना से, सम्भावना की वेदना से, आशा की वेदना से भर दिया।

और कहीं दूर पर, गोलाबारी की दबी हुई गरजना, इसी हवाई अड्डे पर लगभग अकर्णगोचर थी, जो अब हमारी आगे बढ़ती हुई सेनाओं के पश्च प्रदेश में बहुत पीछे रह गया था, न तो उस गीत की स्वर-लहरी को, न बुलबुल के संगीत को, और न रात्रिकालीन जंगल की हल्की-सी, स्वप्निल मर्मर ध्वनि को डुबो पा रही थी।

अनुलेख

जिस काल मे ओर्योल के युद्ध का विजयी अत निकट आ रहा था और जो अग्र रेजीमेंटें उत्तर से बढ रही थी, वे रिपोर्ट भेज रही थी कि क्रस्नोगोर्स्क के आसपास की पहाड़ियो से उन्हे नगर जलता हुआ दिखाई दे रहा है, तभी एक दिन ब्रयान्स्क मोर्चे के हेडक्वार्टर पर यह रिपोर्ट आयी कि पिछले नौ दिनो में गार्ड्स लडाकू विमान रेजीमेंट के चालको ने, जो उसी क्षेत्र में काम कर रही थी, शत्रु के सैंतालीस हवाई जहाज मार गिराये। उनके केवल पाच विमानो और तीन आदमियो की क्षति हुई, क्योकि दो अन्य विमानो के चालक पैराशूट से कूद पडे थे और पैदल अपने अड्डे पर वापिस लौट आये थे। उन दिनो सोवियत सेना तेजी से बढ रही थी, तब के लिए भी यह विजय असामान्य थी। मैंने एक सपर्क विमान में अपने लिए एक सीट प्राप्त कर ली, जो उस रेजीमेंट के अड्डे तक जा रहा था, इरादा यह था कि वहा जाऊ और इन गार्ड्स विमान-चालको की सफलताओ के विषय में 'प्रावदा' के वास्ते एक लेख के लिए मसाला जमा कर लू।

इस रेजीमेंट का हवाई अड्डा एक साधारण चरागाह पर स्थित था जिसके टीलो और वल्मीको को वेढगी रीति से साफ कर दिया गया था। जवान भोज वृक्षो के जगल के किनारे हवाई जहाज मुर्गी के नन्हे बच्चो की

भाति छिपे खडे थे। सक्षेप मे, वह उसी भाति का फौजी हवाई अड्डा था जैसे युद्ध के सरगर्म दिनो मे आम तौर पर बनाये जाते थे।

हम दोपहर बाद पहुचे जब कि रेजीमेट का कठिन और व्यस्त दिन समाप्त होने जा रहा था। ओर्योल के क्षेत्र के आकाश में जर्मन विशेष रूप से सक्रिय थे और उस दिन प्रत्येक लड़ाकू विमान ने सात सात बार मुठभेड की थी। सूर्यास्त के समय आखिरी दल अपनी आठवी उडान से लौट रहा था। नाटे-से, कसकर पेटी बाधे हुए, स्फूर्तिवान व्यक्ति, रेजीमेटल कमाडर ने, जिसका चेहरा ताम्रवर्ण था, बाल सावधानी से काढे हुए थे, और जो नयी नीली वर्दी पहने था, यह खुलकर स्वीकार किया कि वह उस दिन की तारतम्यपूर्ण कहानी न सुना सकेगा, क्योकि वह सुबह छै बजे से ही हवाई अड्डे पर जुटा हुआ था, तीन बार वह स्वय आकाश पर जा चुका था और इतना थक गया था कि खड़े रहना मुश्किल था। कोई और कमाडर भी इस मन स्थिति में न था कि वह शाम समाचार-पत्र के लिए भेंट कर सके। मैं समझ गया कि मुझे अगले दिन तक प्रतीक्षा करनी पडेगी, और फिर देर भी इतनी हो गयी थी कि लौटा ही क्या जाता। सूरज भोज वृक्षो के शिखरो को छूने लगा था और उनपर सोना लुटा रहा था।

आखिरी विमान भी उतर आये और इजिन धडधडाते हुए वे सीधे जगल की ओर चले गये। मेकेनिक लोग उनका चक्कर लगाने लगे। पीले-से, थके हुए हवाबाज अपने कॉकपिटो से तभी उतरे जब उनके विमान हरे-भरे, टहनियो से ढके विश्राम-स्थलो मे सुरक्षित हो गये।

बिल्कुल आखिरी विमान तीन नम्बर के दल के कमाडर का था। कॉकपिट का पारदर्शी ढक्कन हटा दिया गया। पहले एक बडी-सी आबनूसी छडी, जिस पर सुनहरे अक्षरो में कुछ लेख खुदा हुआ था, उससे उडती हुई बाहर आयी और घास पर जा गिरी। फिर एक ताम्रवर्ण, चौडे चेहरेवाले, श्यामकेशी व्यक्ति ने अपनी शक्तिशाली बाहो के बल अपने

को खीचा, फुर्ती से अपने शरीर को एक तरफ उछाला, अपने को पख पर डाल दिया और भारी धमाके से जमीन पर आ गया। किसी ने मुझे बताया कि इस रेजीमेंट का सर्वश्रेष्ठ विमान-चालक यही है। शाम बरबाद न हो जाय, इसलिए मैंने उससे बाते करने का निश्चय किया। मुझे साफ याद है कि उसने मेरी ओर अपनी विनोदपूर्ण, प्रफुल्ल, काली, बजार आखो से देखा था, जिनमे अनबुझ, बालसुलभ उद्दडता के साथ ऐसे व्यक्ति की विश्रात बुद्धिमत्ता का सम्मिश्रण था जिसने जीवन में काफी भोगा हो। मुसकुराकर वह मुझसे कहने लगा था

"आदमी जिदा है, यही गनीमत है। मै बुरी तरह थका हुआ हू। खडे रहना मुश्किल हो रहा है और मेरा सिर चक्कर खा रहा है। खाना खाया? नही? तो भोजन-कक्ष की तरफ मेरे साथ चले चलो, हम लोग साथ ही खाना खा लेगे। एक विमान गिराने पर वे हमे दो सौ ग्राम वोदका देते है। आज की रात मुझे छै सौ ग्राम पाने का हक है। दो जनो के लिए काफी होगा। चल रहे हो? कोई कहानी पाने के लिए जब आप इतने अधीर है तो चलो, खाना खाते हुए बात कर लेगे।"

मै राजी हो गया। मुझे यह निश्छल और प्रफुल्ल व्यक्ति पसद आया। हम उस रास्ते से गये जो विमान-चालको ने सीधे जगल के बीच बना लिया था। मेरा नव परिचित व्यक्ति तेजी से चल रहा था और जब तब वह बिलबेरी और गुलाबी व्होरटिल-बेरी का गुच्छा चुनने के लिए झुक जाता था और उसे तत्काल मुह मे डाल लेता था। वह बहुत थका हुआ होगा, क्योकि उसके कदम भारी पड रहे थे, लेकिन वह अपनी विचित्र छडी का सहारा नही ले रहा था। वह उसकी बाह पर टगी हुई थी और कभी ही कभी वह उसे हाथ में लेकर किसी कुकुरमुत्ते या झाडी पर चोट कर देता था। जब हम लोग एक नाले को पार कर, फिसलनी, मिट्टी की ढलान पर चढने लगे, तो विमान-चालक को चढने में कठिनाई महसूस हुई और वह झाडिया

पकडकर अपने को ऊपर घसीटने लगा, मगर उसने छडी का सहारा न लिया।

भोजन-कक्ष मे उसकी थकान फौरन गायब हो गयी। उसने खिडकी के पास एक मेज चुनी जिसके बाहर हमे सूर्यास्त की शीतल, लाल आभा दिखाई दे रही थी, जिसे विमान-चालक अगले दिन तेज हवा होने की भविष्यवाणी समझते है, उसने एक बडा मग भरकर आतुरतापूर्वक पानी पी डाला और सुन्दर, घुघराले बालोवाली परिचारिका से अस्पताल मे पडे हुए उसके एक मित्र के विषय में मजाक करने लगा जिसकी वजह से – विमान-चालक ने बताया – वह मागे गये शोरबे मे जरूरत से ज्यादा लोन डाल देती। उसने बडे स्वाद से खाया, भेड की हड्डी को अपने मजबूत दातो से चबाया-चूसा। अगली मेज के साथियो से उसने मजाक किये, मुझसे कहा कि मैं मास्को की ताजी खबरे सुनाऊ, ताजी किताबो और नाटको की चर्चा करू और खेद प्रगट किया कि उसने मास्को का थियेटर कभी नही देखा। जब हमने तीसरा दौर खत्म कर लिया – बिलबेरी की जेली, जिसे यहा के विमान-चालक 'गर्जन मेघ' कहते है – तो उसने मुझसे पूछा

"तुमने रात मे रहने का ठिकाना कर लिया है क्या?" मैंने कहा "नही।" – "तो चलो, मेरी खोह मे ठहरना," उसने कहा। उसने एक क्षण भौहे चढाकर देखा और मद स्वर में आगे कहा "मेरे कमरे का साथी आज वापिस न लौट सका इसलिए एक तख्ता खाली है। मै कोई नयी दरी वगैर खोज लाऊगा। तो चलो।"

स्पष्ट ही, वह उन लोगो मे से था जो हर नवागत से बाते करने के शौकीन होते है और उससे सारी जानकारी निकाल लेना चाहते हैं। मै राजी हो गया। हम नाले में उतरे जिसकी दोनो ढलानो पर जगली रसभरी, लगवर्त और सरपत की झाडियो और सडती हुई पत्तियो और कुकुरमुत्तो की कच्ची गध के बीच खोहे बनी हुई थी। जब घर के बने,

धुआ देनेवाले लैम्प—जो 'स्तालिनग्रादका' कहलाता था—की बत्ती जलायी गयी और खोह के अदर रोशनी हो गयी, तो खोह काफी लम्बी-चौडी और आरामदेह साबित हुई, और ऐसी लगी मानो बहुत दिनो से आबाद हो। मिट्टी की दीवालो में खोदकर दो तख्ते लगा दिये गये थे जिन पर लबादे के खोल के अन्दर ताजी, सोगध घास भरकर बनाये गये गद्दे बिछे थे। भोज वृक्ष की कुछ टहनिया, जिनकी पत्तिया अभी भी ताजी थी, कोने में खोस दी गयी—'सुगधित धूपबत्ती की भाति,' विमान-चालक ने बताया। तख्तो के ऊपर साफ-सुथरे, सीधे आले दीवार काटकर बनाये गये थे जिनमें अखबार बिछे थे, किताबो की पात लगी थी, दाढी बनाने और नहाने-धोने का सामान रखा था। एक तख्ते के सिरे पर दो फोटो चित्र, हाथ से बनाये गये शीशे के फ्रेम में जडे हुए लगे थे—ये फ्रेम उसी तरह के थे जैसे रेजीमेट के दस्तकार शत्रुओ के विध्वस्त वायुयानो से सामग्री जुटाकर, अक्सर खाली वक्त मे अपना समय काटने के लिए, बना लिया करते है। मेज पर एक सिपाहियाना बर्तन रखा था जिसमे पत्ते के ढाक से ढकी हुई सुगधित जगली रसभरिया भरी थी। रसभरिया, भोज वृक्ष की टहनिया, घास और देवदार की टहनिया जिनसे फर्श पर कालीन बिछाया गया था,—इन सब की ऐसी मधुर, तीखी गध आ रही थी, खोह इतनी ठडी थी और नाले में टिड्डियो की झनकार इतनी शान्तिदायक थी कि हमारे ऊपर मादकता-छावी हो गयी और हमने अपनी बातचीत करने और रसभरिया खाने की योजना सुबह के लिए टाल दी।

विमान-चालक बाहर गया। मैने उसे बडे जोर-शोर से दात साफ करते और अपने ऊपर ठडे पानी के छीटे मारते सुना कि जिसकी आहट और सर्राटे से सारा जगल गूज गया। वह अदर आया तो ताजा और प्रफुल्ल चित्त होकर, उसके बालो और भौहो से पानी की बूदें अभी भी चमक रही थी, उसने लैम्प की बत्ती कम की और कपडे उतारने लगा।

कोई भारी चीज फर्श पर गड़गड़ायी। मैंने उधर देखा और आखो पर विश्वास न कर सका। उसके पैर फर्श पर गिरे पडे थे। पैरविहीन विमान-चालक! और लड़ाकू विमान का चालक! इस चालक ने आज सात उड़ानें की थी और शत्रु के तीन विमान गिराये थे। यह बिल्कुल अविश्वसनीय था।

लेकिन तथ्य यही था कि उसके पैर, सचमुच कृत्रिम पैर, जिनमे फौजी बूट भली भांति फिट थे फर्श पर रखे हुए थे। उनके नीचे के हिस्से तख्ते के नीचे से दिखाई देते थे और ऐसा जान पडता था मानो वहा कोई आदमी छिपा हुआ है जिसकी टागे बाहर झाक रही है। स्पष्ट था कि मै जो आश्चर्य अनुभव कर रहा था, वह मेरे चेहरे पर अभिव्यक्त हो उठा था, क्योकि मेरे मेजबान ने मेरी तरफ देखा और प्रसन्नतापूर्वक, विनोदी मुसकान के साथ पूछा

"तुमने पहले नही गौर किया क्या?"

"मै सपने में भी नही सोच सकता था "

"यह सुनकर मुझे खुशी हुई! धन्यवाद! लेकिन मुझे ताज्जुब है कि तुम्हे किसी ने नही बताया। यहा जितने अव्वल दर्जे के लोग है, उतने झक्की लोग भी। कैसी बात है कि वे किसी नये आदमी को चूक गये और वह भी 'प्रावदा' के सवाददाता को, और उसे अपनी यहा की करामात के बारे में नही बताया।"

"लेकिन यह तो असाधारण बात है, यह तो तुम मानोगे। बिना पैरो के, लडाकू विमान में लडना! इसके लिए पौरुष की आवश्यकता है। उड्डयन कला के इतिहास में ऐसी मिसाल कोई नही है।"

विमान-चालक ने आनन्दपूर्वक सीटी बजायी और कहा

"उड्डयन कला का इतिहास .. उसमे बहुत-सी बाते नही थी, लेकिन इस युद्ध मे सोवियत विमान-चालको ने उन बातो को लिख दिया है। लेकिन इसमें खुशी की क्या बात है? विश्वास करो, मै इन पैरो

के बजाय असली पैरों से उड़ना ही पसंद करता। मगर क्या किया जाय। यही होना था।" विमान-चालक ने सांस खींची और आगे कहा "और ठीक बात तो यह है कि उड्डयन के इतिहास में ऐसी घटनाएं हैं।"

उसने अपने नक्शे का केस खोल डाला और उसमें से किसी पत्रिका की कतरन निकाल ली जो फटी हुई और जर्जर थी और सेलोफेन के टुकड़े पर चिपकी हुई थी। इसमें एक विमान-चालक की चर्चा थी जिसने एक पैर खो दिया था और फिर भी विमान चलाया था।

"लेकिन उसके एक पैर तो था। और इसके अलावा, उसने लड़ाकू विमान नहीं, पुरानी चाल-ढाल का 'फरमान' चलाया था," मैंने कहा।

"लेकिन मैं सोवियत हवाबाज हूं," उत्तर मिला। "यह मत समझना कि मैं शेखी बघार रहा हूं। ये मेरे शब्द नहीं हैं। ये शब्द मुझसे एक बहुत बढ़िया आदमी, एक असली इंसान ने कहे थे (उसने 'असली' शब्द पर विशेष जोर दिया)। वह मर चुका है।"

विमान-चालक के चौड़े, उत्साह-पूर्ण चेहरे पर मधुर, कोमल दुख की छाया दौड़ गयी, उसकी आंखें करुण, निर्मल प्रकाश से आलोकित हो उठीं, उसका चेहरा कम से कम दस वर्ष कम आयु का, लगभग जवान, दिखने लगा और मैं यह देखकर चकित रह गया कि एक क्षण पहले जिस व्यक्ति को मैं प्रौढ़ समझा था, वह मुश्किल से तेईस वर्ष का है।

"मुझे इससे बड़ी चिढ़ होती है जब लोग पूछते हैं कि यह कहां, कैसे और कब हुआ लेकिन इस समय वह सब मेरी आंखों के सामने घूमने लगा है तुम मेरे लिए अजनबी हो। कल हम दोनों अलविदा कहेंगे और शायद फिर कभी न मिलें अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें अपने पैरों की कथा बता सकता हूं।"

वह तख्ते पर उठकर बैठ गया, उसने अपना कम्बल ठोड़ी तक खींच लिया और अपनी कहानी शुरू की। वह जैसे गहरी सोच में डूबकर मुझे बिल्कुल भूल गया था, मगर उसने कहानी बड़ी अच्छी

तरह और स्पष्ट रूप से बतायी। स्पष्ट था कि उसकी बुद्धि तीव्र, स्मृति पैनी और हृदय विशाल है। फौरन समझकर कि कोई महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व बात सुनने को मिल रही है, जिसे शायद मै और कभी न सुन सकूंगा, मैने मेज से अपनी कापी उठा ली जिस पर लिखा था "तीसरे दस्ते की उडानो का रोजनामचा" और वह जो कुछ कहता जा रहा था, उसे लिखना शुरू कर दिया।

रात अनदेखे ही जगल के ऊपर से सरक गयी। मेज का लैम्प भभक और सिसकारियां भर रहा था, और अनेक असावधान पतगे, जिन्होंने उसकी लौ में पर जला लिये थे, उसके चारो ओर बिखरे पडे थे। पहले तो खोह के द्वार अकार्डियन की स्वर-लहरी हमारे कानो को छू गयी। अकार्डियन का रुदन शान्त हो गया और जगल के रात्रिकालीन स्वरों, पक्षी का तीखा चीत्कार, उल्लू की दूरागत कूक, पास के दलदल में मेंढकों का टर्राना, और टिड्डियो की झनकार मद और उदास स्वर की तालपूर्ण धुन के साथ सुनाई देने लगी।

इस व्यक्ति ने जो आश्चर्यजनक कथा सुनाई, वह इतनी रोमाचकारी थी कि मैंने उसे जितने भी पूर्ण ढग से सम्भव हो सका उसे लिख डालने का प्रयत्न किया। मैंने वह कापी भर डाली, ताक पर रखी हुई दूसरी कापी मिल गयी तो उसे भी भर दिया और यह न देख सका कि खोह के तग दरवाजे से आसमान का जो भाग दिखाई देता था, वह पीला पडने लगा था। अलेक्सेई मरेस्येव ने अपनी कहानी उस दिन तक सुना डाली जिस दिन उसने 'रिख्तगोफेन' डिवीजन के तीन विमान मार गिराने के बाद यह महसूस किया था कि अब वह अन्य विमान-चालको की भाति पूर्ण सक्षम विमान-चालक हो गया है।

"हम बाते ही करते रह गये और रात ढल गयी और मुझे सुबह आकाश पर जाना है," उसने अपनी कथा रोकते हुए कहा। "मैंने तुम्हे थका डाला होगा। चलो, थोडा सो ले।"

"मुझे पता नही। उसका आखिरी पत्र मुझे मिला था शीतकाल मे, वेलीकिये लूकी के पास कही से।"

"और टैंक चालक, क्या नाम है उसका?"

"तुम्हारा मतलब है ग्रीशा ग्वोज्देव से? वह अब मेजर हो गया है। उसने प्रोखोरोवका के प्रसिद्ध युद्ध मे और वाद मे कूर्स्क सेलियन्त के टैंक आक्रमण मे भाग लिया था। हम दोनो एक ही क्षेत्र मे लड रहे थे, मगर भेट न कर सके। वह एक टैंक रेजीमेट का कमाडर है। इधर कुछ दिनो से उसका कोई पत्र नही मिला है, पता नही क्यो। लेकिन कोई फिक्र नही। अगर जिदा रहे, तो हम दोनो एक दूसरे को खोज निकालेगे। और क्यो नही खैर, अब हम लोगो को कुछ सो लेना चाहिए। रात वीत गयी है।"

उसने रोशनी बुझा दी और खोह अर्धअधकार मे डूब गयी, त्योरी चढाये आयी हुई भोर की धुधली, मटमैली रोशनी मे हमे मच्छडो का गुजार सुनाई दे रहा था—इस वन्य प्रदेश के निवासस्थल मे शायद यही एकमात्र कष्टप्रद वात थी।

"मै तुम्हारे वारे मे 'प्रावदा' में लिखना चाहूगा," मैंने कहा।

"चाहो तो लिखो," विमान-चालक ने विना विशेष उत्साह से कहा। और फिर वहुत उनीदे भाव से आगे कहा, "लेकिन शायद वेहतर हो, न लिखो। गोयवल्स इस कहानी को हथिया लेगा और सारी दुनिया में ढोल पीटता फिरेगा कि रूसी लोग पैरविहीन लोगो को लडने के लिए मजवूर कर रहे है और इस तरह की वात तुम जानते ही हो, ये फासिस्ट कैसे है।"

एक क्षण वाद वह जोरदार खर्राटे भरने लगा। लेकिन मैं नही सो सका। इस वयान की सादगी और महत्ता ने मुझे इतना रोमाचित कर दिया था। अगर इस कथा का नायक ठीक मेरे सामने न सोया हुआ होता और उसके कृत्रिम पैर जमीन पर रखे हुए नमी मे चमक न रहे

होते और भोर की मटमैली रोशनी मे साफ दिखाई न दे रहे होते, तो शायद यह सब कुछ सुन्दर लोक-कथा मालूम होती।

मै तब से अलेक्सेई मरेस्येव से न मिल सका, लेकिन युद्ध की धारा मुझे जहा भी वहा ले गयी, वहा वे दो स्कूली कापिया मेरे साथ ही रही, जिनमे मैने ओर्योल के निकट उस विमान-चालक के गौरवशाली महाकाव्य को अकित किया था। युद्ध-काल में, युद्ध के बीच खामोशी में और उसके वाद मुक्त योरोप के देशो मे भ्रमण करते हुए न जाने कितनी वार मैने उसके वारे मे कहानी लिखना आरम्भ किया, लेकिन हर वार उसे अलग रख देता था, क्योकि मै जो कुछ लिखने मे सफल होता था, वह उसके असली जीवन की रक्तहीन छाया मात्र मालूम होता था।

लेकिन मै नूरेम्वर्ग मे अतर्राष्ट्रीय फौजी अदालत की वैठक मे उपस्थित था। वह दिन था जब हरमान गोयरिग की जिरह खत्म हो रही थी। दस्तावेजी सवूत की रुह से कापकर और सोवियत अभियोक्ता के सवालो से मजवूर होकर 'जर्मन नाजी न०२' ने अनिच्छापूर्वक, दात मीजकर अदालत को वताया कि कैसे फासिज्म की विशाल और अब तक अजेय सेना मेरे देश के विस्तृत प्रसार मे लडे गये युद्धो मे सोवियत सेना के आघातो से ढह गयी और गायव हो गयी। अपने को उचित ठहराते हुए गोयरिग ने आसमान की ओर अपनी आखे उठायी और कहा "सर्वशक्तिमान की यही इच्छा थी।"

"क्या तुम यह मजूर करते हो कि सोवियत सघ पर विश्वास-घातक ढग से हमला करके, जिससे जर्मनी का सफाया हो गया, तुमने अत्यन्त घृणित अपराध किया था?" सोवियत अभियोक्ता रोमन रुदेन्को ने गोयरिग से पूछा।

"वह अपराध नही, घातक गलती थी," मद स्वर में गोयरिग ने त्योरिया चढाकर और आखें नीची करते हुए उत्तर दिया था। "मै इतना ही मजूर कर सकता हू कि हमने अधाधुध कारंवाई की, क्योकि

जैसा युद्ध के दौरान मे सावित होता गया, हमे वहुत-सी चीजो का ज्ञान न था और कई चीजो के वारे में तो हमे अनुमान भी नही हो सकता था। मुख्य चीज जो हम नही जानते या ममझते थे, वह था सोवियत रूस के वासियो का चरित्र। वे एक पहेली थे और आज भी है। दुनिया का सर्वोत्तम जासूसी विभाग यह नही पता लगा सकता है कि सोवियत की असली युद्ध-क्षमता कितनी है। मेरा मतलव वदूको, हवाई जहाजो और टैंको की सख्या से नही है। उसका हमें करीव-करीव अदाज था। और न मेरे दिमाग मे उनके उद्योगों की क्षमता और क्रियाशीलता का प्रश्न है। मेरा मतलव है उनकी जनता से। रूसी लोग विदेशियों के लिए हमेशा पहेली रहे है। नेपोलियन भी उन्हे समझने में असमर्थ रहा। हमने सिर्फ नेपोलियन की ही गलती दोहरायी।"

"रूसियो की पहेली," हमारे देश की "अज्ञात युद्ध-क्षमता" के वारे मे इस जवरिया इकवाल से हमारे अन्दर गर्व का भाव भर गया। हम भली भाति विश्वास कर सकते है कि सोवियत जनता, उसकी क्षमता, प्रतिभा, साहस और आत्म-त्याग, जिनसे युद्ध-काल मे ससार इतना विस्मित हो गया, इन सभी गोयरिंगो के लिए घातक पहेली थे और रहेगे। सचमुच, जर्मनो के मनहूस "नस्ल सिद्धान्त" का आविष्कार करनेवाले लोग समाजवादी देश मे पली-पुसी जनता की आत्मा और शक्ति को कैसे समझ सकते है? और मुझे यकायक अलेक्सेई मरेस्येव का स्मरण हो आया। उसकी अर्धविस्मृत आकृति स्पष्ट और घनिष्ट रूप में वही गम्भीर, वलूत-जडित भवन मे मेरे सामने खडी हो गयी। और ठीक वही, नूरेम्वर्ग में, फासिज्म के जन्म-स्थल मे, मेरे अदर यह उत्कठा जागृत हो गयी कि जिस साधारण सोवियत जनता ने कैटल की फौजो और गोयरिंग के विमान-वेडे को चकनाचूर कर दिया, रोयडर के जहाजो को डुवा दिया और अपने शक्तिशाली आघातो से हिटलर के

लुटेरे राज्य को खत्म कर दिया, उसी जनता के एक व्यक्ति की कहानी कह डालू।

नूरेम्बर्ग में पीले आवरण की वही कापिया मेरे साथ ही थी, जिनमें से एक पर मरेस्येव के हाथ की लिखावट मे लिखा था "तीसरे दल की उडानो का रोजनामचा"। अदालत की बैठक मे अपने निवास-स्थान पर लौटकर मैंने पुरानी टिप्पणियो को फिर पढा और फिर लिखने बैठ गया, और अलेक्सेई मरेस्येव ने जो कुछ मुझे बताया था, उससे मुझे जितनी जानकारी थी, वह सारा विवरण सच्चाई के साथ पेश करने बैठ गया।

उसने मुझे जो कुछ बताया था, उसका बहुत भाग मै लिख नही पाया था और इन वर्षो मे बहुत-सी बाते मेरी स्मृति से उतर गयी थी। विनम्रतावश, अलेक्सेई मरेस्येव ने अपने बारे में बहुत कुछ छोड दिया था और मुझे इस अभाव को अपनी कल्पना से भरना पडा। उस रात उसने अपने मित्रो का चित्राकन जितने स्पष्ट रूप में और हार्दिकता के साथ किया था, वह मेरी स्मृति मे धुधला पड गया था और मुझे उनमें फिर रग भरना पडा। तथ्यो का पूर्णतया पालन न कर पाने के कारण मैंने नायक के नाम में थोडा-सा परिवर्तन कर दिया और उसके उन साथियो और सहायको के नाम भी बदल दिये जिन्होंने दुस्साध्य और वीरतापूर्ण मार्ग में उसकी सहायता की थी। मुझे आशा है कि इस कथा में अगर वे अपना चित्र पहचान लेगे तो मुझे क्षमा कर देंगे।

इस पुस्तक का शीर्षक मैंने रखा है. 'असली इसान', क्योकि अलेक्सेई मरेस्येव असली सोवियत मानव है, जिस तरह के लोगो को हरमान गोयरिंग अपनी मृत्यु-पर्यंत नही समझ सका और आज भी वे लोग नही समझ पा रहे हैं जो इतिहास के सबक भुला रहे है और जिनकी आज भी गुप्त आकाक्षा है कि वे नेपोलियन और हिटलर का रास्ता ले सके।

'असली इंसान' इसी प्रकार लिखी गयी थी। प्रकाशन के लिए पाडुलिपि तैयार हो जाने के बाद मैं चाहता था कि प्रकाशित होने से पहले इसका नायक इसे पढ ले, मगर युद्ध की उथल-पुथल मे उसका पता मैं खो चुका था; जिन विमान-चालको से हम दोनो परिचित थे, न तो वे विमान-चालक और न सरकारी सूत्र ही—जहा मैंने पूछ-ताछ की थी—अलेक्सेई पेत्रोविच मरेस्येव को खोजने मे मेरी सहायता कर सके।

कहानी एक पत्रिका मे प्रकाशित होना शुरू हो गयी थी और रेडियो पर पढी जा रही थी, तभी एक सुबह मेरे टेलीफोन की घंटी बजी। मैंने रिसीवर उठाया और किंचित फटी-सी, पौरुष्य और धुंधली-सी परिचित आवाज सुनाई दी

"मैं आपसे मिलना चाहूगा।"

"कौन बोल रहा है?"

"गार्ड्स मेजर अलेक्सेई मरेस्येव।"

कुछ घंटो बाद अपनी भालू जैसी, किंचित लुढकती चाल से उसने मेरे कमरे में प्रवेश किया—वह उसी तरह फुर्तीला, प्रसन्न-चित्त और कुशल-वृत्ति दिखाई दे रहा था। युद्ध के चार वर्षो ने उसमे मुश्किल ही से कोई परिवर्तन किया था।

"कल मै घर पर बैठा हुआ पढ रहा था। रेडियो खोला गया, मगर मै किताब मे इतना डूबा हुआ था कि उसके कार्यक्रम पर कोई ध्यान न दे सका। यकायक मेरी मा पास आकर चिल्ला उठी 'सुनो बेटा, वे लोग तुम्हारी ही बाते कर रहे है।' मैने कान खडे किये। कर तो रहे थे। जो घटनाए मुझसे घटी थी उनकी ही चर्चा कर रहे थे। यह ताज्जुब की बात थी—किसने लिखा होगा? मुझे याद नही पड रहा था कि मैने उसकी चर्चा किसी से की थी। और तभी मुझे ओर्योल के पास, उस खोह में, आपसे भेट होने की घटना और किस तरह अपनी

कथा कहकर आपको रात भर जगाये रखा था—वह सब याद आ गया लेकिन यह हो कैसे सकता है?—मैंने मन मे सोचा। कितनी पुरानी बात है—लगभग पाच साल बीत गये। लेकिन थी वही बात। रेडियो-वक्ता ने अध्याय खत्म किया और लेखक का नाम बताया। इसलिए मैंने आपको खोज निकालने का फैसला किया।"

उसने यह सब लगभग एक सास मे उगल दिया और वही चौड़ी-सी, किंचित लजायी हुई मुसकान, मरेस्येवी मुसकान मुसकुरा उठा जो मैंने पहले भी देखी थी।

बहुत दिनो तक एक दूसरे से न मिल पाने के बाद जब दो सिपाही मिलते है, तो जैसा होता है, हमने भी फिर अपने युद्धो के बारे मे, उन अफसरो के बारे मे बाते की जिनसे हम दोनो परिचित थे और उन लोगो की स्मृति सजोयी जो हमारी विजय के दिन तक जीवित न रहे। पहले की भाति, अलेक्सेई पेत्रोविच अपने विषय मे बात करने से झिझक रहा था, फिर भी मैंने कुरेद लिया कि हमारे मिलन के बाद उसने कई सफल युद्धो में भाग लिया। अपनी गार्ड्स रेजीमेंट के साथ उसने १९४३—४५ के सग्रामो में भाग लिया।

ओर्योल के पास, मेरे लौट आने के बाद, उसने शत्रु के तीन विमान और मार गिराये और बाद मे बाल्टिक समुद्र तट के लिए युद्ध में उसने दो और गिराये। सक्षेप में यह कि उसने अपने पैरो के नुकसान के लिए शत्रु से कसकर बदला चुकाया। सरकार ने उसे 'सोवियत सघ के वीर' पद से विभूषित किया।

अलेक्सेई पेत्रोविच ने अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी बताया और इस विषय में भी मुझे हर्ष है कि मै अपनी कहानी का अत सुखद बना सकूगा। युद्ध के बाद उसने उस लडकी से विवाह कर लिया जिससे वह प्रेम करता था, और अब उनके एक बेटा है, वीक्तोर। मरेस्येव की बूढी मा कमीशिन से आ गयी है और उनके साथ रह रही है—वह

अपने बच्चों के सुख को देखकर आनन्दित है और नन्हे मरेस्येव की देखभाल करती है।

आज मेरी कहानी के प्रधान नायक का नाम अक्सर समाचारपत्रों में आता है। यही सोवियत अफसर जिसने हमारी पवित्र सोवियत भूमि पर चढ़ आनेवाले शत्रुओं के विरुद्ध साहस और धैर्य का आश्चर्यजनक उदाहरण उपस्थित किया था, अब विश्व-शान्ति का लगनशील योद्धा है। बुदापेस्ट और प्राग, पेरिस और लंदन, बर्लिन और वारसा की मेहनतकश जनता ने उसे अनेक बार सम्मेलनों और सार्वजनिक सभाओं में देखा है। इस सोवियत योद्धा की विस्मयकारी कहानी उसके अपने देश की सीमा के पार दूर-दूर तक फैल गयी है, और एक ऐसे व्यक्ति के मुख से, जिसने युद्ध की भयंकरतम अग्निपरीक्षा का साहस के साथ सामना किया था, शान्ति की गौरवपूर्ण मांग उठती है तो वह निरपवाद रूप से विवेक-संगत प्रतीत होती है।

अपनी शक्तिशाली और स्वतंत्रता-प्रेमी जनता के सपूत की हैसियत से, अलेक्सेई मरेस्येव शान्ति के लिए उसी लगन, संकल्प और विजय में विश्वास के साथ लड़ रहा है, जिस प्रकार वह युद्ध-काल में शत्रु के विरुद्ध लड़ा था और उसे खदेड़कर बाहर कर दिया था।

और इस प्रकार, अलेक्सेई मरेस्येव की—एक असली सोवियत इंसान की—कहानी का अगला हिस्सा स्वयं जीवन लिख रहा है।

मास्को, १८ नवम्बर, १९५०

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

24

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	८	देर	ढेर
"	२४	रोकना न	रोकना है
२०७	२६	उसने	उससे
३०१	५	हीक	ठीक
३३६	१७	दिखाई दी	दिखाई थी
३६४	८	कर	का
४०२	५	पात . अपानी	पाता .. अपनी
४८७	१८	में घेरो	घेरो में